पहले संस्करण की भूमिका

मैला आंचल, एक आंचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया।
बिहार राज्य का एक ज़िला है; इसके एक ओर है नेपाल, दूसरी
किस्तान और पश्चिमी बंगाल। विभिन्न सीमा-रेखाओं से इसकी
: मुकम्मल हो जाती है, जब हम दक्खिन में संथाल परगना और
। में मिथिला की सीमा-रेखाएँ खींच देते हैं। मैंने इसके एक हिस्से
ही गाँव को—पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर—इस उपन्यास
ा-क्षेत्र बनाया है।

समें फूल भी हैं शूल भी, धूल भी है गुलाल भी, कीचड़ भी है चन्दन
दरता भी है कुरूपता भी—मैं किसीसे भी दामन बचाकर निकल
ाया।

त्था की सारी अच्छाइयों और बुराइयों के साथ साहित्य की दह-
पर आ खड़ा हुआ हूँ; पता नहीं अच्छा किया या बुरा। जो भी हो,
निष्ठा में कमी महसूस नहीं करता।

—फणीश्वरनाथ 'रेणु'

पटना,
९ अगस्त, १९५४

SHOUT
SHARE
IT

0152, 3N21, 12.
J4
23842

पहला खण्ड

एक

गाँव में यह खबर तुरत बिजली की तरह फैल गई—मलेटरी ने बहरा चेयरू को गिरफ्फ कर लिया है और लोबिनलाल के कुएँ से बाल्टी खोलकर ले गए हैं।

यद्यपि १९४२ के जन-आन्दोलन के समय इस गाँव में न तो फौजियों का कोई उत्पात हुआ था और न आन्दोलन की लहर ही इस गाँव तक पहुँच पाई थी, किन्तु जिले-भर की घटनाओं की खबर अफवाहों के रूप में यहाँ तक जरूर पहुँची थी।'''मोगलाही टीशन पर गोरा सिपाही एक मोदी की बेटी को उठाकर ले गए। इसीको लेकर सिख और गोरे सिपाहियों में लड़ाई हो गई, गोली चल गई। ढोलबाजा में पूरे गाँव को घेरकर आग लगा दी गई, एक बच्चा भी बचकर नहीं निकल सका। मुसहरू के ससुर ने अपनी आँखों से देखा था—ठीक आग में भूनी हुई मछलियों की तरह लोगों की लाशें महीनों पड़ी रहीं, कौआ भी नहीं खा सकता था; मलेटरी का पहरा था। मुसहरू के ससुर का भतीजा फारबिस साहब का खानसामा है; वह झूठ बोलेगा? पूरे चार साल के बाद अब इस गाँव की बारी आई है। दुहाई माँ काली! दुहाई बाबा नरसिंह!

यह सब गुआरटोली के बलिया की बदौलत हो रहा है।

विरंचीदास ने हिम्मत से काम लिया; आँगन से निकलकर चारों ओर देखा और मालिकटोला की ओर दौड़ा। मालिक तहसीलदार विश्वनाथ-प्रसाद भी सुनकर घबड़ा गए, "लोबिन बाल्टी कहाँ से लाया था? जरूर चोरी की बाल्टी होगी! साले सब चोरी करेंगे और गाँव को बदनाम

करेंगे।"

मालिकटोले में यह खबर राजपूतटोली पहुँची—बाभनटोली से विश्वनाथप्रसाद और तनमाटोली के बिरंची को मलेटरी के सिपाही पकड़ कर ले गए हैं। ठाकुर रामकिरपालसिंह बोले, "इस बार गहमरवालों का मजा निकलेगा। जरूर जमींदार का लगान वसूल कर रहा गया है। अब बड़े-पर की हवा खाएँ बच्चू!"

यादवटोली के लोगों ने खबर सुनते ही लखिमा उर्फ बालदेव को घिर-पछार कर लिया। भागने न पाये! रस्सी से बाँधो! कहते ही कहा था कि यह एक दिन सारे गाँव को बेंचवाएगा।

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद एक सेर घी, पाँच सेर बासमती चावल और एक खस्सी लेकर हरते हुए मलेटरी वालों को शान्ती पहुँचाने वाले बिरंची को साथ ले लिया। बोले, "हिसाब लगाकर देख लो, पूरे पचास रुपये का सामान है। यह रुपया एक हफ्ता के अन्दर ही अपने टोले और लोबिन के टोले से वसूल कर जमा कर देना। तुम लोगों के चलते···।"

मलेटरी वाले कोठी के बगीचे में हैं। बगीचे के पास पहुँचकर विश्वनाथप्रसाद ने जेब से पलिया टोपी निकालकर पहन ली और कालीथान की ओर मुँह करके माँ काली को प्रणाम किया, "दुहाई माँ काली!"

बगीचे में पहुँचकर तहसीलदार साहब ने देखा, दो बैलगाड़ियाँ हैं; बैल घास खा रहे हैं; मलेटरी वाले जमीन पर कम्बल बिछाकर बैठे हैं। ऐं···! मूढ़ी फाँक रहे हैं! और बहरा चेथरू भी कम्बल पर ही बैठकर मूढ़ी फाँक रहा है!

"सलाम हुजूर!"

बिरंची ने सामान सिर से नीचे उतारकर झुककर सलाम किया, "सलाम सरकार!"···बकरा भी मेमिया उठा।

"आ रे, यह क्या है? आप कौन हैं?" एक मोटे साहब ने पूछा।

"हुजूर, तावेदार राज पारबगा का तहसीलदार है, मीनापुर सर्किल का।"

"ओ, आप तहसीलदार हैं ! ठीक बात ! हम लोग डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का आदमी है। यहाँ पर एक मैलेरिया सेण्टर बनेगा। ऊपर से हुकुम आया है; यहीं बागान का जमीन में। मार्टिन साहब डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को यह जमीन बहुत पहले दे दिया।"

तहसीलदार साहब फिर एक बार सलाम करके बैठ गए। बिरंची हाथ जोड़े खड़ा रहा।

राजपूतटोली के रामकिरपालसिंघ जब कोठी के बगीचे में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि बगीचे के पच्छिम वाली जमीन की पैमाइश हो रही है; कुछ लोग जरीब को कड़ी खींच रहे हैं; टोपीवाले एक साहब तहसीलदार साहब से हँस-हँसकर बातचीत कर रहे हैं।

और अंत में यादवटोली के लोग बालदेव के हाथ और कमर में रस्सी बाँधकर हो-हल्ला मचाते हुए आए। उसकी कमर में बँधी हुई रस्सी को सभी पकड़े हुए हैं। फिरारी सुराजी को पकड़ने वालों को सरकार बहादुर की ओर से इनाम मिलता है—एक हजार, दो हजार, पाँच हजार ! लेकिन साहब तो देखते ही गुस्सा हो गए, "क्या बात है ? इसको क्यों बाँधकर लाया है ? इसने क्या किया है ?"

"हुजूर, यह सुराजी बालदेव गोप है। दो साल जेहल खटकर आया है; इस गाँव का नहीं, चन्ननपट्टी का है। यहाँ मौसी के यहाँ आया है। खद्धड़ पहनता है, जैहिन्द बोलता है।"

"तो इसको बाँधा है काहे ?"

"अरे बालदेव !" साहब के किरानी ने बालदेव को पहचान लिया, "अरे, यह तो बालदेव है। सर, यह रामकृष्ण कांग्रेस आश्रम का कार्यकर्त्ता है; बड़ा बहादुर है।"

यादवों के बन्धन से मुक्ति पाकर बालदेव ने साहब और किरानी को बारी-बारी से 'जाय हिन्द' किया। साहब ने हँसते हुए कहा, "आपका गाँव में मलेरिया सेण्टर खुल रहा है। खूब बड़ा डाक्टर आ रहा है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का तरफ से मकान बनेगा। लेकिन बाकी काम तो आप

लोगों की मदत से ही होगा।"

तहसीलदार साहब ने जमींदारी खाते और नक्शे को सजवीज करके कहा, "हुजूर, जमीन एक एकड़ दस डिसमिल है।"

ठाकुर रामकिरपालसिंह को अब तक साहब को सलाम करने का भी मौका नहीं मिला था। विश्वनाथप्रसाद ने बाजी मार ली। जिन्दगी में पहली बार सिंहजी को अपनी निरक्षरता पर ग्लानि हुई। सचमुच विद्या की महिमा बड़ी है। लेकिन भगवान् ने शरीर दिया है, उच्च जाति में जन्म दिया है। इसी के बल पर बहुत बाबू-बबुआन, हाकिम-हुक्काम और अमलाफैला से हेलमेल हुआ, जान-पहचान हुई। मौका पाते ही सलाम करके जोर से बोले, "जै हो सरकार की! हुजूर, पबली को भलाय के वास्ते इतना दूर से कष्ट उठाकर आया है, और हम लोग हुजूर का कोई सेवा नहीं कर सके। गुसाँई जी रमैन में कहिन है—'धन्य भाग प्रभु दरशन दीन्हा'''।' हुजूर, सेवक का नाम रामकिरपालसिंह वल्द गरीबनेवाजसिंह, मौलफा, जात राजपूत, मोकाम गढ़बुन्देल राजपुताना, हाल मोकाम मेरीगंज।"

"सिंहजी, हमारा कोई सेवा नहीं चाहिए। सेवा के वास्ते मैलेरिया सेण्टर खुल रहा है। इसी में मदद कीजिए सब मिलकर। यही सबसे बड़ा सेवा है," साहब हँसते हुए बोले।

यादवटोली के लोग एक-एक कर, नजर बचाकर, नौ-दो-ग्यारह हो चुके थे। उन्हें डर था कि बालदेव को बाँधकर लाने वालों का साहब चालान करेंगे।

साहब ने चलते समय कहा, "सात दिन के अन्दर ही डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का मिस्तिरी लोग आवेगा। आप लोग बाँस, खड़, सुतली और दूसरा दरकारी चीज का इन्तजाम कर देगा। तहसीलदार साहब, आप हैं, बालदेवप्रसाद तो देश का सेवक ही है, और सिंहजी हैं। आप सब लोग मिलकर मदद कीजिए।"

सबने हाथ जोड़कर, गर्दन झुकाकर स्वीकार किया। साहब दल-

बल के साथ चले। खस्सी मेमिया रहा था। बालदेव गाड़ी के पीछे-पीछे गाँव के बाहर तक गया।

बालदेव ने लौटकर लोगों से कहा, "डिस्टीक्ट बोर्ड के बंगाली आफसियर बाबू थे परफुल्लो बनरजी, और उनका किरानी जीतन बाबू; पहले कांग्रेस आफिस के किरानी थे।"

दो

पूर्णिया जिले में ऐसे बहुत से गाँव और कस्बे है, जो आज भी अपने नामों पर नीलहे साहबों का बोझ ढो रहे हैं। वीरान जंगलों और मैदानों में नील कोठी के खण्डहर राही बटोहियों को आज भी नीलयुग की भूली हुई कहानियाँ याद दिला देते हैं।...गौना करके नई दुलहिन के साथ घर लौटता हुआ नौजवान अपने गाड़ीवान से कहता है—जरा यहाँ गाड़ी धीरे-धीरे हांकना, कनिया[1] साहेब की कोठी देखेगी।...यही है मकै साहब की कोठी।...वहाँ है नील महने का हौज!

नई दुलहिन उहार के पर्दे को हटाकर, घूंघट को जरा पीछे खिसकाकर झाँकती है—झरबेर के घने जंगलों के बीच ईंट-पत्थरों का ढेर! कोठी कहाँ है?

दूल्हे का चेहरा गर्व से भर जाता है—अर्थात् हमारे गाँव के पास साहेब की कोठी थी; यहाँ साहेब मेम रहते थे!

गंगा-स्नान करके लौटते हुए तीर्थयात्रियों की बैलगाड़ियाँ यहाँ कुछ देर रुक जाती है। गाड़ियों से युवतियाँ और बच्चे निकलकर, डरते-डरते, खण्डहरों के पास जाते हैं। बूढ़ियाँ जंगलों में जंगली जड़ी-बूटी खोजती हैं।...

ऐसा ही एक गाँव है मेरीगंज। रौतहट स्टेशन से सात कोस पूरब,

१. दुलहिन

बूढ़ी कोशी को पार करके जाना होता है। बूढ़ी कोशी के किनारे-किनारे बहुत दूर तक ताड़ और खजूर के पेड़ों से भरा हुआ जंगल है। इस अंचल के लोग इसे 'नवाबी तड़वन्ना' कहते हैं। किस नवाब ने इस ताड़ के वन को लगाया था, कहना कठिन है। लेकिन वैशाख से लेकर आषाढ़ तक आसपास के हलवाहे-चरवाहे भी इस वन में नवाबी करते हैं। तीन आने लबनी ताड़ी, रोक साला मोटरगाड़ी! अर्थात् ताड़ी के नशे में आदमी मोटर-गाड़ी को भी सस्ता समझता है। तड़वन्ना के बाद ही एक बड़ा मैदान है, जो नेपाल की तराई से शुरू होकर गंगाजी के किनारे खत्म हुआ है। लाखों एकड़ जमीन! वन्ध्या धरती का विशाल अंचल! इसमें दूब भी नहीं पनपती है। बीच-बीच में बालूचर और कहीं-कहीं बेर की झाड़ियाँ। कोस-भर मैदान पार करने के बाद, पूरब की ओर काला जंगल दिखाई पड़ता है; वही है मेरीगंज कोठी।

आज से करीब पैंतीस साल पहले, जिस दिन डब्लू० जी० मार्टिन ने इस गाँव में कोठी की नींव डाली, आस-पास के गाँवों में ढोल बजवाकर एलान कर दिया—आज से इस गाँव का नाम हुआ मेरीगंज। मेरी मार्टिन की नई दुलहिन थी जो कलकत्ता में रहती थी। कहा जाता है कि एक बार एक किसान के मुँह से गलती से इस गाँव का पुराना नाम निकल गया था। बस, और जाता कहाँ है? साहब ने पचास कोड़े लगाये थे, गिनकर। इस गाँव का पुराना नाम अब किसी को याद नहीं अथवा आज भी नाम लेने में एक अज्ञात आशंका होती है। कौन जाने! गाँव का नाम बदलकर, रौतहट स्टेशन से मेरीगंज तक डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से सड़क बनवाकर और गाँव में पोस्ट आफिस खुलवाने के बाद मार्टिन साहब अपनी नवविवाहिता मेम मेरी को लाने के लिए कलकत्ता गये। गाँव की सबसे बूढ़ी, भैरो की माँ यदि आज रहती तो सुना देती—अहा हा! परी की तरह थी साहेब की मेम, इन्द्रासन की परी की तरह!

लेकिन मार्टिन साहब का आयोजन अधूरा साबित हुआ। मेरीगंज पहुँचने के ठीक एक सप्ताह बाद ही जब मेरी को 'जड़िया' ने धर दबाया

तो मार्टिन ने महसूस किया कि पोस्ट आफिस से पहले यहाँ एक डिस्पेन्स खुलवाना जरूरी था। कुनैन की टिकिया से जब तीसरे दिन भी मेरी बुखार नहीं उतरा तो मार्टिन ने अपने घोड़े को रौतहट की ओर दौड़ाय रौतहट स्टेशन पहुँचने पर मालूम हुआ कि पूर्णिया जाने वाली गाड़ी द मिनट पहले चली गई थी। मार्टिन ने बगैर कुछ सोचे घोड़े को पूर्णिया की ओर मोड़ दिया। रौतहट से पूर्णिया बारह कोस है। मेरीगंज के किसी से पूछिए, वह आपको मार्टिन के पंखराज घोड़े की यह कहानी विस्तार पूर्वक सुना देगा। ···जिस समय मार्टिन पुरैनिया के सिविलसार्जन के बंगले पर पहुँचा, पुरैनिया टीशन पर गाडी पहुँची भी नहीं थी !

किन्तु मार्टिन का पंखराज घोड़ा और सिविल सर्जन साहब की हवा-गाड़ी जब तक मेरीगंज पहुँचे, मेरी को मलेरिया निगल चुका था।··· ट्यूबवेल के पास गढ़े में घुसकर, घुंघराले रेशमी बालों वाले सिर पर कीचड़ थोपते-थोपते मेरी मर गई थी।

मेरी की लाश को दफनाने के बाद ही मार्टिन पूर्णिया गया; सिविल सर्जन, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन और हेल्थ ऑफ़िसर से मिला; एक छोटी-सी डिस्पेन्सरी की मंजूरी के लिए जमीन-आसमान एक करता रहा। डिस्पेन्सरी के लिए अपनी जमीन रजिस्ट्री कर दी। अधिकारियों ने आश्वासन दिलाया—अगले साल जरूर डिस्पेन्सरी खुल जायगी। ठीक इसी समय, जर्मनी के वैज्ञानिकों ने एक ही चुटकी में नीलयुग का अन्त कर दिया। कोयले से नील बनाने की वैज्ञानिक विधि का प्रयोग सफल हुआ और नीलहे साहबों की कोठियों की दीवारें भरराकर गिर पड़ीं। साहबों ने कोठियाँ बेचकर जमींदारियाँ खरीदनी शुरू कीं। बहुतों ने व्यापार आरम्भ किया। मार्टिन की दुनिया तो पहले ही उजड़ चुकी थी, दिमाग भी बिगड़ गया। बगल में रद्दी कागजों का पुलिन्दा दबाये हुए पगला मार्टिन दिन-भर पूर्णिया कचहरी में चक्कर काटता फिरता था, हर मिलने वाले से कहता था, "गवर्नमेंट ने एक डिस्पेन्सरी का हुक्म दे दिया है; अगले साल खुल जायगा।" कहते है कि पटना और

नुसार इन्हीं तीनों दलों में बँटे हुए हैं।

कायस्थटोली के मुखिया विश्वनाथप्रसाद मल्लिक, राज पारबंगा के तहसीलदार हैं। तहसीलदारी उनके खान्दान में तीन पुश्त से चली आ रही है। इसी के बल पर तहसीलदार साहब आज एक हजार बीघे जमीन के एक बड़े काश्तकार हैं। कायस्थटोली को गाँव की अन्य जाति के लोग मालिकटोला कहते हैं। राजपूतटोली के लोग कहते हैं कैथ-टोली।

ठाकुर रामकिरपालसिंह राजपूतटोली के मुखिया हैं। इनके दादा महारानी चम्पावती के स्टेट के सिपाही थे और विश्वनाथप्रसाद के दादा तहसीलदार। कहते हैं कि जब महारानी चम्पावती और राज पारबंगा में दीवानी मुकदमा चल रहा था तो विश्वनाथप्रसाद के दादा राज पारबंगा स्टेट की ओर मिल गए थे। स्टेट वालों को महारानी के सारे गुप्त कागजात हाथ लग गए और महारानी मुकदमे में हार गईं। काशी जाने से पहले महारानी ने रामकिरपालसिंह के नाम अपनी बची हुई तीन सौ बीघे जमीन की लिखा-पढ़ी कर दी थी। रामकिरपालसिंह कहते हैं कि उनके दादा ने महारानी को एक बार डकैतों के हाथ से अकेले ही बचाया था, इसी के इनाम में महारानी ने दानपत्तर लिख दिया था।...कायस्थटोली के लोग राजपूतटोली को 'सिपैहियाटोली' कहते हैं।

यादवों का दल नया है। इनके मुखिया खेलावन यादव को दस बरस पहले तक लोगों ने भैंस चराते देखा है। दूध-घी की बिक्री से जमाये हुए पैसे की बात जब चारों ओर बुरी तरह फैल गई तो खेलावन को बड़ी चिन्ता हुई। महीनों तहसीलदार के यहाँ दौड़ते रहे, सर्किल मैनेजर को डाली चढ़ाई, सिपाहियों को घी-दूध पिलाया और अन्त में कमला के किनारे पचास बीघे जमीन की बन्दोबस्ती हो सकी। अब तो डेढ़ सौ बीघे की जोत है। बड़ा बेटा सकलदीप अररिया बैरगाछी में, नाना के घर पर रहकर, हाई-स्कूल में पढ़ता है। खेलावनसिंह यादव को लोग नया मातबर कहते हैं। लेकिन यादव क्षत्रियटोली को अब 'गुअरटोली' कहने की हिम्मत कोई नहीं करता। यादवटोली में बारहों मास शाम को अखाड़ा

जमता है। चार बजे दिन से ही शोभन मोची ढोल पीटता रहता है—ढाक ढिन्ना, ढाक ढिन्ना! ढोल के हर ताल पर यादवटोली के बूढ़े-बच्चे-जवान उंड-बैठक और पहलवानी के पेंतरे सीखते हैं।

सारे मेरीगंज में दस आदमी पढ़े-लिखे हैं—पढ़े-लिखे का मतलब हुआ अपना दस्तखत करने से लेकर तहसीलदारी करने तक की पढ़ाई। नये पढ़ने वालों की संख्या है पन्द्रह।

गाँव की मुख्य पैदावार है धान, पाट और सेसारी। रब्बी की फसल भी कभी-कभी अच्छी हो जाती है।

तीन

डिस्टीबोट के मिस्तिरी लोग आये हैं। बालदेव के उत्साह का ठिकाना नहीं है। आफसियर बाबू ने तहसीलदार साहब और रामकिरपालसिंघ के सामने ही कहा था—आप तो देश के सेवक हैं। सबों ने सुना था। दुनिया में धन क्या है? तहसीलदार साहब और सिंघजी के पास पैसा है, मगर जो इज्जत बालदेव की है, वे कहाँ पाएँगे? यादवटोली के लोगों ने बालदेव से उसी दिन माफी माँग ली थी, "बालदेव भाई!···हम लोग मूरख ठहरे और तुम गियानी। हम कूप के बेंग हैं। तुम तो बहुत देस-बिदेस घूमे हो, बड़े-बड़े लोगों के साथ रहे हो। हमारा कसूर माफ कर दो।"

उसी दिन से खेलावनसिंह यादव बालदेव को अपने यहाँ रहने के लिए आग्रह कर रहे हैं, "जात का नाम, जात की इज्जत तो तुम्हीं लोगों के हाथ में है। तुम कोई पराये हो? तुम्हारी मौसी मेरी चाची होगी। हम-तुम भाई ठहरे।"

खेलावन की डेरावाली खुद आकर बालदेव की बुढ़िया मौसी से कह गई, "घर आँगन सब आपका ही है। जिस घर में एक बूढ़ी नहीं, उस घर का भी कोई ठिकाना रहता है? मैं अकेली क्या करूँ, दूध-घी देखूँ

कि गोबर-गुहाल ?"

बालदेव की बुढ़िया मौसी की दुनिया ही बदल गई। कल तक घर-घर घूमकर कुटाई-पिसाई करती फिरती थी और आज गाँव की मालकिन आकर उसे सारे घर की मालकिन बना गई !

मिस्तिरी लोग आये हैं। बालदेव गाँव के हरेक टोले में घूमता रहा। "डिस्टीबोट से मिस्तिरीजी लोग आये हैं। कल से काम शुरू हो जाना चाहिए।···मलेरिया बोखार मच्छड़ काटने से होता है। मगर कुलैन खाने से, जितना भी मच्छड़ काटे, कुछ नहीं होगा।" ततमाटोली (तन्त्रिमा क्षत्रियटोली) में महंथदास के घूर के पास, बालदेव की बातों को लोग बड़े अचरज से सुन रहे हैं। आंगन की औरतें भी घूंघट काढ़े, टट्टी के पास खड़ी होकर सुन रही हैं, "अब रात भर गोइंठा जलाकर धुआं करने का झंझट नहीं, काटे जितना मच्छड़ !"

पोलियाटोली, तन्त्रिमा छत्रीटोली, यदुवंशी छत्रीटोली, गहलोत छत्रीटोली, कुर्म छत्रीटोली, अमात्य ब्राह्मणटोली, धनुकधारी छत्रीटोली, कुशवाहा छत्रीटोली, और रैदासटोली के लोगों ने वचन दिया, "सात दिन तक कोई काम नहीं करेंगे। मालिक लोगों से कहिए—हलफाल, कोड़-कमान बन्द रखें। करना ही क्या है ? एक इसपिताल का घर, एक डागडर बाबू का घर, एक भनसाघर[1] और एक घर फालतू। सात दिनों में ही सब काम रैट हो जायगा।"

धनुकधारीटोली के तनुकलाल ने एक सवाल पैदा कर दिया, "लेकिन हलफाल काम-काज बन्द करने से मालिक लोग मजूरी तो नहीं देंगे ! एक-दो दिन की बात रहे तो किसी तरह खेपा भी जा सकता है। सात दिन तक बिना मजूरी के ? यह जरा मुस्किल मालूम होता है।···ततमा और दुसाधटोली के लोगों की बात जाने दीजिए। उनकी औरतें हैं, सुबह से दोपहरिया तक कमला में कादोपानी हिड़कर एक-दो सेर गैंची मछली निकाल लाएँगी। चार सेर धान का हिसाब लग जायगा। बाबू लोगों के

१. रसोई घर।

पुआल के टालों[1] के पास धरती खरोंचकर, चूहे के मांदों को कोड़कर भी कुछ धान जमा कर लेंगी। नहीं तो कोठी के जंगल से खमरआलू उखाड़ लाएंगी। रौतहट हाट में कटिहार मिल के कुल्ली लोग चार आने सेर खमरआलू हाथोंहाथ उठा लेते हैं। लेकिन, और लोगों के लिए तो बड़ा मुस्किल है।"

बालदेव ने निराश होकर पूछा, "अब क्या किया जाय?"

तनुकलाल के पास समस्या का समाधान पहले से ही मौजूद था। बोला, "एक उपाय है। यदि मालिक लोग आधे दिन की भी मजूरी दे दें तो काम चल जाय।"

तनुकलाल के इस प्रस्ताव पर विचार करता हुआ बालदेव मालिक-टोला की ओर चला। विश्वनाथ बाबू तो मान लेंगे, सिंघजी के बारे में कुछ कहना मुश्किल है। सिपैहियाटोला का विरजूसिंघ कल कह रहा था, "सिंघजी इसपिताल में कोई मदत नहीं करेंगे। कहते थे, इसपिताल का मालिक मुक्तियार है विश्वनाथ और बलदेवा।"

ब्राह्मणटोली से तो कुछ उम्मीद करनी ही बेकार है। जिस दिन से अस्पताल होने की बात उन लोगों ने सुनी है, दिन-रात डाक्टर और अंग्रेजी दवा के खिलाफ तरह-तरह की कहानियां सुनाते फिर रहे हैं। जोतखीजी का विश्वास है कि डाक्टर लोग ही रोग फैलाते हैं, सुई भोंककर देह में जहर दे देते हैं, आदमी हमेशा के लिए कमजोर हो जाता है; हैजा के समय कूपों में दवा डाल देते हैं, गांव-का-गांव हैजा से समाप्त हो जाता है। कालाबुखार का नाम पहले लोगों ने कभी सुना था? पूरब मुलुक कामरू कमिच्छा हासाम से कालाबुखार वालों का लहू शीशी में बन्द करके यही लोग ले आये थे। आजकल घर-घर कालाबुखार फैल गया है।... इसके अलावा, विलैती दवा में गाय का खून मिला रहता है।...

भगमान भगत की दुकान के पास ही विश्वनाथ बाबू से भेंट हो गई। तनुकलाल के प्रस्ताव को सुनते ही विश्वनाथ बाबू चिढ़ गए। "...धानुक-

१. घास की ढेरी।

टोली का तनुकलाल ? अपने को बड़ा काबिल समझता है। हर बात में वह एक-न-एक 'लेकिन' जरूर लगाएगा। तुम भी तो बालदेव पूरे 'बम-भोलानाथ' हो। उससे पूछा नहीं कि अस्पताल से सिर्फ मालिक लोगों की भलाई होगी क्या ?"

भगमान भगत हमेशा सुपारी चबाता रहता है। बोलने के समय ऐसा लगता है कि वह बात को भी चबा रहा है, "अरे ! ई तो दस आदमी के काम बा, जे-बा-से एकरा में सब के मिल के मतत करे के चाहीं। का हो सीप्रसाद ?"

भगत की दुकान पर यों भी हमेशा चार-पाँच आदमी बैठे रहते हैं। विश्वनाथ बाबू की आवाज सुनकर दो-चार व्यक्ति और जमा हो गए। बूढ़े सुमरितदास को लोग लबड़ा समझते हैं। मगर वह समय पर पते की बातें बता जाता है। आते ही बोला, "अरे तहसीलदार, आप समझे नहीं। तनुकलाल अपने मन से नहीं बोला है, इसमें कनकशन है। जरा इधर एकान्त में आइए तो बतावें।" तहसीलदार और सुमरितदास भगत की दुकान से जरा दूर जाकर बतियाने लगे। दुकान में बैठे हुए किसी ने कुढ़कर कहा, "बूढ़ा लुच्चा इसी को कहते हैं—हर बात में एकान्ती !"

भगत ने आँख टीपकर मना कर दिया—जोर से मत बोलो, बालदेव है।

सुमरितदास से प्रायविट करने के बाद तहसीलदार का मिजाज बदल गया। आकर बोले, "अच्छा तो बालदेव, तुम जाकर ततमाटोली और पोलियाटोले वालों से कहो, मैंने पचास रुपैया माफ कर दिया। उस दिन आफसियर बाबू को जो डाली दी गई थी सो तो तुम्हारे ही सामने की बात है। विरंची भी था। ···अब जरा सिपैहियाटोला जाओ, देखो वे लोग क्या कहते हैं। कोई कुछ करे, हमारा जो धरम है हम करेंगे।"

बालदेव जब सिंघजी के दरवाजे पर पहुँचा तो सिंघजी घोड़े पर सवार हो चुके थे। शायद कटिहार जा रहे हैं। जात्रा पर टोकना अच्छा नहीं, इसलिए बालदेव चुप ही रहा। सिंघजी के दरवाजे पर पाँच-सात आदमी बैठे हुए थे। किसी ने बालदेव को बैठने के लिए भी नहीं कहा। बालदेव

ने सबों को एक ही साथ 'जाय हिन्द' कहा। शिवशङ्कर सिंघ के बेटे हरगौरी ने बालदेव से पूछा, "कहिए बालदेव लीडर, क्या समाचार है ?"

"आप लोगों का किरपा से सब अच्छा है। बाबू साहेब, आप स्कूल से कब आये ?" बालदेव ने पास में पड़े हुए खाली मोढ़े पर बैठते हुए पूछा।

"सुना कि आपकी लीडरी खूब चल रही है।"

"बाबू साहेब, गरीब आदमी भी भला लीडर होता है ? हम तो आप लोगों का सेवक हैं।"

"आप तो लीडर ही हो गए तो आजकल कांग्रेस आफिस का चौका-बर्तन कौन करता है ?" हरगौरी अचानक उबल पड़ा। "अरे भाई, सभी काशी चले जाओगे ? पत्तल चाटने के लिए भी तो कुछ लोग रह जाओ। जेल क्या गये, पण्डित जमाहिरलाल हो गए ! कांग्रेस आफिस में भोलटियरी करते थे, अब अन्धों में काना बनकर यहाँ लीडरी छाँटने आया है। स्वयं-सेवक न घोड़ा का दुम !"

"बाबू साहेब, मुँह खराब क्यों करते हैं ? आप बिदमान हैं और हम जाहिल। हमसे जो कसूर हुआ है कहिए।"

"उठ जाओ दरवाजे पर से। बेइमान कहीं के ! डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से अस्पताल की मंजूरी हुई है, रुपैया मिला है। सब चुपचाप मारकर अब बेगार खोज रहे हैं। चोर सब !···उठ जाओ दरवाजे पर से !"

हरगौरी तमतमाकर बालदेव को धक्का देने के लिए उठा। बैठे हुए लोगों ने 'हाँ हाँ' करके हरगौरी को पकड़ लिया। बालदेव चुप-चाप बैठा रहा, "मारिए, यदि मारने से ही आपका गुस्सा ठण्ढा हो तो मारिए !"

हल्ला-गुल्ला सुनकर भीड़ जम गई। हरगौरी का लड़कपन किसीको पसन्द नहीं। शिवशङ्करसिंह भी सुनकर दुखित हुए, "लीडरी करे या भोलटियरी, तुमको किस बात की चिढ़ लगी ? तुम्हारा क्या बिगाड़ा था ? ···अच्छा बालदेव, बुरा मत मानना। हँसी-दिल्लगी में उड़ा दो।···छोटा भाई है।"

"शिवशङ्कर मौसा, बाबू साहब गाली-गलौज करके मारने उठे। मगर हम कोई लाजमान[1] बात मुँह से निकालते हैं? पूछिए सबों से। महतमा-जी कहिन हैं···"

नीम के पेड़ पर एक कागा कार्य-कार्य कर उठा।

हरगौरी गुस्से से थर-थर काँप रहा है।·· ये लोग भी अजीब हैं। एक घंटा पहले बालदेव की टोकरी-भर शिकायत कर रहे थे, लीडरी सटकाने की बात कर रहे थे और अभी उसका बाप भी बालदेव की खुशा-मद कर रहा है! ग्वाला होकर लीडरी···?

"गुअरटोली वाले हंसेरी[2] लेकर आ रहे हैं," एक लड़का दौड़ता-हाँफता आकर खबर दे गया। ऐं!···गाँव के उत्तर में शोरगुल हो रहा है। खूँटे में बँधे हुए बैलों ने चौकन्ने होकर कान खड़े किए। गाँव के बाहर चरती हुई बकरियाँ दौड़ती-मिमियाती हुई गाँव में भागी आ रही हैं। कुत्ते भूँकने लगे।···बात क्या हुई?

"अरे बेटा रे! गौरी बेटा रे!···आंगन में आ जा बेटा रे! गुअर-टोली का कलिया पगला गया है!" हरगौरी की माँ छाती पीटती और रोती हुई आई, और हरगौरी को घसीटकर आंगन में ले गई। बच्चे रोने लगे।

"अरे, बात क्या हुई?"

"भाला निकालो छत्तर!"

"हमारी गंगाजी वाली लाठी कहाँ है?"

"तीर निकाल रे!"

"अरे बात क्या है? हँसेरी क्यों···?"

कौन किसका जवाब देता है! किसे फुरसत है! सारे गाँव में कुह-राम मचा हुआ है। हरगौरी की माँ अब शिवशङ्करसिंघ को आँगन में बुला रही है। चिल्ला रही है, "गुअरटोली का रोदी बूढ़ा आया है।···

१. अपशब्द।

२. बलवा करने वाला दल।

गुअरटोली में बूढ़े-बच्चे खौल रहे हैं कि हरगौरी ने बालदेव को जूते से मारा है। कुकुरु का बेटा कलचरना कानी किरिया[1] खाया है—हरगौरी का खून पीयेंगे।···आंगन में आ जाओ गौरी के बाबू !"

"ओ !" बालदेव दौड़ा, "आप लोग अकुताइए मत। हम देखते हैं। नासमझ लोग हैं, समझा देते हैं।"

"एक बार बोलिए प्रेम से···महावीरजी की·· जै !"

"जै ! जाय···जाय !"

बालदेव को देखते ही यादव सेना खुशी से जयजयकार कर उठी। "बोलिए एक बार प्रेम से···गन्ही महतमा की ··जै ! जाय···जाय ! ऐ ! शांती ! शांती ! चुप रहो, बालदेवजी क्या कहते हैं, सुनो !···"

"पियारे भाइयो, आप लोग जा अन्डोलन किये है, वह अच्छा नहीं। अपना कान देखे बिना कौआ के पीछे दौड़ना अच्छा नहीं। आप ही सोचिए, क्या यह समझदार आदमी का काम है !···आप लोग हिंसा-वाद करने जा रहे थे। इसके लिए हमको अनसन करना होगा। भारथ-माता का, गांधीजी का यह रास्ता नहीं···।"

सचमुच गियानी आदमी हैं बालदेवजी। अन्डोलन, अनसन, और··· और क्या ?···हिंसावात ! किसीने समझा ? गियान की बोली समझना सभी के बूते की बात नहीं।···

"अनसन क्या करेंगे ?"

"अन्ट-सन्ट ?"

कलिया कहता था—उपास करेंगे बालदेवजी। कलिया को बुला-कर बालदेवजी कहते थे—कालीचरन, तुम बहुत बहादुर लौजमान हो। लेकिन जोस में होस भी रखना चाहिए। हम खुस हैं, लेकिन उपास करेंगे।

"सचमुच यदि उस दिन बालदेवजी ठीक समय पर नहीं आ जाते तो कालीचरन इस पार चाहे उस पार कर देता।···अरे, हरगौरिया ! कल

१. कसम।

का छौड़ा ! इस्कूल में चार अच्छर पढ़ क्या लिया है लाट साहेब हो गया है।"

"अरे, पढ़ता क्या है, दाढ़ी-मोंच हो गया है और अपना सकलदीप से दो गिलास नीचे ही पढ़ता है। एकदम फेलियर है। इस साल भी फेल हो गया है। उसका बाप मास्टर को घूस देने गया था। मास्टर गुस्साकर बोला—भागो, नहीं तो तुमको भी फैल कर देंगे।"

"अरे, पढ़ेगा क्या ! सुनते हैं कि लालबाग मेला में लाल पढ़ना में पास हो गया है।"

"लाल पढ़ना ?"

बात बनाने में दुलरिया से कोई जीत नहीं सकता। "लाल पढ़ना नहीं समझे ?···हा-हा···हा-हा···खी-खी···खी ! लाल पढ़ना !"

—ढाक ढिन्ना, ढाक ढिन्ना !

"चलो रे, अखाड़ा का ढोल बोल रहा है।"

चार

सतगुरु हो ! सतगुरु हो !

महंथ साहेब सदा ब्राह्म वेला में उठते हैं। "हो रामदास ! आसन त्यागो जी ! लछमी को जगाओ !···सतगुरु हो ! ये कभी जो बना जगाए जागें। रामदास ! हो जी रामदास !"

रामदास आँखें मलते हुए उठता है, बाहर निकलकर आसमान में भुरुकुवा[1] को देखता है, फिर रामडंडी[2] को खोजता है।···अभी तो बहुत रात बाकी है। महंथ साहब आज बहुत पहले ही जग गए हैं। माघ का जाड़ा तो बाघ को भी ठंडा कर देता है।···"सरकार, रात तो अभी

१. भोर का तारा।

२. तीन तरवा।

बहुत बाकी है।"

"रात बहुत बाकी है तो क्या हुआ ? एक दिन ज़रा सवेरे ही सही। सोओ मत। धूनी में लकड़ी डाल दो। कोठारिन को जगा दो।···सतगुरु साहेब ने सपना दिया है।"

लछमी उठी। उठकर महंथ साहब के आसन के पास आई। हाथ जोड़कर 'साहेब बंदगी' किया और आँखें मलते हुए कुएँ की ओर चली गई।

···लछमी के रग-रग में अब साधु-सुभाव, आचार-विचार और नियम-धरम रम गया है। साहेब की दया है। और यह रामदास ? गुरु जानें, इसकी मति-गति कब बदलेगी ! बचपन से ही साधु की संगति में रहकर भी जो नहीं सुधरा, वह अब कब सुधरेगा ?···भक्ति-भाव ना जाने भोंदू, पेट भरे से काम ! बस, दो ही गुण हैं—सेवा अच्छी तरह करता है और खंजड़ी बजाने में बेजोड़ है। "अरे हो रामदास !···फिर सो गए क्या ? ···गंगाजली में जल भर दो।"

जागहु सतगुरु साहेब, सेवक तुम्हरे दरस को आया जी
जागहु सतगुरु साहेब··· ।

····डिम डिमिक डिमिक, डिम डिमिक डिमिक !
भोर भयो भव भरम भयानक भानु देखकर भागा जी,
ज्ञान नैन साहेब के खुलि गयो, थर थर काँपत माया जी।
जागहु सतगुरु साहेब··· !

माघ के ठिठुरते हुए भोर को मठ से प्रातकी[1] की निर्गुणवाणी निकलकर शून्य में मँडरा रही है। बूढ़े महंथ साहब पहला पद कहते हैं। दंतहीन मुँह से प्रातकी के शब्द स्पष्ट नहीं निकलते। गले की थरथराहट सुर में बाधा डालती है, बेसुरा राग निकलता है। दमे से जर्जर शरीर में दम कहाँ !···लेकिन लछमी सब सँभाल लेती है। पाँच साल पहले प्रातकी गाने के समय उसकी आँखों की पलकें नींद से लदी रहती थीं। महंथ साहब

१. प्रभाती।

जब गीत की दूसरी पंक्ति 'भोर भयो भव भरम' गाते थे तो वह बहुत मुश्किल से अपनी हँसी रोक पाती थी—भोर भयो भव भरम···! लेकिन अब नहीं। उसकी बोली मीठी है। उसका सुर मीठा है। वह तन्मय होकर गाती है। उसकी सुरीली तान के साथ महंथ साहब के बेसुरे और मोटे राग का मेल नहीं खाता, फिर भी संगीत की निर्मल धारा में कहीं विरोध नहीं उत्पन्न होता। महंथ साहब का मोटा राग लछमी के कोमल लय को सहारा देता है। शहनाई के साथ सुर देने वाली शहनाई की तरह—भों ओं ओं ओं ओं···!

रामदास की खंजड़ी की गमक निःशब्द वातावरण में तरंगें पैदा करती है। खंजड़ी में लगी हुई छोटी-छोटी झुनुकियों की हल्की झुनुक! मानो किसी का पालतू हिरन नाच रहा हो, दौड़ रहा हो! डिम डिमिक! रुन झुनुक झुनुक!

प्रातकी के बाद बीजक 'शबद'। 'रामुरा झीं झीं जंतर बाजे। करचरण बिहुना नाचे। रामुरा झीं झीं···।'

और तब सत्संग! रोज इसी बेला में सत्संग होता है। प्रातकी सुनते ही मठ के अन्य साधु-संन्यासी, अतिथि-अभ्यागत तथा अधिकारी-भंडारी वगैरह जग जाते हैं। प्रातकी और बीजक में कोई सम्मिलित हो या नहीं, सत्संग में भाग लेना अनिवार्य है। मठ का भंडारी इसी समय रोज की हाजिरी लेता है। इस समय जो अनुपस्थित रहे, उसकी चिप्पी[1] बन्द हो जाती है। सत्संग में महंथ साहब साधुओं और शिष्यों को उपदेश देते हैं, प्रश्नों के उत्तर देते हैं, अज्ञान अंधकार को अपनी वाणी से दूर करते हैं।

···सतगुरु सेवा सत्य करि माने सत्य विचार।
सेवक चेला सत्य सो जो गुरु वचन निहार॥···

फिर सातचक्र परिचय!

प्रथम चक्र आधार कहावे गुद स्थल के मांही

१. राशन।

द्वितिय चक्र अधिष्ठान कहिये लिंगस्थल के मांही।
तृतय चक्र मणिपूरण जानो नाभी स्थल···

सत्संग समाप्त होते ही भंडारी उपस्थित मूर्तियों की गिनती लेता है—"रानीगंज के तीन गो मुरती तो आज सात दिन से धरना देले हथुन। जाये ला कहै हियेन्ह त कहै हथिन बलु सरकार से आज्ञा ले ली है। बेला मठ के एक मुरती के बुखार लगलैन्ह है, दोकान में सबुरदाना न भेटाई है···।"

कोठारिन लछमी दासिन का रोज इसी समय बक-बक झक-झक बहुत बुरा लगता है; सत्संग से प्राप्त की हुई मन की पवित्रता नष्ट हो जाती है। लेकिन क्या करे? मठ के इस नियम को यदि ज़रा भी ढीला कर दिया जाय तो साधु-बैरागी एक महीने में ही मठ को उजाड़ देंगे। बाहर के साधुओं के लिए चार ही दिन रहने का नियम है, मगर···। "रानीगंज के मूर्तियों को खुद सोचना चाहिए। यहाँ कोई कुबेर का भंडार तो नहीं···।"

"लछमी," महंथ साहब कहते हैं, "आज-भर रहने दो। भंडारी, जितनी मुरती आज हैं, सबों का बालभोग[1] और प्रसाद[2] आज लगेगा। सभी मुरती बैठ जाइए। आज सतगुरु साहेब सपना दीहिन हैं।"

धूनी में फिर सूखी लकड़ियों के छोटे-छोटे टुकड़े डाल दिये गए। सभी मुरती फिर धूनी के चारों ओर अर्धवृत्ताकार पंक्ति में बैठ गए। लछमी की आसनी महंथ साहब के आसन के पास ही लगती है···। सभी महंथ साहब की ओर उत्सुकता से देख रहे हैं।

"आज मध्य रात्रि में, सतगुरु साहेब सपने में मेरे आसन के पास आये। हम जल्दी से उठके साहेब बन्दगी किया। हमको 'दयाभाव' देके साहेब कहिन—सेवादास, तुम नेत्रहीन हो, लेकिन तुम्हारे अन्तर के नैनों का जोत बड़ा बिलच्छन है। हम भेख बदल के आये और तूँ पहचान लिया? तुम्हारे ज्ञान-नेत्र में दिव्यजोत है। सो, तुम्हारे गाँव में परमारथ

१. जलपान।

२. भात।

का कारज हो रहा है और तुमको मालूम नहीं ? गांधी तो मेरा ही भगत है। गांधी इस गांव में इसपिताल खोलकर परमारथ का कारज कर रहा है। तुम सारे गांव को एक भण्डारा दे दो। कहके साहब अन्तरधियान हो गए। हमारी निद्रा भंग हो गई। सतगुरु के विरह में चित्त चंचल हो गया। विरह अगिन तन कैसे बूझे, गृहबन अन्धकार नहीं सूझे। आखिर, सतगुरु आज्ञा शब्द विचारकर चित्त को शान्त किया।"

महंथ साहब के सपने की बात तुरंत गांव-भर में फैल गई। बालदेव-हरगौरी संवाद और यादव सेना के अचानक हमले ने गांव की दलबन्दी को नया जीवन प्रदान कर दिया था। जोतखीजी की राय है, "यादव लोग बार-बार लाठी-भाला दिखाते हैं; राजपूतों के लिए यह डूब मरने की बात है। फौजदारी में यतलाय[1] देकर इन लोगों का मोचिलका करवा लिया जाय। लेकिन सिंघजी थाना फौजदारी से घबराते हैं। बात-बात में गाली और डेग-डेग पर डाली ! कानून-कचहरी की शरण जाना तो अपनी कमजोरी को जाहिर करना है। समय आने पर बदला ले लिया जायगा। अकेले यादवों की बात रहती तो कोई बात नहीं थी, इसमें कायस्त समाया हुआ है। मरा हुआ कायस्त भी विसाता है। फिर, बद-माशी हरगौरी की ही है। मेरे दरवाजे पर से किसीको उठ जाने के एलि कहना, मेरे दरवाजे पर किसीको मारने के लिए उठना, यह तो अच्छी बात नहीं।"

यादव टोली में अब दोपहर से ही ढोल बजने लगता है—ढाक ढिल्ला ढाक ढिल्ला ! शोभन मोची को एक नया गमछा और नई गंजी मिली है। कालीथान के बड़ के पास गाय-भैंस बथान करके दोपहर से ही कुश्ती खेलने लगते हैं यादव सन्तान। बालदेवजी ने जिस दिन अनसन किया था, शाम को खेलावन यादव के दरवाजे पर कीर्तन हुआ था। बालदेवजी का सिखाया हुआ सुराजी कीर्तन 'धन-धन गांधीजी महराज, ऐसा चरखा चलाने वाले' कीर्तन के बाद बालदेवजी ने भैंस का कच्चा दूध पीकर

१. इत्तला।

व्रत तोड़ा था। कहते थे, अब हिन्साबात करने से फिर अनसन करेंगे; अब के दो दिनों का ! सुराजी कीर्तन, लहसन का बेटा सुनरा खूब गाता है। बालदेवजी जब फिर उपवास करेंगे तो सुनना। अभी और सीख रहा है।···सिपैहियाटोला में तो अब दिन में ही उल्लू बोलता है। तहसीलदार कह रहे थे—राजपूतों की सिट्टी गुम हो गई है। हल्दी बोला[1] दिया है। कालीचरन बहादुर है !

इसपिताल के सभी घर बनकर तैयार हो गए हैं। सिर्फ मिट्टी साटना बाकी है। विरसा माँझी ने कहा है—संथालटोली की सभी औरतें आकर मिट्टी लगा देंगी आज। अलबत्त मिट्टी लगाती हैं संथालिनें ! पोखता मकान भी मात ! अगले सनिचर को डागडर बाबू आएँगे। बालदेवजी डिसटीबोट से सभी सामान ले आए हैं। भैंसचरमन बाबू ने बालदेवजी से दसखत करा लिया है। भैंसचरमन बाबू जरूर यादव ही होंगे। किसी दूसरी जाति का ऐसा नाम क्यों होगा—भैंसचरमन बाबू ! तहसीलदार के यहाँ जाकर देखो—खुरसी, ग्रीन्च, बड़े-बड़े बक्से में दवा, बाल्टी, कठौत, लोटा। पानी का कल गाड़ा जायगा, जैसे रौतहट के मेला में गड़ता है।

सनिच्चर को ही महंथ साहेब का भण्डारा है—पूड़ी-जिलेबी का भोज। सारे गाँव के औरत-मरद, बूढ़े-बच्चे और अमीर-गरीब को महंथ साहेब खिलावेंगे। सपनौती हुआ है।

यादवटोली का किसनू कहता है, "अंधा महंथ अपने पापों का प्राच्छित कर रहा है। बाबाजी होकर जो रखेलिन रखता है, वह बाबाजी नहीं। ऊपर बाबाजी, भीतर दगाबाजी ! क्या कहते हो ? रखेलिन नहीं, दासिन है ? किसी और को सिखाना। पाँच बरस तक मठ में नौकरी किया है; हमसे बढ़कर और कौन जानेगा मठ की बात ? और कोई देखे या नहीं देखे, ऊपर परमेसर तो है। महंथ ने जब लछमी दासिन को मठ पर लाया था तो वह एकदम अबोध थी, एकदम नादान। एक ही कपड़ा पहनती थी। कहाँ वह बच्ची और कहाँ पचास बरस का बूढ़ा गिद्ध !

१. चित कर देना।

रोज रात में लछमी रोती थी—ऐसा रोना कि जिसे सुनकर पत्थर भी पिघल जाय। हम तो सो नहीं सकते थे। उठकर भैंसों को सोसकर चराने चले जाते थे। रोज सुबह लछमी दूध लेने दुआन पर आती थी, उसकी आँखें कदम के फूल की तरह फूली रहती थीं। रात में रोने का कारण पूछने पर चुपचाप टुकुर-टुकुर मुँह देखने लगती थी—ठीक गाय की बाछी की तरह, जिसकी माँ मर गई हो···! वैसा ही बंदाल है यह रमदसवा। वह साला भी अन्धा होगा, देख लेना।···महंथ एक बार चार दिन के लिए पुरैनिया गया था। हमने सोचा कि चार रात तो लछमी चैन से सो सकेगी। ले बलैया! बाघ के मुँह से छूटी तो बिलार के मुँह में गई। उसके बाद लछमी ऐसी बीमार पड़ी कि मरते-मरते बची। पाप भला छिपे? रामदास को मिरगी आने लगी और महंथ सेवादास सूरदास हो गए। एकदम चौपट!··· हमारा तीन साल का दरमाहा बाकी रखा है। भंडारा करता है! हम उन लोगों को साधू नहीं समझते हैं।"

महंथ सेवादास इस इलाके के ज्ञानी साधु समझे जाते थे—सभी शास्तर-पुरान के पंडित! मठ पर आकर लोग भूख-प्यास भूल जाते थे। बड़ी पवित्र जगह समझी जाती थी। लेकिन जब महंथ दासिन को लाया, लोगों की राय बदल गई। बसुमतिया मठ के महंथ से इसी दासिन को लेकर कितने लड़ाई-झगड़े और मुकदमे हुए। बसुमतिया का महंथ कहता था, लछमी दासिन का बाप हमारा गुरु-भाई था, इसलिए बाप के मरने के बाद उस पर मेरा हक है। सेवादास की दलील थी, लछमी का बाप जिस मठ का सेवक था, वह मेरीगंज मठ के अधीन है, इसलिए लछमी पर हमारा अधिकार है। अन्त में लछमी कानूनन सेवादास की ही हुई। सेवादास के वकील साहब ने समझाकर कहा था—महंथ साहब! इस लड़की को पढ़ा-लिखाकर इसकी शादी करवा दीजिएगा। महंथ साहब ने वकील साहब को विश्वास दिलाया था—वकील साहब, लछमी हमारी बेटी की तरह रहेगी।···लेकिन आदमी की मति को क्या कहा जाय! मठ पर लाते ही किशोरी लछमी को उन्होंने अपनी दासी

बना लिया। लछमी अब जवान हुई है, लेकिन लछमी के जवान होने के पहले ही महंथ सेवादास की आंखें अपनी ज्योति खो चुकी थीं। पता नहीं, लछमी की जवानी को देखकर उनकी क्या हालत होती! अब तो महंथ सेवादास को बहुत लोग प्रणाम-बन्दगी भी नहीं करते।···धर्म-भ्रष्ट हो गया है। बगुला भगत है। ब्रह्मचारी नहीं, व्यभिचारी है।

पूड़ी-जिलेबी और दही-चीनी के भंडारे की घोषणा के बाद जनमत बदल रहा है।···कैसा भी हो, आखिर साधु है! किसने आज तक इतना बड़ा भोज किया है! तहसीलदार ने अपने बाप के श्राद्ध में जाति-बिरादरी वालों को भात और गैर जाति के लोगों को दही-चूड़ा खिलाया था। सिंघजी ने अपनी सास के श्राद्ध में अपनी जाति के लोगों को पूड़ी-मिठाई और अन्य जाति के लोगों को दही-चूड़ा खिलाया था। खेलावन के यहाँ, पिछले साल, माँ के श्राद्ध में जैसा भोज हुआ सो तो सबों ने देखा ही है! फिर, सारे गाँव के लोगों को, औरत-मरद-बच्चों को, आज तक किसने खिलाया है? चीनी मिलती नहीं। भगमान भगत ने कहा है कि बिलेक में एक बोरा चीनी का दाम है एक नमरी[1]। चार मन चीनी—दो नमरी!

तंत्रिमा, गहलोत और पोलियाटोली के अधिकांश लोगों ने पूड़ी-जिलेबी कभी चखी भी नहीं। बिरंची एक बार राज की गवाही देने के लिए कचहरी गया था तो तहसीलदार ने पूड़ी-जिलेबी खिलाई थी। गाँव में, न जाने कैसे, यह हल्ला हो गया कि बिरंची ने तहसीलदार का जूठा खाया है।···जनेऊ देने के लिए जाति के पंडितजी आये थे। बिरंची के सिर पर सात घंटे तक घैला सुपाड़ी रखने की सजा दी गई थी—पाँच सुपारी पर घैला-भर पानी! जरा भी घैला हिला, एक बूंद भी पानी गिरा कि ऊपर से झाड़ू की मार! तहसीलदार साहब क्या कर सकते हैं! जाति-बिरादरी का मामला है, इसमें वे कुछ नहीं बोल सकते। आखिर पाँच रुपया जुरमाना और जाति के पंडितजी को एक जोड़ा धोती

१. सौ रुपये का नोट।

देकर विरंची ने अपना हुक्का-पानी खुलवाया था।···पूड़ी-जिलेबी का स्वाद याद नहीं !

"जीवनदास !"

"बालदेवजी आये हैं। बनगी बालदेव बाबू !"

"बनगी नहीं, जाय हिन्द बोलो, जाय हिन्द !···हाँ जी, इस टोले में कितने लोग हैं, हिसाब करके बताओ तो। औरत-मरद, बच्चों का भी जोड़ना। क्या गिनना नहीं जानते ? विरंची कहाँ है ?"

बालदेवजी घर-घर घूमकर मर्दुमशुमारी कर रहे हैं। बड़ा झंझट का काम है। सिर्फ पोलियाटोले में सात कोड़ी चार, नहीं···चार कोड़ी सात; ततमाटोली में पूरे पाँच कोड़ी; दुसाधटोली में दो कोड़ी; कोयरीटोले में छः कोड़ी तीन। ···यादवटोली का हिसाब कालीचरन कर रहा है। भगवान जाने, सिपैहियाटोली के लोग इसमें भी मीनमेख निकालकर बखेड़ा न खड़ा कर दें। क्या ठिकाना है ! बाभनों ने तो साफ इनकार कर दिया है। यदि बाभनों के लिए अलग प्रबंध नहीं हुआ तो सरब संघटन में नहीं खाएंगे। बाभन-भोजन ही नहीं हुआ तो फिर भोज क्या ! महंथजी से कहना होगा। बाभन हैं ही कितने, सब मिलाकर दस घर।

महंथ साहब ने सब सुनकर कहा, "सतगुरु हो ! सतगुरु हो ! बाभन लोगों का अलग इन्तजाम कर दो बालदेव बाबू ! इसमें हर्ज ही क्या है ! नहीं हो, तो उन लोगों का प्रबन्ध मठ पर ही कर दो।"

इसी समय लछमी दासिन ने आकर खबर दी, "सिपैहियाटोला के लोग भी नहीं खाएँगे। हीबरनसिंघ का बेटा आकर कह गया है, ग्वाला लोगों के साथ एक पंगत में नहीं खाएँगे। हम लोगों के गाँव का आटा-घी-चीनी अलग दे दिया जाय, हम लोग अलग बनवा लेंगे।"

"सतगुरु हो ! यह तो अच्छा बखेड़ा खड़ा हुआ। अब यादव लोग कहेंगे कि धानुक लोगों के साथ एक पंगत में नहीं खाएँगे।"

"हिबरनसिंघ के बेटे ने तो यह भी कहा कि बालदेव यदि इन्तजाम-कार रहेगा तो महंथ साहेब का भंडरा भंडुल होगा।"

"गुरु हो ! गुरु हो !"

"तो महंथ साहेब, हमारे रहने से लोग विरोध करते हैं तो हम खुसी-खुसी···"

"वाह रे ! यह भी कोई बात है ! महंथ साहेब, मैं कह देती हूँ, यदि बालदेवजी को छोड़कर और किसीको प्रबन्ध करने का भार दिया तो समझ लीजिए कि भंडारा चौपट हुआ। मैं इस गाँव के एक-एक आदमी को पहचानती हूँ।"

बालदेव ने पहली बार लछमी की ओर गरदन उठाकर देखने की हिम्मत की। निगाहें ऊपर उठीं और लछमी की बड़ी-बड़ी आँखों में वह खो गया। ···आँखों में समा गया बालदेव शायद।

पाँच

मठ पर गाँव-भर के मुखिया लोगों की पंचायत बैठी है। बालदेवजी को आज फिर 'भाखन' देने का मौका मिला है। लेकिन गाँव की पंचायत क्या है, पुरैनिया कचहरी के रामू मोदी की दूकान है। सभी अपनी बात पहले कहना चाहते हैं। सब एकही साथ बोलना चाहते हैं। बातें बढ़ती जाती हैं और असल सवाल बातों के बवंडर में दबा जा रहा है। सिंघजी चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं, "उस दिन यदि हम घर में रहते तो खून की नदी बह जाती।" कालीचरन चुप रहने वाला नहीं है,"वाह रे ! दरवाजे पर एक भले आदमी को बेज्जत करना 'इन्सान' आदमी का काम है ?" तहसीलदार साहब कहते हैं, "अस्पताल तो सबों की भलाई के लिए बन रहा है। इससे सिर्फ हमारा ही फ़ायदा नहीं होगा। ओवरसियर बाबू कह गए थे कि तहसीलदार साहब जरा मदद दीजियेगा। हम अपने मन से तो अगुआ नहीं बने हैं। तुम्हीं बताओ खिलावन भाई !"

बूढ़े जोतखीजी भविष्यवाणी करते हैं, "कोई माने या नहीं माने,

हम कहते हैं कि एक दिन इस गाँव में गिद्ध-कौआ उड़ेगा। लक्षण अच्छे नहीं हैं। गाँव का ग्रह बिगड़ा हुआ है। किसी दिन इस गाँव में खून होगा खून! पुलिस-दारोगा गाँव की गली-गली में घूमेगा। और यह इसपिताल? अभी तो नहीं मालूम होगा। जब कुएँ में दवा डालकर गाँव में हैजा फैलाएगा तो समझना। शिव हो! शिव हो!"

बालदेव भाखन के लिए उठना चाहता था कि लछमी हाथ जोड़कर खड़ी हो गई, "पंच परमेश्वर!"

मानो बिजली की बत्ती जल उठी। सन्नाटा छा गया। सफेद मलमल की साड़ी के खूँट को गले में डालकर लछमी हाथ जोड़े खड़ी है, "पंच परमेश्वर!"

"लछमी," महंथ साहब शून्य में हाथ फैलाकर टटोलते हुए कहते हैं, "लछमी, तुम चुप रहो।"

लछमी रुकी नहीं, कहती गई, "जोतखीजी ठीक कहते हैं। गाँव के ग्रह अच्छे नहीं। जहाँ छोटी-छोटी बातों को लेकर इस तरह झगड़े होते हैं, जहाँ आपस में मेल-मिलाप नहीं, वहाँ जो कुछ न हो वह थोड़ा है। गाँव के मुखिया लोग ही इसके लिए सबसे बड़े दोखी हैं। सतगुरु साहेब कहिन है—'जहाँ मेल तहाँ सरग है।' मानुस जन्म बार-बार नहीं मिलता है। मानुस जन्म पाकर हम परमारथ के बदले सोआरथ देखें तो इससे बढ़कर क्या पाप हो सकता है? परमारथ में जो 'विघिन डालते हैं वे मानुस नहीं। आप लोग तो सास्तर-पुरान पढ़े हैं, जग भंग करने वालों को पुरान में क्या कहा है, सो तो जानते ही हैं। हमारे कहने का मतलब यह है कि सब कोई भेद-भाव तेयाग के, एक होकर के, परमारथ कारज में सहयोग दीजिए। आप लोग तो जानते ही हैं—'परमारथ कारज देह धरो यह मानुस जन्म अकारथ जाये।' बस, हाथ जोड़कर पंच-परमेश्वर से बिनै है, झगड़ा तेयागकर मेल बढ़ाइए। सतगुरु साहेब गाँव का मंगल करेंगे। आगे आप लोगों की मरजी।"

लछमी बैठ गई। उसका चेहरा तमतमा गया है, गाल लाल हो गए हैं और कपाल पर पसीने की बूँदें चमक रही हैं। पंचायत में सन्नाटा छाय।

हुआ है, मानो जादू फिर गया हो। बालदेवजी का भाखन देने का उत्साह कम हो गया है। वह दोहा-कवित नहीं जानता, सास्तर-पुरान भी नहीं पढ़ा है। जेहल में चौधरीजी उसे पढाया करते थे। तीसरा भाग में— 'भारी बोझ नमक का लेकर एक गधा दुख पाता था' के पास ही वह पढ़ रहा था कि चौधरीजी की बदली हो गई। उसी दिन से उसकी पढ़ाई भी बन्द हो गई। लेकिन···वह जरूर भाखन देगा। उसने लछमी की ओर देखा और मानो नशे में उठकर खड़ा हो गया, "पियारे भाइयो!"

"बोलिए एक बार प्रेम से···गंधी महतमा की जै!" यादवटोली के नौजवानों ने जयजयकार किया।

"पियारे भाइयो! कोठारिन साहेब जितना बात बोली, सब ठीक है। लेकिन सबसे बड़ा दोखी हम हैं। हमारे कारन ही गाँव में लड़ाई-झगड़ा हो रहा है। हम तो सबों का सेवक हैं। हम कोई बिदमान नहीं हैं, सास्तर-पुरान नहीं पढ़े हैं। गरीब आदमी हैं, मूरख हैं। मगर महतमाजी के परताप से, भारथ माता के परताप से, मन में सेवा-भाव जन्म हुआ और हम सेवा का बाना ले लिया। आप लोगों को तो मालूम है, जयमंगल बाबू, जो मेनिस्टर हुए हैं, अपना दस्तखत भी नही जानते हैं। बहुत छोटी जात का हैं। वह भी गरीब आदमी थे, मूरख थे, मगर मन में सेवा-भाव था और महतमाजी उसको मेनिस्टर चुन लिए। महतमाजी कहिन हैं— 'बैस्नव जन तो उसको कहते जो पीर पराई जानता है रे!' मोमेन्ट में जब गोरा मलेटरी हमको पकड़ा तो मारते-मारते बेहोस कर दिया। पानी माँगते थे तो मुँह में पेसाब कर देता था···"

बालदेवजी का 'भाखन' शुरू होते ही पंचायत मे फिर कानाफूसी शुरू हो गई थी। राजपूतटोली के लोग और भी जोर-जोर से बातचीत करने लगे। बालदेव के भाखन के इस रोमांचक अंश ने जरा असर किया। मुँह में पेशाब करने की बात सुनते ही पंचायत में फिर सन्नाटा छा गया। बालदेव ने झट अपनी कमीज खोल ली, चारों ओर घूमकर पीठ दिखलाते हुए उसने अपना भाखन जारी रखा, "आप लोगों को बिसवास नहीं हो

तो देख सकते हैं।"

"अरे बाप! चीता-बाघ की तरह देह हो गया है।···धन्न है!"

"देखिए आप लोग," यादवटोली का एक नौजवान कहता है, "हम लोग गंधीजी का जै करते हैं तो आप लोगों के कान में लाल मिच की बुकनी पड़ जाती है। देखिए!"

"अरे भाई! यह सब महतमाजी का परताप है। कौन सह सकता है। जब गुड़ गंजन सहे तो मिसरी नाम धराये।"

"···लेकिन पियारे भाइयो, हमने भारथ माता का नाम, महतमाजी का नाम लेना बन्द नहीं किया। तब मलेटरी ने हमको नाखून में सूई गड़ाया, तिस पर भी हम इसबिस[1] नहीं किये। आखिर हारकर जेल-खाना में डाल दिया। आप लोग तो जानते ही हैं कि सुराजी लोग जेहल को क्या समझते हैं—'जेहल नहीं ससुराल यार हम बिहा करन को जायेंगे।' मगर जेहल में अंगरेज सरकार हम लोगों को तरह-तरह की तकलीफ देने लगा। भात में कीड़ा मिला देता था, घास-पात का तरकारी देता था। बस, हम लोगों ने भी अनसन सुरू कर दिया। पियारे भाइयो! पाँच दिन तक एकदम निरजला अनसन। उसके बाद कलकटर, इसपी, जज, सब आया। माँग पूरा कर दिया, खाने को दूध-हलुआ दिया। हम लोग बोले—दूध-हलुआ अपने बाल-बच्चों को खिलाओ, हम लोगों को बढ़िया चाबल दो। सो पियारे भाइयो! सेवा-बर्त जब हम लिया है तो इसको छोड़ नहीं सकते।··· 'अंधी होकर पुलिस चलावे पर डंडों का परिवाह नहीं!' आप लोग अपने गाँव में सेवा नहीं करने दीजिएगा, हम चम्पानपटी चले जायेंगे। वहाँ आसरम है, घर-घर चरखा-करघा चलता है। घर-घर में औरत-मरद पढ़ते हैं। महतमाजी, जमाहिरलाल, रजीन्नर बाबू और दूसरे बड़े-बड़े लीडर लोग साल में एक बार जरूर आते हैं। चौधरीजी हमको बार-बार खबर भेज देते हैं।···बालदेव अपने गाँव में चले आओ। हम कहे कि चौधरीजी, आप हमारा गुरु हैं, आपका बचन हम नहीं काट

१. चूं-चपड़।

सकते। लेकिन अपना गाँव तो उन्नति कर गया है। जो गाँव उन्नति नहीं किया है, हम वहीं सेवा करेंगे। ···हम मेरीगंज को चन्ननपटी की तरह बनाना चाहते हैं। हम अपने से गाँव में झाड़ू देंगे, मैला साफ़ करेंगे। हम लोगों का सब किया हुआ है। महतमाजी खुद मैला साफ़ करते थे। जहाँ सफ़ाई रहती है, वहाँ का आदमी भी साफ़ रहता है। मन साफ़ रहता है। साहेब लोगों को देखिए, उनके देस का गाछ-बिरिछ भी साफ़ रहता है। कोठी के बगीचे में कलस्टर के गाछ को देखिए, एकदम बगला की तरह उजला है। लेकिन, आप लोग हमको नहीं चाहते हैं तो हम चले जायेंगे। आप लोगों को बिसवास नहीं हो, जो पढ़ना जानते हैं, इस चिट्ठी को पढ़ लीजिए कि इसमें क्या लिखा हुआ है। टैप में छापी किया हुआ है। दो साल पहले की चिट्ठी है।"

कौन पढ़ेगा! बड़े मौके से सभी इसकुलिया अंगरेजिया लोग भी घर में ही हैं। पढ़ो जी कोई! खेलावन ने अपने लड़के सकलदीप से कहा, "जाओ पढ़ दो।" लेकिन वह बड़ा शरमीला है। "हरगौरी, पढ़ो जी!"

पासवानटोले के रामचंदर का भतीजा नेवालाल उठकर खड़ा हुआ, बालदेव के हाथ से चिट्ठी लेकर पढ़ने लगा।

"ज़रा ज़ोर से पढ़ो। गला साफ़ कर लो। थर-थर क्यों काँपते हो?"

'सेवा में, बालदेवसिंहजी। महाशय! आपको विदित हो कि कस्तुरबा स्मारक निधि की एक अस्थायी कमेटी गठन करने के लिए कांग्रेसजनों की एक विशेष बैठक ता० ८-१२-४५ को पूर्णिया धर्मशाला में होगी। इस बैठक में बिहार के भूतपूर्व प्रीमियर भी उपस्थित रहेंगे। इस महत्त्वपूर्ण बैठक में आपकी उपस्थिति आवश्यक है। आपका, विश्वनाथ चौधरी।'

अरथ भी समझा दो नेवालाल।···अरे नहीं, अरथ-क्या समझाएगा! टैप में छापी किये हुए खत का अब अरथ समझाएगा?

चौधरीजी भी बालदेवजी से राय लिये बिना कुछ नहीं करते हैं। यह अपने गाँव का भाग है कि बालदेवजी जैसा हीरा आदमी यहाँ आकर रहते हैं। अपना गाँव भी अब सुधर जायगा ज़रूर···। सुनो, सिंघजी क्या

कहते हैं।

"बालदेव ! तुम यहाँ से चले जाओगे तो यह मेरीगंज गाँव का दुर्भाग होगा, सरम की बात होगी। गाँव में तो लड़ाई-झगड़े लगे ही रहते हैं। दो हंडी एक जगह रहे तो ढनमन होना जरूरी है। तुम लोगों का काम है, गाँव में मेल-मिलाप बढ़ाना, गाँव की उन्नति करना। इसमें जो बाधा डालता है, वह अधर्मी है। तुम लोग देश के सेवक हो। खल और कुटिल लोगों को सुमारग पर चलाना तुम्हीं लोगों का काम है। गोसाईंजी ने रमैन में पहले खल और कुटिल की ही वन्दना की है। तुम गाँव से मत जाओ। तहसीलदार और हम तो छोटे-बड़े भाई हैं। बचपन से साथ खेले-कूदे, लड़े-झगड़े और फिर मिल गए। आओ जी तहसीलदार भाई, लोग तो हम लोगों के खानदान को बदनाम करते ही हैं कि कायस्त और राजपूत ने मिलकर महारानी चम्पावती के इस्टेट को ही पार कर दिया। अब हम लोग फिर एक बार मिल जायँ।" सिंघजी ने अपना लम्बा-चौड़ा वक्तव्य समाप्त करते हुए पंचायत में बैठे लोगों की ओर देखा।

पंचायत में जोर का ठहाका पड़ा। लोग हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए।···एकदम 'बम भोलानाथ' हैं सिंघजी ! मन में कोई सात-पाँच नहीं रखते। सादा दिल के आदमी हैं।

सिंघजी ने तहसीलदार को हाथ पकड़कर उठा लिया। दोनों गले मिलने लगे।

"बोलिए एक बार प्रेम से···गन्ही महतमा की जै !"

"जै ! जै !"

अब भंडारा जमेगा। दो दिन से तो ऐसा मालूम होता था कि लोगों के पत्तल में परोसी हुई पूड़ी-जिलेबी अब गई तब गई।···उस दिन कीर्तन और नाच करेंगे।···अगमू चौकीदार क्या कहता था, महतमाजी का झंडा पत्तखा नहीं उड़ाना होगा, वह मार खाएगा अब। उसको कहो, अपने नाना दारोगा साहेब से पूछे कि राज किसका है। अनसन करने से लाट, हाकिम, कलट्टर सब डर जाता है।

सारी पंचायत में दो ही व्यक्ति ऐसे हैं जिनके ऊपर मेल-मिलाप की खुशी का उलटा असर हुआ है। खेलावनसिंह यादव को सिंघ ने जिस चालाकी से एक किनारे किया है, इसे कोई नहीं समझ पाए, लेकिन खेलावन ने सब समझ लिया। खेलावन की चर्चा भी नहीं की सिंघ ने। और इस तहसीलदार को तो देखो, तुरत गिरगिट की तरह रंग बदल लिया। लड़ाई-झगड़ा यादवटोली से था और गले मिले तहसीलदारजी। खेलावन को सठबरसा[1] नहीं समझना। सब चालाकी समझते हैं। दुनिया की ग्यान-गुदड़ी बघारता है बालदेव, मगर इतना भी समझ में नहीं आया कि सिंघ तहसीलदार से क्यों मिल रहा है। मेल-मिलाप तो यादवटोली के मुखिया से होना चाहिए। सुराजी होने से क्या हुआ, जात सुभाव नहीं छूटते। इतना मान-आदर से अपने यहाँ रखते हैं, खिलाते-पिलाते हैं और समय पड़ने पर सब धान बाईस पसेरी!

जोतखीजी खेलावन के चेहरे को देखकर ही सब-कुछ समझ लेते हैं। मोटी चमड़ी पर असर हुआ है! "खेलावन बाबू, सकलदीप बबुआ की जन्मपत्री काशीजी से बनकर आ गई क्या? जरा एक बार हम भी देखते। आज तक हम जो गणना किये हैं उसको काशी के पंडितों ने भी कभी नहीं काटा है।"

"कल सुबह में आइएगा जोतखी काका! आप तो बहुत दिन से आये भी नहीं हैं। सकलदीप को हायस्कूल में संसकिरत भी पढ़ाता है। जरा आकर देखियेगा तो संसकिरत में उसका जेहन कैसा है?"

ठीक दोपहर को पंचायत की बैठक शुरू हुई, शाम को खत्म हुई। बहुत दिन बाद गाँव-भर के लोग पंचायत में बैठे थे। बहुत दिन बाद फिर मेल-मिलाप हुआ।

कल ही भंडारा है। सुबह से ही इसपिताल के सामने की जमीन को साफ़ करके जाफरा से घेरना होगा, शामियाना टाँगना होगा, सजाना होगा। हलवाई लोग सुबह से ही आ जायँगे। आजकल दिन छोटा होता

१. साठ वर्ष तक नाबालिग रहने वाला

है। बिजै होते-होते शाम हो जायगी। डॉक्टर साहब को लाने के लिए चार बैलगाड़ियाँ जायँगी टीशन—भैसचरमन बाबू ने बालदेवजी से कहा है। कल भोर को ही इसपिताल में सब-कोई जमा होंगे; काम का बँट-वारा होगा। इतने बड़े भोज को सँभालना खेल नहीं।

सभी बारी-बारी से महंथ साहब को साहेब बंदगी करके विदा हुए। बालदेवजी को महंथ साहब ने रोक लिया है। "बालदेव बाबू, तुम जरा ठहर जाना। कल फिर समय नहीं मिलेगा। अभी एक बार हिसाब-किताब कर लेना अच्छा होगा। थोड़ी देर बैठ के बीजक बाँचो, हम डोलडाल[1] से हो आवें। कहाँ हो रामदास ? गंगासागर में जल भर दो !"

बालदेव धुनी के पास बैठकर बीजक के पन्ने उलटता है—

···बीजक बतावे वित्त को
जो वित्त गुप्ते होय,
शब्द बतावे जीव को
बूझे विरला कोय ॥

लछमी लालटेन जलाकर सामने रख गई। अक्षर स्पष्ट हो गए—'संतो, सारे जग बौराने।'···लछमी के शरीर से एक खास तरह की सुगन्ध निकलती है। पंचायत में लछमी बालदेव के पास ही बैठी थी। बालदेव को रामनगर मेला के दुर्गा मंदिर की तरह गंध लगती है—मनोहर सुगन्ध ! पवित्र गंध !···औरतों के देह से तो हल्दी, लहसुन, प्याज और धाम की गंध निकलती है !

१. नित्य-क्रिया।

छः

बालदेवजी को रात में नींद नहीं आती है।

मठ से लौटने में देर हो गई थी। लौटकर सुना, खेलावन भैया की तबियत खराब है; आँगन में सोये हैं। यदि कोई आँगन में सोया रहे तो समझ लेना चाहिए कि तबियत खराब हुई है; बुखार हुआ है या सरदी लगी है अथवा सिर दर्द कर रहा है। जिसको आँगनवाली[1] ही नहीं वह आँगन में क्यों सोएगा? आँगन में सोने का अर्थ है आँगनवाली के हाथों की सेवा प्राप्त करना। खाने के समय भौजी से मालूम हुआ, पेट में वायु हो गया है। कड़वा तेल लगाकर पेट ससारते समय गों-गों बोलता था।

भौजी भी बहुत अनमनी थी। और दिनों की तरह बैठकर बातें नहीं कीं भौजी ने। भौजी बोरसी[2] के पास बैठकर हुक्का पीती रहती थी, बालदेव जेल की गप सुनाता रहता। बालदेवजी आज पंचायत की गप भौजी को सुनाते, लेकिन आज गप जमाने का लच्छन नहीं देखकर बालदेवजी सोने चले आए।

...नींद नहीं आती है। जेल का बी० टी० कम्बल आज बड़ा गड़ रहा है। खद्दर की धोती मैली होने पर बहुत ठंडी हो जाती है।...बार-बार लछमी दासिन की याद आती है। आते समय कह रही थी—आज यहीं परसाद पा लीजिए बालदेवजी!...परसाद! लछमी के शरीर की सुगन्ध! ...आज माँ की भी याद आती है। गाँव के लोग बालदेव को 'दुखवा' कहते थे। सुनकर माँ बहुत गुस्सा होती थी। बाप के मरने से कोई दुअर[3] नहीं होता। बाप मरे तो कुमर, माँ मरे तब दुअर! मेरा बालदेव तो कुमर है; मेरा बालदेव दुअर नहीं। ऐसा लगता है, माँ ने अभी तुरत ही पीठ सहलाई है।

१. पत्नी।
२. अँगीठी।
३. अनाथ।

माँ के मरने के बाद, बालदेव बहुत दिन तक अजोधी भगत की भैंस चराता था। अजोधी भगत की याद आते ही बालदेव का देह सिहर उठता है। कैसा पिशाच था बुड्ढा! बूढ़ी तो और भी खटांस थी; खेकसियारी[1] की तरह हरदम खेंक-खेंक करती रहती थी। दिन-भर भैंस चराकर आने के बाद बालदेव की उँगलियां भगत का देह टीपते-टीपते दर्द करने लगती थीं; आँखें नींद से बन्द हो जाती थीं। लेकिन जरा भी ऊँघे कि चटाक्। उस बूढ़े की उँगलियों की चोट बड़ी कड़ी होती थी। बालदेव ने बचपन से ही मार खाई है—थप्पड़, छड़ी और लाठी की मार। शायद सूखी चमड़ी की चोट ज्यादा लगती है।···लेकिन रूपमती का कलेजा मोम का था। वैसे बेदर्द माँ-बाप की बेटी वैसी दयालु कैसे हुई, समझ में नहीं आता है। बूढ़े-बूढ़ी को रात में नींद नहीं आती थी। आध पहर रात को ही भैंस चराने के लिए जगा देता था। आध पहर रात होते ही पीपल के पेड़ पर उल्लू अपनी मनहूस बोली में कचकचा उठता था और इधर बूढ़ा ठीक उसी तरह की आवाज में चिल्ला उठता, "रे टुरवा, भोर हो गई, भैंस खोल!" ···रूपमती कभी टुरवा नहीं कहती था। छोटा-सा नाम 'बल्ली' उसी का दिया हुआ है। चार सेर सुबह और तीन सेर शाम को दूध होता था, लेकिन बुढ़िया कभी सितुआ-भर घोल भी नहीं खाने देती थी। रूपमती रोज चुराकर भात के नीचे दूध की छाली रख देती था। बूढ़ा-बूढ़ी का जमाया हुआ पैसा आखिर डकैत ही ले गए।···इस बार रूपमती को देखा था। बहुत दिन बाद ससुराल से आई थी। तीन बच्चे हैं; बड़ी बेटी ठीक रूपमती जैसी है। ठीक वैसी ही हंसी!

···याद आती है मायेजी की! मायेजी—रामकिसून बाबू की इसतिरी! पहले-पहल सभा हुई थी चन्ननपटी में। सभा में रामकिसून बाबू, उनकी इसतिरी, चौधरीजी और तैवारीजी आये थे। ···अलबत्त रूप था राम-किसून बाबू का! बड़ी-बड़ी आँखें! भाखन देते थे, जैसे बाघ गरजे!

१. लोमड़ी।

सुनते हैं, जब वोकालत करते थे तो बहस करने के समय पुरानी कचहरी की छत में पलस्तर झड़ने लगता था। क्या मजाल कि हाकिम उनके खिलाफ राय दे दें! लेकिन महतमाजी का उपदेश सुनकर एक ही दिन में सब-कुछ छोड़-छाड़ दिया। इसतिरी के साथ गाँव-गाँव घूमने लगे। मायेजी के पाँव की चमड़ी फट गई थी। जूते से पैर लयपथ हो गए थे। लाल उड़हुल! मायेजी का दुख देखकर, रामकिसून बाबू का भाखन सुनकर और तैवारीजी का गीत सुनकर वह अपने को रोक नहीं सका था। कौन सँभाल सकता था उस टान को! लगता था, कोई खींच रहा हो। '...गंगा रे जमुनवाँ की धार नयनवाँ से नीर बही। फूटल भारथिया के भाग भारथ माता रोई रही!' ...मायेजी के पाँव की चमड़ी फट गई थी, भारथ माता रो रही थी। वह उसी समय रामकिसून बाबू के पास जाकर बोला था—'मेरा नाम सुराजी में लिख लीजिए।' उस दिन की सभा में तीन आदमियों ने नाम लिखाया था—बालदेव, बावनदास और चुन्नी गुसाईं। चौधरीजी उसे जिला आफ़िस में ले आए थे। मायेजी बराबर ऑफ़िस आती थीं। कभी गुस्सा होते नहीं देखा मायेजी को; जब बोलती थीं तो हँसकर। एक बार देहात से लौटते समय उसको बुखार हो गया था, देह जल रहा था, सिर फटा जा रहा था; कोई होश नहीं। रात में आँख खुली तो जी बड़ा हल्का मालूम हुआ। 'कैसे हो बालदेव भाई?' कौन बावन? गरदन उलटाकर देखा, मायेजी पास ही कुरसी पर बैठी हुई हैं। 'कैसे हो-बोलो? बुखार था तो देहात क्यों गया था? ...सोओ...।' माथे पर हाथ रखते हुए मायेजी बोली थीं, 'बुखार उतर गया है।' मायेजी के हाथ रखते ही नींद आ गई थी। दूसरे दिन बावनदास ने कहा, 'मायेजी को जैसे ही मालूम हुआ कि तुमको बुखार है, वैसे ही मुझे साथ लेकर ऑफ़िस आईं। जंतर[1] लगाकर बुखार देखते ही चिल्लाने लगीं—पानी लाओ। पंखा दो। उसी समय से माथे पर पानी की पट्टी देती रहीं, बारह बजे रात

१. थर्मामीटर।

तक।'···भगवानू भी कैसे हैं, अच्छे आदमी को ही अपने पास बुला लेते है। दो-तीन साल के बाद ही रामकिसून बाबू, एक ही दिन के बुखार में सरगवास हो गए। हे भगवानू! उस दिन मायेजी की ओर कौन देख सकता था! देखने की हिम्मत नहीं होती थी। मायेजी का उस दिन का रूप '···गंगा रे जमुनवाँ की धार नयनवाँ से नीर बही। फूटल भारथिया के भाग भारथ माता रोई रही!'···सचमुच सबों के भाग फूट गए। सराध के दिन से ज़िला ऑफ़िस का नाम हो गया 'रामकिसून आसरम।' सराध के दूसरे दिन ही मायेजी कासीजी चली गईं। गाड़ी पर चढ़ने के समय, पैर छूकर जब परनाम करने लगा था तो मायेजी एकदम फूट-फूटकर रो पड़ी थीं—ठीक देहाती औरतों की तरह। बावनदास को मायेजी ठाकुर कहती थीं, 'हामार ठाकुर रे!' धरती पर लोटते हुए बावनदास को उठाते हुए मायेजी बोली थी, 'महतमाजी पर भरोसा रखो। वह सब भला करेंगे। महतमाजी का रास्ता कभी मत छोडना।' ···पता नहीं मायेजी कहाँ है!

आँसू का गरम बूंदें बालदेव की बाँह पर ढुलककर गिरीं। माँ, रूपमती, मायेजी और लछमी दासिन! मायेजी जैसा ही लछमी भी भाखन देना जानती है। लछमी भाखन दे रही है।···

···विशाल सभा! जहाँ तक नजर जाती है आदमी-ही-आदमी दिखाई पड़ते हैं। बाँस के घेरे को तोड़कर लोग मंच की ओर बढ़े आ रहे हैं। मंच पर बालदेव के बगल में लछमी बैठी हुई है। लछमी के भी पैर की चमड़ी फट गई है। मंच की सुफ़ेद चादर पर लहू की बूंदें टप-टप गिर रहा हैं। ···लछमी भाखन दे रही है। कौन, हरगौरी? हरगौरी लछमी के गले में माला डालने के लिए आगे बढ़ रहा है। लछमी माला नहीं पहनती है। माला लेकर बालदेव को पहना देती है—गेंदे के फूलों की माला! फूल से लछमी के शरीर की सुगंधी निकलती है!··· भीड़ मंच की ओर बढ़ी आती है। हरगौरी आगे बढ़ आया है, लछमी को पकड़ रहा है। ···बालदेव चिल्ला रहा है, लेकिन आवाज नहीं

निकल रही है। लोग हल्ला कर रहे हैं। बहुत जोर लगाकर बालदेव चिल्लाता है—हरगौरी बाबू !

'गन्ही महतमा की जै !'

'जै !'

बालदेव हड़बड़ाकर उठता है; आँखें मलते हुए बाहर निकल आता है। सवेरा हो गया है। गाँव-भर के नौजवानों को बटोरकर, जुलूस बनाकर, कालीचरन जयजयकार करता हुआ जा रहा है। वाह रे कालीचरन ! बुद्धिमान है; बहादुर भी है और बुद्धिमान भी। यह पुलोग-राम कब बनाया था ? रात में ही शायद ! ···जरूर मेरीगंज भी चम्पानपटी की तरह नाम करेगा। और भोर का सपना ?

"खेलावन भैया, कैसी तबियत है ?"

"तुम रात में कब लौटे ? कहाँ देर हुई, सिपैहियाटोली में ? कायस्त-राजपूत की जोड़ी मिल गई, अब क्या है, सुराज हो गया। लेकिन भाई बालदेव, हम ठहरे सीधे-सादे आदमी। कलिया पर नजर रखना। उसमें और भी बहुत गुन हैं, सो तो तुमको मालूम ही हो जायगा। किसी किस्म का उपद्रो करेगा तो हम जिम्मेवार नहीं हैं। पीछे यादवटोली के मुखिया के ऊपर बात नहीं आवे। हाँ भाई, कायस्त और राजपूत का क्या बिसवास ?"

खेलावन किसके ऊपर अपने दिल का बुखार उतारे, समझ नहीं पा रहा था। भैंस-चरवाहा भैंस दूहने के लिए बरतन ले आया था। खेलावन आज भी अपने ही हाथों भैंस दूहता है। उसका कहना है, भैंस के थन में चार आदमी के हाथ लगे कि भैंस सूखी। चरवाहा पर बिगड़ पड़ा, "साला ! अभी भैंस थिराई भी नहीं है, दूहने के लिए हल्ला मचा रहा है ! पूड़ी-जिलेबी क्या अभी ही बँट रही है ? जीभ से पानी गिर रहा है !···परनाम जोतखी काका !"

जोतखीजी कान पर जनेऊ टाँगे, हाथ में लोटा लटकाए इनारे की ओर जा रहे थे। खेलावन ने टोका, "आइए, यहीं पानी मँगवा देते हैं।"

"खेलावन बाबू, गाँव में तो सुराज हो गया, देखते हैं। अच्छा-अच्छा ! देखिएगा, गाँव के लौंडे सब आज फुच्च-फुच्च कर रहे हैं। 'छुद्र नदी चलि भरी उतराई, जस थोरे धन खल बौराई।' ऐसा ही सिमरबनी में भी हुआ था। हमारे मामा का घर सिमरबनी में ही है। आज से दस-बारह साल पहले की बात कहते हैं। हम मामा के यहाँ गये थे। मामा के बड़े पुत्र का जग्योपवित था। प्रातःकाल उठके देखते हैं कि गाँव-भर के लौंडे इसी तरह झंडा-पत्तखा लेकर 'इनकिलास जिन्दाबाघ' करते हुए गाँव में घूम रहे है। मामा से पूछा कि मामा, बात क्या है ? तो मामा बोले कि गाँव के सभी लड़कों ने भोलटियरी में नाम लिखा लिया है। 'इनकिलास जिन्दाबाघ' का अर्थ है कि हम जिन्दा बाघ हैं।···जिन्दा बाघ भी उसी शाम को देखा। इस्कूल से पच्छिम, कंगरेसी तैवारी नीमक कानून बनाने वाला था। बड़े-बड़े चुल्हे पर, कड़ाहियों में चिकनी मिट्टी और पानी डालकर खौला रहे हैं। खूब गीत-नाद, झंडा-पत्तखा ! पूछा कि यह क्या है भाई, तो कहा कि नीमक कानून बन रहा है। हम भी खड़ा होकर तमासा देखने लगे। इसी समय हल्ला हुआ, दारोगा आ रहा है। इस्कूल के हाता से एक टोपा वाला और चार-पाँच लाल पगड़ी वाला निकला ! बस, फिर क्या था, जिन्दा बाघ आ गया; जो जिस मुँह से खड़ा था, उधर ही भागा। एक दूसरे के ऊपर गिर रहा है। कहाँ झंडा, कहाँ पत्तखा और कहाँ इनकिलास जिन्दाबाघ ! दारोगा साहब तैवारी को पकड़कर ले गए। इसके बाद गाँव के घर-घर में घुसकर खन्नातलासी ! गाँव के सभी जिन्दाबाघ माँद में घुस गए। सुनने में आया कि जब कंगरेसी राज हुआ तो फिर घर-घर में भोलटियर घरघराने लगा। फिर इनकिलास जिन्दाबाघ ! पुलिस-दारोगा को देखकर और ज़ोर से चिल्लाते थे सब। लो भाई, चिल्लाओ, तुम्हारा राज है अभी ! पुलिस-दारोगा मन-ही-मन गुस्सा पीकर रह गए। पिछले मोमेंट में जिन्दाबाघों ने जोस में आकर अड़गड़ा जला दिया, कलाली लूट लिया। दूसरे ही दिन चार लौरी में भरके गोरा मलेटरी आया और सारे गाँव को जला-पका, लूट-पीटकर

एक ही घंटा में ठंडा कर दिया। पचास आदमी को गिरिफ्फ किया। दो को तो मारते-मारते बेहोस कर दिया। एक को कीरीच भोंक दिया। अंग्रेज बहादुर से यही दुग्गी-तिग्गी लोग पार पायेंगे! बड़ा-बड़ा घोड़ा बहा जाये तो नटघोड़ी पूछे कितना पानी! अंग्रेज बहादुर ने अभी फिर ढील दे दिया है। सब उछल-कूद कर रहे हैं। इस बार बिगड़ेगा तो खोपसहित कबूतराय···।"

"नहीं जोतखी काका, अब वैसा नहीं हो सकता," बालदेव इससे आगे नहीं सुन सका। "पिछले मोमेण्ट मे सरकार का छक्का छूट गया है। सिमरबनी के बारे में आप जो कह रहे हैं सो आप इधर सिमरबनी गये हैं? नहीं। तब क्या देखिएगा! एक बार वहाँ जाकर देखिए—इसपिताल, इस्कूल, लड़की-इस्कूल, चरखा सण्टर, रायबरेली, क्या नहीं है वहाँ? घर-घर में ए-बी-सी-डी पास! सिवानन्द बाबू को जानते हैं? उनका बेटा रमानन्द हम लोगों के साथ जेहल में था; अब हाकिम हो जायगा। पक्की बात!"

खेलावन भी कुछ कहना चाहता था कि चरवाहे ने पुकारा, "पाँड़ा भैंस पी रहा है।"

खेलावन भैंस दूहने चला गया। बालदेव के पास बेकार बहस करने के लिए समय नहीं है। गाँव में जयजयकार हो रहा है—'गन्ही महतमा की जै!'

सात

प्यारू को सबों ने चारों ओर से घेर लिया। डागडर साहेब का नौकर है। डागडर साहेब कब तक आएँगे? तुम्हारा क्या नाम है? कौन जात? दुसाध मत कहो, गहलोत बोलो गहलोत! जनेऊ नहीं है?

बालदेवजी प्यारू को भीड़ से बाहर ले आते हैं। "भाई, तुम लोगों ने आदमी नहीं देखा है कभी? जाओ, अपना काम देखो! हलवाईजी लोगों

के पास कौन है ?"

बालदेवजी सबों के नाम के साथ 'जी' लगाकर बोलते हैं। रामकिसून आसरम में लीडर लोग इसी तरह सबों के नाम के साथ 'जी' लगाकर बोलते हैं—'ड्राइवरजी', 'ठेकेदारजी', 'हरिजनजी' !

पूछताछ के बाद मालूम हुआ, प्यारू डागडर साहेब के पास नौकरी करने आया है। रौतहट टीशन में जो हेमापोथी डागडर साहेब थे, प्यारू उनके यहाँ पाँच साल नौकरी कर चुका है। डागडर साहेब देश चले गए। सुना कि मेरीगंज में एक डागडर बाबू आ रहे हैं। सो प्यारू डागडर बाबू के पास नौकरी करने आया है।

चूड़ा गूड़ का जलखै[1] करके प्यारू बालदेवजी से कहता है, "डागडर बाबू का सामान कहाँ है ? टेबल-कुरसी लगाना होगा। आलमारी को झाड़ना-पोंछना होगा। पानी के ढोल के पास एक बोल[2] रखना होगा, एक साबुन और एक गमछा। डागडर बाबू आते ही पहले साबुन से हाथ धोयेंगे।..."

सचमुच प्यारू डॉक्टर का पुराना नौकर है। टेबल-कुरसी ठीक से लगा दिया है। तीन पैर वाली लोहे की सीढ़ी पर पानी का ढोल रख दिया; सीढ़ी में ही लगी हुई गोल कड़ी में ललमुनियाँ[3] का कठौत बिठा दिया है। ढोल में कल लगा हुआ है। कल टीपने से पानी गिरने लगता है। बक्से से गमछा निकालकर वहीं लटका दिया है। खस्सी बकरी की अंतड़ी का भीतरी हिस्सा जैसा रोयाँदार होता है, वैसा ही गमछा है। साबुन ? साबुन नहीं है ? अरे, कपड़ा धोने वाला साबुन नहीं, गमकौआ साबुन चाहिए। भगत की दूकान में गमकौआ साबुन कहाँ से आवेगा ? कटिहार में मिलता है। तहसीलदार साहब की बेटी कमली जब गमकौआ साबुन से नहाने लगती है तो सारा गाँव गमगम करने लगता है। तहसीलदार साहब कहते

१. जलपान।

१. कठौत।

२. गलमुनियम।

हैं, कमली दीदी से साबुन मांगकर ला दो। ···सचमुच प्यारू पुराना डागडरी नौकर है। बड़े मौके से वह आ गया, नहीं तो इतना इन्तजाम कौन करता ? बेला झुक गया है, अब डागटर बाबू भी आ जायंगे। तहसीलदार साहब कहते हैं, "भुरकुवा उगने के पहले ही बैलगाड़ियों को रवाना कर दिया है। साथ में गया है अगमू चौकीदार।"

सारा गाँव महक रहा है। मेले में ठीक ऐसी ही महक रहती है। तहसीलदार साहब के गुहाल में हलवाई लोग सुबह से ही पूड़ी-जिलेबी बना रहे हैं। पूड़ी बनाकर ढेर लगा दिया है। गाँव के बच्चे सुबह से ही जमा हैं। राजपूत और कायस्तों के बच्चे दूसरे टोले के बच्चों को उधर नहीं जाने देते है—'भागो, छू जायगा !'

सिंघजी खुद जाकर खेलावनसिंह यादव को पकड़ लाते हैं। "तहसीलदार, देखो, इसके पेट में बाय उखड़ गया है। भोज खाने के पहले ही अन्नसर्जी हो गई है। अरे भाई, औरतों की तरह रूठने से क्या फ़ायदा ! तुम्हीं कहो तहसीलदार, हम ठीक कहते हैं या नहीं ! लड़ो, झगड़ो और फिर गले-गले मिलो। यह रूठने का क्या माने ? हमको तो बालदेव से मालूम हुआ। जाकर देखा तो कागभुसुण्डी इसके कान में मन्तर पढ़ रहा है। ···ऐ बालदेव, सुनो, डागडर साहेब आएँ तो पहले इसीका इलाज कराओ। कहना कि आठवाँ महीना है···।"

हा हा हा हा हा···हा···हा !

"रामकिरपाल भाई, लड़कों के सामने भी आप दिल्लगी करते हैं ? अच्छा हाथ छोड़िए। सब कोई तो हैं ही, सिर्फ हमारे नहीं रहने से कौन काम हरज हो रहा था ?"

सिंघजी मजेदार आदमी हैं। सुबह से ही सबों को हँसा रहे हैं। खेलावन यादव रूठे थे, उसको भी पकड़ लाए। जोतखीजी नहीं आये। बोले, दाँत में दर्द है। सिंघजी कहते हैं, "पता नहीं उनके पेट के दांत में दरद है सायद। सुनते हैं आजकल डागडर लोग पत्थल का नकली दाँत लगा देते हैं। डागडर साहेब से कहकर जोतखीजी का दाँत बनवा दो

भाई ! अजी, सभागाछी[1] में लड़की वाले दांत को हिला-डुलाकर देखते हैं थोड़ो !"

"डागडर साहेब आ रहे हैं।"

"आ रहे हैं ? कहाँ ?"

"पछियारीटोला के पास पांचों बैलगाड़ियां आ रही हैं। अगमू चौकीदार आगे-आगे दौड़ता हुआ आ रहा है। डागडर साहेब टोपा पहने हुए हैं।"

अगमू आ गया। "कन्धे पर क्या है, बक्सा ?"

कामकाज छोड़कर सभी जमा हो गए—डॉक्टर साहब आ रहे हैं।

"हँट जाइए !" अगमू कहता है, "डागडर साहब बोले हैं, इन्तजाम से रखना। ठेस नहीं लगे। बेतार का खबर है।"

बालदेवजी कहते हैं, "रेडी[2] है रेडा ! अब सुनिएगा रोज बम्बै-कलकत्ता का गाना। महतमाजी का खबर, पटुआ का भाव सब आएगा इसमें। तार में ठेस लगते ही गुस्सा कर बोलेगा—बेकूफ। बिना मुंह धोये पास में बैठते ही तुरत कहेगा—क्या आपने आज मुंह नहीं धोया है ?"

"जुलुम बात !"

डाकडर साहेब !

सभी हाथ जोड़कर खड़े हैं। डाक्टर साहब भी हंसते हुए हाथ जोड़ते हैं। बालदेवजी 'जाय हिन्द' कहते हैं। देखादेखी कलिया भी आजकल 'जाय हिन्द' कहता है ! प्यारू शामियाने में कुर्सी लाकर रखता है; डाक्टर साहब के हाथ से टोप ले लेता है। डाक्टर साहब के चेहरे का रंग एकदम लाल है। 'लालटेस' ! मोंछ नहीं है क्या ? नहीं, मोंछ सफाचट कटाए हैं।

बालदेवजी हाथ जोड़कर पूछते हैं, "रास्ते में कहीं तकलीफ तो नहीं हुई ?···सब तैयार है, भोजन कर लिया जाये। इनका नाम विश्वनाथपरसाद है, राज पारबंगा के तहसीलदार हैं। इनका नाम रामकिरपालसिंघ है,

१. विवाहार्थी मैथिलों का मेला।

२. रेडियो।

सिर्फ···राजपूत टोली के मालिक हैं। इनका नाम खेलावनसिंह यादव है; यादव छत्री टोले के 'मड़र' हैं। इसका नाम कालीचरन है, बड़ा बहादुर लोजमान है। और ये लोग 'इसकुलिया' हैं।···आइये बाबू साहब ! आप लोग डागडर साहेब से बतियाइये। इस गाँव के महंथ साहेब ने इसपिताल होने की खुसी में गाँव वालों को आज भण्डारा दिया है।"

डाक्टर साहब हाथ जोड़कर सबों को फिर नमस्कार करते हैं। कहते हैं, "हम अभी नहीं खायेंगे। सबको खिलाइए !"

सचमुच प्यारू पुराना नौकर है। देखो, डागडर बाबू ने सबसे पहले साबुन से हाथ धोया।

मठ से महंथ साहेब, कोठारिन लछमी दासिन, रामदास और दो मुरती आये हैं। महंथ साहेब की बैलगाड़ी के आगे एक साधू तुरही फूंकता हुआ आ रहा है। धु तु तु तु ऽ ऽ···धु तु तु ! और तुरही की आवाज सुनते ही गाँव के कुत्ते दल बाँधकर भोंकना शुरू कर देते हैं। छोटे-छोटे नवजात पिल्ले तो भोंकते-भोंकते परेशान हैं। नया-नया भोंकना सीखा है न !

सबसे पहले कालीथान में पूड़ी चढ़ाई जाती है। इसके बाद कोठी के जंगल की ओर दो पूड़ियाँ फेंक दी जाती हैं, जंगल के देव-देवी और भूत-पिशाच के लिए। इसके बाद साधू और बाभन भोजन ! बालदेवजी ने बहुत कहा, लेकिन डाक्टर साहब नहीं माने। प्यारू ठीक कहता था, डागडर लोग हलवाई की बनाई हुई पूड़ी-जिलेबी नहीं खाते हैं। 'कल के चुल्हे' पर प्यारू डागडर बाबू के लिए भात बना रहा है। जल्दी से बिजे[1] खत्म हो तो बेतार के खबर का गाना सुनें। क्या ? आज गाना नहीं होगा ? हाँ भाई, कल-कब्जा की बात है। इतना जल्दी कैसे होगा ! फिर कटिहार जंकशन में रेलगाड़ियों और मिलों का अभी इतना शोरगुल होता होगा कि यहाँ तक खबर आ भी नहीं सकेगी।

"विर्फ ! विर्फ !"

"हर टोले के लोग अलग-अलग पंगत में बैठो। अपने-अपने बगल में

१. खाना-पीना।

एक फाजिल पत्ता लगा देना भाई ! अपने-अपने घर की जनाना लोगों के लिए। कम बेस नहीं।..."

गुप्तरटोली के रौदी बूढा को सभी मिलकर चिढ़ा रहे हैं। रौदी गोप गाँव-गाँव में घूमकर दही बेचता है। उसका चाल-चलन, उसकी बोली-बानी सब कुछ औरतों जैसी है। सिर और छाती पर से कपड़ा जरा सा भी सरक जाने पर, औरतों की तरह लजाकर ठीक कर लेता है। मर्दों से बातें करने के समय लजाता है, औरतें उसके सामने किसी भी किस्म का पर्दा नहीं करती। हाट जाते और लौटते समय वह औरतों के झुंड में ही रहता है।...अभी सब मिलकर रौदी बूढा को चिढा रहे हैं—"तुम्हारा हिस्सा आँगन में भेज दिया जायगा। देखो, लालचन ने तुम्हारा पत्ता लगा दिया है।"

"दूर! मुँहझौंसे! बूढे-पुराने से हँसी-दिल्लगी करते लाज नहीं आती? हम पूछते हैं तुम लोगों से कि तुम लोग अपनी बूढी दादी और नानी से भी इसी तरह हँसी-मसखरी करते हो? इस गाँव के लौंडे-छौंडे बिगड़ गए हैं। और सारा दोख इसी सिधवा का है। जहाँ बूढे ही बदचाल हों तो लौंडों का क्या हाल! हम कह देते हैं, हाँ, सुन रखो! हाँ।..."

महंथ साहब रात में भोजन नहीं करते हैं।

"मतगुरु हो! डागडर साहेब, आपको कितना मुसहरा मिलता है? दो सौ?... हाँ, यहाँ ऊपरी आमदनी भी होगी! असल आमदनी तो ऊपरी आमदनी है।...बहुत अच्छा हुआ।...गाँधीजी तो अवतारी पुरुख हैं।... डागडर साहेब! आज से करीब पांच साल पहले एक बार हमारी आँखें आईं, उसके बाद दो महीने तक आँखों में लाली छाई रही। पुरनियाँ के सिविलसार्जन साहेब को पचास रुपैया फीस देकर दिखलाया। बहुत दिनों तक इलाज भी करवाया। मगर बेकार। अब तो आप आ गए हैं। अपने घर के डागडर हुए!..."

लछमी दासिन टकटकी लगाकर डाक्टर साहब को देख रही है।... कितना सुन्दर पुरुष है! बेचारे का इस देहात में मन नहीं लग रहा है।

नौकरी कोई भी हो, आखिर नौकरी ही है। मन घर पर टँगा हुआ होगा। बीबी-बच्चों की याद आती होगी।···कुछ दिनों में मन लग जायगा। फिर बाल-बच्चों को भी ले आवेंगे। अचानक वह पूछ बैठती है, "आपके घर पर और कौन-कौन हैं डाक्टर बाबू ?"

"जी," डाक्टर ने जरा हकलाते हुए कहा, "जी, मेरा कोई नहीं। माँ-बाप बचपन में ही गुजर गए।"

लछमी समझ लेती है कि यह सवाल पूछना उचित नहीं हुआ। उसे स्वयं आश्चर्य हो रहा था कि उसने ऐसा प्रश्न किया ही क्यों !···मेरा कोई नहीं !

"लछमी ! रामदास को बुलाओ। अच्छा तो डागडर बाबू, अब आज्ञा दीजिए। आप भी भोजन करके आराम कीजिए। कभी मठ की ओर भी आइएगा। सतगुरु साहेब कहीन है—'दरस परस सतसंग ते छूटे मन का मैल !'"

लछमी हाथ जोड़कर नमस्कार करती है।

ब्राह्मणटोली के लोग बालदेवजी से पूछते हैं, "डागडर बाबू का नौकर तो दुसाध है। और डागडर बाबू कौन जात हैं ? दुसाध का बनाया हुआ खाते है ?"

बोलिए प्रेम से···महतमा गन्ही की जै !

भंडारा समाप्त हो गया। कोई 'तरुटी' नहीं हुई। सबको 'पूर्ण' हो गया। जो भूल-चूक से छूट गए हैं, उनका हिस्सा कल ले जाइएगा।

बालदेवजी अगमू चौकीदार और बिरंची के साथ इसपिताल में ही सोएँगे। आज पहली रात है !

आठ

लछमी का भी तो इस संसार में कोई नहीं !

···जी मेरा कोई नहीं !···लछमी सोचती है, उसका दिल इतना नरम क्यों है ? क्यों वह डाक्टर को देखकर पिघल गई ? यह अच्छी बात नहीं। ·· सतगुरु, मुझे बल दो !

सतगुरु के सिवा कोई भी उसका नहीं। माँ की याद नहीं आती। पसराहा मठ के पास अपनी झोंपड़ी की याद आती है। सुबह होते ही बाबूजी कंधे पर चढ़ाकर मठ पर ले जाते थे। महंथ रामगुसाईं कितना प्यार करते थे—'आ गई लच्छो ! ले, मिसरी खाएगी ? चाह पीयेगी ?' भंडारी एक कटोरे में चाह-चूडा दे जाता था। बाबूजी बैठकर महंथ साहेब के लिए गांजा तैयार करते थे। एक चिलम, दो चिलम, तीन चिलम ! पीते-पीते महंथ साहेब की आँखें लाल हो जाती थीं। कभी-कभी बाबूजी भी थर-थर काँपने लगते थे। भंडारी दही लाकर देता था—'खा लो रामचरन भाई ! नशा टूट जायगा।' बाबूजी को महंथ साहेब बहुत मानते थे। कोई काम नहीं। दिन-भर महंथ साहेब की धूनी के पास बैठे रहो, गांजा तयार करो, चिलम चढ़ाओ। मठ पर ही हमारा खाना-पीना होता था।

गाँव में जब हैजा फैला तो बाबूजी को महंथ साहेब ने कहा—'रामचरन ! तुम मठ पर ही रहो।' उन दिनों, दिन-भर में कभी चिलम ठंढी नहीं होने पाती थी। एक दिन महंथ साहेब का बीजक जल गया। न जाने कैसे चिलम की आग बीजक पर गिर पड़ी ! महंथ साहेब ने रोते हुए कहा था—'रामचरन, साहेब करोध कीहिन हैं, दंड भोगना पड़ेगा। अमंगल होगा।' ···दूसरे ही दिन मठ के एक साधू का पेट-मुँह चलने[1] लगा। तीसरे दिन उस साधू ने देह 'तेयाग' दिया तो महंथ साहेब बीमार पड़े। बाबूजी ने महंथ साहेब की बड़ी सेवा की। शरीर त्यागने के पहले महंथ साहेब ने कहा था—'रामचरन, एक बार आखरी चिलम पिलाओ

१. कै-दस्त होना।

वेटा !' बाबूजी चिलम तैयार करने के लिए धूनी से आग ले ही रहे थे कि धूनी में ही उलटी होने लगी। महंथ साहेब ने शाम को और बाबूजी ने सुबह को काया बदल दिया। भंडारीजी ने दूर से ही बाबूजी का दरसन करा दिया था। भंडारी ने कहा था, 'मरे हुए आदमी के पास नहीं जाना चाहिए !'

"लछमी ! ओ लछमी !"

"आई !" लछमी कुनमुनाती हुई उठती है।···उस दिन बीजक छू-कर कसम खाये थे और आज फिर पुकारने लगे। सतगुरु हो, तुम्हारी बुलाहट कब होगी ? बुला लो सतगुरु अपने पास दासी को !

"लछमी !"

"महंथ साहेब, चित्त को शान्त कीजिए। सतगुरु का ध्यान कीजिए। माया···"

"सब माया है लछमी। लेकिन एक बार पास आओ।"

अंधा आदमी जब पकड़ता है तो मानो उसके हाथों में मगरमच्छ का बल आ जाता है। अंधे की पकड़ ! लाख जतन करो, मुट्ठी टस-से-मस नहीं होगी !···हाथ है या लोहार की 'संड़सी' ! दंतहीन मुंह का दुर्गन्ध ! ···लार ! ···"महंथ साहेब ! महंथ साहेब, सुनिए !" रामदास धूनी के पास ही है। "महंथ साहेब ! अरे रामदास ! रामदास ! जल्दी उठो जी ! महंथ साहेब को क्या हो गया !"

महंथ साहेब को सतगुरु ने अपने पास बुला लिया।

सुबह को सारे गाँव के लोग जमा होते हैं। ···महंथ साहेब सिद्ध पुरुख थे ! इच्छा-मृत्यु हुई है ! रात को बैठकर, गाँव के बूढ़े-बच्चों को खिला-कर आये और रात में ही चोला बदल लिये। दुनिया में ऐसी मरनी सबों को नसीब नहीं होती। गियानी महतमा थे !

रामदास कहता है, "भंडारा से लौटकर जब सरकार आए और आसन पर 'धेयान' लगा के बैठे तो देह से 'जोत' निकलने लगा। हम मसहरी लगाने गये तो इसारे से मना कर दिया। हम धुनी के पास बैठकर देखते

रहे। सरकार के देह का जोत और तेज हो गया और सरकार एकदम बच्चा हो गए। जोत की चमक से हमारी आँखें बन्द हो गईं। हम वहीं धुनी के पास लेट गए। कोठारिनजी जब हल्ला करने लगीं तो आँखें खुलीं…।"

लछमी कुछ नहीं बोलती। …साधुओं को माटी देने की रीत भी नहीं मालूम ? जटा बढा लिया और हाथ में कमंडल ले लिया, हो गए साधू ! …"चरन दास ! पहले बीजक पाठ होगा, तब माटी ! इसके बाद सभी संतन के गोर[1] पर माटी दी जायेगी। इतना भी नहीं जानते ?"

"माया जाल विखंडने सुर गुरु दुख परहरता
सरवे लोक जनाच जेन सततं,
हिया लोकिता…।"
…नमोस्तु सतगुरु साहेब को
चरण कमल धरी शीश !

सबसे पहले रामदास माटी देता है ! उसके बाद लछमी दासिन मुट्ठी-भर माटी महंथ साहेब की सफेद चादर पर डाल देती है। फिर फूलों की माला। साधू लोग कुदाली से गोर में मिट्टी भरने लगते हैं। चरनदास कहता है, "महंथ साहेब को लगाकर दस महंथों को माटी दिया है ! माटी देना भी नहीं जानेंगे ?"

गाँव के 'कीरतनियाँ लोग' समदाउन शुरू करते हैं—

"…हाँ रे, बडा रे जतन से सुगा एक हे पोसल,
माखन दुधवा पिलाये।
हाँ रे, से हो रे सुगना बिरिछी चढि बैठल
पिंजडा रे धरती लोटाये…।"

गोर के बाद रामदास खँजड़ी बजा-बजाकर 'निरगुन' गाता है—

"कँहवाँ से हंसा आओल, कँहवाँ समाओल हो राम,
कि आहो रामा हो, कौन गढ कयल मोकाम कवन लपटाओल
हो राम !"

१. समाधि।

डिम डिमिक डिमिक···

"सुर पुर से हंसा आओल नर पुर समाओल हो राम,
कि आहो रामा हो, काया गढ़ कयला मोकाम मायाहि
लपटाओल हो राम !"

"जै हो, सतगुरु की जै हो ! महंथ साहेब की जै हो ! सब संतन की जै हो !"

मठ सूना लगता है। जीवन में आज पहली बार लछमी समझ रही है महंथ साहेब की कीमत को। ···नेत्रहीन हो गए थे, कुछ देख नहीं सकते थे, बिना रामदास के सहारा के एक पग चल भी नहीं सकते थे, किन्तु ऐसा लगता था कि मठ भरा हुआ है। बिना महंथ के मठ और बिना प्राण के काया !

काँचहि बाँस के पिंजड़ा,
जा में दियरो न बाती हो,
अरे हंसा उड़ल आकाश,
कोई संगो न साथी हो !

···जो भी हो, संसार में सबसे बढ़कर लछमी को ही प्यार करते थे महंथ साहेब। चढ़ती जवानी में, सतगुरु साहेब की दया से, माया को जीतकर ब्रह्मचारी रहे। बुढ़ौती में तो आदमी की इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती हैं; माया के प्रबल घात को नहीं सँभाल सकती हैं। इसीलिए तो साधू-ब्रह्मचारी लोग बुढ़ापे में ही माया के बस में हो जाते हैं। यह तो महंथ साहेब का दोख नहीं। उसका भाग ही खराब है। यदि वह नहीं होती तो महंथ साहेब सतगुरु के रास्ते से नहीं डिगते। यह ध्रुव सत्त है। दोख तो लछमी का है। एक ब्रह्मचारी का धरम भ्रष्ट करने का पाप उसके माथे है। अब उसका अपना कौन है ? कोई नहीं !···

"महंथ साहेब ! महंथ साहेब ! हमको छोड़कर आप कहाँ चले गए ? दासी के अपराध को छिमा करना गुरु ! जीवन में तुम्हारी कोई सेवा सुखी मन से नहीं कर सकी। मरने के समय भी तुमको सुख नहीं दे सकी प्रभू !

···क्षिमा करो !"

जिन्दगी-भर के जमे हुए आँसू आज निकल जाना चाहते हैं, रोके रुकते नहीं।

"जयहिन्द कोठारिन जी !"

"दया सतगुरु के ! बालदेवजी, बैठिए !"

बालदेवजी सब भूल गए। लछमी को सांत्वना देने के लिए रास्ते में जितनी बातें सोची थीं, दोहा, कवित्त, सब भूल गए। उसे मायेजी की याद आ जाती है। मायेजी का वह रूप···'गंगा रे जमुनवाँ की धार नय-नवाँ से नीर बही।'

बालदेवजी की गढ़ी हुई डाढ़स की बाँध इस तेज धारा में नहीं टिक सकेगी। बालदेवजी की भी आँखें छलछला जाती हैं। फल्गू में भी बाढ़ आती है। वह दिल को मजबूत करके कहते हैं, "कोठारिनजी, सब परमेसर की माया है। हानि-लाभ जीवन-मरन जस-अपजस विधि हाथ। ···हम तो सूरज उगने के पहले ही डागडर साहेब के साथ बाहर निकल गए थे। डागडर साहेब को गाँव की चौहद्दी दिखलानी थी। दखिन संथालटोली से सुरु करके, दुसाधटोली तक गली-कूची, अगवारा-पिछवारा देखते-देखते दस बज गए। वहीं मालूम हुआ कि महंथ साहेब इंतकाल कर गए हैं। डागडर साहेब का भी मन उदास हो गया। वे इसपिताल लौट गए। बाकी टोलों को कल देखेंगे। ···आज रौतहट हाट में ढोल भी दिला देना है—इसपिताल खुल गया है। शोमन मोची को भेजकर हम यहाँ आये हैं।"

लछमी के आँसू थम चुके थे। बालदेवजी ठीक समय पर आ गए। महंथ साहेब बालदेवजी को बहुत प्यार करने लगे थे। पाँच-सात दिनों की जान-पहचान में ही महंथ साहेब ने बालदेवजी को अच्छी तरह पहचान लिया था। रुपैया को बजाकर देखा जाता है और आदमी को एक ही बोली से पहचाना जाता है। महंथ साहेब कहते थे, "सुद्ध विचार का आदमी है। संसकार बहुत अच्छा है।" इसके पहले महंथ साहेब ने किसी पर इतना विश्वास नहीं किया था। मठ में रोज तरह-तरह के साधू-

ी आते थे। महंथ साहेब रोज यह कहना नहीं भूलते थे—'लछमी ! ागों का कोई विसवास नहीं। रमता लोग हैं। इन लोगों से ज्यादे ा-जुलना अच्छा नहीं !' नई उमर के साधुओं को पैर की आहट से पहचान लेते थे। उनके अंतर की दृष्टि बड़ी तेज थी। पिछले साल न सत्संग में एक नौजवान साधू आकर बैठ गया। रात में आया राहछत्तर[1] जा रहा था।···उसके नैन बड़े चंचल ! सत्संग में बैठ-छमी की ओर टकटकी लगाकर देखने लगा। महंथ साहेब 'साहेब सुना रहे थे। आखर[2] कहते-कहते अचानक रुक गए। बोले—'हो ख्या के नौजवान उदासी जी ! अरे साहेब, बचन पर धेयान दीजै लछमी के सरीर पर क्या नैन गड़ाए हैं ? माटी का सरीर तो मिथ्या हेव बचन सत्त !'···बेचारा उदासी बिना 'बालभोग' किये ही आसन र चला गया था। लेकिन, बालदेवजी पर उनका बड़ा विश्वास था। पल तेयागी यही लोग हैं लछमी !'

बालदेवजी को देखते ही लछमी का दुख आधा हो गया। बालदेवजी हैं, "बड़े भाग से ऐसे लोगों का दरसन मिलता है। हमको तो दरसन , लेकिन सेवा का औसर नहीं मिला। हमारा अभाग है···।"

"बालदेवजी, आप तो दास हैं ?"

"जी ! मेरी माँ भी दास थी। मांस-मछली छूती भी नहीं थी।"

"तब तो आप 'गरभदास' हैं। फिर कंठी क्यों नहीं ले लेते ?"

बालदेवजी ज़रा होठों पर हँसी लाकर कहते हैं, "कोठारिनजी, असल है मन। कंठी तो बाहरी चीज है।"

दूसरा साधू होता तो कंठी को बाहरी चीज कहते सुनकर गुस्सा हो । रामदेव गुसाईं होते तो तुरत चिमटा लेकर खड़े हो जाते, गाली-ज करने लगते। लेकिन लछमी शांत होकर कहती है, "कंठी बाहरी नहीं है बालदेवजी। भेख है यह। आप विचारकर देखिए। जैसे

वराहक्षेत्र, एक तीर्थस्थान।
पंक्ति।

आपका यह खद्धड़ कपड़ा है। मलमल और गारकीन कपड़ा पहननेवाले मन से भले ही महातमाजी के पंथ को मानें, लेकिन आप उन्हें सुराजी तो नहीं कहिएगा ?"

लछमी की बातों का जवाब देना सहज नहीं। जब-जब लछमी से बातें होती हैं, बालदेवजी को नई बातों की जानकारी होती है।

"आप कहती हैं तो ले लेंगे कंठी।"

"किससे लीजिएगा ?"

"आप ही दे दीजिए।"

लछमी हँस पड़ती है। शोकाकुल वातवरण में लछमी की मुस्कराहट जान डाल देती है।···कितने सूधे हैं बालदेवजी ! मुझे गुरु बनाना चाहते हैं !

"नहीं बालदेवजी, मैं आपको आचारजजी से कंठी दिलाऊँगी। आचारजजी काशीजी में रहते हैं। मैं आपको अपना बीजक देती हूँ। इसका रोज पाठ कीजिए। बीजक पाठ से मन निरमल होता है, अंतर की जोति खुलती है।"

···बीजक ! एक छोटी सी पोथी ! 'गेयान' का भण्डार ! बालदेवजी का दिल धक-धक कर रहा है। लछमी कहती है, "सब हाथ का लिखा हुआ है। उस बार काशीजी से एक विद्यार्थीजी आये थे। बड़े जतन से लिख दिया था। मोती जैसे अच्छर हैं।"

बीजक से भी लछमी के देह की सुगन्धी निकलती है। इस सुगन्ध में एक नशा है। इस पोथी के हरेक पन्ने को लछमी की उँगलियों ने परस किया है···'पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढाई आखर प्रेम का पढ़ा सो पंडित होय।'

लछमी को देखने से ही मन पवित्र हो जाता है।

नौ

डॉक्टर प्रशान्तकुमार !

जात ?···

नाम पूछने के बाद ही लोग यहाँ पूछते हैं—जात ? जीवन में बहुत कम लोगों ने प्रशान्त से उसकी जाति के बारे में पूछा है। लेकिन यहाँ तो हर आदमी जाति पूछता है। प्रशान्त हँसकर कभी कहता है—"जाति ? डाक्टर !"

"डाक्टर ! जाति डाक्टर ! बंगाली हैं या बिहारी ?"

"हिन्दुस्तानी," डाक्टर जवाब दे देता है।

जाति बहुत बड़ी चीज है। जात-पात नहीं मानने वालों की भी जाति होती है। सिर्फ हिन्दू कहने से ही पिंड नहीं छूट सकता। ब्राह्मण हैं ? ···कौन ब्राह्मण ! गोत्र क्या है ? मूल कौन है ?···शहर में कोई किसी से जाति नहीं पूछता। शहर के लोगों की जाति का क्या ठिकाना ! लेकिन गाँव में तो बिना जाति के आपका पानी नहीं चल सकता।

प्रशान्त अपनी जाति छिपाता है। सच्ची बात यह है कि वह अपनी जाति के बारे में खुद नहीं जानता। यदि उसे अपनी जाति का पता होता तो शायद उसे बताने में झिझक नहीं होती। तब शायद जाति-पाति के भेद-भाव पर से उसका भी पूर्ण विश्वास नहीं हटता। तब शायद ब्राह्मण कहने में वह गर्व अनुभव करता।

हिन्दू विश्वविद्यालय में नाम लिखाने के दिन भी प्रशान्त को कुछ ऐसी ही समस्याओं का सामना करना पड़ा था। रात-भर वह जगा रह गया था। ···प्रशान्तकुमार, पिता का नाम अनिलकुमार बनर्जी, हिन्दू, ब्राह्मण। सब झूठ ! बेचारा डॉ० अनिलकुमार बनर्जी, नेपाल की तराई के किसी गाँव में अपने परिवार के साथ सुख की नींद सो रहा होगा। प्रशान्तकुमार नामक उसका कोई पुत्र हिन्दू विश्वविद्यालय में नाम लिखा रहा है, ऐसा वह सपना भी नहीं देख सकता।···लेकिन प्रशान्त अपने

तथाकथित पिता डॉ० अनिलकुमार को जानता है। मैट्रिक परीक्षा के लिए फार्म भरने के दिन डॉ० अनिल उसके पिता के रिक्तकोष्ठ में आकर बैठ गए थे।

बचपन से ही वह अपने जन्म की कहानी सुन रहा है। घर की नौकरानी, बाग का माली और पड़ोस का हलवाई भी उसके जन्म की कहानी जानता था। लोग बरबस उसकी ओर उँगली उठाकर कहने लगते थे—'उस लड़के को देखते हो न? उसे उपाध्यायजी ने कोशी नदी में पाया था। बंगालिन डाक्टरनी ने पाल-पोसकर बड़ा किया है।' फिर लोगों के चेहरों पर जो आश्चर्य की रेखा खिंच जाती थी और आँखों में जो करुणा की हल्की छाया उतर आती थी, उसे प्रशान्त ने सैकड़ों बार देखा है।··· एक लावारिस लाश को भी लोग वैसी ही दृष्टि से देखते हैं।

प्रशान्त अज्ञात कुलशील है। उसकी माँ ने एक मिट्टी की हाँडी में डालकर बाढ से उमड़ती हुई कोशी मैया की गोद में उसे सौंप दिया था। नेपाल के प्रसिद्ध उपाध्याय परिवार ने, नेपाल सरकार द्वारा निष्कासित होकर, उन दिनों सहरसा अंचल में आदर्श आश्रम की स्थापना की थी। एक दिन उपाध्यायजी बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए रिलीफ की नाव लेकर निकले, झाऊ की झाड़ी के पास एक मिट्टी की हाँडी देखी—नई हाँडी। उनकी स्त्री को कौतूहल हुआ, 'जरा देखो न, उस हाँडी में क्या है?' नाव झाड़ी के पास पहुँची, पानी के हिलोर से हाँडी हिली और उससे एक ढोढ़ा साँप गर्दन निकालकर 'फों-फों' करने लगा। साँप धीरे-धीरे पानी में उतर गया और हाँडी से नवजात शिशु के रोने की आवाज आई, मानो माँ ने थपकी देना बन्द कर दिया।···बस यही उसके जन्म की कथा है, जिसे हर आदमी अपने-अपने ढंग से सुनाता है।

आदर्श आश्रम में एक दुखिया युवती थी—स्नेहमयी। स्नेहमयी को उसके पति डॉ० अनिलकुमार बनर्जी ने त्यागकर एक नेपालिन से शादी कर ली थी। उपाध्यायजी के आदर्श आश्रम में रहकर वह हिरण, खरगोश, मयूर और बन्दर के बच्चों पर अपना स्नेह बरसाती रहती थी।

तरह-तरह के पिंजड़ों को लेकर वह दिन काट लेती थी। उस दिन जब उपाध्याय दम्पति ने उसकी गोद में सोया हुआ शिशु दिया, तो वह आनन्द-विभोर होकर चीख उठी थी—'प्रशान्त ! ···आमार प्रशान्त !' उस दिन से प्रशान्त स्नेहमयी का एकलौता बेटा हो गया। कुछ दिनों के बाद नेपाल सरकार ने निष्कासन की आज्ञा रद्द करके उपाध्याय परिवार को नेपाल बुला लिया—आदर्श आश्रम के पशु-पक्षियों के साथ। स्नेहमयी और प्रशान्त भी उपाध्याय परिवार के ही सदस्य थे। उपाध्यायजी ने नेपाल की तराई के विराटनगर में आदर्श-विद्यालय की स्थापना की। स्नेहमयी उसी स्कूल में सिलाई-कटाई की मास्टरनी नियुक्त हुई।

स्नेहमयी के स्नेहांचल में पलते हुए किशोर प्रशान्त पर कर्मठ उपाध्याय-परिवार की रोशनी नहीं पड़ती तो वह सितार के झलार और रवीन्द्र-संगीत के बसंत-बहार के दायरे से बाहर नहीं जा सकता था। उपाध्यायजी का ज्येष्ठ पुत्र विहार विद्यापीठ का स्नातक था और मँझला देहरादून के एक प्रसिद्ध अँग्रेजी स्कूल का विद्यार्थी। पुत्री शांतिनिकेतन में शिक्षा पा रही थी। छुट्टियों में जब वे एक जगह इकट्ठे होते तो शांतिनिकेतन में शिक्षा पाने वाली बहन चर्खा चलाना सीखती, विद्यापीठ के स्नातक आश्रम भजनावली की पंक्तियों पर रागिन्द्रिक सुर चढ़ाते और अंग्रेजी स्कूल का स्टूडेण्ट सेबादल के कवायदों के हिन्दी कमाण्ड के वैज्ञानिक पहलू पर बहस करता—'एटेन्शन में जो फ़ोर्स है वह 'सावधान' में नहीं ! एटेन्शन सुनते ही लगता है कि दर्जनों जोड़े बूट चटख उठे।'

ऐसे ही वातावरण में प्रशान्त के व्यक्तित्व का विकास हुआ।

हिन्दू विश्वविद्यालय से आइ० एस-सी० पास करने के बाद वह पटना मेडिकल कॉलेज में दाखिल हुआ। माँ की इच्छा थी कि वह डाक्टर बने। लेकिन अपने प्रशान्त को वह डाक्टर के रूप में नहीं देख पाई। काशीवास करते-करते, काशी की किसी गली में वह हमेशा के लिए खो गई !·· एक बार लाहौर से प्रशान्त के नाम पर एक मनिआर्डर आया था—विजय का आशीर्वाद लेकर ! भेजने वाली थी—श्रीमती स्नेहमयी चोपड़ा।···

एक माँ ने जन्म लेते ही कोशी मैया की गोद में सौंप दिया और दूसरी ने जनसमुद्र की लहरों को समर्पित कर दिया !

डाक्टरी पास करने के बाद जब वह हाउस सर्जन का काम कर रहा था, १९४२ का देशव्यापी आंदोलन छिड़ा। नेपाल मे उपाध्याय परिवार का बच्चा-बच्चा गिरफ्तार किया जा चुका था। अंग्रेजी सरकार को पूरा पता था कि उपाध्याय परिवार हिन्दुस्तान के फ़रार नेताओं की सिर्फ़ मदद ही नहीं करता है, गुप्त आंदोलन को सक्रिय रूप से चला भी रहा है। मँझला पुत्र बिहार की सोशलिस्ट पार्टी का कार्यकर्ता था, वह पहले ही नजरबंद हो गया था। प्रशान्त भी तो उपाध्याय परिवार का था, वह कैसे बच सकता था; उसे भी नजरबंद कर लिया गया। जेल में विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं और कार्यकर्ताओं के निकट सम्पर्क में रहने का मौका मिला।" सभी दल के लोग उसे प्यार करते थे।

१९४६ में जब कांग्रेसी मंत्रिमंडल का गठन हुआ तो एक दिन वह हेल्थ मिनिस्टर के बँगले पर हाज़िर हुआ। वह पूर्णिया के किसी गाँव में रहकर मैलेरिया और काला आज़ार के संबंध में रिसर्च करना चाहता है। उसे सरकारी सहायता दी जाय। मिनिस्टर साहब ने कहा था—"लेकिन सरकार तुमको विदेश भेज रही है। स्कालरशिप···"

"जी, मैं विदेश नहीं जाऊँगा," पूर्णिया और सहरसा के नक्शे को फैलाते हुए उसने कहा था। "मैं इसी नक्शे के किसी हिस्से में रहना चाहता हूँ। यह देखिए, यह है सहरसा का वह हिस्सा जहाँ हर साल कोशी का तांडव नृत्य होता है। और यह पूर्णिया का पूर्वी अंचल, जहाँ मैलेरिया और काला आज़ार हर साल मृत्यु की बाढ़ ले आते हैं।"

मिनिस्टर साहब प्रशान्त को अच्छी तरह जानते थे। इस विषय पर प्रशान्त से तर्क में जीतना मुश्किल है। "लेकिन सवाल यह है कि···"

"सवाल-जवाब कुछ नहीं। मुझे किसी मैलेरिया सेण्टर मे ही भेज दीजिए !"

"मैलेरिया सेण्टर में ? लेकिन तुम एम० बी० बी० एस० हो और

मैलेरिया-काला आजार सेण्टरों में एल० एम० पी० डाक्टर लिये जाते हैं।"

"जब तक मैं यह रिसर्च पूरा नहीं कर लेता, मैं कुछ भी नहीं हूँ। मेरी डिग्री किस काम की ?"

बहुत मेहनत से नई और पुरानी फाइलों को उलटकर और पूर्णिया डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन से लिखा-पढ़ी करके मिनिस्टर साहब ने मि० मार्टिन की दी हुई ज़मीन के बारे में पता लगाया। बीस बाईस वर्ष पहले मिनिस्टर साहब पूर्णिया में ही वकालत करते थे। पगले मार्टिन को उन्होंने देखा था।

अंत में केन्द्रीय सरकार से सलाह-परामर्श के बाद एक दिन प्रेस नोट में यह खबर प्रकाशित हुई कि पूर्णिया जिले के मेरीगंज नामक गाँव में मैलेरिया स्टेशन खोला गया है (···दि स्टेशन विल अण्डरटेक मैलेरिया ऐण्ड काला आजार इन्वेस्टिगेशन इन ऑल ऐस्पेक्ट्स—प्रिवेन्टिव, क्यूरेटिव ऐण्ड इकोनामिक)।

प्रशान्त के इस फैसले को सुनकर मेडिकल कालेज के अधिकारियों, अध्यापकों और विद्यार्थियों पर तरह-तरह की प्रतिक्रिया हुई। मशहूर सर्जन डॉ० पटवर्धन ने कहा, "बेवकूफ है !"

ई० एन० टी० के प्रधान डाक्टर नायक बोले, "पीछे आँखें खुलेंगी।"

मेडिसन के डाक्टर तरफदार की राय थी, "भावुकता का दौरा भी एक खतरनाक रोग है। मालूम ?"

लेकिन प्रिंसिपल साहब खुश थे, "तुमसे यही उम्मीद थी। मैं तुम्हारी सफलता की कामना करता हूँ। जब कभी तुम्हें किसी सहायता की आवश्यकता हो, हमें लिखना।"

प्रशान्त का गला भर आया था।

मद्रास के मेडिकल गज़ट ने सम्पादकीय लिखकर डॉ० प्रशान्त का अभिनन्दन किया।

···और जिस दिन वह पूर्णिया आ रहा था, स्टीमर खुलने में सिर्फ पाँच मिनट की देरी थी, उसने देखा, एक युवती सीढ़ी से जल्दी-जल्दी

उतर रही है। कौन है ? ममता ! हाँ, ममता ही थी।

आते ही बोली, "आखिर तुम्हारा भी माथा खराब हो गया ! तुमने तो कभी बताया नहीं। बलिहारी है तुम्हारी !···ओह, प्रशान्त, तुम कितने बड़े हो, कितने महान् !···मैं तो अभी आ रही हूँ बनारस से। आते ही चुन्नी ने तुम्हारी चिट्ठी दी।"

रूमाल से फूल और बेलपत्र निकालकर प्रशान्त के सिर से छुलाते हुए ममता ने कहा था, "बाबा विश्वनाथजी का प्रसाद है। बाबा विश्वनाथ तुम्हारा मंगल करें। पहुँचते ही पत्र देना।"

दस

डॉक्टर पत्र लिख रहा है—

"ममता,

"तुमने कहा था, पहुँचते ही पत्र देना। पहुँचने के एक सप्ताह बाद पत्र दे रहा हूँ। तुम्हारे बाबा विश्वनाथ ने मेरे आने से पहले ही अपने एक दूत को भेज दिया है। प्यारू सचमुच देवदूत है। इसलिए तुमको चिंता करने की आवश्यकता नहीं। सात ही दिनों में वह दो बार रूठ चुका है—'कहने को तो डाक्टर हैं, मगर समय पर नहीं खाने-पीने से देह पर कितना खराब असर होता है नहीं जानते ?' इसीसे प्यारू का पूरा परिचय तुम्हें मिल गया होगा।

"यह एक नई दुनिया है। इसे वन्य देहात कह सकती हो। गाँव का चौकीदार सप्ताह में एक बार हाजिरी देने थाने पर जाता है; वही मेरी डाक लायेगा और ले जायेगा।

"काम शुरू कर दिया है। सुबह सात बजे से ही रोगियों की भीड़ लग जाती है। अभी जनरल सर्वे कर रहा हूँ; खून लेकर परीक्षा कर रहा हूँ। प्यारू कहता है, यहाँ कौओं को भी मैलेरिया होता है।

"···यहाँ गड्ढों और तालाबों में कमल के पत्ते भरे रहते हैं। कहते हैं, फूलों के मौसम में छोटी-छोटी गड़हिया भी किस्म-किस्म के कमल और कमलिनी से भर जाती है।···लेकिन यहाँ के लोगों को तुम लोटस ईटर्स नहीं कह सकती हो! गड्ढों की परीक्षा कर रहा हूँ।···यहाँ की धरती बारहों महीने भीगी रहती है शायद।

"गाँव के लोग बड़े सीधे दीखते हैं; सीधे का अर्थ यदि अपढ़, अज्ञानी और अंधविश्वासी हो तो वास्तव में सीधे हैं वे। जहाँ तक सांसरिक बुद्धि का सवाल है, वे हमारे और तुम्हारे जैसे लोगों को दिन में पाँच बार ठग लेंगे। और तारीफ यह है कि तुम ठगी जाकर भी उनकी सरलता पर मुग्ध होने के लिए मजबूर हो जाओगी। यह मेरा सिर्फ सात दिन का अनुभव है। संभव है, पीछे चलकर मेरी धारणा गलत साबित हो। मिथिला और बंगाल के बीच का यह हिस्सा वास्तव में मनोहर है। औरतें साधारणतः सुन्दर होती हैं, उनके स्वास्थ्य भी बुरे नहीं।"

"डाक्टर साहब!"

"कौन?"

"विश्वनाथप्रसाद।"

"आइए! कहिए क्या है?"

"डाक्टर साहब, जरा एक बार मेरे यहाँ चलिए। मेरी लड़की बेहोश हो गई है।"

"बेहोश! क्या उम्र है? इससे पहले भी कभी बेहोश हुई थी?"

"जी! दो-तीन बार और ऐसा ही हुआ था। उम्र? यही सोलह सत्रह साल धर लीजिए। जरा जल्दी···।"

"चलिए।"

बंद कमरे में एक चारपाई पर, नीली रजाई में लिपटी हुई युवती का गोरा मुखड़ा बाहर है। बाल खुले और बिखरे हुए हैं। आँखें बंद हैं। कोठरी में लालटेन की मद्धिम रोशनी हो रही है—रोशनी कम और धुआँ ज्यादा।

डाक्टर खिड़कियाँ खोलने के लिए कहता है और जेब से टार्च निकालकर युवती के चेहरे पर रोशनी देता है।···चेहरा ठीक है। साँस ?···ठीक है। नाड़ी भी दुरुस्त है।

डाक्टर आँखों की पलकों को उलटता है, मानो कमल की पँखड़ियाँ हों—आइट !·· पेट ? कब्ज तो नहीं ?

कोई जवाब नहीं देता है। घूँघट काढ़े खड़ी औरतों के घूँघट आपस में मिलते हैं। एक अधेड़ स्त्री आगे बढ़ आती है। युवती की माँ है। "जी, कब्जियत नहीं है।"

घर की नौकरानी पर्दा नहीं करती है। कहती है, "डागडर बाबू, लर लगाकर देखिए न !"

लर, अर्थात् स्टेथस्कोप। यहाँ के लोगों का विश्वास है कि इससे डाक्टर रोगी के अन्दर की सारी बातों को जान लेता है—क्या खाया है, पेट में पचा है या नहीं, सब।

"सूई दीजिएगा ?"

"हूँ !"

डाक्टर सिरिंज ठीक करता है। युवती आँखें खोल देती है—

"सूई ?···नहीं, सूई नहीं। माँ ! अरे बाप···!"

···अच्छा, सूई नहीं देंगे। कैसी तबियत है ?···अच्छी बात। हूँ ! क्यों बेहोश हो गई ? हाँ, बेहोशी कैसे हुई ? डर लगा था। हूँ ! काहे का डर लगा था ?···तब ? इसके बाद ? देह घूमने लगा। ठीक है। अब कैसी है ? डर तो नहीं लगता ? दवा भेज दूंगा, अब डर नहीं लगेगा।···

"दवा ?···दवा नहीं। माँ, मैं दवा नहीं पिऊँगी।"

"वाह, सूई भी नहीं और दवा भी नहीं ?···मीठी दवा ?"

सभी हँस पड़ते हैं। युवती के मुरझाये हुए लाल होठों पर मुस्कराहट दौड़ जाती है। आँखों की पलकें ज़रा उठकर मानो डाक्टर को डाँट देती हैं—"हट ! दवा भी कहीं मीठी होती है !"

बाहर आकर डाक्टर तहसीलदार से कहता है, "घबराने की बात नहीं, दवा भेज देता हूँ। इसके पहले कितनी देर तक बेहोश रहती थीं ?"

"करीब एक घंटा। जोतखीजी से एक बार जन्तर बनवा के दिया। झाड़-फूंक भी करवाकर देखा। डाक्टर साहब, बस यही मेरा बेटा, यही मेरी बेटी···सब कुछ यही है।"

"ठीक हो जायेंगी।"

सेण्टर में आकर डाक्टर सोचता है, क्या दिया जाय ! मीठी दवा ! कार्मिनेटिव मिक्श्चर या ब्रोमाइड !···"अजी तुम्हारा क्या नाम है ?"

"मेरा नाम ? जी, नाम रनजीत।"

"तहसीलदार साहब के यहाँ कितने दिनों से नौकरी करते हो ?"

"बहुत दिन से। लड़कैयाँ से।···एक ठो बीड़ी है तो दीजिए दागदर बाबू।"

"प्यारू, रनजीत को बीड़ी पिलाओ।"

प्यारू बीड़ी दियासलाई दे जाता है। बीड़ी सुलगाकर रनजीत अपने आप कहता है, "दागदर बाबू ! तहसीलदार को दिन-दुनियाँ में बस यही एक बेटी है। कितना मानत मनौती के बाद कमला मैया ने निहारा भी तो बेटी ही हुई। मगर···!"

रनजीत बीड़ी की राख झाड़कर चुप हो जाता है। डाक्टर ने लक्ष्य किया है, रनजीत ने 'मगर' पर आकर पूर्ण विराम दे दिया है।

"मगर क्या ?"

"यही देखिए न ! तीन जगह बातचीत चली, मगर···पहली जगह से तो पान देने की बात भी पक्की हो गई थी। ठीक तिलक-पान के दिन लड़के की माँ मर गई। दूसरी जगह बातचीत ठीक हुई तो उसके घर में आग लग गई। तीसरे लड़के को 'मैया' हो गया, इन्तकाल हो गया। अब कोई लड़का वाला तैयार ही नहीं होता है। हजार, दो हजार, पाँच हजार रुपैया भी कबूलते हैं, मगर···। आखिर में एक 'पछवरिया कैथ' को घरजमैया रखने के लिए लाये, बस उसी दिन से कमली को मिरगी

आने लगी। लोग तो कहते हैं कि कमला मैया नहीं चाहती हैं कि कमली की सादी हो। कमला मैया भी कुमारी ही थी न! अब आप लगे हैं। किसी तरह कमली दैया को आराम कर दीजिए डागदर बाबू। जो बक्सीस मांगिएगा, तहसीलदार दे देंगे।"

"देखो रनजीत, तीन खुराक दवा है। मीठी दवा है। तुम्हारी कमली दैया आराम हो जायेंगी। कल सुबह फिर एक बार खबर देना। समझे!"

"तीन खोराक! खाएगी क्या?"

"अभी? अभी रोटी दूध।"

"रनजीत!" एक आदमी दौड़ा हुआ आता है।

"कौन रामदेल, क्या है?"

"कमली दैया फिर बेहोस हो गई। तहसीलदार साहेब कहिन हैं कि डागडर बाबू फिर एक बार जरा तकलीफ करें।"

डाक्टर घड़ी देखता है।···नौ बजकर दस मिनट। कुछ ही देर में समाचार होंगे। डाक्टर कुछ सोचकर कहता है, "रनजीत! वह बक्सा उठाओ!···ले चलो।"

"बेतार का खबर?"

"हाँ, तुम्हारी कमली दैया का इलाज बेतार से ही होगा।"

कमला फिर पहले की तरह बेहोश पड़ी हुई है। उसकी आंखें बन्द हैं; बाल बिखरे हुए हैं। डाक्टर को रोग का निदान मिल गया है। वह अपने बैग से शीशी, सिरिंज वगैरह निकालता है।

"सूई? सूई नहीं।" कमला फिर होश में आती है।

"बगैर सूई के आपका राग आराम नहीं होगा।" डाक्टर सिरिंज ठीक करता है।

"दवा दीजिए डाक्टर साहब! मैं सूई नहीं लूंगी।"

"फिर डर लगा था?"

"हाँ।"

"रनजीत, दवा की शीशी कहाँ है ? लाओ, बक्सा यहाँ लाकर रखो।···हाँ, पी लीजिए।···ठीक है। कैसी है दवा ? मीठी है न ?"

डाक्टर पोटबल रेडियो को खोलकर मीटर ठीक करता है—"यह ऑल इण्डिया रेडियो है। रात के सवा नौ बजे हैं। अब आप हिन्दी में समाचार सुनिए···।"

"डर लगता है। माँ···!"

"देखिए, डर की कोई बात नहीं। सुनिए···।"

"मुझे उठा दो माँ !"

"उठिए मत। लेटी रहिए।"

"···अब आप सवितादेवी से एक मैथिली लोकगीत सुनिए !"

माइगे, हम ना बियाहेब अपन गौरा के
जौं बुढ़वा होइत जमायगे माई !

"ओ माँ !" कमला खिलखिलाकर हँस पड़ती है, "शादी का गीत हो रहा है।"

हम ना बियाहेब अपन गौरा के···

कोठरी और आँगन में घूँघट काढ़े औरतों की भीड़ लग जाती है। कमला पर ब्रोमाइड का असर हो रहा है, उसकी आँखों में नींद झाँक रही है।

डाक्टर लौटकर खत को पूरा करने बैठ जाता है। सुबह सात बजे से ही रोगियों की भीड़ लग जाती है। अगमू चौकीदार कल हाजिरी देने जायगा। पाँच बजे भोर को ही आकर वह पुकारेगा। डाक्टर लिखता है—

"पत्र अधूरा छोड़कर एक केस देखने गया था। केस अजीब है। केस-हिस्ट्री और भी दिलचस्प है। तुम्हारी शीला रहती तो आज खुशी से नाचने लगती; हिस्टीरिया, फ़ोबिया, काम-विकृति और हठ-प्रवृत्ति जैसे शब्दों की झड़ी लगा देती। शीला से भेंट हो तो कहना—मैंने अपने पोर्टेबल रेडियो से उसके दिमाग को झकझोरकर दूसरी ओर करने की चेष्टा की है।···"

ग्यारह

नहीं तोरा आहे प्यारी तेग तरवरिया से
नही तोरा पास मे तीर जी !···

एक सखी ने पूछा कि हे सखी, तुम्हारे पास में न तीर है न तलवार।

···नहीं तोरा आहे प्यारी तेग तरवरिया मे
कौनहि चीजवा से मारलू बटोहिया के
धरती लोटावेला बेपीर जी ई ई ई !···

यह सुनकर जो औरत सदाब्रिज पर मोहित थी, बोली—

···सासू मोरा मरे हो, मरे मोरा बहिनी से,
मरे ननद जेठ मोर जी !
मरे हमार सब कुल पलिवरवा से,
फसी गइली परेम के डोर जी !···

इतना कहकर वह सदाब्रिज के पास आई और पानी पिलाकर प्रेम की बातें करने लगी।···

···आजु के रतिया हो प्यारे, यही बितओ जी !

तन्त्रिमाटोली में सुरंगा सदाब्रिज की कथा हो रही है। मँहगूदास के घूर के पास लोग जमा हैं। पुरैनियाँ टीसन से एक मेहमान आया है, रेलवे में काज करता है। तन्त्रिमाटोली के लोग कहते हैं—खलासीजी ! खलासीजी सरकारी आदमी हैं। खलासीजी यदि लाल पत्तखा दिखला दें तो डाकगाड़ी भी रुक जाय। रुकेगी नहीं ? लाल पत्तखा देखते ही रेलगाड़ी रुक जाती है। लाल ओढ़ना ओढकर गाड़ी पर चढ़ने जाओ तो !···गाड़ी रुक जायगी और ओढ़ना जप्त हो जायगा। खलासीजी बहुत गुनी आदमी हैं। पक्का ओझा हैं। चक्कर पूजते हैं। भूत-प्रेत को पेड़ में काँटी ठोंककर बस में करते हैं। बाँझ निपुत्तर को तुकताक[1] कर देते हैं। कुमर विज्जैभान, लोरिक और सुरंगा सदाब्रिज का गीत जानते हैं। गला कितना

१. टोटका।

तेज है !···उस बार सुराजी हूलमाल[1] में खलासीजी ने लिख दिया था—'बैगनवाड़ी के जमींदार के लड़के ने रेल का लैन उखाड़ा है ।' बस, फाँसी हो गई ! हैकोठ और नन्दन तक फाँसी बहाल रही ।···लेकिन मँहगूदास को कौन समझावे ? बेचारे खलासीजी एक साल से दौड़ रहे हैं मँहगूदास की देवा बेटी फुलिया से चुमौना[2] की बातचीत पक्की करने के लिए । हर बार खलासीजी झोरी में मोरंगिया (नेपाली) गाँजा लाते हैं, तन्त्रिमाटोली के पंचों को पिलाते हैं, सुरंगा सदाब्रिज गाते हैं, गाँव के बीमार लोगों को झाड़-फूँक देते हैं । उस बार उचितदास की डेरावाली को तुकताक कर दिया, मरने के चार दिन पहले बूढ़ा उचितदास सन्तान का मुँह देख गया ।···लेकिन मँहगूदास को कौन समझावे ? फिर, खलासीजी लेन-देन की बात भी करते हैं । एक कोड़ी नगद देंगे, जाति बिरादरी को एक साम भोज कबूलते हैं । और क्या चाहिए ? सरकारी आदमी जमाई होगा । कभी तीरथ करने के लिए जायँगे तो रेल में टिकस भी नहीं लगेगा ।

रमजूदास की स्त्री तन्त्रिमाटोली की औरतों की सरदारिन है । हाट-बाजार जाने के समय, मालिकों के खेतों में धान रोपने और काटने के समय और गाँव में शादी-ब्याह के समय टोले-भर की औरतें उसकी सरदारी में रहती हैं । राजपूत, बाभन और मालिकटोले के सभी बाबू-बबुआन से मुँहामुँही बात करती है, दिल्लगी का जवाब हँसकर देती है और समय पड़ने पर हाथ चमका-चमकाकर झगड़ा भी करती है । एक बार तो सिंघजी की भी सीसी सटका दिया था—'ऊँह बूढा हो गया है, चाट लगी हुई है । सिर के बाल सादा हो गए हैं, मन का रंग नहीं उतरा है ।···हमारा मुँह मत खुलवाइए सिंघजी ।'···उससे सभी डरते हैं । न जाने कब किसका भेद खोल दे । सभी उसकी खुशामद करते हैं; टोले-भर की जवान लड़कियाँ उसकी मुट्ठी में रहती हैं । उससे कोई बाहर नहीं । खलासीजी इस बार लालबाग मेला से उसके लिए असली गिलट का कंगना ले आये हैं । चाँदी की

१. 'आन्दोलन ।'

२. सगाई ।

तरह चमक है। "···मौसी, किसी तरह फुलिया से चुमौना ठीक कर दो।"

अरे सूते ले देवौ हे प्यारे लाली पलंगिया से···
खाये ले गुआ खिल्ली पान जी !···

खलासीजी आज दिल खोलकर गा रहे हैं। उन्हें आज ऐसा लग रहा है कि वे खुद सदाब्रिज हैं। लेकिन न तो उसकी फुलिया उसे रहने के लिए विनती करती है और न मँहगूदास चुमौना की बात मंजूर करता है !··· "अरे सूते ले देवौ हे प्यारे लाली पलंगिया से···!"

फुलिया क्या करे ? माँ-बाप के रहते वह क्या बोल सकती है ! अन्दर-ही-अन्दर मन जलकर खाक हो रहा है, लेकिन मुँह नहीं खोल सकती। लोग क्या कहेंगे !···रमजूदास की स्त्री फुलिया के जलते हुए दिल की बात जानती है। उस दिन फुलिया कह रही थी—"मामी, काली किरिया, किसी से कहना मत। खलासीजी इतने दिनों से दौड़ रहे हैं। बाबा कोई बात साफ-साफ नहीं कहते हैं। आखिर वह बेचारा कब तक दौड़ेगा ? यहाँ नहीं तो कहीं और ढूँढेगा। दुनिया में कहीं और तंत्रिमा की बेटी नहीं है क्या ?···जब एक दिन कुछ हो जायगा तो सहदेव मिसर देह पर माछी भी नहीं बैठने देगा। तब करो खुशामद नककट्टी चमाइन की और चिचाय की माँ का ! मुसब्बर चबाओ और ऐंड़ी से पेट को आँटा की तरह गुंधवाओ। उस बार जोतखीजी का बेटा नामलरैन ने क्या दिया ? अंत में नककट्टी को गाभिन बकरी देकर पीछा छुड़ाया···"

याद जो आवे हे प्यारी तोहरी सुरतिया से
शाले करेजवा में तीर जी···!

खलासीजी का तीर खाया हुआ दिल तड़प रहा है। फुलिया क्या करे ? लेकिन रमजूदास की स्त्री का मुँह कौन बंद कर सकता है ?···"अरे फुलिया की माये ! तुम लोगों की न तो लाज है और न धरम। कब तक बेटी की कमाई पर लाल किनारी वाली साड़ी चमकाओगी ? आखिर एक हद होती है किसी बात की ! मानती हूँ कि जवान बेवा बेटी दुधार गाय के बराबर है। मगर इतना मत दूहो कि देह का खून भी सूख जाय।"

"अरे हाँ हाँ, बेटा बेटी केकरो, घी ढारी करे मंगरो ! चालनी कहे सूई से कि तेरी पेंदी में छेद ! हाथ में कंगना तो चमका रही हो, खलासी को एक पुड़िया सिन्दूर नहीं जुटता है ?" फुलिया की माँ ने जब से रमजूदास की स्त्री के हाथ कंगना देखा है, उसका कलेजा जल रहा है। मँहगूदास पर गुस्सा करने से कोई फ़ायदा नहीं। खलासी की बुद्धि ही मारी गई है। रमजू की स्त्री को कुटनी बहाल किया है, कंगना दिया है। रमजू की स्त्री काली माई है जो लोग उसकी बात को मान लेंगे !

"मुँह सँभालकर बात कर नेंगड़ी ! बात बिगड़ जायगी। खलासी हमारा बहन-बेटा है। बहन-बेटा लगाकर गाली देती है ? गाली हमारे देह में नहीं लगेगी। तेरे देह में तो लगी हुई है। अपने खास भतीजा तेतरा के साथ भागी तू और गाली देती है हमको ? सरम नहीं आती है तुझको ! बेसरमी, बेलज्जी ! भरी पंचायत में जो पीठ पर झाड़ू की मार लगी थी सो भूल गई ? गुअरटोली के कलरु के साथ रात-भर भैंस पर रसलीला करती थी सो कौन नहीं जानता है ? तूं बात करेगी हमसे ?"

"रे, सिंघवा की रखेली ! सिंघवा के बगान का बम्बै आम का स्वाद भूल गई ? तरबन्ना में रात-रात-भर लुकाचोरी मैं ही खेलती थी रे ? कुर-अँखा बच्चा जब हुआ था तो कुरअँखा सिंघवा से मुँह-देखौनी में बाछी मिली थी, सो कौन नहीं जानता ?"

"··· एतना बात सुनते ही सदाब्रिज फिर मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़ा··· ।"

मँहगूदास के घूर के पास होने वाली सुरंगा सदाब्रिज की कथा में औरतों के झगड़े से कोई बाधा नहीं पहुँचती है। औरतों के झगड़े पर यदि मर्द लोग आँख-कान देने लगें तो हुआ ! औरतों के झगड़े का क्या ? अभी झगड़ा किया, एक-दूसरे को गालियाँ सुनाईं, हाथ चमका-चमकाकर, गला फाड़-फाड़कर एक दूसरे के गड़े हुए मुर्दे उखाड़े गए, जीभ की धार से बेटा-बेटी की गर्दन काटी गई, काली माई को काला पाठा कबूला गया, हाथ और मुँह को कोढ़-कुष्ठ से गलाने की प्रार्थना की गई और एक-दो

घंटे के बाद ही सफाई ! मेल-मिलाप हो गया। एक-दूसरे के हाथ से हुक्का लेकर गुड़गुड़ाने लगीं। साग माँगकर ले गई और बदले में शकरकन्द भेज दिया—"कल साम को मालिक के खेत से अँधेरे में उखाड़ लाया है लड़के ने। मालिक देखते तो पीठ की चमड़ी खींच लेते।"

पहले झगड़ा का सिरगनेस दो ही औरतों में होता है। झगड़े के सिलसिले में एक-एक कर पास-पड़ोस की औरतों के प्रसंग आते-जाते हैं और झगड़ने वालियों की संख्या बढ़ती जाती है। झगड़े से उनके काम-काज में भी कोई बाधा नहीं पहुँचती है। काम के साथ-साथ झगड़ा भी चल रहा है। जब सारे गाँव की औरतें झगड़ने लगती हैं, तब कोई किसी की बात नहीं सुनती; सब अपना-अपना चरखा ओंटने लगती हैं।·· लेकिन फुलिया आज झगड़े में हिस्सा नहीं ले रही है। वह टट्टी की आड़ में खड़ी होकर सुरंगा सदाब्रिज की कथा सुन रही है।···खलासीजी के गले में जादू है ! ओझा गुनी आदमी है ! कथा और गीत में फुलिया यह भी भूल जाती है कि सहदेव मिसर शाम से ही कोठी के बगीचे में उसके इन्तज़ार में मच्छड़ कटवा रहा है।···खलासी के गले में जादू है !

"मामी।"

"क्या है रे ? बोल ना ! सहदेव मिसरवा के पास जायगी क्या ?"

"नहीं मामी, एक बात कहने आई हूँ। काली किरिया, किसी से कहना मत।···खलासीजी तो तुम्हारे गुहाल में सोते हैं न ? काली किरिया !"

सुरंगा सदाब्रिज की कथा समाप्त हो गई है। झगड़ा लंकाकांड तक पहुँचकर शेष हो गया है। सहदेव मिसर मच्छड़ों से कब तक देह का खून चुसवाते।···साला खलसिया ! साली हरामजादी !···अच्छा कल देखूँगा।

गाँव में सन्नाटा छाया हुआ है और रमजू की स्त्री के गुहाल में सुरंगा कह रही है सदाब्रिज से, "अभी नहीं, जब बाबा चुमौना के लिए राजी नहीं होंगे तब मैं तुम्हारे साथ भाग चलूँगी।"

"उनको राजी कैसे किया जाय ? कौन एक मिसर है सुना है···।" सदाब्रिज बेचारा कहता है।

"सब झूठी बात है। तुम बालदेवजी से कहो।"

"कौन बालदेव ! पुरैनियां आसरम वाला ?"

"हां। सभी उनकी बात मानते हैं। बाबू-बबुआन भी उनसे बाहर नहीं। तुम बन्दगी मत करना, जै हिन्द कहना।"

"लेकिन वह तो हम पर बड़ा नाराज है। देश दुरोहित[1] के फिरिस में नाम दे दिया है।"

"···मां के लिए नाक की बुलाकी ले आना, असली पीतल की बुलाकी "

बारह

मठ पर आचारजगुरु आने वाले हैं, नये महंथ को चादर-टीका देने के लिए ! मुजफ़्फ़रपुर जिला का एक मुरती आया है—लरसिंघदास। आचारजगुरु मुजफ़्फ़रपुर जिले के पुपड़ी मठ पर भंडारा में आये है। लरसिंघदास खबर लेकर आया है—आचारजगुरु आ रहे हैं। मठ के सभी सेवक सती, आस-पास के बाबू-बबुआन लोगों को पहले ही खबर दे दी जाय !

रामदास को महंथी की टीका मिलेगी ! महंथ सेवादास का एकमात्र चेला वही है।···रामदास सोचता है, यदि खंजड़ी बजाना नहीं जानते तो आज तक बेलाही के जमींदार के भैंस की पूंछ हाथ से नहीं छूटती। महंथ साहब उसकी खंजड़ी सुनकर मोहित हो गए और वह रात को ही महंथ साहब के साथ भागकर मेरीगंज मठ पर आ गया।···पंद्रह साल पहले की बात ! पंद्रह साल बाद रामदास का भाग फिरा है। 'जै हो सतगुरु साहेब की !'

नियमानुसार सभी पंचों की उपस्थिति में नया महंथ एक एकरार-

१. देशद्रोही।

नामा लिख देगा—हमेशा 'लंगोटाबंद' रहकर सतगुरु के स्थल की रक्षा करेंगे। किसी तरह का मादक द्रव्य नहीं सेवन करेंगे। दासी-रखेलिन नहीं रखेंगे, आदि-आदि। इसके बाद आचारजगुरु एक सुरतहाल[1] पर दस्तखत करके नये महंथ को देंगे। फिर चादर-टीका की विधि !···दही की टीका और सिर पर दूब धान ! बस, नये महंथ साहेब उसी दिन से नौ सौ बीघे की पतनी[2] के एकमात्र मालिक हो जायेंगे।

लरसिंघदास तो आचारजजी का संदेशा लेकर आया था, किन्तु मेरीगंज मठ पर एक ही रात रहने के बाद उस पर महंथी का मोह सवार हो गया। नौ सौ बीघे की काश्तकारी ! कलमी आम का बाग ! दस बीघे में सिर्फ केला ही लगा हुआ है। एक-एक घौर में हजार केले फले हैं। हजरिया केला ! दो कोड़ी गाय, चार गुजराती भैंस और सबसे कीमती सम्पत्ति—अमूल्य धन—लछमी दासिन। लछमी दासिन कहती है, महंथ साहेब को बस यही एक चेला है—रामदास ! तो कानूनन रामदास ही होने वाला अधिकारी महंथ है। रामदास ! काठ का उल्लू रामदास ! सतगुरु हो ! यह अंधेर है। रामदास महंथ नहीं हो सकता। छुछुंदर की तरह तो सूरत है, वह महंथ होगा ? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। और यह लछमी ? श्रापभ्रष्टा अप्सरा !

लछमी ने लरसिंघदास की आँखों में न जाने क्या देखा है कि उसकी छाया से भी वह बचकर चलती है; रात में किवाड़ मजबूती से बंद करके सोती है। किवाड़ की छिटकिली लगाने के बाद एक ओखल किवाड़ से सटा देती है। ''लरसिंघदास को शायद बहुमूत्र की बीमारी है; रातभर में दस-ग्यारह बार पेशाब करने के लिए उठता है। हर बार धूनी के पास सोया हुआ रामदास उसे टोकता है—'कौन ?" लरसिंघदास किसी बार जवाब नहीं देता। कल रात एक बार गुस्से में जवाब दिया—"महंथ होने के पहले ही अंधे हो गए क्या ? देखते नहीं हो ?···जैसा गुरु वैसा

१. महंती का दस्तावेज।

२. छोटी जमींदारी।

चेला !" रामदास कुनमुनाकर रह गया था। सुबह को सत्संग के समय ही लछमी बरस पड़ी थी—"क्यों आप वैसी भाखा बोले थे ? महंथ होने के पहले ही अंधे हो गए ! जैसा गुरु"'। गुरु-निंदा सुनहि जो काना"'। मैं गुरु-निंदा नहीं सुन सकती, नहीं सह सकती। रामदास को आप क्या समझते हैं ? वह इस मठ का अधिकारी महंथ है। आपके जैसे एक कोड़ी बिलटा[1] साधुओं को वह रोज़ परसाद देगा।"'बात करना भी नहीं जानते ? आने दीजिए आचारजजी को।"

रामदास भी सुना देता है—"रात में हम छोड़ दिया, लेकिन अब बोलोगे तो सीधे पच्छिम का रास्ता दिखा देंगे। हाँ समझ रखो !"

भंडारी तो नम्बरी शैतान है। कल से ही उसने बदमाशी शुरू की है। दाल की कटोरी में सिर्फ पानी रहता है। आलू की भुजिया दुबारा नहीं देता। घी माँगने पर कहता है—"दाल घी से बघारल है।" केला बिक्री होने के लिए हाट भेज दिया जाता है। दूध में पानी मिलाकर देता है। बालभोग में पहले दही-चूड़ा देता था, कल से सिर्फ चूड़ा लाकर रख देता है।

बिलटा साधू ?"'रंडी का यह हिम्मत ! उसे बिलटा साधू कहती है ? अच्छा ! अच्छा !

"'लछमी पहले से ही तो उसे नहीं जानती। कैसे जान सकती है ? वह कभी पहले यहाँ आया नहीं। पुपड़ी मठ से भी तो कभी कोई मुरती यहाँ नहीं आया।"'सोनमतिया कहारिन भी तो नहीं आई है यहाँ। सम्भव है उस बार अपनी बेटी रधिया को खोजने के लिए यहाँ भी पहुँची हो। ठीक है"'। रधिया ! रधिया को पहली बार जब देखा था तो उसके मन की ऐसी ही हालत हुई थी। कनपट्टी के पास हमेशा गर्म रहता था। लेकिन रधिया अल्हड़ थी। एक ही चक्कर में जाल में आ गई थी। लछमी तो पुरानी है, खेली-खिलाई है। सत्तर चूहे खाई हुई है।"'यदि वह रधिया को लेकर नौटंकी कम्पनी में नहीं शामिल होता तो रधिया हाथ से नहीं

१. आवारा।

निकलती। नौटंकी कम्पनी के मालिक की ही बात रहती तो वह सह ले सकता था, हारमोनियम और नगाड़ा वाले भी रधिया को कभी फुर्सत नहीं देते थे। कभी ताल का रिहलसल करना है तो कभी नाच सिखाना है। ···रधिया साली भी कुत्ती ही थी। वह भी तो बदल गई थी।

लरसिंघदास अपने सिर के दाग पर हाथ फेरकर मफलर से ढक लेता है—साले नगाड़ची ने ठीक सामने कपाल पर ही डंडा चलाया था।

···मठ लौटने पर महंथ साहेब ने खड़ाऊँ से मरम्मत की थी। लेकिन सात दिन से उपवास किये हुए शरीर में इतना दम कहाँ था जो भागते! सिर का घाव ताजा ही था। महंथ साहेब की खड़ाऊँ गुरु की खड़ाऊँ थी। महंथ साहेब के पैर पर वह लेटा रहा था। वे बहुत दयालु पुरुष थे। लरसिंघदास उनका एकलौता चेला था। गुरु ने छिमा कर दिया। महंथ साहेब के शरीर त्यागने के बाद पुपड़ी मठ की महंथी उसे ही मिलती, लेकिन रामबरन कोयरी ने उसकी मती फेर दी थी।···"लरसिंघदास, नेपाली गाँजा में बड़ा नफा होता है। दस रुपये का लाओ और चार सौ बनाओ। नेपाल में चार आने सेर गाँजा मिलता है। बराहछत्तर मेला के समय चलो!"

महंथ साहेब ने जब शरीर त्याग किया तो वह जेल में था। महंथ साहेब ने मरने के समय जीऊतदास को चेला कबूलकर 'वील' लिख दिया। ···नहीं तो वह भी एक मठ का महंथ होता। तब लछमी उसे बिलटा साधू नहीं कह सकती। तब तो पैर पखारकर, पैर के दसों नाखूनों को धोकर, वह परेम से चरनोदक पीती।·· लेकिन वह लछमी को चरनोदक पिलाकर छोड़ेगा।

"रामदास!"

"क्या है? रामदास मत बोलिए, अधिकारीजी कहिए।"

"कोठारिन से कहो कि लरसिंघदास आज जा रहे हैं।"

"जा रहे हैं तो जाइए।"

"तुम कोठारिन से कहो···।"

"तुम-ताम मत करो। कोठारिनजी से क्या कहेंगे, राह-खर्च कल ही

कोठारिनजी ने दे दिया है।"

रामदास झोली से एक पाँच रुपये का नोट निकालकर लरसिंघदास के आगे फेंक देता है।

"हम पूछना चाहते हैं कि कोठारिन ने हमारा अपमान काहे किया? हमको बिलटा काहे बोली? हमारे अचारज गुरु को काहे गाली दिया?"

"अचारज गुरु को कब गाली दिया है?"

"दिया है। बोली नहीं थी,···पूजा बिदाई लेने के समय अचारज गुरु हैं, बेर बखत पड़ने पर सीधा जवाब मिलता है। आज अचारज गुरु हुए हैं, कल तक तो गुरुभाई थे। यह गाली नहीं तो और क्या है?"

"संसार में सत्त का भी लेस जरा रहने दीजिए साधू महाराज," लछमी अन्दर से निकलकर कहती है, "साधू का काम झूठ बोलना नहीं है। छिः छिः!"

"छिः छिः क्या? हमको बिलटा नहीं कहा है आ···आ···आप··· तुमने?"

"रामदास!" लछमी गरज उठती है, "गरदनियाँ देकर निकाल दो इसको। यह साधू नहीं, राक्षस है। इसके सिर पर माया सवार है। इससे पूछो कि आज सबेरे जब मैं स्नान कर रही थी तो बाँस की टट्टी में छेद करके यह क्या देखता था? सैतान!"

लछमी फुफकारती हुई अन्दर चली जाती है।

रामदास उठकर लरसिंघदास के गले में हाथ लगाकर धक्का देता है। लरसिंघदास सीढ़ी पर गिर पड़ता है। नाक से खून निकल रहा है।

"जयहिन्द रामदासजी! क्या है? क्या हुआ?" बालदेवजी लहू देखकर घबरा जाते हैं।

"कुछ नहीं पछबरिया साधू है। काया में कहीं साधू सुभाव नहीं। कोठारिनजी से बतकुट्टी[1] करता था।"

"तो मारपीट क्यों हुई? शांती से सब काम करना चाहिए। हिन्सा-

१. वाद-विवाद।

बात नहीं करना चाहिए।"

"रामदास ! बालदेवजी को अन्दर भेज दो !"

लरसिंघदास नाक का खून पोंछते हुए देखता है—बालदेव नाम का यह खध्धड़धारी आदमी अन्दर जा रहा है—सीधे लछमी की कोठरी में ! ···जयहिन्द बालदेवजी !

···शायद यह खध्धड़धारी और लछमी एक ही आसनी पर बैठे हैं। एकदम आसपास—देह से देह सटाकर ! ···अच्छा !

तेरह

गाँव के ग्रह अच्छे नहीं !

सिर्फ जोतखीजी नहीं, गाँव के सभी मातबर लोग मन-ही-मन सोच-विचारकर देख रहे हैं—गाँव के ग्रह अच्छे नहीं !

तहसीलदार साहब को स्टेट के सर्किल मैनेजर ने बुलाकर एकान्त में कहा है, "एक साल का भी खजाना जिन लोगों के पास बकाया है, उन पर चुपचाप नालिश कर दो। बलाय-बलाय[1] से नोटिस ५८ वी० तामील करवा लो। कुर्की और इश्तहार निकास करवाकर सरजमीन पर चपरासी को ले जाने की जरूरत नहीं। कचहरी में ही बैठकर गाँव के चमार से अँगूठा का टीप लेकर ढोल बजाने की रसीद बनवा लो। ···गाँव के एक-दो गवाहों को भी ठीक करके रखो। स्टेट से उनको भत्ता मिलेगा। इन कांगरेसियों का कोई ठीक नहीं।"

सिंघजी यादव टोला के लड़ैतों[2] का सीना तानकर चलना बरदाश्त नहीं कर सकते। जोतखीजी ठीक कहते थे—बार-बार लाठी-भाला दिखलाते हैं। हौसला बढ़ गया है। अब तो राह चलते परनाम पाती भी

१. घूस देकर।
२. बदमाशों।

नहीं करते हैं यादव लोग ! कलिया कभी-कभी चिढ़ाने के लिए नमस्कार करता है। देह में आग लग जाती है सुनकर। लेकिन सिंघजी क्या करें ? राजपूतटोली के नौजवान लोग भी ग्वालों के दल में ही धीरे-धीरे मिल रहे हैं। अखाड़े में ग्वालों के साथ कुश्ती लड़ते हैं। रोज शाम को कीर्तन में भी जाने लगे हैं। हरगौरी ठीक कहता था—यदि यही हालत रही तो पाँच साल के बाद ग्वाले बेटी माँगेंगे। तब काली कुर्ती वालों के बारे में जो हरगौरी कहता था, उन लोगों को बुला लिया जाय ? कहता था, लाठी-भाला सिखाने वाला मास्टर आवेगा। सजोगकजी या सनचालसजी, क्या कहता था, सो आवेंगे। हिन्दू राज—महराना प्रताप और शिवाजी का राज होगा। हरगौरी आजकल बड़ी-बड़ी बातें करता है !

भण्डारा के दिन सिंघजी रूठे हुए खेलावनसिंह यादव को घर से जबर्दस्ती खींचकर ले गए थे, लेकिन खेलावनसिंह का मन रूठा ही हुआ था। जोतखी काका रोज आते हैं। उन्होंने कहा है, सकलदीप को अठारह साल की उम्र में माता या पिता का बिजोग लिखा हुआ है। सकलदीप का यह सत्रहवाँ जा रहा है। सकलदीप की माँ बेटे का गौना करवाने के लिए रोज तकादा करती है। बेटे को वोकील बनाने की इच्छा शायद काली माई पूरी नहीं होने देगी। गौना के बाद फिर क्या पढ़ेगा ! माता-पिता का बिजोग ? ·· बालदेव को सारी दुनिया की भलाई तो सूझती है, मगर जिसका नमक खाता है उसके लिए एक तिनका भी तो सोचे। दिन-भर तहसीलदार के यहाँ बैठा रहता है और शाम को कीर्तन !कमला किनारे वाले एक जमा में कलरु पासवान के दादा का नाम कायमी बटैयादार की हैसियत से दर्ज है। बालदेव ने कहा कि कलरु से कह-सुनकर सुपुर्दी लिखवा दो या रजिस्ट्री करवा दो, तो कान ही नहीं दिया। हलवाहा गोनाय ततमा कल से हल जोतने नहीं आता है। कहता है, पिछले साल का बकाया साफ कर दीजिए तो हल उठावेंगे। बालदेव टुकुर-टुकुर देखता रहा, कुछ बोला भी नहीं, उलटे हम से बहस करने लगा, ···गरीब लोगों का दरमाहा नहीं रोकना चाहिए भाई साहब !

जोतखीजी की अठारह साल की नववधु कनचीरावाली के पेट में रोज खाने के बाद दर्द हो जाता है। पिछले एक साल से वह खाने के बाद पेट पकड़कर सो जाती है। इस साल तो और भी दर्द बढ गया है। ···डागडरी दवा ? नहीं, नहीं। डागटर तो पेट टीपेगा, जीभ देखेगा, आँख की पपनियाँ उलटाकर देखेगा, पेसाब और पाखाना के बारे में पूछेगा। सायद लहू भी जाँच करे। इधर वह रोज कहती है, डागडर बाबू ने कोयरीटोला की छोटी चम्पा को एक ही जकसैन मे आराम कर दिया है। इसी तरह उसके पेट में भी दर्द रहता था। ···औरतों को समझाना बड़ा कठिन काम है। सभी औरतें एक समान। जो जिद्द पकड़ेगी, पकड़े रहेगी। जोतखीजी को अपनी चार स्त्रियों का अनुभव है। पहली बेचारी को तो सिर्फ मेला बाजार देखने का रोग था। कोई भी मेला नहीं छोड़ती थी वह। जहाँ मेला आया कि जोतखीजी के तीसों दिन परमानन भा की खुशामद करने में ही बीतते थे। परमानन की भैसागाड़ी पर ही मेला जायगी। परमानन बेचारा खुद गाड़ी हाँककर मेला ले जाता था, कभी भाड़ा नहीं लिया। आखिर बेचारी की मृत्यु भी मेले में ही हुई। उस साल अर्धोदय के मेले में बहुत जोरों का हैजा फैला था। ···दूसरी को हुक्का पीने की आदत थी। ब्राह्मणी का हुक्का पीना ? लेकिन जोतखीजी क्या करते—औरत की जिद्द ! जब वह बीमार पड़ती थी तो बहुत बार जोतखीजी को ही हुक्का तैयार कर देना पड़ता था। ···पुरानी खाँसी से खाँसते-खाँसते वह भी मर गई। ···तीसरी को इस बात की जिद्द लग गई थी कि वह गाँव के लड़कों से हँसना-बोलना बन्द नहीं करेगी। ···और कनचीरावाली को डागडरी दवा की जिद्द लग गई है। एकमात्र पुत्र रामनारायण तो कुपुत्र निकला। विदापत नाच करता है। ततमा पासवानों के साथ रहता है। सारी ब्राह्मण मण्डली में उसकी शिकायत फैल गई है। कोई बेटी देता ही नहीं। जोतखीजी क्या करें ? हाथ की ऊर्ध्व-रेखा तो सीधे तर्जनी में चली गई है, लेकिन कुंडली के दसम घर में शनि है। समझाते-समझाते थक गया कि अपना नाम रामनारायण मिश्र कहा करो, लेकिन वह भी गँवारों की तरह नामतरैम ही कहता है।

···रामनारायण के साथ कनचीरावाली को एक दिन इसपिताल भेज दें ? घर पर बुलाने से तो डाग़डर फीस लेगा।

लरसिंघदास गाँव के घर-घर में जाकर पंचों से कह रहा है—आचारज गुरु आ रहे हैं। मठ का अधिकारी महंथ वही है; उसी को चादर-टीका मिलनी चाहिए; महंथ की रखेलिन या दासिन को मठ के मामले में कुछ बोलने का अधिकार नहीं। रामदास तो भैंसवार है। इतने बड़े मठ को चलाना मूरख आदमी के बूते की बात नहीं। वह 'बीए' पास है। अंग्रेजी में ही बीजक बाँचता है। इसीलिए तो बावड़ी केश रखता है, धोती कुर्ता पहनता है और आधी मूंछ कटाता है। ···मठ पर एक स्कूल खोलेंगे। गाँव वालों की भलाई करेंगे। आप लोग बुद्धिमान आदमी हैं, खुद विचारकर देख सकते हैं। दासिन रखेलिन मठ को बिगाड़ देती है; साधू-धरम को भ्रष्ट कर देती है। आप लोग खुद विचारकर देख सकते हैं।

तन्त्रिमाटोले में पंचायत हुई है। बन्दिश हुई है—तन्त्रिमाटोले की कोई औरत अब बाबूटोला के किसी आँगन में काम करने नहीं जायगी। बाबू-बबुआन लोग शाम को गाँव में आवें, कोई हर्ज नहीं; किसी की अन्दर हवेली में नहीं जा सकते। मज़दूरी में जो एक-आध सेर मिले, उसी में सबों को सन्तोख करना होगा। बालाई आमदनी में कोई बरकत नहीं। अनोखे और उचितदास छड़ीदार हुआ है। जिसे चाल से बेचाल देखेगा, बाँस की छड़ी से पीठ की चमड़ी उधेड़ लेगा।

तंत्रिमा लोगों की इस बंदिश के बाद गहलोत छत्री, कुर्म छत्री, पोलिया-टोले, धनुखधारी और कुशवाहा छत्रीटोले के पंचों ने भी ऐसी ही व्यवस्था की है।···सिर्फ जनेऊ लेने से ही नहीं होता है, करम भी करना होगा। जाये तो कोई बाबू कभी संथालटोली में, शाम या रात को ! उनकी औरतों से कोई दिल्लगी भी कर सकता है ?···संथालों के तीर पर ज़हर का पानी चढ़ाया रहता है।

कुर्म छत्रीटोले के लौजमानों ने कल रात को शिवशक्करसिंह को बेपानी कर दिया। झुबरी मुसम्मात का घर तो टोले के एक छोर पर है न.

सिपैहियाटोली की बाँसवाड़ी के ठीक बगल में ! लेकिन शिवशङ्करसिंह को क्या मालूम कि बाँस की झाड़ियों में छोकरे पहले से ही छिपे हुए हैं !··· झुबरी गुमम्मात को दस रुपये जरिमाना हुआ है। जहाँ से दे, देना तो होगा ही, नहीं तो हुक्का-पानी बंद। शिवशङ्करसिंह से रुपया लेकर दे। इसी बार लालबाग मेला में पंचलैट[1] खरीद होगा। बिना पंचलैट वाली पंचायत की क्या कीमत ! लैट के दाम में बीस रुपैया और कम है। एक दिन फिर बाँसवाड़ी में एक घंटा मच्छट कटवाना होगा, और क्या ?

कालीचरन का अखाड़ा आजकल खूब जमता है। शाम को कीरतन भी खूब मचता है। नया हरमुनियाँ खरीद हुआ है। गंगाजी के मेले से गंगतीरिया ढोलक लाया गया है। खूब गम्हड़ता है।

बालदेवजी को कीरतन तो पसन्द है, लेकिन अखाड़ा और कुश्ती को वे खराब समझते हैं।···शरीर में ज्यादा बल होने से हिंसावाद करने का खौफ रहता है। असल चीज है बुद्धि। बुद्धि के बल से ही गन्ही महतमाजी ने अंग्रेजों को हराया है। गाँधीजी के देह में तो एक चिड़िया के बराबर भी मांस नहीं। कांगरेस के और लीडर लोग भी दुबले-पतले ही हैं।

लेकिन कालीचरन का अखाड़ा बन्द नहीं हो सकता। ढोल की आवाज में कुछ ऐसी बात है कि कुश्ती लड़ने वाले नौजवानों के खून को गर्म कर देती है।

ढाक ढिन्ना, ढाक ढिन्ना !

शोभन मोची ने ढोल पर लकड़ी की पहली चोट दी कि देह कसमसाने लगता है।

ढिन्ना ढिन्ना, ढिन्ना ढिन्ना···!

अर्थात्—आजा, आजा, आजा, आजा !

सभी अखाड़े में आये। काछी और जाँघिया चढ़ाया, एक मुट्ठी मिट्टी लेकर सिर में लगाया और 'अज्जज्जा' कहकर मैदान में उतर पड़े। कालीचरन 'आ-आ-अली' कह कर मैदान में उतरता है। चम्पावती मेला

१. पेट्रोमैक्स।

में पंजाबी पहलवान मुश्ताक इसी तरह 'आली' (या अली) कहकर मैदान में उतरता था।

तब शोभन ताल बदल देता है—

चटधा गिड़धा, चटधा गिड़धा !

···आजा भिड़जा, आजा भिड़जा !

अखाड़े में पहलवान पैंतरे भर रहे हैं। कोई किसी को अपना हाथ भी छूने नहीं देता है। पहली पकड़ की ताक में हैं। वह पकड़ा···

धागिड़ागि, धागिड़ागि, धागिड़ागि !

···कसकर पकड़ो, कसकर पकड़ो !

चटाक चटधा, चटाक चटधा !

···उठा पटक दे, उठा पटक दे !

गिड़ गिड़ गिड़ धा, गिड़ धा, गिड़ धा !

···वह वा, वह वा, वाह बहादुर !

पटक तो दिया, अब चित्त करना खेल नहीं ! मिट्टी पकड़ लिया है। सभी दाव के पेंच और काट उसको मालूम हैं !

ढाक ढिन्ना, तिरकिट ढिन्ना !

···दाव काट, बाहर हो जा !

वाह बहादुर ! दाव काटकर बाहर निकल आया। फिर, धा—चट गिड़ धा ! आ जा भिड़ जा !

ढोल के हर ताल से पैंतरे, दाँव-पेंच, काट और मार की बोली निकलती है।

कालीथान में पूजा के दिन इसी ढोल की ताल एकदम बदल जाती है। आवाज़ भी बदल जाती है—धागिड़ धिन्ना, धागिड़ धिन्ना !

·· जै जगदम्बा ! जै जगदम्बा !

गाँव की रक्षा करो माँ जगदम्बा !

चौदह

चढ़ली जवानी मोरा अंग अंग फड़के से
कब होइहैं गवना हमार रे भउजिया ऽऽऽ !

पक्की सड़क पर गाड़ीवानों का दल भउजिया का गीत गाते हुए गाड़ी हाँक रहा है। "आं आं ! चल बढ़के। दाहिने···हाँ, हाँ, घोड़ा देखकर भी भड़कता है ! साला ·· !"

हथवा रँगाये सैयाँ देहरी बैठाई गइले
फिरहू न लिहले उदेश रे भउजिया ऽऽऽ !

ननदिया के दिल की हूक गाड़ीवानों के गले से कूक बनकर निकल रही है। भउजिया ?···कमली की कोई भौजी नहीं। किससे दिल की बात कहे ? भउजिया की ननदिया की तो शादी हो चुकी है, कमली का तो हाथ भी पीला नहीं हुआ है।···'प्रेमसागर' में मन नहीं लगता है—'श्री सुकदेवजी बोले कि हे राजा, एक दिन कृष्ण कन्हैया वंशी बजैया कदम के विरिक्ष पर बैठके वंशी बजाये रहे थे।' चीरहरण लीला की तस्वीर को देखकर कमली का जी न जाने कैसा-कैसा करने लगता है ! वह 'प्रेमसागर' बंद कर देती है।

···सुबह प्यारू आया था। कितना गो आदमी है प्यारू !···आज क्या बना था प्यारू ? डाक्टर साहब आज ठीक समय पर खाये थे या शीशी बोतल लेकर पड़े हुए थे ? प्यारू हँसकर हमेशा की तरह जवाब देगा, "अरे, क्या पूछती हो दैया ! इस आदमी का हमको कोई तालपता[1] नहीं लगता है। रोज कहेंगे कि प्यारू आज खाना जरा जल्दी बनाओ, और खाते फिर वही रात में ग्यारह बजे और दिन में दो बजे। आज बंधा कोबी का झोल बना था। झोल क्या खायेंगे ? मिर्च-मसाला छूते भी नहीं हैं। खाने का तो कोई सौख नहीं है, जो बना दो खा लेंगे। ··और शीशी बोतल ? क्या पूछती हो दैया ! कल से मच्छड़, खटमल और

१. ठौर-ठिकाना।

तिलचट्टे के पीछे पड़े हुए हैं। आज संथालटोली के जोगिया माँझी को कह रहे थे—चार खरगोश और एक दर्जन चूहा पकड़ कर दे जाओ। पूरा इनाम मिलेगा।"

प्यारू को गाँव-भर की औरतें प्यार करती हैं। गाँव-भर में उसकी मामी, मौसी, नानी, दादी और काकी हैं। सभी जवान लड़कियों को वह 'दैया' कहता है।

···डाक्टर की मुस्कराहट बड़ी जानलेवा है। जब आवेगा तो मुस्कराते हुए आवेगा—डर लगता है?···हाँ हाँ, डर लगता है तो तुमको क्या? तुमको तो मजा मिलता है न! मुस्कराए जाओ।···गले में आला लटकाए फिरते हैं बाबू साहब! छाती और पीठ में लगाकर लोगों के दिल की बीमारी का पता लगाते हैं। झूठ! इतने दिन हो गए, मेरे दिल की बात, मेरी बीमारी को कहाँ जान सके! या जान-बूझकर अनजान बनते हो डाक्टर! तुम्हारी मुस्कराहट से तो यही मालूम होता है।···अच्छा डाक्टर! सच सच बताना, तुम क्यों मुस्कराते हो? तुम मुझे जलाने के लिए इस गाँव में क्यों आये? नहीं, नहीं, तुम नहीं आते तो मैं पागल हो जाती। रोज सपने में कमला नदी की बाढ़ में मैं बह जाती थी। बड़े-बड़े साँप! तरह-तरह के साँप काटने दौड़ते थे। तुम आये, मैं डूबते-डूबते बच गई।···मेरी आँखों की पपनियाँ उलटकर देखो, मेरी पीठ पर आला लगाकर देखो, मेरे दिल की बात सुनो।···तुम डाँटते हो, बड़ा अच्छा लगता है! तुम मुझे सूई से डराते हो, चिढ़ाते हो। कितना अच्छा लगता है मुझे!···फिर मीठी दवा भेज दूँगा?···हाँ जी, भेज देना, पूछते हो क्या? तुम्हारी बोली क्या कम मीठी है! लेकिन तुम एक बार जरूर आया करो। नहीं आओगे तो मुझे डर लगेगा।···सिपैहियाटोली की कुसमी कहती थी, डाक्टर मुझसे भी पूछता था—मीठी दवा चाहिए क्या?·· मैं नहीं विश्वास करती। डाक्टर ऐसा नहीं है। कुसमी झूठ बोलती है। मीठी दवा और किसी को मिल ही नहीं सकती है। डाक्टर, खबरदार! कुसमी बड़ी चालबाज लड़की है। बहुतों को बदनाम किया है उसने। हरगौरी उसका मौसेरा भाई है, लेकिन···

जाने दो, क्या करोगे सुनकर ? उसकी ससुराल फारबिसगंज में है। घर वाला एक मारवाड़ी का सिपाही है। रात-भर सिपाही पहरा करता है और कुसमी 'बैमकोप' देखने जाती है।···

'···श्री सुकदेवजी बोले कि हे राजा ! एक दिन यशुमती सभी ग्वालिनों को बुलाए।'

"कमली !"

माँ !"

"पढ़ना बन्द करो। डाकदर बाबू ने मना किया है न ! दवा पी लो। मैं तुम्हारी किताब बक्से में बन्द कर ताला लगा दूंगी। हाँ, ऐसे तुम नहीं मानोगी।"

"पढ़ने से क्या होगा माँ ?"

"लड़की बात तो सुनो जरा ! पढ़ने से क्या होगा सो तो डाकदर से पूछना !"

"डाक्टर बाबू से ?···माँ, तुम्हारा डाक्टर क्या है जानती हो ? माटी का महादेव !"

माँ ठठाकर हँस पड़ती है, "एक-एक बात गढ़कर निकालती है तू। अच्छा, ठहर। आज आने दे डाकदर बाबू को।"

माँ-बाप के नैनों की पुतली है कमला ! तहसीलदार साहब बेटी की इच्छा के खिलाफ कुछ भी नहीं कर सकते। माँ कमला की हर आवश्यकता को बिना मुँह खोले ही पूरा कर देती है। बाप ने खुद पढ़ाया-लिखाया है रामायण, महाभारत, नल-दमयन्ती, सावित्री-सत्यवान, पार्वती-मंगल और शिवपुराण। कमला रोज शिव पूजती है—ओं शिवशंकर सुखकर, नाथ वरदायक महादेव !···महादेव ! · मिट्टी का महादेव !

"माँ, चुप रहो !" कमली माँ से लिपटकर हाथों से मुँह बन्द कर देती है। "पूछो न अपने डाक्टर से, खरगोश पालकर क्या करेंगे !"

डाक्टर कोई जवाब नहीं देता है, सिर्फ मुस्कराता है। फिर गम्भीर होते हुए कहता है, "अब तो सूई देनी ही पड़ेगी; दवा से बेहोशी तो दूर

हो गई, लेकिन पागलपन···!"

सभी ठठाकर हँस पड़ते हैं—तहसीलदार साहब, माँ और प्यारू। कमली का चेहरा लाल हो जाता है। "मैं आज खून का दबाव नहीं जाँच कराऊँगी। नहीं-नहीं, ठीक है। हाँ, मैं पगली हूँ !"

"दीदी !" तहसीलदार साहब बेटी को दीदी कहकर पुकारते हैं, "आओ, डाक्टर साहब को देर हो रही है।"

ब्लड प्रेशर जाँच करते समय डाक्टर गम्भीर होकर यंत्र का ओर देखता है। कमली तिरछी निगाहों से चोरी-चोरी डाक्टर को देखती है—हाँ जी, मुझे पगली कहते हो ! लेकिन मुझे पगली बना कौन रहा है ?

गाँव में सिर्फ तहसीलदार साहब चाय पीते हैं; बढ़िया चाय की पत्ती का व्यवहार करते हैं। डाक्टर यहाँ हर शाम को चाय पीने आता है। कमला की माँ का अनुरोध है—रोज शाम को चाय पी जाइए।

तहसीलदार साहब कहते हैं, डाक्टर तो अपने समांग की तरह हो गया है। डाक्टर को भी तहसीलदार साहब से घनिष्ठता हो गई है। तहसीलदार साहब से गाँव-घर और जिले की बहुत सी नई पुरानी बातें सुनने को मिलती हैं।···राज पारबंगा स्टेट के जनरैल मैनेजर डफ साहब कैसा आदमी है। आजकल एकदम हिन्दुस्तानी हो गया है। धोती कुर्ता पहनता है। कभी-कभी रोरी का टीका भी लगाता है। राज पारबंगा के कुमारजी उसकी मुट्ठी में हैं। डफ साहब की बेटी जब तक रहेगी, कुमारजी डफ साहब को नहीं हटा सकते हैं।···महारानी चम्पावती जाति की मुसहरनी थीं। ···राजा भूपतसिंह को 'मेम रानी' से दो लड़के हैं। बड़ा ऐयाश है राजा भूपत ! पोलो का जब्बड़[1] खिलाड़ी ! दार्जिलिंग रेस में हर साल उसका घोड़ा जीतता है। आजकल भी बाईस घोड़े हैं। बड़ा ऐयाश ! पुन्याह में बनारस, इलाहाबाद और लखनऊ से इतनी बाईजी आती हैं कि तीन दिन तीन रात महफिल जमी रहती है, एक मिनट भी बन्द नहीं होती।···पैरिस की शराब पीता है। असल राजा तो वही है।

१. जबर्दस्त।

राज पारबता वाला तो मकरीपून है।···जिला का सबसे बड़ा किसान है भोला बाबू ! तीस हजार बीघा जमीन है ! रहुआ इस्टेट के गुरबंशी बाबू भी किसान ही हैं। उनकी बात निराली है। दाता कर्ण हैं। बारफन्ट में सबसे ज्यादे रुपैया दिया और कांग्रेस के सहायताफन्ट में भी सबसे ज्यादे रुपैया दिया और इसी को कहते हैं दुनिया का इन्साफ ! दिल मोलकर दान देने का सुफल क्या मिला है, जानते हैं ? लोगों ने झूठ-मूठ अफवाह फैला दिया है कि नोट बनाता है। अरे भाई, नोट तो बनाती है उसकी कोशी गंगा किनारे की हजारों बीघा जमीन, जिसमें न हल लगता है न बैल, न मेहनत न मजदूरी ! बाढ़ का पानी हटा और कीचड़ वाली धरती पर चना, मेसारी, मटर, सरसों, उरद वगैरह छींट दिया। बस, छींटने में जितनी मेहनत लगे। कोशी और गंगा के पानी से नहाई हुई धरती माता दिल खोलकर अपना धन लुटा देती है।···जिला कांग्रेस के सबसे बड़े लीडर हैं शिवनाथ चौधरीजी।···ओ, आप तो जानते ही है उनको ! वह भी बड़े किसान हैं।···पूर्णिया कचहरी में जो बकालत सीसी बाबू कर गए, वह अब कोई वकील क्या करेगा ! हाईकोर्ट के बालिस्टर भी उसके बनाये हुए मिसिल को नहीं काट सकते थे। लेकिन फौजदारी कचहरी में कभी पैर नहीं रखते थे। एक बार राजा भूपत दस हजार फीस देने लगा, खूनी केस था। सीसी बाबू ने अपना प्रण नहीं तोड़ा, कचहरी नहीं गये। कागज पढ़कर सिर्फ एक जगह एक लाइन काट दिया और एक जगह एक अक्षर जोड़ दिया। राजा भूपत बेदाग छूट गया।··· अब तो न वह अयोध्या है और न वह राम।···

"बाबा !"

"दीदी !"

"डाक्टर साहब आज यहीं खाएंगे।"

"प्यारू से झगड़ा मोल लेना चाहती है ?"

"प्यारू से कह दिया है।"

"तब डाक्टर साहब !···हमारी तो कभी हिम्मत नहीं हुई। दीदी कहती

है, यदि शरधा हो तो···।"

"श्रद्धा अश्रद्धा की बात नहीं। बात यह है कि मैं···"

"मिर्च मसाला नहीं खाते" कमली बीच में ही बोल उठी, "उबली हुई चीजें खाएँगे। यही न ?"

डाक्टर समझ रहा है—रोग दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। ···शीला रहती तो तुरत कुछ कह देती। शायद कहती, 'भावात्मक संक्रमण' अथवा 'प्रत्यावर्तन' के मोड़ पर रोग पहुँच गया है।

पन्द्रह

सुमरितदास को लोग लबड़ा आदमी समझते हैं, लेकिन समय पर वह पते की बातें बता जाता है। आजकल उसका नाम पड़ा है—बेतार का खबर। संक्षेप में 'बेतार'। बात छोटी या बड़ी, कोई भी नई बात बेतार तुरत घर-घर में पहुँचा देता है। तहसीलदार का वह रोटिया[1] गवाह है। गवाही देते-देते वह बूढ़ा हो गया है; वसूल तगादा के समय तहसीलदार के साथ रहता है। किसी को दाखिल खारिज करवानी है, किसी रैयत की ज़मीन में झंझट लगा है या किसी को बन्दोबस्ती लेनी है, तहसीलदार से पहले सुमरितदास से बातें करे। वह रैयतों को एकान्त में ले जाकर कहेगा—तहसीलदार तो हमारी मुट्ठी में हैं। हमको पान-सुपारी खाने के लिए कुछ दो या नहीं दो, तुम्हारी मर्जी, लेकिन तहसीलदार साहब को तो···वाजिब जो है सो···!

रैयतों से छोटी-छोटी चीजें तहसीलदार साहब खुद कैसे माँग सकते हैं ? वह सुमरितदास ही माँगता है—कद्दू, खीरा, बैंगन, करैला, कबूतर, हल्दी, मिर्चा, साग, मूली और सरसों का तेल ! वह सब तो सुमरितदास अपने लिए लेता है। लेकिन चीजें लेते समय सुमरितदास रैयत से एकान्त

१. गवाही की रोटी खानेवाला।

में कहता है, "अरे भाई, ये सब चीजें मैं लेकर क्या करूँगा ? न घर है न घरनी, न चुल्हा है न चौका। एक पेट के लिए मँगनी क्यों करूँ ! यह सब तो···।" कभी एक पैसे की तरकारी तहसीलदार साहब के यहाँ खरीदी नहीं जाती। सुमरितदास भला मँगनी करेगा ! आज उसकी हालत खराब हो गई है तो क्या वह खान्दान की इज्जत को भी लुटा देगा ! उसके परदादा के दरवाजे पर हाथी झूमता था। सब करम का फेर है।···सुमरितदास के पेट में कोई बात नहीं पचती। कालीचरन कहता है—मुँह में दाँत हैं नहीं, बात अटके भी तो कैसे ? बेतार !

बेतार को बहुत-सी नई बातें मिल गई हैं। पहली बात तो यह कि पच्छिम से मठ पर आचारज गुरु आ रहे हैं, लरसिंघदास को कलक्टर साहब ने भी महंथ मान लिया है। दूसरी बात यह कि कल से खम्हार[1] खुलने वाला है, बीच में भदवा पड़ गया था। तहसीलदार साहब ने कहा है—कल शुभ दिन है।

तहसीलदार साहब के खम्हार के साथ ही गाँव के और किसानों का खम्हार खुलता है। तहसीलदार साहब का खम्हार बड़ा खम्हार कहलाता है। 'जरी-दहाड़' से बचकर भी दो हजार मन धान होता है।

···हाँ, तीसरी बात तो कहना भूल ही गया बेतार ! वह लौटकर सुना जाता है, "कपड़ा, तेल और चीनी की पुर्जी बाँटने का काम बालदेव को मिला है। नाम तो उसमें डागडर बाबू का भी है, लेकिन डागडर बाबू कहते हैं—हमको फुर्सत नहीं। हमसे कहते थे कि हमारा काम आप ही कीजिए दासजी ! हम बोले कि हमको भी फुर्सत कहाँ है।"

आचारज गुरु के आने की खबर का कोई मोल नहीं भी हो, बाकी दो बातें, यदि सच हैं, तो वास्तव में कीमती हैं।

बात सच है। बालदेवजी भी कहते हैं, बात ठीक है।

खम्हार ! साल-भर की कमाई का लेखा-जोखा तो खम्हार में ही होता है। दो महीने की कटनी, एक महीना मड़नी, फिर साल-भर की

१. खलिहान।

खटनी। दबनी मड़नी करके जमा करो, साल-भर के खाये हुए कर्ज का हिसाब करके चुकाओ। बाकी यदि रह जाय तो फिर सादा कागज पर अंगूठे की टीप लगाओ। सफाई करनी है तो बैल गाय भरना रखो या हलवाहा चरवाहा दो। फिर कर्ज खाओ। खम्हार का चक्र चलता रहता है। खम्हार में बैलों के भुंड से दबनी मड़नी होती है। बैलों के मुंह में जाली का 'जाब' लगा दिया जाता है। गरीब और बेज़मीन लोगों की हालत भी खम्हार के बैलों जैसी है।···मुंह में जाली का 'जाब'।···लेकिन खम्हार का मोह! यह नहीं टूट सकता। भुरुकवा उगते ही खम्हार जग जाता है। सूई की तरह गड़ने वाली, माघ के भोर की ठंडी हवा का कोई असर देह पर नहीं होता। ओस और पाले से तो देह शून्न हो जाता है। जब हाथ से अपनी नाक भी नहीं छूई जाती है तब घूर में फिर से सूखे पुआल डालकर नई आग पैदा की जाती है। घूर में शकरकन्द पकता रहता है। घूर के पास देह गर्माने की बारी जिसकी रहती है, वह प्रातकी गाता है—'हरि बिनू के पूरिहैं मोर सुआरथ, हरि बिनू के।···' अथवा 'निरबल के बल राम हो संतो, निरबल के बल राम!'

दिन-भर धान झाड़-फटककर जमा किया। फिर धान के बोझे छींट दिये गए और शाम से फिर दबनी मड़नी शुरू हो गई। शाम को घूर के पास 'लोरिक' या कुमर 'बिज्जेभान' की गीत-कथा होती है—

अरे राम राम रे दैवा रे इसर रे महादेव,
बामे ठाढ़ी देवी दुरगा दाहिन बोले काग।
अपन मन में सोच करैये मानिक सरदार
बात से नाहीं माने बीर कनोजिया गुआर···।

कपड़ा, तेल और चीनी की पुर्जी कमलदाहा के कमरुद्दी बाबू बाँटते थे। मेरीगंज से कमलदाहा दस कोस है। दस कोस जाना तो कोई बड़ी बात नहीं, लेकिन पुर्जी पाना बड़े भाग की बात समझी जाती है। कमरुद्दी बाबू कुंजड़ा हैं; बैंगन की बिक्री से ही जमींदार हुए हैं; मुस्लींग के लीडर हैं। कटिहार पूर्णिया मोटर रोड के किनारे पर ही घर है। हमेशा हाकिम-

हुक्काम उनके यहाँ आते रहते हैं। महीने में साठ मुर्गियों का खर्च है लोग कहते हैं कि नये इसटिओ जब आये तो सारे इलाके में यह बात मशहूर हो गई कि बड़े बड़े हाकिम हैं; किसी के यहाँ न तो जाते हैं और न किसी का पान ही खाते हैं। लेकिन कमरुद्दी बाबू भी पीछा छोड़ने वाले आदमी नहीं। इसटिओ का ड्राइवर मुसलमान है। उसको कुरान की कसम देकर पान-सुपारी खाने के लिए दिया। बस एक बार कटिहार से लौट रहे थे इसटिओ साहब, ठीक कमरुद्दी बाबू के घर के सामने आकर मोटरगाड़ी खराब हो गई। दस बजे रात को इसटिओ साहब और कहाँ जाते? ···उसके बाद से तो कमरुद्दी बाबू आँख मूँदकर विलेक करने लगे। एक बार परैनिया मिटिन में कंगरेसी नुथाय बाबू ने हाकिम से कहा—पबलिक बहुत शिकायत करती है। कमरुद्दी बाबू ने हँसते हुए पूछा—"हिन्दू पबलिक या मुसलमान?" हाकिम भी समझ गए—कमरुद्दी बाबू लीगी हैं, इसीलिए लोग झूठमूठ दोख लगाते हैं।'···अब तो बालदेवजी पुर्जी देंगे। बालदेवजी को बिलैती कपड़ा से क्या जरूरत? खद्दड़ को छोड़कर दूसरे कपड़े को छूते भी नहीं।···छूते हैं? छूने में हर्ज नहीं।···

'जै हो, गन्ही महतमा की जै हो!'···कल खम्हार खुलेगा, पिछले साल तो खम्हार खुलने के दिन जालिमसिंह का नाच हुआ था। जालिमसिंह सिपैहिया ने एक डोमिन से शादी कर ली थी।···लेकिन इस बार कीरतन होना चाहिए। सुराजी कीर्तन! बेतार कहता है—इस बार बिदापत नाच होगा। डागडर बाबू बिदापत नाच देखेंगे।···तहसीलदार साहब तो हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए। कितना समझाया कि डागडर बाबू, वह तो बहुत पुराना नाच है। खाली बिकटै[1] होता है। डागडर बाबू कहने लगे—'बिदापत ही करवाइए।' पासवानटोली के लिबड़ू पासवान को खबर दे दी गई है। लिबड़ू नाच का मूलगैन है। मूलगैन, अर्थात् म्यूजिक डायरेक्टर!

कालीचरन का कीरतन नहीं होगा? अच्छा कोई बात नहीं, डाक्टर साहब को एक दिन कीरतन सुना देंगे!

१. कॉमिक।

बालदेवजी को डागडर बाबू की बुद्धि पर अचरज होता है—बिदापत नाच क्या देखेंगे ? बड़ा खराब नाच है। कोई भला आदमी नहीं देखता। खराब-खराब गीत गाता है। नाच ही देखने का मन था तो तहसीलदार साहब से कहकर सिमरबनी गाँव की ठेठर कम्पनी को बुला लेते। आने-जाने और पचीस आदमी के खाने का खर्चा क्या तहसीलदार साहब नहीं दे सकते थे ?···गाँव वाले देखते तो आँखें खुलतीं। सिमरबनी की ठेठर कम्पनी मशहूर है, महावीर जब जुर्जोधन का पाठ लेकर हाथ में तरवार लेकर गरजते हुए निकलता है तो एक कोस तक उसकी बोली साफ़ सुनाई पड़ती है—"बस बन्द करा दो यह मृदंग बाजा, हमको अच्छा नहीं लगता।"

धिन्ना धिन्ना धिन्ना निन्ना निन्ना !
धिन तक धिन्ना, धिन तक धिन्ना !

बिदापत नाच का मृदंग 'जमीनका' दे रहा है—चलो! चलो ! चलो !

धिनक धिनक धा तिरकिट धिन्ना !
धिनक धिनक धा तिरकिट धिन्ना !

गाँव-भर के लोग तहसीलदार साहब के खम्हार में जमा हुए हैं। शामियाना तान दिया गया है। शामियाना खचमखच है। डाक्टर बाबू, सिंघजी और खेलावनसिंह यादव कुर्सी पर बैठे हैं ! कालीचरन अपने दल के साथ है। जोतखीजी नहीं आये हैं। सिंघजी ने कहा—"आज भी उनके दाँत में दरद है भाई !" सभी ठठाकर हँस पड़ते हैं। सभी जोतखी-जी के नहीं आने का कारण जानते हैं—उनका बेटा नामलरैन भी बिदापत नाच का समाजी है।···बाभन नाचे तेली तमाशा देखे ! कुपुत्र निकला रामनारायण ! शिव हो ! ··बालदेवजी नहीं आये हैं। कोई भला आदमी नहीं देखता बिदापत नाच ! अब मृदंग पर 'चलन्ती' बज रहा है—

तिरकिट धिन्ना, तिरकिट धिन्ना !
धिन तक धिन्ना, धिन तक धिन्ना !
धिनक धिनक धा,

धिक् धिक् तिन्ना !

"ओ···! होय ! नायकजी !"

विकटा[1] आया। भीड़ में हँसी की पहली लहर खेल जाती है—सैकड़ों मुक्त हृदयों की हँसी !···पायल की झनकार !

मुँह पर कालिख-चूना पोतकर, फटा-पुराना पाजामा पहनकर लोकायदास विकटा बन गया है। वह जन्मजात विकटा है। भगवान् ने उसे विकटा ही बनाके भेजा है। ऊपर का ओंठ त्रिभुजाकार कटा है। सामने के दाँत हमेशा निकले रहते हैं और शीतला माई ने एक आँख ले ली है। बात गढ़ने में उस्ताद है।

"·· ओ ! होय ! हो नायक जी !"

"क्या है ?"

"अरे यह फतंग फतंग क्या बज रहे हैं ?"

"अरे, मृदंग बज रहा है। यह करताल है, यह झाल है।"

"सो तो समझा। यह धड़िंग धड़िंगा, गनपतगंगा क्या बजाते हैं ?"

"नाच होगा नाच, विद्यापति नाच !"

"ओ, हम समझे कि 'लीलामी' का ढोल बोल रहा है।"

···धिन ताक धिन्ना, धिनं ताक धिन्ना !
आहे ! उत्तरहि राज से आयेल हे नटुकवा कि आहे मैया
कि आहे मैया सरोसती है परथमे बन्नोनि हे तोहार !
···हमहूँ मूरख गँवार कि आहे मैया,
सरोसती, भूलल आखर जोड़िके आहे मैया,
कंठे लीहै हे वास !

"ओ···ओ, होय नायकजी !" विकटा जोर से चिल्ला उठता है। ताल भी कट चुका है। ठीक ताल काटने के समय विकटा को चिल्लाना चाहिए, इसलिए मृदंग के ताल का ज्ञान विकटा को होना ही चाहिए।

"तुम कैसा बेकूफ हो जी !"

१. विदूषक।

"अरे हो नायकजी ! यह आप लोग किसका वन्दना कर रहे हैं ?"

···हा हा ! हा ! · हा हा हा !·· हँसी की दूसरी, लेकिन हल्की लहर।

"बेकूफ ! सुनते नहीं हो, सरोसती माता का वन्दना है !"

"यह सुरस्सु सुरती···सुर···सुरसस्सती माता को तुम देखा है ? ···हमको तुम बेकुफ कहते हो ? बेकुफ तो तुम खुद हो। अरे, सरस्सती का वन्दना तो पढ़ल पन्नित लोग करता है।"

···हा ! हा ! हा ! हा !···भीड़ में खिलखिलाहट।

"तो हम लोग किसको वंदेंगे ?"

"ऊँह, तुम खाँटी चलानी घी हो, जिस चलानी घी की पूड़ी भंडारा में हुई थी जिसको खाकर हमारा पेट दस दिन खराव रहा था।·· विना किसी मिलावट के तुम भी खाँटी बेकूफ मालूम होते हो। इतना भी नहीं जानते ? सुनो ! जरा वजाने कहो—धिनक धिन्ना तिरकिट धिन्ना !"

"अरे दाल वंदो, भात बंदो, साग वंदो बथुआ !

"यह तो हुआ कच्ची, सरकार ! अव जरा पक्की सुनिए—

"अरे चूड़ा वंदो, भूजा वंदो, रोटी बंदो मड़ुआ !"

·· हा ! हा ! हा !···हा ! हा !···

"अव फल मेवा, सरकार !

"अरे गुलर बंदो, डुमर वंदो और बंदो अल्हुआ !"

·· हा ! हा ! हा ! हा !···सैकड़ों खिलखिलाहट !

"हल बंदो, बैल बंदो और बंदो गइआ !

"···अव सबसे वड़ा भगवान् !"

बिकटा मुँह बनाता है।

"चटाक पटपट पड़त सिर पर भागत बाप के भूतवा।

सबसे वढ़ि के तोहरे बंदो मालिक बाबूक जूतवा !"

बिकटा खेलावन के पैर के सलमसाही जूते को प्रणाम करता है।

डाक्टर साहेब तो अचरज से गुम हो गए हैं; एक दम खो गए हैं नाच में।···इस वार नाच जमेगा। आखिर यह सब पुरानी चीज है, क्यों भाई !

···सब बात तो ठीक ही कहता है।

···धिन्ना धिन्ना, धिन्ना तिन्ना ! समाजी लोगों ने शुरू किया।

आहे लेल परवेश परम सुकुमारी हे,
हंस गमन विरखमान दुलारी हे।

मृदंग के ताल पर दबे पाँवों नटवा आता है। ताल पर ही चलकर सबसे पहले मृदंग को प्रणाम करता है, फिर झाल-करताल को और अन्त में मूलगैन लिबड़ू पासवान का पैर छूकर प्रणाम करता है। पोलियाटोली के छीत्तनदास का बेटा चलित्तरा लड़कियों की तरह लम्बा बाल रखता है। नाक में बुलाक भी हमेशा पहने रहता है। वही नटवा है। अभी साज-पोशाक पहनकर एकदम बाभिन की तरह लग रहा है छौंड़ा।···कान में कनफूल किसका है? कमली दीदी का?···वाह रे छौंड़ा, आज यदि यह कान का कनफूल बक्सीस में जीत ले तो समझें कि असल विदपतिया का चेला है।···मृदंग बजाता है उचितदास ! क्या कहा—असल विदपतिया ? ··हम सहरसा के गैनू मिरदंगिया के चेला हैं।···जानते नहीं, गैनू मिरदंगिया एक बार अपने समाजी के साथ कहीं से नाचकर आ रहा था। चोर लोग जानते थे कि गैनू मिरदंगिया का समाजी एक-एक सौ रुपैया नकद, धोती, कुर्ता, गमछा वगैरह लेकर घर लौटता है। बस, ठुट्ठी पाखर के पेड़ के पास चोरों ने घेर लिया गैनू मिरदंगिया को। वह पीछे पड़ गया था—दिसा-मैदान के लिए सायद। गैनू मिरदंगिया ने क्या किया ? बोलो तो ! नहीं जानते ? हा-हा ! मिरदंग पर थाप दिया। दाहिने पूरे पर अंगुलियाँ फिरकी की तरह नाचने लगी—धुकिट धिन्ना ना तिन्ना ना तिन्ना ना ना। तो मृदंग के पूरे की सूखी चमड़ी मानो जी उठी;साफ आदमी की तरह बोली निकली—'ठुट्ठी पाखर तर चोर घेरलक हो, चोर घेरलक !'

···लिबड़ूदास का समाजी है, खेल नहीं ! नाच बेटा !···

धिरिनागि धिरिनागि धिरिनागि धिनता !

आहे तन मन बदन मदन सहजोर हे,
आहे दामिनी ऊपर···

"है, रे ! है रे ! है रे !" विकटा कलेजा पकड़कर मुँह बनाता है।
·· धिनक धिनक ता, धिनक धिनक ता···

आहे, दामिनी ऊपर उगलय चान हे।

विकटा मूर्छित होकर गिर पड़ता है —"अरे बाप !"

"अरे क्या हुआ ?"

"अरे बाप !"

"अरे ! बोलो भी तो ? क्या हुआ ?"

"अच्छा नायकजी, एक बात बताइए। जल्दी बताइए। आस्मान का चान यदि धरती पर उतर आया है तो धरती के चान को ऊपर जाना पड़ेगा ?"

"अरे धरती पर भी कहीं चान होता है ?"

"सुनिए जरा इसकी बोली ! इसीलिए न कहा था कि खाँटी चलानी घी हो। अजी हमारी एक ही बिजली बत्ती खराब है, तुम्हारी क्या दोनों खराब हैं ?···आजकल रेलगाड़ी में सुनते हैं कि बत्ती नहीं जलती। पहले बिलेकोट तब तो बिलेक मारकेट।" ··हा ! हा ! हा ! हा !···साला कटिहार नानी के यहाँ बराबर जाता है। रेलगाड़ी की भी गलती निकालता है। अंग-भंग आदमी सारी दुनिया को अंग-भंग ही देखता है। सुनो क्या कहता है, धरती का चान किसको बनाता है !

"अरे, भकुआ नायकजी, धरती का चान अपनी छतीसों कुल्ला के साथ तुम्हारे सामने खड़ा है, चौधिया गए हो क्या ? जरा छट्ठम लैट जलाकर देखो।"

···हा ! हा ! हा ! हा !···साला अलबत्त बात बनाता है !

"छट्ठम लैट नहीं जानते ? देखो पंचम लैट तो यही है जो अभी पंच परमेसर के बीच में जल रहा है।···छट्ठम लैट तुम्हारे घर में आजकल जलता है ! तेल मिलता ही नहीं—एक पटुआ के सठो में आग लगाकर हाथ में लेकर खड़ा रहो, भकभक गैसबत्ती की-सी रोसनी होने लगेगी। हम आजकल यही करते हैं।···अच्छा आप ही लोग देखिए पंच परमेसर,

हमसे ज्यादे सुन्दर यहाँ कोई है ?"

"नहीं नहीं, आप तो कामदेव के औतार हैं," सिंघजी कहते हैं।

···हा ! हा ! हा ! हा ! हा ! हा ! नाचो रे चलितरा ! आज मोहड़ा[1] पड़ा है ! जी खोल के नाच बेटा !···

धिनागि धिन्ना, तिरनागि तिन्ना

धिनक धिनता तिटकत ग–द–धा !···

आहे चलहु सखि सुखधाम, चलहु !

आहे कन्हैया जहाँ सखि हे,

रास रचाओल हे ! चलहु हे चलहु !

···धिन्ना तिन्ना ना धि धिन्ना !

आहे सिर विरनावन कुंज गलिन में

कान्हु चरावत धेनु,

आहे मुड़ली जे टेड़े विरीछी के ओटे,

आहे अब गिहे···

···धिरिनागि धिरिनागि धिरिनागि···

आहे ! अब गिहे रहलो नि जाये, चलहु हे चलहु !

ततमाटोली की औरतों के गिरोह में बैठी फुलिया का जी ऐंठता है··· अबे गिहे रहलो नि जाये !

तहसीलदार साहब की हवेली की सामने वाली खिड़की खुली हुई है। कमली दीदी भी देख रही है। नहीं देखेगी तो बक्सीस कैसे देगी ?

"देख बेटा ! फिरकी की तरह नाच ! पुरइन के फूल की तरह घाँघरी खिल जाय !"

"अरे हो नायकजी ! एक बात तो बताइए। वह हमको छोड़कर कहाँ जा रही है ? चलहु चलहु—कहीं मेला-तमासा है या भोज है ? या कपड़ा की पुर्जी बटती है ?"

"अजी वह तुम्हारे ही पास जा रही है। तुम्ही किसुनकन्हैया हो न !

१. मोर्चा।

तुम्हारे रूप पर मोहित हो गई है।"

"ओ !···वही तो हम भी कहते थे कि हमको छोड़कर कहाँ जा रही है ! हम कन्हैया हैं, लेकिन कन्हैया के बाप का नाम तो लन्द था और हमारे बाप का नाम उजाड़ू दास।"

···हा-हा ! हाहा ! हाहा !

"अरे उल्लू ! तुम्हारे बाप का नाम उजागिरदास था। तुम इसको खराब करके काहे बोलते हो ?"

"उजागिरदास तो माय-बाप ने रख दिया था। लेकिन जिस मालिक के यहाँ भैंस-गाय चराने के लिए भरती होते थे, वही उनको कुछ दिन बाद मार-पीटकर निकाल देता था। मेरे बाबूजी गाय-भैंस लेकर जाते थे और मालिक के ही हरे-भरे खेत में छोड़कर सो जाते थे—मिहनत किया है लछमी ने, बैल ने ! मालिक लोग दूध-घी खा-खाकर जिस भैंस के दूध से मोटे हो गए हैं, इस उपजा में तो इनका भी हिस्सा है। खाओ लछमी ! ···इसलिए लोगों ने उनका नाम उजाड़ू दास रख दिया।"

नटवा अब गाँजा में दम मार आया है। अब देखना, नाच जमाएगा छौंड़ा आज।

धिरनागि धिन्ना···

आहे कुंज भवन से निकलल हो,
आहे सखि रोकल गिरधारी !

"हाँ, चोरी-चोरी घर से निकलकर कोठी के बागान में जाओगी, रास-लीला करने, तो रोकेगा नहीं ? अच्छा किया है।" बिकटा अपने-आप बड़बड़ाता है।

नटुआ दोनों हाथ जोड़कर, फन काढ़े गेहुअन साँप की तरह हिलते-डुलते, कमर के सहारे बैठ रहा है। धरती पर घाँघरी पुरैन के पत्ते की तरह बिछी हुई है।···मिनती करती है। है रे···! है रे !···वाह रे छौंड़ा ! नाम रख लिया गाँव का !

आहे, एकहि न—ग—र बसू माधव हो,

आहे जनि करू बटवा-पा-री !
आहे छोड़ू छोड़ू जदूपति आँचर हो,
हो भाँगत न–ब सारी।

"हाँ भैया ! कोटा-कनटरोल का जमाना है। कपड़ा नहीं मिलता है। जरा होसियारी से···!"

अरे अपजस होइत जगत भरि हो

"ओह बड़ी कुलमंती बनी है ! लछलछ किरिया खाये कुलमंती, मोर मन नहिं पतिआये।" बिकटा बीच-बीच में टोकता रहता है।

आजु परेम रस लय लीह हो,
आहे पंथ छाड़ू झटकारी !

"सब दही जुठैलक रे किसना ! आहि रे बाप !" बिकटा चिल्लाता है।

आहे संग के सखि अगुआइल हो
आहो कान्हा, ह–म–हू एकसरि नारी !

"हे रे ! हे रे ! एकसरि नारि रे !"

भनहि विद्यापति गाओल हो, सुनू कुलमंती नारी
हरि के संग किछु डर नाहि है···।

"हाँ, हरि के संग काहे दोख होगा। जितना दोख हम सब लोगों के साथ। अपने खेले रसलील्ला, हमरे बेला में पंचायत का झाड़ू और जूत्ता।"

क्या है ? क्या हुआ···डागडर साहब का नेंगड़ा नौकर आकर क्या बोलता है ?···कमली दीदी ने कनफूल दे दिया ?···रे ?···वाह रे छौंड़ा ! नाम किया !···जीओ रे चलित्तरा ! जीओ !

बिकटा भी क्यों पीछे रहे ? वह भी आज 'थै-थै' कर देगा। नाच जमा है आज ! "अरे होय नायकजी ! हमारे दुख को देखने वाला, सुनने वाला कोई नहीं।"

"क्या हुआ ?"

"लेकिन कहें कैसे ?" बिकटा तहसीलदार की ओर उँगली उठाकर डरने की मुद्रा बनाता है।

"अरे ! हम समझ गए। तो कहो न भाई," तहसीलदार समझ जाते हैं। "दुनिया में सिर्फ हम ही एक तहसीलदार-पटवारी हैं ? बात तो तुम ठीक ही कहोगे। सुनते हैं डॉक्टर साहब, अब यह तहसीलदार का बिकट करेगा।"

"नायकजी ! हमको धीरज बँधाने वाला कोई नहीं। सुनते हैं कि वराह-छत्तर में सरकार बहादुर कोसी मैया को बाँध रहा है, लेकिन हमारे दिल को बाँधने वाला कोई नहीं !"

"अरे कहो भी तो !"

"अच्छा तो सुनो ! पचास साल पहले से सुरु करते हैं, सर्वे सितलमंटी[1] साल से।"

···सुनो ! सुनो ! जरूर कोई नई बात जोड़ा है। यह भी बकसीस वसूल करेगा।

"बजाने कहो—ताकधिन-ताकधिन !"

अरे केना के बाँधबै रे धीरजा, केना के बाँधबै रे,
अरे मुद्दई भेल पटवारी रे धीरजा केना के बाँधबै रे !

"सर्वे जब होने लगा !"

दस हाथ के लग्गा बनैलके
पाँचे हाथ नपाई !

···पाँच हाथ पार ? हा···हा···हा !···

गल्ली-कुची सेहो नपलकै,
ढीप-ढाप सेहो नपलकै,
घाट-बाट सेहो नपलकै,
डगर-पोखर सेहो नपलकै।

"तब ?"

हाथी जस भलवेसन बैठलकै,
जम्मा भेलै भारी रे धीरजा के बाँधबै रे !

१. सर्वे सेटलमेंट।

"इधर जमींदारी सिपाही छप्पर पर का कद्दू, खत्तर का खीरा, बकरी का पाठा आर चार जोड़ा कबूतर सिरिफ तलबाना में ही साफ़ कर गया।"

"तब ?"

थारी बेंच पटवारी के देलियै,
लोटा बेंच चौकीदारी।
बाकी थोड़ेक लिखाई जे रहलै,
कलम देलक घुराई रे धिरजा।

"आखिर···"

कहे कबीर सुनो भाई साधो
सब दिन करी बेगारी
खँजड़ी बजाके गीत गवैछो
फटकनाथ गिरधारी रे धिरजा।

ओ–हो–हो–हा खी–खी–खी···हा–हा !···शामियाना फट जायगा। कमाल कर दिया साले ने। अलबत्त जोड़ा। वाह !···वाह रे लोकायदास !

डॉक्टर तहसीलदार से पूछता है, "गीत तो विद्यापति का गाता है। बिकटे की रचना किसने की है ?"

"आप भी डॉक्टर बाबू क्या पूछते हैं," तहसीलदार साहब हँसते हैं। "इनकी रचना के लिए भी कोई तुलसीदास और वाल्मीकि की जरूरत है ? खेतों में काम करते हुए तुक पर तुक मिलाकर गढ़ लेता है।"

···डॉक्टर साहब ने विकटा को क्या दिया ?···पंचटकिया लोट ?··· बाजी मार लिया विकटा ने भी।

आहे परथम समागम पहुसंग हे···
धिरनागि धिरनागि !

भुरुकवा उगने के बाद नाच खत्म हुआ। खूब जमा।···अब खुलेगा खम्हार।

बिछावन पर लेटकर डॉक्टर सोचता है—कोमल गीतों की पंक्तियाँ !

अपभ्रंश शब्द भी कितने मधुर लगते हैं ! '''पिया भइले डुमरी के फूल रे पियवा भइले।'''चाँद बयरि भेल बादल; मछली बयरि महाजाल, तिरिया बयरि दुहु लोचन—रिदये के भेद बतायें।'''भोंमरा-भोंमरी'''रोई-रोई कजरा दहायल, घामे तिलक बहि गेल।'''चान के उगयत देखल सजनि गे'' लट घोये गइली हम बाबा को पोखरिया'''पोखरि में चान केलि करे।'

डॉक्टर सोचता है—विद्यापति की चर्चा होते ही कवियर 'दिनकर' का एक प्रश्न बरबस सामने आकर खड़ा हो जाता था—"विद्यापति कवि के गान कहाँ से ?" बहुत दिनों बाद मन में उलझे हुए उस प्रश्न का जवाब दिया—जिन्दगी-भर बेगारी खटने वाले, अपढ़ गँवार और अर्धनग्नों ने, कवि ! तुम्हारे विद्यापति के गान हमारी टूटी झोंपड़ियों में ज़िन्दगी के मधुरस बरसा रहे है।'''ओ कवि ! तुम्हारी कविता ने मचलकर एक दिन कहा था—चलो कवि, वनफूलों की ओर !

'''वनफूलों की कलियाँ तुम्हारी राह देखती हैं।

सोलह

मुसम्मात सुनरी !

टक्का कटपीस—एक गज।

छींट—डेढ़ गज।

मलेछिया साटिन—एक गज।

साड़ी—एक नग।

बालदेवजी कपड़े की पुर्जी बाँट रहे हैं। रौतहट टीशन के हंसराज बच्छराज मरवाड़ी के यहाँ कपड़ा मिलेगा।

खेलावन यादव के दरवाजे पर खड़े होने को भी जगह नहीं। सुबहसे पुर्जी बाँट रहे हैं, दोपहर हो गई।'''साड़ी नहीं है!'''नहीं ?'''बालदेवजी ! हमको एक साड़ी ''रौफा की माये एकदम नगन हो गई है बालदेवजी !

बालदेवजी कहते हैं, "देखिए ! मौजे-भर में सिरफ सात साड़ियाँ दी गई थीं। चार फर्दी है, वह तो मालिक लोगों के घर में पहनने की चीज है···चौदह रुपये जोड़ी। बाकी तीन साड़ियों को हमने इस तरह बाँट किया है, ऐसे लोगों को दिया है जो एकदम बेपरदे···"

"बेपरदे तो सारा गाँव है बालदेवजी !"

खेलावन यादव कहते हैं, "इतने दिनों से जब कमरुद्दी बाबू पूजी बाँटते थे, उस समय गाँव की औरतें बेपरदे और नगन नहीं थीं क्या ? भाई, जितना है उसी में इनसाफ से बाँट-बखरा कर लो।"

कालीचरन जिद्द कर रहा है, पुर्जी पर दो गज छींट और लिख दीजिए; हरमुनियाँ का खोल बनवाएंगे। बालदेवजी नहीं मानते।···आदमी के पहनने के लिए कपड़ा नहीं, हरमुनियाँ-ढोलक को चपकन सिलाकर पहनावेगा ? ···देखो तो भला !

बालदेवजी का राह चलना मुश्किल हो गया है। कपड़ा की मेम्बरी मिली है कि बलाये है ! दिसा-मैदान जाते समय भी लोग पीछा नहीं छोड़ते हैं।···जयहिन्द बालदेवजी ! आये थे तो आपके ही पास। दुलारी का गौना है।···अच्छा-अच्छा चलिए, हम दिसा से आते हैं। ···कपड़ा अब कहाँ है ? रिजरव[1] में भी नहीं है। सिरिफ कफन और सराध का कपड़ा है।···उसी में से ? कैसे देंगे ? कफन और सराध का कपड़ा गौना में ?

बालदेवजी को क्या मालूम कि दुलारी का गौना पाँच साल पहले हो गया है और उसके तीन बच्चे भी हैं।

लछमी दासिन ने रामदास को भेजा था, "आचारजजी आ रहे हैं। आपको तो आजकल छुट्टी ही नहीं रहती है। उधर जाते भी नहीं। कंठी लेने की बात हुई थी ? ···सो आपकी क्या राय है ? आचारजजी आ रहे हैं। चादर-टीका के लिए चादर के अलावे पूजा-बिदाई के लिए भी एक जोड़ी धोती चाहिए—बिना कोर की, महीन मारकीन की या

१. रिजर्व।

ननकिलाठ की धोती। ···और कोठारिनजी को भी कपड़ा नहीं है।"

बड़ी मुश्किल है! रिजरव में थोड़ा कपड़ा है सो सादी-विहा और सराध के लिए। कैसे दिया जाय? ओ! आचारजजी महंथ साहेब के सराध में ही आये हैं। तब ठीक है। ···सिरिमती···नहीं, सिरिमती नहीं। दासिन लछमी कोठारिन—ननकिलाठ, दस गज! फैन मारकीन, दस गज। चद्दर, एक!

रामदास याद दिला देता है. "लँगोटा-कोपीन के लिए भी एक गज।"

बड़ी मुश्किल है! बालदेवजी को अब रोज दस-पंद्रह बार से ज्यादे झूठ बोलना पड़ता है। क्या किया जाय? बड़ा संकट का काम है।···इधर जिला कांग्रेस की मिटिन भी है। मेनिस्टर साहब आ रहे हैं। गाँव से झंडा-पत्तखा और जत्था भी ले जाना होगा। जिला सिकरेटरी गंगुलीजी ने चिट्ठी दी है। परचा भी आया है···।

चलो! चलो! पुरैनियाँ चलो! मेनिस्टर साहब आ रहे हैं। औरत-मर्द, बाल-बच्चा, झंडा-पत्तखा और इनकिलास जिन्दाबाद करते हुए पुरैनियाँ चलो!···रेलगाड़ी का टिकस?···कैसा बेकूफ है! मेनिस्टर साहब आ रहे हैं और गाड़ी में टिकस लगेगा? बालदेवजी बोले हैं, मेनिस्टर साहब से कहना होगा, कोटा में बहुत कम कपड़ा मिलता है। ···चलो चलो, पुरैनियाँ चलो। भुरुकवा उगते ही कालीथान के पास जमा होकर जुलूस बनाकर चलो!

"बोलिए एक बार—काली माय की जाये!"

"जाये! जाये!"

"बोलिए एक बार परेम से—गन्ही महतमा की जै!"

"जाये! जाये!"

फरर···र···र···र, पेड़ पर घोंसलों में सोये हुए पंछी पख फड़फड़ाकर उड़े। कालीचरन कहता है, यदि गुलेटा रहता तो अँधेरे में भी अभी एक-दो हरियल को मारकर गिरा देते। वासुदेव कहता है—चुप रहो। बालदेवजी ने नहीं सुना, नहीं तो अभी फिर अनसन···।

गिनती करो। कितनी औरत, कितने मरद ? अजी बच्चों को मत लो, झंझट होगा। कालीचरन और गूदर सबों का देह छू-छूकर गिनते हैं। कालीचरन कहता है—पाँच कोरी चार औरत। गूदर हिसाब करता है—चार कोरी दस मरद।···मातबर लोग काहे जायेगा ? मातबर लोग तो हमेशा गदारी करते हैं।···बालदेवजी ने आज फिर एक नई बात कही—गदारी ! गदार !···गदारी ?

जुलूस में गाने के लिए बालदेवजी को दो ही गीत याद हैं। एक नीमक कानून के समय का सीखा हुआ—'आओ वीरो मरद बनो अब जेहल तुम्हें भरना होगा।' दूसरा, बियालिस मोमेंट के समय जेहल में सुना था—'जिन्दगी है किरान्ती की किरान्ती में लुटाये जा।' लेकिन यह तो सोशलिट पाटी वाला गाता है।···पुराना गीत ही ठीक है—आओ वीरो मरद बनो···! आज बालदेवजी खुद गाते हैं। सुनरा भी गीत का आखर धरता है :

तंत्रिमाटोली के मंगलू ततमा को कँपकँपी लग गानी है। जेहल ! अरे बाप ! ···ये लोग जेहल ले जा रहे हैं। पन्द्रह साल पहले उसको चोरी के केस में सजा हुई थी। जेल के जमादार की पेटी की मार वह आज भी नहीं भूला है। चार हौदा[1] पानी रोज भरना पड़ता था। नहीं ! ···वह पेशाब करने के बहाने पीछे रह जाता है और नजर बचाकर घर की ओर भागता है। सब पगला गया है !

सहर पुरैनियाँ ! ···यही है सहर पुरैनियाँ—पक्की सड़क, हवागाड़ी, घोड़ागाड़ी और पक्का मकान !··· 'एक रत्ती चिनगी चिनगल जाये, सहर पुरैनियाँ लूटल जाये ?···क्या है, बोलो तो !' 'आग !' · गाँव के बच्चे आज भी बुझौवल बुझाते समय शहर पुरैनियाँ का नाम लेते हैं। मेरीगंज के इस जुलूस में चार आदमी ऐसे भी हैं जो शहर पुरैनियाँ पहले भी आये हैं। बहुत तो आज ही पहली बार रेलगाड़ी पर चढ़े हैं। कलेजा धक-धक करता है। जिसके हाथ में गन्ही महतमा का झण्डा रहता है उससे गाट बाबू, चिकिहर बाबू, टिकस नहीं माँगता है। ···सचमुच में रेलगाड़ी

१. हौज।

'जै जै काली छै छै पैसा' कहते हुए दौड़ती है ! जै जै काली ?···यही है कालीपुल। बालदेवजी दिखलाते हैं—यही कालीपुल है। पुल बाँधने के समय पाँच आदमी की बलि दी गई थी। ···बाप रे ! पाँच ? ···जै काली ! नीमक कानून के समय इसी पुल के नीचे पुलिस के सिपाहियों ने जाड़े की रात में भोलटियरों को लाकर, पानी में भिगा-भिगाकर पीटा था। पानी में डुबा देता था, सिर को हाथ से गोते रहता था। दम फूलने लगता था, नाक में पानी चला जाता था। ···यह है इसपिताल। अपने गाँव का इसपिताल तो इसके सामने बुतरु[1] है।·· जेहल ? यही है जेहल ? जेहल नहीं समुराल यार हम बिहा करन को जायेंगे···आओ बीरो जेहल भरो। ···फुलिया पुरैनियाँ टीसन से ही कुछ ढूंढ़ रही है, ···खलासीजी तो काला कुरता पहनते हैं।···यह है कचहरी। यहीं कर-कचहरी में लोग मर-मुकदमा करने के लिए आते हैं ! इसी तरह उपसर्ग लगाकर सब बोलते हैं—कर-कचहरी, खर-खजाना, गर-गरामित, घर-घरहट, चर-चुमौना, जर-जमीन, पर-पंचायत, फर-फौजदारी, बर-बरात, मर-मुकदमा या मर-महाजन !

शहर के लोग भी अचरज से इस जुलूस को देख रहे हैं। इनकिलास··· जिन्दाबाद ! ···कचहरी के मोड़ पर, फल की दूकान पर बैठे हुए मौलवी साहब हँसते हैं—"सब कपड़ा लेने आये हैं ! जाओ-जाओ, मिलेगा कपड़ा। इन्किलाब बोलता है। मतलब भी समझता है या···।"

झण्डा ? बड़ा झण्डा आसमान में लहरा रहा है, वही है रामकिसून आसरम। ऐ ! यहाँ सब कोई खड़े हो जाओ। कपड़ा ठिकाने से पहन लो। उस कल के पास जाकर मुँह धो लो। डरते हो काहे ? बालदेवजी है। यहाँ से सत्तरबन्दी होकर चलना होगा। बालदेवजी सबसे आगे रहेंगे। सबसे पहले कालीचरन नारा लगायेगा—इनकिलाब; तब तुम लोग एक साथ कहना—जिन्दाबाद। वैसे गड़बड़ा जाता है। कालीचरन कहेगा—अँग्रेजी राज; तुम लोग कहना—नास हो। लगाओ नारा कालीचरन ! कालीचरन छाती का जोर लगाकर चिल्लाता है—"इनकिलाब !"

१. बच्चा।

"नाश हो, जिन्दा···नाश !"

"ऐ ! ठहरो, ठहरो, नहीं हुआ ।"

शिवनाथ चौधरीजी, गंगुलीजी, शशांकजी, नाथ बाबू, सभी आश्चर्य से देखते हैं। चौधरीजी बालदेव पर बड़े खुश हैं। नाथ बाबू कहते हैं, "ऐसे ही सभी वरकर अपने फील्ड में वर्क करें तब तो ? दो महीने में ही इतने गाँवों को अकेले ही आरगेनाइज़ कर लिया है। चवन्निया मेम्बर कितना बनाया है ? पाँच सौ ? तब तो तुम···आप जिला कमिटी के मेम्बर हो गए।" गंगुलीजी तो बालदेव को पहले से ही आप कहते हैं, आज नाथ बाबू भी आप कहते हैं।

चौधरीजी कहते हैं, "अरे बालदेव, चरखा सेण्टर खुलवाओ। रचनात्मक काम कुछ होता है या नहीं ?"

खादी भंडार वाले छत्तीस बाबू कहते हैं, "खादी भंडार में खाँटी गाय का घी भेजो देहात से बालदेव !"

सचमुच बालदेवजी गियानी आदमी हैं; बड़े आदमी हैं। जिस सीढ़ीवाली चौकी पर बाबू-बबुआन लोग टोपी पहनकर बैठे हैं, उसी पर बालदेवजी भी बैठे हैं।···अरे, वह कौन है ? बौना ? डेढ हाथ का आदमी ! देखने में चार साल के लड़के जैसा लगता है। दाड़ी-मूंछ देखो ! बोली कितनी भारी है ! धुधुक्का[1] में तो सबों की बोली भारी मालूम होती है। किसी की बोली समझ में नहीं आती है। न जाने कौन देश की बोली बोलता है—हिन्दुस्थान, आजादी और गांधीजी को छोड़कर और कोई बात नहीं बूझी जाती है।···ताली काहे बजाया ? बस, सभा खतम ? मेनिस्टर साहेब कहाँ हैं ? कौन ? वही दुबला-पतला, बड़ी-बड़ी मोंछ वाला आदमी ? बोलता था एकदम परेम से···आस्ते-आस्ते। माथा की टोपी भी लब्बड़-झब्बड़। उस बार गाँव में दारोगा साहेब आये थे, देखा था ? सारे देह में चमोटी लपेटा हुआ था। मेनिस्टर साहब ऐसे ही हैं ? यह कैसा हाकिम !

कालीचरन कहता है, "मेनिस्टर साहब नहीं, यह रजिन्नर बाबू थे।

१. लाउड-स्पीकर का भोंपा।

सुराजी कीर्तन में रोज सुनते हो नहीं···देसवा के खातिर मजरूलहक भइले फकिरवा हो, दीन भेलै रजिन्नर परसाद देसवासियो !···देस के खातिर अपना सब हक-हिस्सा, जगह-जमीन, माल-मवेशी गँवाकर फकीर हो गए।···अहा-हा !···हूँ ! आजकल मेनिस्टर से भी जादे पावर वाला आदमी हैं। ठीक है, होगा नहीं ? देश के खातिर अपना मजरूलहक माने बिलकुल हक खतम कर दिया।···"

चौधरीजी ने बालदेवजी को दस रुपैया का नोट दिया है—"सबों को जलपान करा देना।"

जै, जै ! चलो ! चलो !

कालीचरन कहाँ है ? बासुदेव भी नही है। नहीं, नहीं, लौटते समय लारा लगाने की जरूरत नहीं। लेकिन कालीचरन और बासुदेव कहाँ रह गए ? भीड़ में से किसीने कहा—वे दोनों एक पैंजामा वाला सुराजी बाबू के साथ न जाने कहाँ जा रहे थे। बोला, कल जायेंगे। ···पैंजामा वाला सुराजी बाबू ? लेकिन बिना पूछे क्यों गया ? सहर वाली बात है। बालदेवजी कालीचरन पर आजकल खुश नहीं; कालीचरन भी आजकल बालदेवजी से अलग-थलग रहता है।

"कालीचरन नहीं, कॉमरेड कालीचरन। कॉमरेड माने साथी। हम सभी साथी; आप भी साथी। यहाँ कोई लीडर नहीं। सभी लीडर, सभी साथी हैं।···अच्छा कॉमरेड, आपके गाँव में सबसे ज्यादे किस जाति के लोग हैं ?···यादव ! ठीक है। भूमिहार ?···एक घर भी नहीं ? गुड ! जुलूस में जितने आदमी थे, सब क्या बालदेवजी से प्रभावित हैं ? प्रभावित माने ब्लाइण्ड फौलोअर,···यानी आँख मूँदकर विश्वास करने वाले तो नहीं ? अन्ध-भक्त तो नहीं ?"

"जी, अन्धा भक्त तो महंथ सेवादास था, सो मर गया। उसकी कोठारिन तो···।"

"···ठीक है। अच्छी बात। आपने सारी बातें समझ लीं न ? मेम्बरी की जिल्द ले जाइए। कुछ लिटरेचर दे दीजिए इनको राजबल्लीजी ! जर

कॉमरेड सैनिकजी को इधर भेज दीजिएगा।···मैं है कॉमरेड गंगाप्रसादसिंह यादव सैनिकजी, और आप लोग हैं, कॉमरेड कालीचरन और···क्या नाम ? हाँ, वासुदेवजी। आज मेरीगंज में रामकृष्ण आश्रम में जो जुलूस आया था, इन्हीं लोगों की सदारत में। पार्टी प्लेज पर साइन कर दिया है। मेरीगंज में सबसे ज्यादे यादवों की आबादी है। वहाँ आपका जाना ही ठीक होगा। वहाँ आर्गेनाइज करने में कोई दिक्कत नहीं होगा।···वही, बस बालदेव है एक। अच्छा कॉमरेड कालीचरन ! आपको और भी कुछ पूछना है ?" सोशलिस्ट पार्टी के जिला-मन्त्रीजी पूछते हैं।

"जी, यदि हम कोई काम करने लगें, दस पबलिक की भलाई का काम, और उसको कोई 'हिंसावात' कहकर रोके तो हम क्या करेंगे ?" कालीचरन को बस यही पूछना है।

जिला-मन्त्रीजी कुछ सोचने लगते हैं। लेकिन कॉमरेड राजबल्लीजी को कुछ सोचने में समय नहीं लगता है; बस, तुतलाने में कुछ देरी लगे तो लगे—"अ-अ-अरे ! काम-काम-रेड, उससे साफ ल-प-लप-लपजों में कह दीजिए कि फो-फो-फो-फो ट्री-टी-ट्व के मुवमेंट में अहिंसा के भरोसे रहते तो आ-आ-आ-ज ग-ग-ही नसीव नहीं होती। उससे साफ लप-लप-लपजों में कह दीजिए कि तुम रि-रि-रि-ऐक्शनरी हो ! डि-डि-डि-डिम-डिमोरलाइज्ड हो ! यह ले जाइए, 'डा-डा-डा-डायले डायलेक्टि···द··· द···द्व···द्वन्दात्मक भौतिकवाद', 'स-स-समाजवाद ही क्यों', दो किताबें। इसमें सब-कुछ लिखा हुआ है। 'लाल प-प-पताका' की एक कापी ले जाइए! इसका ग्राह-ग्राह-ग्रा-ह-ग्राहक बनाइए। लाल झण्डा ले लिया है न ?"

लाल झण्डा !

उठ मेहनतकश अब होश में आ
हाथ में झण्डा लाल उठा,
जुल्म का नामोनिशान मिटा
उठ होश में आ बेदार हो जा !

कॉमरेड कालीचरन और कॉमरेड वासुदेव !···सुशलिग पाटी !···रास्ते

में कालीचरन वासुदेव को समझाता है, "यही पाटी असल पाटी है। गरम पाटी है। 'किरान्तीदल' का नाम नहीं सुना था?···'बम फोड़ दिया फटाक से मस्ताना भगतसिंह,' यह गाना नहीं सुने हो? वही पाटी है। इसमें कोई लीटर नहीं। सभी साग्री हैं, सभी लीटर हैं। सुना नहीं! हिंसावात तो बुरजुआ लोग बोलता है। बालदेवजी तो बुरजुआ है, पूंजीवाद है।···इस किताव में सब-कुछ लिखा हुआ है। बुरजुआ, बेटी बुरजुआ, पूंजीवाद, पूंजीपति, जालिम जमींदार, कमाने वाला खाएगा, इसके चलते जो कुछ हो। ···अब बालदेवजी की लीटरी नहीं चलेगी। हर समय हिंसावाद, कुछ करो तो बस अनसन। · कपड़ा की मेम्बरी किसी तरह मिल जाय, तब देखना!"

स्टेशन पर वासुदेवजी ने भी एक किताब खरीदी, सिर्फ एक आने में। 'लाल किताब'! एक आदमी झोली में लेकर बेच रहा था—ईशू संदेश!

दो किताबें हुईं अब—'ईशू संदेश' और 'द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद!'

सग्रह

आचारज गुरु कासीजी से आये हैं।

सभी मठ के जमींदार हैं आचारज गुरु। साथ में तीस मुरती आये हैं—भंडारी, अधिकारी, सेवक, खवास, चिलमची, अमीन, मुन्शी और गवैया! साधुओं के दल में एक नागा साधू भी है। यद्यपि वह दूसरे मत को मानने वाला मुरती है, फिर भी आचारजजी उसको साथ में रखते हैं। बड़ा करोधी मुरती है। हाथ में छोटा-सा कुल्हाड़ा रखता है। लम्बी दाढ़ी, जटा, सारे देह में भभूत और कमर में सिर्फ चांदी की सिकड़ी! नंगा रहता है। महंथ साहेब के साथ वह जिस मठ पर जाता है, वहां के महंथ और अधिकारी को छट्ठी का दूध याद करा देता है। क्या मजाल कि सेवा में किसी किस्म की तरोटी हो। इसीलिए आचारज गुरु उसको साथ में रखते हैं।

नागा बाबा जब गुस्सा होते हैं तो मुंह से अश्लील-से-अश्लील गालियों की झड़ी लग जाती है। आते ही लछमी दासिन पर बरस पड़े—"तेरी जात को मच्छड़ काटे ! हरामजादी ! रण्डी ! तैं समझती क्या है री ? ऐं, दुनियाँ को तैं अन्धा समझती है ? बोल !···लाल मिर्च की बुकनी डाल दूं। छिनाल ! तैं आचारज गुरु को गाली देती है ? तेरे मुंह में कुल्हाड़े का लट्ठा डाल दूं, बोल ! साली, कुत्ती ! साधू का रगत बहाती है और बाबू लोग से मुंह चटवाती है ! दूं अभी तेरे गाल पर चांटा; हट जा यहाँ से, कातिक की कुतिया !"

लछमी हाथ जोड़कर बैठी रहती है। नागा साधू की गालियों पर लोग ध्यान नहीं देते, बुरा नहीं मानते। वह तो आशीर्वाद है। वह नागा बाबा का पाँव पकड़कर कहती है, "क्षिमा कीजिए परभू दासिन का अपराध !"

रामदास की तो खड़ाऊँ से पीटते-पीटते देह की चमड़ी उधेड़ दी है नागा बाबा ने—"सूअर के बच्चे, कुत्ते के पिल्ले ! तैं महंथ बनेगा रे ! आ इधर ! तुझको खड़ाऊँ से टीका दे दूं महंथी का ! तेरी बहान को ! (खटाक्) तेरी माँ को ! (खटाक्) घसियारे का बच्चा ! जा लक्कड़ लाकर धूनी में डाल !"

लरसिंघदास खुश है। इसीलिए तो वह अगवानी करने स्टेशन तक गया था। सारी बातें सुनकर आचारजजी भी क्रोध से लाल हो गए थे। ···दासिन को मठ से निकालना होगा। नागा बाबा को पाँच-भर गाँजा दिया है लरसिंघदास ने। अधिकारीजी को एक सौ रुपैया कबूला है।··· महंथी तो धरी हुई है। सतगुरु की दया है।

आचारज गुरु ने लछमी से स्पष्ट कह दिया है—"रामदास को महंथी का टीका नहीं मिल सकता। क्या सबूत है कि वह महंथ सेवादास का चेला है ? है कहीं लिखा हुआ ? कोई चील है ? पंथ के नियम के मुताबिक चेलाहीन मठ का महंथ आचारज ही बहाल कर सकता है। तू मठ पर नहीं रह सकती। सेवादास ने तुझे रखेलिन बनाया था। सेवादास नहीं है, अब तू अपना रास्ता देख।"

"साहेब की जो मरजी !"

साहेब की मरजी !···नागा बाबा की जो मरजी !

नागा बाबा रात में उठकर एक बार चारों ओर देखते हैं, फिर लछमी की कोठरी की ओर जाते हैं खाली पैर। खड़ाऊँ तो खट-खट करेगी !

···हरामजादी किवाड़ बंद करके सोती है। यहाँ कौन सोया है ? वही पिल्ला, रामदसवा !···"अरे उठ तेरी जात को मच्छड़ काटे। दासिन को जगा। बाबा का गाँजा मारकर सेज पर सोई हुई है। कहाँ है मेरा गाँजा ? जानता नहीं, तीन-भर रोज की खुराकी है। कहाँ है ?"

"सरकार ! आधी रात में गाँजा···।"

"चुप हरामजादे ! दासिन को जगा।"

"आज्ञा प्रभू !" लछमी किवाड़ खोलकर निकलती है।

"गाँजा कहाँ है ?"

"हाजिर है सरकार !" लछमी एक बड़ी-सी पुड़िया नागा के हाथ में देती है।

···अरे ! हरामजादी के पास इतना गाँजा कहाँ से आया ? पूरा तीन-भर मालूम होता है।···यह साला रमदसवा, कोढ़ी का बच्चा यहाँ खड़ा होकर क्या करता है ?···

"अबे सूअर के बच्चे, तैं यहाँ खड़ा होकर क्या करता है ?" ···खट् खटाक् ! लछमी जल्दी से किवाड़ बन्द कर लेती है।

"अच्छा, कल देखना, तुझे बाल पकड़ मठ से घसीटकर नहीं निकाला तो कसम गुरु मचेन्दरनाथ की !"

लरसिंघदास एकान्त में एक बार लछमी से कहना चाहता है, 'तुम घबड़ाओ मत लछमी ! महंथ तो मैं ही बनूँगा। तुम मठ में ही रहोगी। तुमको मठ से कोई निकाल नहीं सकता। तुम निराश मत होओ !' लेकिन मौका ही नहीं मिलता है। शायद सुबह ही लछमी कहीं चली न जाय।

आचारज गुरु के जवान अधिकारी को भी रात-भर नींद नहीं आई, "पुरैनियाँ जिला में कम्बल के नीचे भी घुसकर ससुरे मच्छर काटे हैं हो।"

सुबह को लछमी बालदेवजी के पास जाती है। बालदेवजी पुरजी बाँट रहे थे। सारी बातें सुनकर बोले, "कोठारिनजी, आचारज गुरु तो सभी मठ के नेता हैं। वे जो करेंगे, वही होगा। इसमें हम लोग क्या कर सकते हैं? बड़ा धरमसकट है! किसी के धरम में नाक घुसाना अच्छा नहीं है। ···तीसरे पहर टीका होगा? हम आवेंगे।"

लछमी दासिन को बालदेवजी पर पूरा भरोसा था। तहसीलदार साहब घर में नहीं हैं। डॉक्टर साहब पर-पंचायत में नहीं जाते हैं। सिंघजी सुनकर गुम हो गए। खेलावनजी ने तो बालदेवजी पर ही बात फेंक दी—जाने बालदेव! सतगुरु हो! कोई उपाय नहीं।

"साहेब बन्दगी कोठारिनजी!"

"कौन! कालीचरन बबुआ! दया सतगुरु के!"

"हाँ, टीका कब होगा? कीरतन नहीं करवाइएगा?"

लछमी दासिन कालीचरन को रो-रोकर सुनाती है, "काली बाबू! ऐसी खराब-खराब गाली! उफ़! सतगुरु हो!···मैं अब कहाँ जाऊँगी? कौन सहारा है मेरा?"

"अच्छी बात! आप कोई चिन्ता मत कीजिए।···बालदेवजी क्या करेंगे, वह तो बुरजुआ है। रोइए मत।"

लछमी देखती है कालीचरन को·· उस बार परयागजी के जादूघर में एक आबलूस की मूर्ति देखी थी, ठीक ऐसी ही।

मठ पर सभी साधू-सती, बाबू-बबुआन, दास-सेवकान शामियाने में बैठे हैं। नरसिंघदास ने सिर का जुल्फा छिलवा ली है। अधकट्टी मूंछ को भी मुड़वा लिया है। साधुओं की भाषा में कहते हैं—मोंछभदरा। सुफेद मल-मल की नई लंगोटी और कोपीन, देह पर चादर नहीं है।···चादर तो आचारज गुरु देंगे। आचारज गुरु का मुन्शी एकरारनामा और सूरतहाल लिख रहा है। लछमी एक किनारे चुपचाप बैठी है जमीन पर। रामदास के सारे देह में हल्दी-चूना लगा है। बालदेवजी को लछमी पर बड़ी दया आ रही है। लेकिन क्या किया जाय!

"सभी साधू-सती, सेवक-सेवकान सुन लीजिए !" आचारजजी का मुन्शी दलील पढ़ता है। "लिखितं लरसिंघदास चेले गोवरधनदास मोतफा जात बैरागी फिरके···। अब आप लोग इस पर दस्तखत कर दीजिए।"···लछमी फूट-फूटकर रो पड़ती है। सतगुरु हो !

"तैं चुप रह हरामजादी ! चुप रहती है या लगाऊँ डंडा !" नागा बाबा चल्लाते हैं। "तैं चुप !"

जो दस्तखत करना जानते हैं दस्तखत कर रहे हैं। बालदेवजी ने भी दस्तखत कर दिया। उनका हाथ जरा भी नहीं काँपा।···कालीचरन दलील हाथ में लेकर उठता है—"आचारजजी ! आप कहते हैं, महंथ सेवादास बिन्ना चेला के मरा है। आप क्या गाँव के सभी लोगों को उल्लू ही समझते हैं ?"

"कालीचरन !" बालदेवजी मना करते हैं, "बैठ जाओ।"

"कालीचरन !" खेलावन यादव डाँटते हैं।

लेकिन कालीचरन आज नहीं रुकेगा। कोई हिंसावाद कहे या अनसन करे ! वह भी भाखन दे सकता है।

"···हम जानते हैं और अच्छी तरह जानते हैं कि रामदास इस मठ का चेला है, महंथ सेवादास का चेला है। उसको महंथी की टीका न देकर, आप एक नम्बरी बदमास को महंथ बना रहे हैं।···मठ में हम लोगों के बाप-दादे ने जमीन दान दी है, यह किसीकी बपौती संपत्ति नहीं···।"

"तेरी जात को मच्छड़ काटे, चुप साले ! कुत्ते के बच्चे ! अभी कुल्हाड़े से तेरा···! तेरी माँ को···।"

"चुप रह बदमास !" कॉमरेड वासुदेव उछलकर खड़ा होता है।

"पकड़ो सैतान को !" कॉमरेड सुन्दर चिल्लाता है।

"भागने न पावे !"

"मारो !"

···ले-ले ! पकड़-पकड़ ! मार-मार, हो-हो !···रुको, ऐ वासुदेव ! ऐ सुन्दर !···ऐ !···

नागा बाबा दाढ़ी खुजाते हैं, जटा खुजाते हैं, चप्पड़ों की मार से आँखों

के आगे जुगनू उड़ते नजर आ रहे हैं। गाँजे का नशा उतर गया है। ···आखिर दाढ़ी और जटा नोचवाकर, कुल्हाड़ा छोड़कर ही भागते हैं।··· पकड़ो, पकड़ो ! छोड़ दो, छोड़ दो ! अब मत मारो ! नागा बाबा भागे जा रहे हैं। भभूत लगाया हुआ नंगधड़ंग शरीर, बिखरी हुई जटा ! दौड़ते समय उनकी सूरत और भी भयावनी मालूम होती है। गाँव के कुत्ते पागल हो जाते हैं। भौं ! भौं !···नागा बाबा के पीछे दर्जनों गँवार कुत्ते दौड़ रहे हैं। अधिकारी महंथ लरसिंघदास तो चार चाँटे में ही चें बोल जाते हैं—"नहीं लेंगे महंथी, छोड़ दीजिए हमको !"

"छोड़ दो ! छोड़ दो !" कालीचरन हुक्म देता है। लरसिंघदास भी भागते हैं।

पंचों को लकवा मार गया है; साधुओं की हालत खराब है। पंचों के मुँह पर हवाइयाँ उड़ रही हैं। और सबों के बीच, कालीचरन हाथ में दलील लेकर सिकन्दरशाह बादशाह की तरह खड़ा है। पलक मारते ही क्या-से-क्या हो गया !···जैसे रामलीला का धनुसजग हो गया।··

"अब आचारजजी, आपसे हम अरज करते हैं कि सुरतहाल पर रामदासजी का नाम चढ़ाकर महंथी का टीका दे दीजिए !"

···आचारज गुरु काँपते हुए कहते हैं, "ब-बुआ-! हम तो सतगुरु की दया से···हमको तो लोगों ने कहा कि सेवादास को कोई चेला ही नहीं था। जब रामदास उसका चेला है तो वही महंथ होगा।·· मुन्शीजी, लिखिए सूरतहाल ! ले आओ, चादर, दही का बरतन !"

रामदास नहा-धोकर, देह के हल्दी-चूने के दाग को छुड़ा आया है। दही का टीका कपाल पर पड़ते ही सारे देह की जलन मिट गई।···सतगुरु हो ! सतगुरु हो !

पूजा-विदाई लिये बिना ही आचारजजी आसन तोड़ रहे हैं। पंचायत के लोग भी चुपचाप अपने-अपने घर की ओर वापस होते हैं। लक्ष्मी हाथ में पूजा-विदाई की थाली लेकर खड़ी है—"कबूल हो प्रभू ! दासिन का अपराध छिमा करो प्रभू !"

"काली बाबू !"

बालदेवजी उलटकर देखते हैं। लछमी कालीचरन को बुलाकर अन्दर ले जा रही है।···कालीचरन ने अन्याय किया है, घोर अन्याय किया है, हिंसावाद किया है। इस बार दो दिन का अनसन करना पड़ेगा।

खेलावनजी जाति-बिरादरी की पंचायत बुलाकर सब बदमाशों को ठीक करेंगे। हे भगवान् ! साधुओं के शरीर पर हाथ उठाना !···

"काली बाबू, तुम देवता हो !"

कालीचरन कुश्ती लड़ता है। उस्ताद ने कहा है, कुश्ती लड़ने वालों को औरतों से पाँच हाथ दूर रहना चाहिए।···वह पाँच हाथ से ज्यादे दूरी पर खड़ा है।

अट्ठारह

"क्या नाम ?"

"सनिच्चर महतो।"

"कितने दिनों से खाँसी होती है ? कोई दवा खाते थे या नहीं ? ···क्या, थूक से खून आता है ? कब से ?·· कभी-कभी ? हूँ !···एक साफ़ डिब्बा में रात-भर का थूक जमा करके ले आना।···इधर आओ।···जोर से साँस लो।···एक-दो-तीन बोलो।·· जोर से। हाँ, ठीक है।"

"क्या नाम ?"

"दासू गोप।"

"पेट देखें !···हूँ !···पिल्ही है। सूई लगेगी। सूई के दिन पुरजी लेकर आना। कल खून देने के लिए सुबह ही आ जाना। समझे !"

"क्या नाम ?"

"निरमला।"

"डागडर बाबू !" एक बूढ़ा हाथ जोड़कर आगे बढ़ आता है।

गिड़गिड़ाता है—"हमारी बेटी है। आज से करीब एक साल पहले भौंरा ने एक आँख में झाँटा मारा। उसके बाद दोनों आँखें आ गईं। बहुत किस्म की जंगली दवा करवाये, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। अब तो एकदम नहीं सूझता।"

बला की खूबसूरत है यह निरमला। दूध की तरह रंग है चेहरे का। ···विशुद्ध मिथिला की सुन्दरता। भौंरे ने गलती नहीं की थी। आँख देखें! ···और आगे बढ़ आइए।···आह!···एक बूंद आईड्रॉप के बगैर दो सुन्दर आँखें सदा के लिए ज्योतिहीन हो गईं।·· अब तो इलाज से परे हैं।···

डॉक्टर ने आँखों की पपनियाँ उलटकर रोशनी की हल्की रेखा भी खोजने की चेष्टा की।···ऊँहूँ! पुतलियाँ कफ़न की तरह सफ़ेद हो गई है। वह सोचता है, यदि तूलिका से इन पुतलियों में रंग भरा जा सकता! हाँ, कोई चित्रकार ही अब इन आँखों को सुन्दर बना सकता है, ज्योति दे सकता है।

"डागडर बाबू!" रोगिनी कहती है। आवाज में कितनी मिठास है! "बहुत नाम सुनकर आई हूँ। बहुत उम्मीद लेकर आई हूँ, बाईस कोस से। भगवान् आपको जस दें!"

प्रकाश दो! प्रकाश दो! अँधेरे में घुटता हुआ प्राणी छटपटा रहा है, आत्मा विकल है—रोशनी दो! डॉक्टर क्या करे?···डॉक्टर को भावुक नहीं होना चाहिए।

"घबराइए नहीं, दवा दे रहा हूँ। यहाँ ठीक नहीं होगा तो पटना जाना पड़ेगा।"

"हाँ, दूसरा रोगी!···क्या नाम है?"

"रामचलित्तर साह।"

"क्या होता है?"

"जी! कुछ खाते ही कै हो जाता है। पानी भी···"

"कब से?"

"सात दिन से।"

"अरे ! सात दिन से !···ज़रा इधर आओ ।"

"जी ? बेमारी तो घर पर है ।"

"घर कहाँ ?"

"जी, सरसौनी बिजलिया । यहाँ से कोस दसेक है ।"

हठात् सभी रोगी एक ओर हट जाते हैं, खूँखार जानवर को देखकर जिस तरह गाय-बैलों का झुण्ड भड़क उठता है; सभी के चेहरे का रंग उतर जाता है । औरतें अपने बच्चे को आँचल में छिपा लेती हैं । सब की डरी हुई निगाहें एक ही ओर लगी हुई हैं ।

डॉक्टर उलटकर देखता है—एक अधेड़ स्त्री ।···भद्र महिला !

"कहिए, क्या है ?"

"डागडर बाबू ! यह मेरा नाती है, बस यही एक नाती ! मेरी आँखों का जोत है यह । एक साल से पाखाने के साथ खून आता है । इसको बचा दीजिए डागडर बाबू !···यह नहीं बचेगा ।"

"घबराइए नहीं ।···इधर आओ तो बाबू ! क्या नाम है ?···गनेश ! वाह ! ज़रा पेट दिखलाइए तो गनेशजी !"

गनेश की नानी दवा लेकर चली जाती है । रोगियों का झुण्ड फिर डॉक्टर के टेबल को घेर लेता है ।

चिचाय की माँ कहती है, "पारवती की माँ थी । डाइन है ! तीन कुल में एक को भी नहीं छोड़ा । सबको खा गई । पहले भतार को, इसके बाद देवर, देवरानी, बेटा-बेटी, सबको खा गई । अब एक नाती है, उसको भी चबा रही है ।"

चिचाय की माँ ने ऐसा मुँह बनाया मानो वह भी कुछ चबा रही हो । ···डॉक्टर चिचाय की माँ को देखता है ।···काली, मोटी, गन्दी और झगड़ालू यह बुढ़िया चिचाय की माँ, जो बेवजह बकती रहती है, चिल्लाती रहती है ।···यह डाइन नहीं ? सुमरितदास उस दिन कहता था—"चिचाय की माये तो जनाना डागडर है । पाँच महीने के पेट को भी इस सफ़ाई से गिरा देती है कि किसी को कुछ मालूम भी नहीं होता ।"

यह डाइन नहीं और गनेश की नानी डाइन है ? आश्चर्य !

···गनेश की नानी ! बुढ़ापे में भी जिसकी सुन्दरता नष्ट नहीं हुई, जिसके चेहरे की झुर्रियों ने एक नई खूबसूरती ला दी है। सिर के सफ़ेद बालों के घुंघराले लट ! होठों की लाली ज्यों-की-त्यों है। ठुड्डी में एक छोटा-सा गड्ढा है और नाक के बगल से एक रेखा निकल नीचे ठुड्डी को छू रही है। सुन्दर दन्त-पंक्तियाँ !···जवानी की सुन्दरता आग लगाती है, और बुढ़ापे की सुन्दरता स्नेह बरसाती है। लेकिन लोग इसे डाइन कहते हैं। आश्चर्य !

"कहाँ रहती है ?"

"इसी गाँव में। कालीचरन का घर देखा है न ! उसी के पास। बैस बनियाँ है।···कितना ओझागुनी थक गया, इसको वस नहीं कर सका। जितिया परब[1] की रात में कितनी बार लोगों ने इसको कोठी के जंगल के पास, गोदी में बच्चा लेकर, नंगा नाचते देखा है। गैनू भैसवार ने एक बार पकड़ने की कोसिस की थी। ऐसा झरका बान[2] मारा कि गैनू के सारे देह में फफोले निकल आए। दूसरे ही दिन गैनू मर गया।···"

रोज़ रात में डॉक्टर केस-हिस्ट्री लिखने बैठता है।···अभी उसके हाथ में कालाआज़ार के पचास ऐसे रोगी हैं, जिनके लक्षण कालाआज़ार के निदान को भटकाने वाले साबित हो सकते हैं।

एक : (क) सेवी मण्डल, उम्र ३५, हिन्दू (मर्द), गाँव मेरीगंज, पोलिया-टोली। तकलीफ : दाँत और मसूड़े में दर्द। दतुअन करने के समय खून निकलना, मुँह महकना, देह में खुजली, भूख की कमी। बुखार : नहीं। निदान : पायोरिया। दवा : कारबोलिक की कुल्ली। विटामिन सी का इंजेक्शन।

(ख) पन्द्रह दिन के बाद : शाम को सिर दर्द की शिकायत। बुखार ९९·५, रात में पसीना।···कैलशियम पाउडर।

(ग) पाँच दिन के बाद पेट खराब हो गया है। बुखार : १००।

१. जीताष्टमी।

२. अग्निबाण।

कार्मिनेटिव मिक्शचर। कालाआजार के लिए खून लिया गया।

(घ) अल्डेहाइड टेस्ट का फल : (+ +-) कालाआजार! चिकित्सा : नियोस्टिबोसन का इंजैक्शन।

दो : (क) तेतरी, उम्र : १७, हिन्दू (औरत), गाँव पासवानटोली, मेरीगंज।

तकलीफ : हड्डियों के हर जोड़ में दर्द। कभी-कभी नाक से खून गिरता है। बुखार : नहीं। (थर्मामीटर से देखा ९९·५)। भूख : नहीं। रोग अनुमान : गठिया, वात।

दवा : विटामिन बी का इंजैक्शन। मालिश का तेल। डब्ल्यू० आर० के लिए खून लिया।

(ख) डब्ल्यू० आर० (गरमी) : (—) गरमी नहीं।

(ग) एक सप्ताह बाद नाक से खून गिरा।'''पेट खराब हुआ। कालाआजार के लिए खून लिया।

(घ) अल्डेहाइड टेस्ट का फल : संदेहात्मक। फिर खून लिया।

(ङ) ब्रह्मचारी टेस्ट का फल : (+)

चिकित्सा—युरिया स्टिबामाइन (ब्रह्मचारी)।

तीन : (क) रामेसर का बच्चा : उम्र २ महीने। नाभी में घाव। रात में रोता है, दूध फेंकता है।'''माँ को कैलशियम पाउडर।

(ख) एक सप्ताह बाद सारे देह में चकत्ते। अनुमान : एलरजिक।

(ग) चार दिन के बाद : चकत्तों में पानी भर गया है। डब्ल्यू० आर० के लिए माँ का खून लिया। फल : (—) नहीं।

(घ) कालाआजार के लिए माँ का खून लिया। फल : (—) नहीं। कालाआजार के लिए बच्चे का खून लिया। फल : (+ + +) कालाआजार।

और इस बच्चे की यदि मृत्यु हुई तो जरूर किसी डाइन के मत्थे दोष मढ़ा जायगा। देह में फफोले! गनेश की नानी पर ही संदेह किया जायगा। गनेश की नानी! न जाने क्यों वह गनेश की नानी से कोई प्यारा-सा

सम्बन्ध जोड़ने के लिए बेचैन हो गया है। कमली कहती है, "मौसी! मौसी में बहुत गुन है। सींकी से बड़ी अच्छी चीजें बनाती है— फूलदानी, टाली, पंखे। कशीदा कितना सुन्दर काढ़ती है! पर्व-त्योहार और शादी-ब्याह में दीवार पर कितना सुन्दर चित्र बनाती है – कमल के फूल, पंख और मयूर! चौक कितना सुन्दर पूरती है!"···वह भी उसे मौसी कहेगा।

"मौसी!"

"कौन?"

"मैं हूँ। डॉक्टर। गनेश कहाँ है?"

"डागटर बाबू! आप? आइए, बैठिए। गनेश सो रहा है।···मैं तो अकचका गई, किसने मौसी कहकर पुकारा!" बूढ़ी की आँखें छलछला आती हैं।

"मौसी! सुना है तुम एक खास किस्म का हलवा बनाती हो!" मौसी हँस पड़ती है, 'अरे दुर! किसने कहा तुमसे? पगली कमली ने कहा होगा जरूर।···कमली कैसी है अब? इधर तो बहुत दिन से आई ही नहीं है। पहले तो रोज आती थी।"

"अच्छी है।·· अच्छी हो जायगी। मौसी! एक बात पूछूँ?···तुम्हारी कोई बहन, माँ, बेटी या और कोई···सहरसा इलाके में, हनुमानगंज के पास कभी रहती थी?" डॉक्टर अपने बेतुके सवाल पर खुद हँसता है।

"सहरसा इलाके में हनुमानगंज के पास? · रहो, याद करने दो।··· नहीं तो! क्यों, क्या बात है?"

"यों ही पूछता हूँ। ठीक तुम्हारा ही जैसी मेरी एक मौसी वहाँ भी है।" बात को बदलते हुए डॉक्टर कहता है, "मुझे एक फूल की डाली दो न, मौसी!"

उफ़!···सचमुच डाइन है यह बुढ़िया। इसकी मुस्कराहट में जादू है। स्नेह की बरसा करती है। ऐसी आकर्षक मुस्कराहट!

गनेश बड़ा भोला-भाला लड़का है। बड़ा खूबसूरत! गोरा रंग, लाल ओंठ और घुंघराले बाल उसे नानी के पक्ष से ही मिले हैं।···बड़ा अकेला

लड़का मालूम होता है। मौसी कहता है, "किसके साथ खेले ? गाँव के बच्चे अपने साथ खेलने नहीं देते।···मेरे ही साथ खेलता है।"

"गनेशजी, जरा पेट दिखाइए तो !···मौसी ! कल इसे सुबह ले आना तो ! खून लूँगा। होंठ मुरझाए रहते हैं।"

गनेश को अब एक मामा मिल गया।

"सचमुच ऐसा हलवा कभी नहीं खाया मौसी !···विश्वास करो।··· गनेश को भी दो।-कोई हरज नहीं।"

"मामा देखो !" गनेश गले में स्टेथस्कोप लटकाकर हँसता है।

"वाह ! मेरा भानजा डॉक्टर बनेगा।"

डॉक्टर जब मौसी के घर से निकला तो उसने लक्ष्य किया, कालीचरन के कुएँ पर पानी भरने वाली स्त्रियों की भीड़ लग गई है। सभी आँखें फाड़, मुँह बाये, आश्चर्य से डॉक्टर को देखती हैं—"इस डॉक्टर को काल ने घेरा है सायद।"

"लाल सलाम !" कालीचरन मुट्ठी बाँधकर सलाम करता है, और डॉक्टर को एक लाल परचा देते हुए कहता है, "कॉमरेड मंत्रीजी आपको पहचानते हैं डॉक्टर साहब !···हाँ, कृष्णकांत मिश्रजी !"

आइए ! आइए ! जरूर आइए !
कमाने वाला खाएगा, इसके चलते जो कुछ हो।
किसान राज : कायम हो।
मजदूर राज : कायम हो।

प्यारे भाइयो ! ता०···को मेरीगंज कोठी के बगीचे में किसानों की एक विशाल सभा होगी। सोशलिस्ट पार्टी पूर्णिया के सहायक मंत्री साथी गंगाप्रसादसिंह यादव सैनिकजी ··।

"परसों सभा है। आइएगा।···लाल सलाम !"

उन्नीस

चलो ! चलो ! सभा देखने चलो ।

सोशलिस्ट पार्टी की सभा की खबर ने संथालटोली को विशेष रूप से आंदोलित किया है। गाँव में अस्पताल खुलने की खुशखबरी की कोई खास प्रतिक्रिया संथालों पर नहीं हुई थी। गाँव के लड़ाई-झगड़े और मेल-मिलाप से भी उन्हें कुछ लेना-देना नहीं। लेकिन यह सभा ? जमीन जोतने वालों की ?···कर्तव्यनिष्ठ और मेहनती संथाल किसानों के दिमाग की मुद्दत से उलझी हुई गुत्थी का सही सुलझाव ! जमीन जोतने वालों की सभा !

"जमीन किसकी ?···जोतने वालों की ! जो जोतेगा वह बोयेगा, जो बोयेगा वह काटेगा। कमाने वाला खायेगा, इसके चलते जो कुछ हो !" कालीचरन समझा रहा है।

चारों ओर स्वस्थ, सुडौल, स्वच्छ और सरल इन्सानों की भीड़। श्याम मुखड़ों पर सफ़ेद मुस्कराहट, मानो काले बादलों में तीज के चाँद के सैकड़ों टुकड़े ! बिरसा माँझी का जवान बेटा मंगल माँझी कालीचरन के वाक्यों को गीतों की कड़ी में जोड़ने की चेष्टा करता है···

जोहिरे जोतवे सोहिरे बोयवे···

सनियाँ मुरमू कालीचरन की हर बात पर खिलखिलाकर हँसती है—हँ हँ हँ हँ हँ हँ हँ ! सरगम के सुर में हँसती है सनियाँ। तीतर की आवाज़ की तरह हँ हँ हँ हँ ! पीछे की ओर झूलता हुआ रंगीन आँचल रह-रहकर चंचल हो उठता है, मानो नाचने के लिए मोरनी पंख तौल रही हो। उसके चरण थिरकने के लिए चपल हो उठे हैं।

मानर की मन्द आवाज़·· रिंग रिंग ता धिन-ता !
डिग्गा की अटूट ताल·· डा डिग्गा, डा डिग्गा !
उन्मुक्त स्वर लहरी···जोहिरे जोतवे सोहिरे बोयवे !
मुरली की लय पर पायलों का छुम छुम, छन्न छन्न !

डा डिग्गा डा डिग्गा
रिंग रिंग ता घिन-ता !
चल चल रे, सभा देखे ला।...

चार पुश्त पहले की बात ! संथाल परगना के तीनपहाड़ी अंचल की पथरीली माटी का मोह तोड़कर, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी रास्ते को तय करके जब इनके पूर्वज इस गाँव की नरम माटी पर आकर बसे थे ! गाँव वालों ने जमींदार के पास जाकर फरियाद की थी, 'हुजूर ! माई-बाप ! जंगली लोग हैं। सुनते हैं तीर-धनुष से जान मार देने पर भी सरकार बहादुर इनको कुछ नहीं कर सकता है। इन्हें हरगिज नहीं बसाया जाय हुजूर !'

लेकिन जमींदार ने समझाकर कहा था, 'ऐसी बात नहीं। वे बड़े मिहनती होते हैं। धरमपुर इलाके में जाकर देखो, राजा लछमीनाथसिंह ने इनसे हजारों बीघा बनजर जमीन आबाद करवा लिया है; परती और भीठ जमीन से ही तेजू बाबू को दो हजार मन गेहूँ उपजाकर संथालों ने दिया है। मालूम ?"

जमींदार ने गाँव वालों को विश्वास दिलाया था कि इन्हें गाँव से अलग ही बसाएँगे। सभी जमींदारों ने इन्हें जंगलों में ही बसाया है।

उसके बाद से ही बबूल, झरबेर और साँहुड़ के पेड़ों से भरे हुए जंगल हर साल साफ़ होकर आबाद होते गए। आज जहाँ सैकड़ों बीघे जमीन में मोती के दानों से भरी हुई गेहूँ की बालियाँ पुरवैया हवा में झूम रही हैं, धरती का वह टुकड़ा सर्वे के कागजात और नक्शे में जंगल के नाम से दर्ज है, जिस जंगल में बाघ का शिकार खेलने के लिए जिले-भर के राजा और जमींदार जमा होते थे। गाँव के नई उम्र के लड़के तो विश्वास नहीं करते।

नीलहे साहबों के नील के हौज ज्यादातर इन्हीं मूक इन्सानों के काले शरीर के पसीने से भरे रहते थे।

साहबों के कोड़ों की मार खाकर, जमींदारों की कचहरियों में दिन-

भर मोगलिया बाँधी की सज़ा भुगतने के बाद शाम को मोहन की जादू-भरी वंशी बजी और सब कष्ट दूर हो गए।

रिंग रिंग ता धिन-ता
डा डिग्गा डा डिग्गा !···

सोने के अनाज से भरे हुए, धरती के गुप्त भण्डार का उद्घाटन करने वालों पर धरती माता का कोप होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि आज ज़मीन के मालिकों ने, ज़मीन के व्यवस्थापकों ने और धरती के न्याय ने धरती पर इनका किसी किस्म का हक नहीं जमने दिया है। जिस ज़मीन पर उनके झोंपड़े हैं, वह भी उनकी नहीं। हल में जुता हुआ बैल दिन-भर खेत चास[२] करता है, इसलिए बैलों को भी धरती का हकदार कबूल किया जाय ? यह कैसी बात है ?

१९३७ के कांग्रेसी मंत्रिमंडल के समय इस ज़िले में एक अंग्रेज़ कलक्टर आया था। उसने इस व्यवस्था को अन्याय समझ सुधारने की चेष्टा की थी। ज़िले-भर के भूमिहार, ज़मींदार और राजा घबरा गए थे। ज़िले के अधिकांश नेता भूमिहार और ज़मींदार थे। अंग्रेज़ कलक्टर पर इलज़ाम लगाया गया—संथालों को उभारकर, ज़िले में अशांति फैलाकर, कांग्रेसी मंत्रिमंडल को असफल बनाने का षड्यंत्र करता है ! 'कांग्रेस-संदेश' के सम्पादक ने सम्पादकीय में संथालों के प्रति थोड़ी समवेदना प्रकट की थी। बेचारे विद्यालंकार संपादक को उसी दिन मालूम हुआ था कि विद्या का अलंकार कितना बेमानी है। ज़िला-मंत्री ने आँखें लाल करके कहा था, 'विद्यापीठ का शास्त्र यहाँ काम नहीं देगा। विद्यापीठ में गधे के सर पर सींग तो नहीं जम सकती है।'···

ज़मींदारों ने अपने भाड़े के लठैतों को जगह-जगह संथालों की लहलहाती फ़सलों पर हुलका[३] कर, संथाल टोली पर चढ़ाई करवाकर, रुपये

१. एक कड़ी सज़ा।
२. जोतना।
३. धावा करना।

लाठी के हिसाब से बटोरे हुए लठैतों को संथालों के तीरों से जख्मी करवाकर, सबल प्रमाण पेश कर दिया था—संथालों के जोर-जुल्म का मुख्य कारण है यह अंग्रेज कलक्टर। इसी के बल पर वे कूद रहे हैं।

अंग्रेज कलक्टर की तुरत बदली हो गई। बहुत से संथाल सरकारी गोली से घायल हुए और सैकड़ों ने बिहार के विभिन्न जेलों में सफैया-कमान[1] में काम करते-करते सारी उम्र बिता दी। इसके बाद फिर कौन चूं करता है! लेकिन मानर और डिग्गा का आवाज कभी मन्द नहीं हुई, बाँसुरी कभी मन्द नहीं हुई और न उनके तीरों में ही जंग लगे। आज भी कभी-कभी बनैले जानवरों के शिकार के समय, सूरज की किरणों में चमककर चकाचौंध पैदा कर देते हैं इनके तीर!

मलेरिया और कालाआजार की क्रीड़ा-भूमि में भी ये सबल और स्वस्थ रहकर क्रीड़ा करते हैं। हड्डियों पर कलापूर्ण ढंग से तराशकर बैठाये जैसे माँस का उभार कभी सूखा नहीं; ताजे फूलों की पंखड़ियों जैसे उनके ओंठ कभी जर्द नहीं हुए और न किसी संथाल के पेट में कभी पिल्ही बढ़ जाने की बात ही सुनी गई। अस्पताल खुलने से उनका क्या फ़ायदा होगा? लेकिन जमीन!···जोतने वालों की?···

"चलो! चलो! सभा देखने चलो!"

किसान राज कायम हो!
मजदूर राज कायम हो!
गरीबों की पार्टी सोशलिस्ट पार्टी,
सोशलिस्ट पार्टी जिन्दाबाद!

"···यह जो लाल झण्डा है, आपका झण्डा है, जनता का झण्डा है, अवाम का झण्डा है, इन्कलाब का झण्डा है। इसकी लाली उगते हुए आफ़ताब की लाली है, यह खुद आफ़ताब है। इसकी लाली, इसका लाल रंग क्या है?···रंग नहीं! यह गरीबों, महरूमों, मजलूमों, मजबूरों, मजदूरों के खून में रँगा हुआ झंडा है!" कॉमरेड सैनिकजी भाषण दे रहे हैं।

१. मेहतर कमांड।

"ऐं ! खून में रँगा हुआ झंडा !" बादरदास ने कालीचरन के कहने से हाथ में झंडा लिया था। बादरदास वैष्णव है, मांस-मछली छूता भी नहीं; और यह आदमी के खून में रँगा हुआ झंडा ? उसका धरम भ्रष्ट कर दिया कलिया ने। छिः-छिः ! वह हाथ में झंडे का बाँस थामे खड़ा है ? ···वह अचानक ही झंडे के बाँस को छोड़ देता है !···आदमी के खून में रँगा हुआ झंडा !

जोतखी काका कहते हैं, "पताखा पतन, अशुभ, अमंगल और अनिष्ट की सूचना है।"

सैनिकजी अपना भाषण जारी रखते हैं। भाषण के बीच में रुक जाने से फिर शुरू से याद करना पड़ता है—"जिस तरह सूरज का डूबना एक महान् सच है, पूंजीवाद का नाश होना भी उतना ही सच है। मिलों की चिमनियां आग उगलेंगी और उन पर मज़दूरों का कब्ज़ा होगा। ज़मीनों पर किसानों का कब्ज़ा होगा। चारों ओर लाल धुंआ मँडरा रहा है। उठो, किसानों के सच्चे सपूतो ! धरती के सच्चे मालिको, उठो ! क्रान्ति का मशाल लेकर आगे बढ़ो !"

"बोलिए एक बार प्रेम से—सोशलिस्ट पाटी की जै !" यही पार्टी असली है। किसानों की पार्टी गरीबों की पार्टी। सभा-स्थल पर ही तीन सौ मेम्बर बन गए। संथालटोली का एक आदमी भी गैर-मम्बर नहीं रहा। सब लाल ! सिर्फ़ सरदार टुहू का तेरह साल का लड़का रह गया है। वह रोता है। सरदार टुहू सैनिकजी के पास जाकर अपील करता है, "इश्का नाम लेम्बरी में नहीं लिखा जायगा ? क्यों ? उमेर कम नहीं, देखिए, इश्को मोंछ का रेख आ रहा है।"

बालदेवजी कुछ बोलने को खड़े होते हैं। वासुदेव तुरत उठकर कहता है, "बालदेवजी, आपका विख्यान हम लोग बहुत सुन चुके हैं। आप पूंजीवाद हैं। इस सभा में आप नहीं बोल सकते।"

जनता ने भी विरोध किया, "बैठ जाइए, बैठ जाइए ! जाइए, कपड़ा की पुर्जी बाँटिए, चीनी बिलेक कीजिए।"

···अरे बाप ! कितना टीन छोआ कहा नेताजी ने ? एक हज़ार टीन छोआ बिलेक कर दिया मेनिस्टर काँग्रेसी ने ! इसीलिए तो देहात से हुक्का उठ रहा है । अब लोग बीड़ी न पीयें तो क्या करें ! हुक्का के तम्बाकू के लिए छोआ गूड़ कहाँ से आएगा। सब बिलेक हो गया । अन्याय है !

तहसीलदार साहब को तो नेताजी ने भरी सभा में बेज्जत कर दिया, अलबत्त गाली देते हैं नेताजी ।···ज़मींदार के दुम ये तहसीलदार ! मुफ्तखोर !

मगर तहसीलदार साहब हँसते ही रहे थे । उस रात को बिदापत नाच के बिकटा की भँड़ैती सुनने के समय जैसी मन्द मुस्कराहट उनके चेहरे पर थी, आज भी है ।

कालीचरन अब खेलावनसिंह के कब्जे से बाहर है। कालीचरन यादव कुल-कलंक है । बूढ़ा कुकरू बुढ़ापे तक खेलावन का बैल चराता था और उसका बेटा लीडर हो गया । सुश्लिग लीडर ! इसको काबू में रखने का कोई हथियार भी नहीं । अँगूठे का टीप भी कभी नहीं लिया इससे !

सिपैहियाटोली का एक बच्चा भी इस सभा में नहीं था । उनके टोले में कटिहार से काली टोपी वाले दल के संजोजकर्जी आये हैं । लाठी-भाला टरेनि देते हैं । छोटी जाति के लोगों की सभा में वे नहीं जा सकते ।

कालीचरन ने सैनिकजी के रहने का प्रबन्ध मठ पर किया है । महंथ रामदासजी तो नाम के महंथ हैं, मठ की असल मालकिन तो लछमी है ।··· पन्द्रह सेर दूध को जलाकर खोआ बना है, मालपूआ की सोंधी सुगन्ध हवा में फैल रही है ।

लछमी पूछती है, "काली बाबू ! नेताजी डोलडाल से आकर स्नान नहीं करेंगे ?"

सैनिकजी के साथ में 'लाल पताका' साप्ताहिक पत्र के संपादक श्री चिनगारीजी भी आये हैं । दुबले-पतले हैं, दिन-भर खाँसते रहते हैं; आँख पर बिना फ्रेम वाला चश्मा लगाते हैं । दिन-भर सिगरेट पीते रहते हैं, शायद इसीलिए चिनगारीजी नाम पड़ा है । डॉक्टर ने अंडा खाने के लिए

कहा है। बिना अंडा खाये इतना गरम पलवार कोई कैसे निकाल सकता है ?···लेकिन मठ पर अंडे का प्रबन्ध कैसे हो सकता है ?

लछमी के अनिधि-सत्कार को भूलना असम्भव है। चिनगारीजी रात में सोते समय मैनिकजी से कहते हैं, "मैं लछमीजी पर एक मुक्त छन्द लिखना चाहता हूँ···

"···ओ महान् सतगुरु की सेविका
गायिका पवित्र धर्मग्रन्थ की
ओ महान् मार्क्स के दर्शन की दर्शिका,
सुदर्शने, प्रियदर्शिनी,
तुम स्वयं द्वन्द्वयुक्त भौतिकवाद की
सिनथिसिस हो !"

बीस

कमली डॉक्टर को पत्र लिखती है—

'प्राणनाथ !···तुम कल नहीं आये। क्यों नहीं आये ? सुना कि रात मे···।'

कमली डॉक्टर को रोज पत्र लिखती है। लिखकर पाँच-सात बार पढ़ती है, फिर फाड़ डालती है। उसकी आलमारी के एक कोने में फाड़ी हुई चिट्ठियों का ढेर लग गया है। पत्र लिखने और लिखकर पढ़ने के बाद उसको बड़ी शान्ति मिलती है। जी बड़ा हल्का मालूम होता है, और नींद भी अच्छी आती है।

'···सुना कि रात मे तुम गेहुअन साँप से बाल-बाल बच गए। भगवान को इसके लिए लाख-लाख धन्यवाद !'

रात में डॉक्टर गेहुँअन साँप से बाल-बाल बच गए। गेहुँअन नहीं, घोड़-करैत। गेहुँअन और करैत का दोगला। घोड़े से ज्यादा तेज भाग सकता है।

घोड़-करैत का काटा हुआ आदमी ओझा गुणी का मुँह भी नहीं देख सकता। आधी रात को खरगोश और चूहे अपने-अपने पिंजड़ों में घबराकर दौड़-भाग करने लगे। डॉक्टर साहब ने प्यारू को पुकारा, लेकिन प्यारू की नींद नहीं टूटी। जानवरों के कमरे का दरवाजा खोलकर टार्च देते ही डॉक्टर तड़पकर पीछे हट गए—साँप! साँप ठीक किवाड़ के पास ही अपनी पूंछ पर सारे धड को खड़ा किये फुफकार रहा था। तब तक प्यारू भी जग चुका था। उठते ही उसने बायें हाथ से ही ऐसी लाठी चलाई कि साँप वहीं ढेर हो गया। अढ़ाई हाथ का साँप! डाइन का मंतर अढ़ाई अक्षरों का होता है और डाइन का भेजा हुआ साँप अढ़ाई हाथ का!

सुबह को जिसने यह बात सुनी, बस एक ही राय कायम की—यह तो पहले से ही मालूम था। डॉक्टर बाबू को इतना समझाया-बुझाया कि पारवती की माँ से इतना हेल-मेल नही बढावें। नहीं माने, अब समझें। वह राच्छसनी किसी को छोड़ेगी? जिसको प्यार किया, उसको जरूर खायेगी। डॉक्टर बेचारा भी क्या करे! वह अपने मन से तो कुछ नहीं करता। उस पर तो पारबती की माँ ने जादू कर दिया है; वह अपने बस में नहीं। मुफ्त में बेचारे का जान चली जायगी एक दिन। च्: च्: !

कमली को डाइन, भूत और डाकिन पर विश्वास नहीं। तहसीलदार साहब भी इसे मूर्खता समझते हैं। कालीचरन तो आदमी से बढ़कर बलवान किसी देवता को भी नहीं समझता, फिर डाइन-भूत, ओझा-गुणी किस खेत की मूली हैं! इन्हें छोड़कर गाँव के बाकी सभी लोग डाइन के बारे में एकमत हैं। बालदेवजी ने तो बहुत बार भूत को अपनी आँखों देखा है। भैंस के पीछे-पीछे खैनी तम्बाकू माँगता है भूत! डाकिन का पाँव उलटा होता है और वह पेड़ की डाल से लटककर झूलती है। भूत-प्रेत झूठ है? तब कमला किनारे, कोठी के जंगल के पास में रात को जो भक्क से राकस जल उठता है, दौड़ता है और देखते-ही-देखते एक से दस हो जाता है सो क्या है?

"डॉक्टर साहब अब रोज मौसी के यहाँ जाते हैं। मौसी के यहाँ एक

वार बिना गये उनको चैन नहीं," प्यारू कहता है। कमली सुनती है और हँसती है।

"डॉक्टर साहब गनेश को देखने जाते हैं, प्यारू !"

"वह लड़का तो आराम हो गया है। मुटाकर कोल्हू होता जा रहा है। उसको क्या देखने जाते हैं !"

"अच्छा प्यारू, डॉक्टर साहब तो मेरे यहाँ भी रोज आते हैं।"

"तुम्हारे यहाँ की बात दूसरी है दीदी !"

"क्यों ? दूसरी बात क्या है ?"

डॉक्टर साहब हँसते हुए आते हैं, "अच्छा ! तो प्यारूजी यहाँ दरबार कर रहे हैं। वह बुखार वाला खरगोश कैसे भाग गया ?"

"जी, हम दोपहर का दाना देने गये तो देखा कि पिंजड़ा खाली।"

"सुबह सूई देने के बाद तो मैंने पिंजड़ा बन्द कर दिया था। तुमने पानी पिलाने के बाद पिंजड़ा बन्द नहीं किया होगा। महीने-भर की मेहनत बेकार गई।"

प्यारू को इन चूहों और खरगोशों से बेहद नफरत है।···आदमी के इलाज से जी नहीं भरता है तो जानवरों का इलाज करते हैं ! दिन-भर पिंजड़ों को लेकर पड़े रहते हैं। बुखार देखते हैं, सूई देते हैं और खून लेते हैं। जब से ये जानवर आये हैं, डॉक्टर साहब को प्यारू से बात करने की भी छुट्टी नहीं मिलती।···"अब झाँगड़टोली के लोगों से कह रहे हैं— दो-तीन सियार के बच्चों की जरूरत है। उस दिन मदारी से बन्दर माँग रहे थे। अजीब सौख है !"

प्यारू चुपचाप चला जाता है। माँ हँसती हुई आती है, "डाकडर साहब! मैंने विपहरी माई को एक जोड़ी कबूतर और दूध लावा कबूला है।"

"और मैंने भी विषहरी दवा के लिए लिख दिया है !"

"विषहरी दवा ?"

"हाँ, ऐन्टिवेनम एक दवा है, साँप के काटे हुए का इलाज होता है ! मैं एन्टिवेनम से भी ज्यादा प्रभावशाली और सस्ती दवा की खोज करना

चाहता हूँ। सुनते हैं, रौतहट स्टेशन के पास सँपेरों का टोला है। साँप पकड़वाकर रखना होगा।"

"तब माटी के महादेव नहीं, असली महादेव हो जाइएगा," कमली व्यंग करना जानती है।

डॉक्टर साहब हँस पड़ते हैं और माँ हँसी को रोकते हुए कमली को डाँटती है, "जो मुँह में आया बोल दिया। जरा भी लाज-लिहाज नहीं। इसके बाप ने तो इसे और भी बतक्कड़ बना दिया है। तुम यहाँ आकर चुप बैठो तो जरा, मैं चाय बना लाऊँ।"

"तहसीलदार साहब कहाँ गये हैं?" डॉक्टर पूछता है।

"कटिहार। सर्किल मैनेजर के कैम्प में गये हैं," कमली जवाब देती है। आज पहली बार कमली ने डॉक्टर को अपने पास अकेला पाया है। वह अपने चेहरे को देख नहीं सकती, लेकिन ऐसा लगता है कि उसका चेहरा धीरे-धीरे लाल होता जा रहा है। आँखों की पलकों पर भारी बोझ लद गए हैं, कान की इयररिंग थरथरा रही है। सारे देह में गुदगुदी लग रही है। देह हलका लग रहा है।···बेहोशी? वह बेहोश होना नहीं चाहती। नहीं, नहीं! डा···क्टर!

"कमला!"

"जी!"

"कमला! इधर देखो कमला!"

"डॉक्टर, मुझे बचाओ!"

"कमला, आँखें खोलो!"

कमला ने आँखें खोल दीं। उसका सिर डॉक्टर की गोद में है। माँ हाथ में चम्मच लिये खड़ी है, भय से माँ का मुँह पीला हो गया है, लेकिन डॉक्टर साहब मुस्करा रहे हैं।

"डाक्टर साहब, इसकी बीमारी का तो टेर पता ही नहीं चलता है।"

"लेकिन रोग तो धीरे-धीरे घट रहा है। बेहोश हुई, पर पाँच मिनट में ही स्वस्थ भी हो गई। इसी तरह एक दिन जड़ से यह रोग दूर हो

जायगा। ···कमला को ही चाय बनाने दीजिए। जाओ कमला !"

कमला उठकर इस तरह दौड़ी मानो कुछ हुआ ही नहीं था। डॉक्टर कमला की किताब हाथ में लेकर उलटता है—नल दमयन्ती ! अस्थाधिकारिणी कुमारी कमलादेवी।" दूसरी जगह कुमारी को काट दिया गया है और नाम के अंत में बनर्जी जोड़ दिया गया है—कमलादेवी बनर्जी। डॉक्टर जल्दी से पृष्ठ उलटता है—आर्ट पेपर पर नल दमयंती की तस्वीर। नल के नीचे नीली पेंसिल से लिखा हुआ है 'प्रशान्त' और दमयंती के नीचे लाल पेंसिल से 'कमला'। डॉक्टर के ललाट पर पसीने की छोटी-छोटी बूंदे चमक उठती हैं। उसे याद आता है, एक बार ममता के साथ बाँकीपुर स्टेशन से लौट रहा था। रिक्शा पर बैठने के समय एक भिखारी ने घेर लिया था—'जुगल जोड़ी कायम रहे, सुहाग अचल रहे माँ का, बाल-बच्चा बनल रहे !' ममता ने वेग से इकन्नी निकालकर दी थी और डॉक्टर की ओर देखकर खिलखिलाकर हँस पड़ी थी; और डॉक्टर के ललाट पर इसी तरह पसीने की बूंदें चमक उठी थीं।

"डॉक्टर साहब, कमली के लिए एक अच्छा-सा वर ढूंढ़िए न ! आपके देश में···आपके साथी-संगी···" माँ कहते-कहते सिर पर घूंघट सरकाकर चुप हो जाती है। तहसीलदार साहब आ गए। रनजीत के हाथ में एक बड़ी रोहू मछली है।

"यह नज़राना कहाँ मिला ?" डॉक्टर साहब हँसते हैं।

"पकरिया घाट पर मछुआ लोग आज मछली मार रहे थे," तहसीलदार साहब ने मोढ़े पर बैठते हुए कहा।

कमला चाय ले आई।

"डॉक्टर साहब, आज पाप की गठरी फेंक आया हूँ," तहसीलदार साहब ने चाय की प्याली में चुस्की लेते हुए कहा।

"मतलब ?"

"यह तहसीलदारी पाप की गठरी ही तो थी। यह नया सर्किल मैनेजर आते ही 'आग पेशाब' करने लगा। 'लाल पताका' अखबार ने ठीक ही लिख

था, 'राज पारबंगा के मीनापुर सर्किल का नया मैनेजर नादिरशाह का भतीजा है।' अब आप ही बताइए डॉक्टर साहब कि जिन रैयतों के यहाँ सिर्फ़ एक ही साल का बकाया है, उन पर नालिश कैसे किया जाय? फिर चुपचाप डिग्री जारी करवाकर नीलाम करो और जमीन खास कर लो। इतना बड़ा अन्याय मुझसे तो अब नहीं होगा। जमाना कितना नाजुक है, सो तो समझते हैं नहीं। मैंने साफ़ इनकार कर दिया तो कड़ककर बोले, 'नहीं कर सकते तो इस्तीफा दे दो।' गंगा-स्नान से भी बढ़कर ऐसे पुण्य का अवसर बार-बार नहीं मिलता। तुरत इस्तीफा दे दिया। सारी जिन्दगी तो गुलामी करते ही बीत गई। ···कमला की माँ, आज मत्स भगवान् आये हैं। कमला से कहो, डॉक्टर साहब को निमंत्रण दे दे।"

तहसीलदार साहब की रसिकता ने डॉक्टर को एक बार फिर नल-दमयंती की याद दिला दी। कमली मुस्करा रही है। माँ कहती है, "बगैर मिर्च-मसाला की मछली कमली ही बना सकती है।"

डॉक्टर महसूस करता है, कमला के निमंत्रण को अस्वीकार करने की हिम्मत उसमें नहीं।···कमला बनर्जी।···कमला की आँखें!

चाँद बयरि भेल बादल, मछली बयरि महाजाल
तिरिया बयरि दुहु लोचन···

इक्कीस

रात को तंत्रिमाटोली में सहदेव मिसर पकड़े गए!

यह सब खलासी की करतूत है। ऊारी आदमी[1] के सिवा ऐसा जाल-फरेब गाँव का और कौन कर सकता है? पुश्त-पुश्तैनी से बाबू लोग छोटे लोगों के टोले में जाते हैं। खेती-बारी के समय शाम को ही जनों[2] को ठीक

१. परदेशी।
२. मजदूर।

करना होता है, सूरज उगने से एक घंटा पहले ही खेत पर मजदूरों को पहुँच जाना चाहिए। इसलिए सभी बड़े किसान शाम या रात को ही अपने-अपने जनों को कह आते हैं। तंत्रिमाटोली में जब से खलासी का आना-जाना शुरू हुआ है, तभी से नई-नई बातें सुनने को मिल रही हैं। देखा-देखी, दूसरे टोले में भी नियम-कानून, पंचायत और बंदिश हो गई है। बेचारे सहदेव मिसर को रात-भर तंत्रिमा लोगों ने बाँधकर रखा।··· फुलिया के घर में घुसा था तो फुलिया ने हल्ला क्यों नहीं किया? जिसके घर में घुसा उसकी नींद भी नहीं खुली, माँ-बाप को आहट भी नहीं मिली और उसका कुत्ता भी नहीं भूंका। गाँव के लोगों को बेतार से खबर मिल गई। यह खलासी की बदमाशी है। यही हालत रही तो छोटे लोगों के टोले में जन के लिए जाना मुश्किल हो जायगा। कौन जाने, किस पर कब झूठ-मूठ कौनसी तोहमत लग जाय? पंचायत होनी चाहिए। राजपूतों ने यदि इस पंचायत में ब्राह्मणों का पक्ष नहीं लिया तो ब्राह्मण लोग ग्वालों को राजपूत मान लेंगे।

"हमको कुछ नहीं मालूम," फुलिया पंचों के बीच हाथ जोड़कर कहती है। "जब आँगन में हल्ला होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं।"

सहदेव मिसर के पास मँहगूदास के अँगूठे की टीप है—सादा काग़ज पर। मँहगू की टीक[1] सहदेव के हाथ में है। सहदेव जो चाहे कर सकता है। दोनों गायें और चारों बाछे कल ही खूँटे से खोलकर ले जायगा। इसके अलावा साल-भर का खरचा भी तो सहदेव ने ही चला दिया है। एक आदमी की मजदूरी से तो एक आदमी का भी पेट नहीं भरता है। ···लेकिन अब फुलिया के हाथ में ही सहदेव मिसर की इज्जत और अपने बाप की दुनिया है; उसकी बोली में जरा भी हेर-फेर हुआ कि सहदेव की इज्जत धूल में मिल जायगी और उसके बाप की दुनिया भी उजड़ जायगी।

पंचायत में गाँव-भर के छोटे-बड़े लोग जमा हुए हैं। तहसीलदार साहब पुरैनियाँ गये हैं। पंचायत में अकेले सिंघजी बोल रहे हैं। काली टोपी

१. चुटिया

वाले संयोजक भी हैं। बालदेवजी भी हैं। कालीचरन बिना बुलाए ही आया है। सिंघजी अकेले ही जिरह-बहस कर रहे हैं। तहसीलदार साहब रहते तो थोड़ी सहूलियत होती सिंघजी को।

"···बात पूछने पर एक घंटे में तो जवाब मिलता है। ···हाँ, जब आँगन में हल्ला होने लगा तब तुम्हारी नींद खुली।···सुन लीजिए सभी पंच लोग। ···अच्छा, जब तुम्हारी नींद खुली तो तुमने क्या देखा?"

"सहदेव मालिक को आँगन में घेरकर सभी हल्ला कर रहे थे।"

"अच्छा, तुम बैठो। कहाँ, सहदेव मिसर? अब आप बताइए कि मँहगूदास के वहाँ उतनी रात को आप क्यों गये थे?"

"रात में हमारे पेट में जरा दर्द हुआ। लोटा लेकर बाहर निकले। जब दिसा-मैदान से हम लौट रहे थे तो देखा कि कमला किनारे वाले खेत में किसी का बैल गेहूँ चर रहा है। इसीलिए मंहगू को जगाने गया था।"

'क्यों?"

"कमला किनारे वाली ज़मीन का पहरा करने के लिए मँहगूदास को ही दिया है।"

"अच्छा, तब?"

"जब हम जा रहे थे तो रबिया और सोनमा को आपके खेत में सकरकन्द उखाड़ते पकड़ा। दोनों को डाँट-डपट दिया। मँहगूदास को जगाकर जैसे ही हम उनके आँगन से निकल रहे थे कि रविया, सोनमा, तेतरा और नकछेदिया ने हमको पकड़ लिया और हल्ला करने लगे।"

"क्या बताएँ, हमारा पाँच बीघा सकरकन्द इन्हीं सालों ने चुराकर खतम कर दिया।·· अच्छा, आप बैठ जाइए। ···कहाँ मँहगू?"

'जी सरकार," मँहगू बूढा हाथ जोड़कर खड़ा होता है।

"सहदेव मिसर ने तुमको जाकर जगाया था?"

"जी सरकार!"

"अब पंच लोग फ़ैसला करें कि असल बात क्या है।"

कालीचरन कैसे चुप रह सकता है! पंचायत में एकतरफ़ा बात नहीं

होनी चाहिए। रबिया और सोनमा पार्टी का मेम्बर है। यह तो पंचायत नहीं, मुँहदेखी है। कालीचरन कैसे चुप रह सकता है—"सिंघजी, जरा हमको भी कुछ पूछने दीजिए।"

पंचायत के सभी पंचों की निगाहें अचानक कालीचरन की ओर मुड़ गईं। सिंघजी गुस्से से लाल हो गए। लेकिन पंचायत में गुस्सा नहीं होना चाहिए। राजपूतटोली के नौजवान आपस में कानाफूसी करने लगे। संयोजकजी ने पाकेट टटोलकर देख लिया—सीटी लाना भूल तो नहीं गए हैं? जोतखीजी एतराज करते हैं—"कालीचरन को हम लोग पंच नहीं मानते।"

"तो पहले इसी बात का फ़ैसला हो जाय कि पंचायत के कितने लोग हमको पंच मानते हैं और कितने लोग नहीं। एक आदमी के चाहने और न चाहने से क्या होता है!·· अच्छा, पंच परमेसर! क्या हमको इस पंचायत में बैठने, बोलने और राय देने का हक नहीं? क्या हम इस गाँव के बासिन्दे नहीं हैं?" कालीचरन खड़ा होकर कहता है। "यदि आप लोग हमको पंच मानते हैं तो हाथ उठाइए।"

गुमसुम बैठे हुए सैकड़ों मूक जानवरों के सिर में मानो अरना भैंसा[1] के सींग जम गए। सैकड़ों हाथ उठ गए।

"दोनों हाथ नहीं, एक हाथ! ठहरिए, गिनने दीजिए। एक···दो, तीन, चार, पाँच···एक सौ पाँच।"

बालदेवजी ने हाथ नहीं उठाया।

"एक सौ पाँच। अब जो लोग हमको पंच नहीं मानते, हाथ उठाएँ। ···एक, दो, तीन, चार, पाँच···पन्द्रह।"

"सिर्फ़ पन्द्रह!" सिंघजी को विश्वास नहीं होता है। खुद गिनते हैं। राजपूत और ब्राह्मण टोली के लोग कहाँ चले गए? जोतखीजी के लड़के नामलरैन ने भी कलिया के पक्ष में ही हाथ उठाया है?···

"फुलिया!" कालीचरन की बोली सुनकर डर लगता है। फुलिया फिर खड़ी होती है।

१. जंगली भैंसा

"देखो, यह पंचायत है। पंचायत में परमेसर रहते है। पंचायत में झूठ बोलने से हाथोंहाथ इसका फल मिलता है। सच-सच बताओ! सच्ची बात क्या है ?"

"....."

"बोलो !"

"सहदेव मिसर हमारे घर में घुसे थे।"

"तुमने हल्ला क्यों नहीं किया ?"

"....."

"बोलो, डरने की कोई बात नहीं।"

"बाबा के डर से।"

"बाबा के डर से ?"

"हाँ, बाबा सहदेव मिसर का करजा धारते है।"

"बैठ जाओ। ···मँहगू !"

मँहगू हाथ जोड़कर फिर खड़ा होता है।

"क्या बात है ?"

"....."

"फुलिया जो कहती है, ठीक है ?"

"....."

"डरो मत ! जो बात है, बताओ !"

"कौन गाछ ऐसा है जिसमें हवा नहीं लगती है और पत्ता नहीं झड़ता है !"

"दूसरों की बात मत कहो, अपनी बात बताओ !"

"अकेले हमको क्यों दोख देते हैं ? गाँव-भर का यही हाल है। कौन घर ऐसा है···"

"मैं तुमसे पूछता हूँ।"

"पहले तुम अपनी माँ से जाकर इमान-धरम से पूछो कि तुम किसके बेटा हो," जोतखीजी हिम्मत करके कहते हैं। क्रोध से उनकी आँखें लाल

हो उठी हैं।

"जोतखी काका, हमको अपने बाप के बारे में मालूम है।"

"जोतखीजी अपनी स्त्री से पूछें कि उनके पेट में किसका बच्चा है," वासुदेव चिल्लाकर कहता है।

"कौन नहीं जानता कि जोतखीजी का नौकर···"

"चुप रहो सुन्दर!" कालीचरन लोगों को शान्त करता है, "चुप रहो! शांती! शांती!"

'ट्र ट्र···ट्र ट्र,' संयोजकजी सीटी फूंकते हैं।

एक दर्जन से भी ज्यादा नौजवान राजपूतटोली से हाथ में लाठी लेकर दौड़े आये और पंचायत को चारों ओर से घेरकर खड़े हो गए।

"सिंघजी, इन लाठी वाले नौजवानों को आपने बुलाया है? ···तो आप पंचायत नहीं, दंगा करवाना चाहते हैं?" कालीचरन पूछता है।

सिंघजी कहते हैं, "अब यह पंचायत नहीं हो सकती। पाटीबंदी से कहीं इन्साफ होता है?"

सिंघजी राजपूतटोली के पंचों के साथ उठ खड़े होते हैं। काली टोपी वाले जवान, सिंघजी को, संयोजकजी को और राजपूतटोली के पंचों को चारों ओर से घेरे में लेकर, फौजी कवायद करते हुए चले जाते हैं।

जोतखीजी के साथ ब्राह्मणटोली के पंच लोग भी चूहेदानी में फँस गए हैं। खेलावन बाबू का सहारा है। बालदेवजी भी हैं। लेकिन कालीचरन का गुस्सा?···

"तो पंचायत का यह फ़ैसला है कि मँहगूदास अपनी बेटी फुलिया का चुमौना खलासी के साथ करा दे, और आज से सभी टोले के लोग बाबू लोगों पर नजर रखें।"

पंचायत के सभी पंच एक स्वर से कालीचरन की राय का समर्थन करते हैं। जोतखीजी भी हाथ उठाते हैं और बालदेवजी भी। ···यह तो नियाय बात है, इसमें डिफेट करना अच्छा नहीं।

"सहदेव मिसर के पास सादे कागज पर मेरा अँगूठा का टीप है।

यदि उसे भरकर नालिस कर दे तब ?" मँहगूदास गिड़गिड़ाकर कहता है।

"सहदेव मिसर जब मुकदमा करेंगे, सभी पंच तुम्हारी गवाही देंगे। वह एक पैसा भी तुमसे नहीं पा सकते।"

बाईस

सतगुरु हो ! सतगुरु हो !

महंथ रामदास भी छींकने, खाँसने और जमाही लेने के समय महंथ सेवादासजी की तरह ही चुटका बजाते हैं, 'सतगुरु हो, सतगुरु हो' कहते हैं और आँखें स्वयं ही बन्द हो जाती हैं।

भजन, बीजकपाठ और सतसंग को अब लछमी ही संभालती है। महंथ रामदासजी पढ़ना-लिखना नहीं जानते, सतगुरु-वचन की गम्भीरता की तह तक नहीं पहुँच सकते, लेकिन खंजड़ी पर तो उनका पूरा अधिकार है। यों तो खंजड़ी भंडारी भी बजाता है, लेकिन कोठारिन लछमी दासिन उसके ताल पर गड़बड़ा जाती है। तब महंथ रामदासजी भंडारी के हाथ से खंजड़ी ले लेते हैं। लछमी मुस्कराकर गाने लगती है···

संतो हो, करू बँहियाँ बल आपनी
छाड़ू बिरानी आस !
संतो हो, जिहि अंगना नदिया बहै,
सो कस मरे पियास। हो संतो, सो कस मरे पियास !

सो कस मरे पियास ? महंथ रामदास के आँगन में नदी बह रही है और वह प्यास से मर रहे हैं। ···सतगुरु बचन में कहा है—'जस खर चंदन लादे भारा, परमिल बास न जानु गमारा।' परमिल वास महंथ रामदास को नहीं लगती, सो बात नहीं। परमिल बास से उनका भी मन मत्त हो जाता है, लेकिन वह क्या करें ? एक दिन मुँह से निकल गया था, "लछमी ! ज़रा इधर आना तो।" बस, चार घंटे तक कोठारिन ने सतगुरु वचना-

मिरित की झड़ी लगा दी थी—"अंतर जोति सबद इक नारी, हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी। ते तिरिये भंगलिंग अनंता, तेउ न जाने आदि न अंता। महंथ साहेब, आप अपने चित्त को मत विचलित कीजिए। यह आपके पूर्व जन्म का पुण्य है कि आपको महंथी की गद्दी मिली है, नहीं तो आपके जैसे लोगों को भस चराने के सिवा और कोई काम भी नहीं मिल सकता। आप मेरे गुरु बेटा हैं, मैं आपकी गुरु माई !"

एक-डेढ़ महीने में ही महंथ रामदासजी का कलेवर बदल गया है। लछमी बड़े जतन से सेवा करती है। दूध, मक्खन और ताजे फलों के सेवन से महंथ साहब के श्यामल मुखमंडल पर भी लाली दौड़ गई है। पेट ज़रा बाहर की ओर निकल रहा है, और तन का ताप भी कभी-कभी मन को बड़ा बेचैन कर देता है। लछमी सतगुरु वचनामृत बरसाकर शांत करने की चेष्टा करती है। सतगुरु वचनामृत से भी बढ़कर तन के ताप का शीतल करती है कालीचरन की याद ! कालीचरन रोज मठ पर एक बार, थोड़ी देर के लिए ही, ज़रूर आता है। कभी पार्टी के लिए चंदा, ऑफ़िस-घर बनाने के लिए बाँस-खड़ मांगने आता है। लछमी कहती है—'कालीचरन असल नियायी आदमी है। गाँव के सभी बड़े लोग सिर्फ़ कहने को बड़े हैं। काली बाबू का सुभाव ज़रा तिक्त है, लेकिन दुनिया के लोग अब इतने कुटिल हो गए हैं कि सीधे लोगों की यहाँ गुजर नहीं। फिर सुभाव में ज़रा कड़ापन तो सुपुरुख का लच्छन है।...'

महंथ रामदास को पहले कालीचरन पर बड़ा संदेह था। जब वह मठ पर आता तो महंथ साहब छिपकर लछमी और काली की बातें सुनते थे, बाँस की टट्टी में छेद करके देखते थे। लेकिन कालीचरन हमेशा लछमी से चार हाथ दूर ही हटकर खड़ा रहता था। उसकी बोली में भी माया की मिलावट नहीं रहती थी। लछमी से बातें करते समय कभी उसकी पलकें शरमाकर झुकती नहीं थीं। बहुत कम लोगों को ऐसा देखा है रामदास ने। कालीचरन को बस अपनी सुशलिट पाटी से ज़रूरत है। लाल झंडा और सुशलिट पाटी को वह औरत की तरह

प्यार करता है।···उस पर संदेह करना बेकार है। लेकिन, बालदेवजी ? वह तो आजकल आते ही नहीं। उनकी नजर बड़ी मैली है।

लछमी बालदेवजी को भूली नहीं है। कहती है, साधू सुभाव के पुरुष हैं; किसी का चित्त दुखाना नहीं चाहते। बालदेवजी मठ पर नहीं आते हैं; कहते हैं, लछमी दासिन ने हिंसावाद करवाया है मठ पर, मठ पर नहीं जायेंगे। ···बहुत सीधे हैं बालदेवजी। सच्चे साधू हैं। उनसे छिमा माँगना होगा।

महंथ रामदासजी सोच-विचारकर देखते हैं, कालीचरन के डर से ही वह प्यासा है। कोई बात हुई कि लछमी उससे कह देगी; और उसके बाद ? चादर-टीका के दिन कालीचरन और उसके गणों ने जो कांड किया था, उसे भूलना मुश्किल है। · और उन्हीं की बदौलत तो रामदास महंथ बना है।

माना कि कालीचरन के बल से उसे महंथी मिली है। इसका यह अर्थ नहीं कि कालीचरन मठ के सभी मामले में दखल देगा। इन्साफन महंथी की गद्दी पर तो उसका अधिकार था ही। यदि कल कालीचरन कहे कि गद्दी पर तुम्हारा हक नहीं तो क्या वह मान लेगा ?···महंथ रामदासजी धीरे से उठते हैं। दबे पाँव लछमी की कोठरी के पास जाते हैं। किवाड़ी खुली है ? नहीं, बन्द है। महंथ साहब बाहर से भी किवाड़ की छिटकनी खोलना जानते हैं। पतली-सी लकड़ी फँसाकर खोलते हैं। ···लछमी अब किवाड़ में ओखल नहीं लगाती है।···लछमी सोई है। उसके कपड़े अस्त-व्यस्त है, बाल बिखरे हुए हैं। लालटेन की मद्धिम रोशनी में भी उसकी सूरत चमक रही है। ··

"कौन ?"

"....."

"रामदास ?"

"....."

"रामदास ! हाथ छोड़ो। बैठो। आखिर तुम चित्त को नहीं सँभाल

सके। माया ने तुम्हें भी अन्धा बना दिया।"

"माया से कोई परे नहीं। माया को कोई जीत नहीं सकता," महंथ साहब आज लछमी की हर बात का जवाब देंगे।

"तुम नरक की ओर पैर बढ़ा रहे हो। अब भी चेतो।"

"अब चेतने से फ़ायदा नहीं। मुझे सरग नहीं चाहिए।...इस नरक में पहली बार नहीं आया हूँ।"

लछमी को बचपन की बातों की याद दिलाना चाहता है रामदास। लछमी हाथ छुड़ाकर बिछावन पर से उठना चाहती है, लेकिन महंथ साहब ने दस मिनट पहले ही चौथी चिलम गाँजा फूंका है।

"मैं तुम्हारी गुरुमाई हूँ रामदास!"

"कैसी गुरुमाई? तुम मठ की दासिन हो। महंथ के मरने के बा नये महंथ की दासी बनकर तुम्हें रहना होगा। तू मेरी दासिन है।"

"चुप कुत्ता!" लछमी हाथ छुड़ाकर रामदास के मुँह पर जोर से थप्पड़ लगाती है। दोनों पाँवों को ज़रा मोड़कर, पूरी ताकत लगाकर रामदास की छाती पर मारती है। रामदास उलटकर गिर पड़ता है। ...सतगुरु हो!

मंतो अचरज भो एक भारी
पुत्र धयल महतारी।
एके पुरुष एक हि नारी
ताके देखु विचारी।

"भंडारी! भंडारी!"

"सरकार!"

"पानी लाओ!"

लछमी थर-थर काँपती है। महंथ सेवादास की दम तोड़ती हुई मूर्ति उसकी आँखों के सामने दिखाई पड़ रही है। नहीं, मरा नहीं है। भंडारी कहता है, "महंथ साहब को फिर मिरगी की बीमारी शुरू हुई? कल रामपुर मठ से जो साधू आया है, मिरगी की दवा जानता है। कल ही

दिलवा दीजिए।"

सतगुरु हो !

महंथ साहब को बुखार है, छाती में दर्द है। डॉक्टर साहब ने मालिश का तेल भेज दिया है। लछमी महंथ साहब की छाती पर तेल-मालिश कर रही है। महंथ साहब कराह रहे हैं, "सतगुरु हो ! अब नहीं बचेंगे। हमको कासीजी भेज दो कोठारिन ! हम अपने पाप का प्राच्छित करेंगे। ···हमको जान से ही क्यों न मार दिया ? ···हाय रे ! सतगुरु हो !"

"जाय हिन्द कोठारिनजी !"

"जै हिन्द ! आइए बालदेवजी ! बहुत दिन बाद ?"

"रामदा···महंथ साहेब को क्या हुआ है ?"

"बुखार है; छाती में दर्द है।"

"दर्द है ? पुरानी गाये की घी की मालिस कीजिए।"

पुरानी गाये का घी अर्थात् गाय का पुराना, सड़ा घी। सुनते ही लछमी को मिचली आने लगती है। महंथ सेवादास को भी जब दमे का दौरा होता था तो गाय का घी ही मालिश करवाते थे।

"कोठारिनजी ! सिवनाथ बाबू आ रहे हैं। यहाँ एक चरखा सण्टर खुलना चाहिए। कुछ मदत दिया जाय।"

"चरखा सण्टर ! इसमें क्या होगा ?"

"चरखा सण्टर में ? यही चरखा, करघा, धुनकी और बिनाई की टरेनि होगी।"

"गाँव में तो रोज नया-नया सण्टर खुल रहा है—मलरिया सण्टर, काली टोपी सण्टर, लाल झंडा सण्टर, और अब यह चरखा सण्टर !"

"हाँ, नये जमाने में तो रोज नई-नई बात होगी ही। सुनते हैं आपने सोशलिट पाटी को काफ़ी मदत दी है।···लेकिन कोठारिनजी ! गन्ही महतमा का रस्ता ही सबसे पुराना और सही रस्ता है। नई-नई पाटी खुल रही है, मगर किसी का रस्ता ठीक नहीं। सब हिसाबाद के रस्ते पर हैं।"

"सतगुरु हो ! सतगुरु हो ! कोठारिन, इसको जो चन्ना देना है, देकर

विदा करो। सतगुरु हो !" महंथ साहब दर्द से छटपटाते हैं।···बालदेवजी की नजर बड़ी मैली है। दस रुपये का एक नोट निकालकर देते हुए लछमी कहती है, "आजकल तो हाथ एकदम खाली है। आप तो आज-कल इधर का रास्ता ही भूल गए हैं। हमसे जो अपराध हुआ है, क्षिमा कीजिए।"

"नहीं कोठारिनजी, आजकल छुट्टी ही नहीं मिलती है कभी। कपड़े की पूजी बाँटने का काम क्या मिला है, एक आफत में जान फँस गई है। कांगरेस का भी कोई काम नहीं कर सकता हूँ। उधर दूसरी पाटी वालों को मौका मिल गया है। कालीचरन दिन-रात खटता है। हमारे कांगरेस के मिम्बरों को भी सोशलिट पाटी का मिम्बर बना लिया है। इसलिए सिवनाथ बाबू को बुला रहे हैं। चरखा सण्टर खुलेगा। एक पुराना काजकर्ता बावनदास भी आ रहा है। पुराना तो नहीं है, मेरे ही साथ सुराजी में नाम लिखाया था।···बावनदास बौना है, सिरफ़ डेढ हाथ ऊँचा। वैष्णव है। आएगा तो यहाँ ले आएँगे। जायहिंद !"

"जै हिन्द !"

बालदेवजी को फिर लछमी के देह की सुगन्ध लगी। कितनी मनोहर! लछमी देखती है बालदेवजी आजकल बहुत दुबले हो गए हैं। बालदेव-जी के दिल में जरा भी मैल नहीं। कितने सरल हैं !···न जाने क्यों, लछमी का जी आज बालदेवजी को देखकर इतना चंचल हो रहा है। बालदेवजी सच्चे साधू हैं।

विरह की ओदी लाकड़ी
सपुचैं औ धुधुआये।
दुख से तबहिं बाचिहौं
जब सकलौं जरि जाये !

तेईस

गाँव के लोग अर्थशास्त्र का साधारण सिद्धान्त भी नहीं जानते। 'सप्लाई' और 'डिमाण्ड' के गोरख-धन्धे में वे अपना दिमाग नहीं खपाते। अनाज का दर बढ़ रहा है; खुशी की बात है। पाट का दर बढ़ रहा है, बढ़ता जा रहा है, और भी खुशी की बात है। पन्द्रह रुपये में साड़ी मिलती है तो बारह रुपये मन धान भी तो है। हल का फाल पाँच रुपये में मिलता है, दस रुपये में कड़ाही मिलती है तो क्या हुआ ? पाट का भाव भी तो तीस रुपये मन है। खुशी की बात है।

अनाज के ऊँचे दर से गाँव के तीन ही व्यक्तियों ने फ़ायदा उठाया है—तहसीलदार साहब ने, सिंघजी ने और खेलावनसिंह यादव ने। छोटे-छोटे किसानों की ज़मीनें कौड़ी के मोल बिक रही हैं। मज़दूरों को सवा रुपये रोज़ मज़दूरी मिलती है, लेकिन एक आदमी का भी पेट नहीं भरता। पाँच साल पहले सिर्फ़ पाँच आने रोज़ मज़दूरी मिलती थी और उसी में घर-भर के लोग खाते थे।

तहसीलदार साहब ने धान तैयार होते ही न जाने कहाँ छिपा दिया है। दरवाज़े पर दर्जनों बखार हैं, लेकिन इस साल सब खाली। चमगादड़ों के अड्डे हैं।···सरकार शायद धान-जप्ती का कानून बना रही है।

कपड़े के बिना सारे गाँव के लोग अर्धनग्न हैं। मर्दों ने पैंट पहनना शुरू कर दिया है और औरतें आँगन में काम करते समय एक कपड़ा कमर में लपेटकर काम चला लेती हैं; बारह वर्ष तक के बच्चे तो नंगे ही रहते हैं।

शिवनाथ चौधरीजी सभा में खादी के अर्थशास्त्र पर प्रकाश डाल रहे हैं। आँकड़े देकर साबित कर रहे हैं कि यदि घर का एक-एक व्यक्ति चरखा चलाने लगे तो गाँव से गरीबी दूर हो जायगी; अन्न-वस्त्र की कमी नहीं रहेगी।

चरखा सेण्टर खुल गया है। अब गाँव में गरीबी नहीं रहेगी। पटना से

दो मास्टर आये हैं—चरखा मास्टर और करघा मास्टर। एक मास्टरनी भी आई हैं—औरतों को चरखा सिखाने के लिए। औरतों से कहती हैं, 'चरखा हमार भतार पूत, चरखा हमार नाती; चरखा के बदौलत मोरा दुआर झूले हाथी।'

चरखा की बदौलत हाथी ? जै···गांधीजी की जै !

सैनिकजी और चिनगारीजी की तरह गरम भाखन शिवनाथ चौधरीजी नहीं देते हैं, लेकिन बात पक्की कहते हैं। एकदम हिसाब से सब बात कहते हैं। खूब ज्ञान की बात कहते हैं। कल का पिसा हुआ आटा नहीं खाते हैं। चीनी नहीं, गुड़ खाते हैं। त्यागी आदमी हैं। चौधरीजी के साथ में दरभंगा जिले के तमोड़िया टीशन से रमलगीना बाबू आये हैं। सुनते हैं, पानी से ही सब बीमारी का इलाज करते हैं। आग में पकाई हुई चीज नहीं खाते हैं। साग की हरी पत्तियाँ चबाकर खाते हैं। कहते हैं, इसमें बहुत ताकत है। वह भी असल त्यागी हैं। देह में सिर्फ़ हड्डियाँ बाकी बच गई हैं, मांस का लेश भी नहीं। दिन-भर में करीब पन्द्रह बार हाथ में लोटा लेकर मैदान की ओर जाते हैं।

सादा काग़ज वाला एक फाहरम[1] बाँट हुआ है। फाहरम पर महतमाजी की छापी[2] है और नीचे लिखा है···

बापू कहते हैं : जो पहने सो काते,
जो काते सो पहने।

सोशलिट पाटी वालों ने भी फाहरम बाँट किया था। लेकिन वह लाल रंग का था और उसमें एक दोहा ज्यादा था···

जो जोतेगा सो बोयेगा।
जो बोयेगा सो काटेगा।
जो काटेगा वह बाँटेगा।

बालदेवजी की जगह पर बौनदास आया है। यही पुरैनिया सभा में

१. परचा।
२. तस्वीर।

रजिस्टर बाबू के सामने भाषण देता था। बालदेवजी को पुर्जी बाँटने से छुट्टी नहीं मिलती है, इसीलिए पवलि का काम करने के लिए बौनदास को यहाँ भेजा गया है। बड़ा बहादुर है बौनदास! कहते हैं, जब ४२ के मोमेंट में लोग कचहरी पर झंडा फहराने जा रहे थे तो मलेटरी ने घेर लिया था। बौनदास एक मलेटरी के फैले हुए पैर के बीच से उस पार चला गया और कचहरी के हाता में झंडा फहरा दिया··· रमैन में हलुमानजी ने सुरसा को मसक रूप धरकर जिस तरह छकाया था, उसी तरह।···

"इस आर्यावर्त में केवल आर्य अर्थात् शुद्ध हिन्दू ही रह सकते हैं," काली टोपी वाले संयोजकजी बौद्धिक क्लास में रोज कहते हैं। "यवनों ने हमारे आर्यावर्त की संस्कृति, धर्म, कला-कौशल को नष्ट कर दिया है। अभी हिंदू संतान म्लेच्छ संस्कृति की पुजारी हो गई है। शिवाजी, महाराणा प्रताप···।"

बौद्धिक क्लास! सोशलिस्ट पार्टी का वासुदेव कहता है·····बुद्धू किलास। वासुदेव ही नहीं, काली टोपी वाले बहुत से जवान भी बुद्धू किलास हा कहते हैं।

लाठी, भाला और तलवार हाथ में लेते ही खून गरम हो जाता है राजपूत नौजवानों का। उस दिन हरगौरी कह रहा था—"संजोजकजी! यवनों पर मुझे क्रोध नहीं होता। यवनों का पक्ष लेने वाले हिन्दुओं की तो गरदन उड़ा देने को जी करता है।" संयोजकजी ज़रा दूर हट गए थे, नहीं तो हरगौरी ने इस तरह तलवार चलाई थी कि संयोजकजी की गरदन ही धड़ से अलग हो जाती। ···आरजाव्रत! ···मेरीगंज का ही नाम अब शायद 'आरजाव्रत' हो गया है! लेकिन इस गाँव में तो एक भी मुसलमान नहीं!···

गाँव-भर के हलवाहों, चरवाहों और मज़दूरों का नेता कालीचरन है। छोटा नेता वासुदेव। वासुदेव सबों को समझाता है, "भाई, आदमी को एक ही रंग में रहना चाहिए। यह तीन रंग का झंडा···थोड़ा सादा,

थोड़ा लाल और थोड़ा पीला···यह तो खिचड़ी पार्टी का झंडा है। कांग्रेस तो खिचड़ी पार्टी है। इसमें ज़मींदार हैं, सेठ लोग हैं और पासंग मारने के लिए थोड़ा किसान-मजदूरों को भी मेम्बर बना लिया जाता है। गरीबों को एक ही रंग के झंडे वाली पार्टी में रहना चाहिए।"

तहसीलदार साहब भी काँग्रसी हो गए हैं।

उन्होंने चरखा सेण्टर के लिए अपना गुहाल घर दे दिया है; खद्दर पहनने लगे हैं। बोलते थे, सारी जिन्दगी तो झूठ-बेईमानी करते ही गुजर गई। आखिरी उम्र में पुण्य भी करना चाहिए। ···तहसीलदार साहब चवन्निया मेम्बर नहीं बने हैं। चवन्निया मेम्बर तो सभी बनते हैं। तहसीलदार साहब चार-सौ-टकिया मेम्बर बने हैं। देखा नहीं? शिवनाथ बाबू ने रसीद काटकर दिया और तहसीलदार साहब ने तुरत मन्धाता[1] तम्बाकू के पत्तों के बराबर चार नम्बरी नोट निकालकर दे दिया। खड़-खड़ करता था नोट!···अब सोशलिस्ट पार्टी का चलना मुश्किल है। पार्टी में एक भी धनी आदमी नहीं है। मठ की कोठारिन कब तक पार्टी चलाएगी?

दफ़ा ४० की नोटिस आई है।

जिला कांग्रेस के मंत्रीजी ने नोटिस भेज दिया है। सोशलिस्ट पार्टी तो जोर-जबर्दस्ती जमीन पर कब्जा करने को कहती है। कांग्रेस के मंत्रीजी ने दफ़ा ४० कानून पास करके नोटिस भेज दिया है। बालदेवजी हाट में नोटिस बाँट रहे हैं; ···दफ़ा ४० कानून पास हो गया। अधिया, बटैयादारी करने वाले किसान अपनी जमीन नकदी करा लें, बहती गंगा में हाथ धो लें। नया कानून पास हो गया। हिसाबाद करने की जरूरत नहीं। पुरैनियाँ कचहरी में दफा ४० का हाकिम आ गया है। दरखास दे दो, बस, जमीन नकदी हो जायगी।

वाजिब बात कहते हैं बालबदेजी। यदि बिना तूलफजूल किये ही जमीन नकदी हो रही है तो सोशलिट पार्टी में जाने की क्या जरूरत है? कांग्रेस

१. तम्बाकू की एक किस्म।

का राज है, जिस चीज की जरूरत हो, कांग्रेस के मंत्रीजी से कहो। कानून बना देंगे। तब, एक बात है। इस तरह छिटपुट होकर कहने से कांग्रेस के मंत्री भी कुछ नहीं कर सकते हैं। सबों को एक जगह मिलना चाहिए, मिलकर एक ही बात बोलनी चाहिए। दस मिलकर करो काज, हारो-जीतो क्या है लाज !···गलती तो पवलि की ही है। कोई कांग्रेस में तो कोई सुशलिट में तो कोई काली टोपी में, इस तरह तितिर-बितिर रहने से पवलि की कोई भलाई नहीं हो सकती। बालदेवजी ठीक कहते हैं !

"फॉट्टी बी० टी० ऐक्ट ?" सोशलिस्ट पार्टी के जिला मन्त्रीजी कॉमरेड कालीचरन को समझाते हैं, "फौट्टी बी० टी० ऐक्ट तो कोई नया कानून नहीं। यह तो पुराना कानून है। कांग्रेस के मन्त्री ने परचे बँटवाए हैं ? ठीक है। आप भी गाँव के किसानों से कहिए कि जितने बड़े किसान हैं, सबों की जमीन पर धावा कर दें। कोई किसी के खिलाफ गवाही नहीं दे। कानून से क्या होता है ? असल चीज है, साबित करना। सबूत पक्का होना चाहिए। गवाहों के इजहार में जरा भी डेढ़-बेढ़ नहीं हो। यह तो तभी हो सकता है जब सभी गरीब एक झण्डे के नीचे एक पार्टी में, एक सूत्र में बँध जायँ। तहसीलदार साहब कांग्रेसी हो गए हैं। बस, उन्हीं की जमीन पर किसानों द्वारा दावा करवा दीजिए। रंग खुल जायगा। तब देखिएगा कि कांग्रेस के मन्त्रीजी की नोटिस-वाजी की क्या कीमत है !···'लाल-पताका' के इस अंक में चिनगारीजी का इस सम्बन्ध में एक विशेष आर्टिकल है, ज्यादे कौपी ले जाइए इस बार।"

"···दफा ४०, आबी और बटैयादारी करने वालों को जमीन पर सर्वाधिकार दिलाने का कानून है। लेकिन कानून में छोटा-सा छेद भी रहे तो उससे हाथी निकल जा सकता है।···जितने दफा ४० के हाकिम नियुक्त हुए हैं, सभी या तो जमींदार अथवा बड़े-बड़े किसानों के बेटे हैं। उनसे गरीबों की भलाई की आशा बेकार है। लेकिन, एकता की शक्ति कानून से भी बढ़कर है। सोशलिस्ट पार्टी के लाल झण्डे के नीचे होकर हम प्रतिज्ञा करें कि जमींदारों और बड़े किसानों के पक्ष में गाँव का एक बच्चा भी

गवाही नहीं देगा। 'लाल पताका' आधीदारों को विश्वास दिलाता है···।"

कहना वाजिब है !

"बात वाजिब नहीं, यह बात का बतंगड़ है !"

जोतखीजी सभी बात में मीन-मेख निकालते हैं, "दो भैंसे की लड़ाई में दूब के सिर आफत। कांग्रेस और सुशलिग अपने में लड़ रहा है। दोनों अपना-अपना मेम्बर बनाना चाहता है। चक्की के दो पाट में गरीब लोग ही पीसे जायेंगे।"

"गरीब पीसे नहीं जायेंगे, गरीबों की भलाई होगी। एक पाटी रहने से काम नहीं होता है। जब दो दलों में मुकाबला और हिड़िस[1] होता है तो फायदा पबलि को ही होता है। उस बार रौतहट मेला में बिदेसिया नाच वाला आया था। मन लगाकर न तो नाच करता था और न गाना ही अच्छी तरह गाता था। तीसरे दिन बलवाही नाच[2] का भी एक दल आ गया। दोनों में मुकाबला हो गया। साम से ही दोनों दलों ने नाच शुरू किया; कितना गजल, कौवाली, खेमटा और दादरा गाया, इसका ठिकाना नहीं। सूरज उगने तक दोनों दल वाले नाचते ही रहे। तब मेला मनेजर बाबू ने दोनों दलों के लोगों को समझा-बुझाकर नाच बन्द करवाया था।"

चलित्तर कर्मकार आया है।

किरांती चलित्तर कर्मकार ! जाति का कमार है, घर सेमापुर में है। मोमेंट के समय गोरा मलेटरी इसके नाम को सुनते ही पेसाब करने लगता था। बम पेस्तौल और बन्दूक चलाने में मसहूर ! मोमेंट के समय जितने सरकारी गवाह बने थे, सबों के नाक कान काट लिए थे चलित्तर ने। बहादुर है। कभी पकड़ाया नहीं। कितने सीआईडी को जान से खतम किया। धरमपुर के बड़े-बड़े लोग इसके नाम से थरथर काँपते थे। ज्यों ही चलित्तर का घोड़ा दरवाजे पर पहुँचा कि 'सीसी सटक'। दीजिए चंदा। ···पचास ! नहीं, पाँच सौ से कम एक पैसा नहीं लेंगे। नहीं है ? चाबी

१. प्रतियोगिता।

२. बाउल सुर में गीत गाकर नाचने वाला दल।

लाइए तिजोरी की। नहीं ?···ठायँ। ठायँ !···दस खूनी केस उसके ऊपर था, लेकिन कभी पकड़ा नहीं गया। आखिर हारकर सरकार ने मुकदमा उठा लिया। किरांती चलित्तर कर्मकार कालीचरन के यहाँ आया है ? बस, तब क्या है ? करैला चढ़ा नीम पर। चलित्तर भी सोशलिट पाटी में है ? तब तो जरूर बम पेस्तौल की टरेनि ही देने आया है। बम पेस्तौल के सामने काली टोपी वालों की लाठी क्या करेगी ? हाथी के आगे पिद्दी !

चरखा-कर्घा, लाठी-भाला और बम-पेस्तौल ! तीन टरेनि !

चौबीस

हाँ रे, अब ना जीयब रे सैयाँ
छतिया पर लौटल केश,
अब ना जीयब रे सैयाँ !

मँहगी पड़े या अकाल हो, पर्व-त्योहार तो मनाना ही होगा। और होली ? फागुन महीने की हवा ही बावरी होती है। आसिन कासिक के मैलेरिया और कालाआज़ार से टूटे हुए शरीर में फागुन की हवा संजीवनी फूँक देती है। रोने-कराहने के लिए बाकी ग्यारह महीने तो हैं ही, फागुन-भर तो हँस लो, गा लो। जो जीये सो खेले फाग। दूसरे पर्व-त्योहार को तो टाल भी दिया जा सकता है। दीवाली में एक-दो दीप जला दिये, बस छुट्टी। लेकिन होली तो मुर्दा दिलों को भी गुदगुदी लगाकर जिलाती है। बौरे हुए आम के बाग से हवा आकर बच्चे-बूढ़ों को मतवाला बना जाती है। ···चावल का आटा, गुड़ और तेल ! पूआ-पकवान के इस छोटे से आयोजन के लिए मालिकों के दरवाजे पर पाँच दिन पहले से ही भीड़ लग जाती है। बखार के मुँह खोल दिये जाते हैं। मालिक बही-खाता लेकर बैठ जाते हैं, पास में कजरौटी खुली हुई रहती है। धान नापने वाला धान की ढेरी से धान नापता जाता है। ···बादरदास को एक मन। ···सोनाये

ततमा को तीन पसेरी। ···सादा कागज पर अँगूठे का निशान देते जाओ। भादों महीने में यदि भर्द धान चुका दोगे तो ड्योढ़ा, यानी एक मन का डेढ़ मन। यदि अगहनी फसल में चुकाओगे तो डेढ़ मन का तीन मन। सीधा हिसाब है।

गाँव के सभी बड़े-बड़े किसानों का अपना-अपना मजदूर टोला है—सिंघजी का ततमा और पासवान टोला; तहसीलदार साहब का पोलिया-टोला, धानुकटोला, कुर्मीटोला और कियोटटोला; सेलावन यादव का गुआर-टोला और कोयरीटोला। संथालटोली पर किसी का खास अधिकार नहीं।

इस बार तहसीलदार साहब को छोड़कर किसी ने मजदूरों को धान नहीं दिया। "···अंगूठे का निशान नहीं देंगे और धान लेंगे? बाप-दादे के अमल से अंगूठे का निशान देते आ रहे हैं; कभी बेईमानी नहीं हुई। इस साल बेईमानी कर लेंगे? कालीचरन ने टीप देने को मना किया है तो कालीचरन से ही धान लो।"

तहसीलदार को नये टीप की जरूरत नहीं। पुराने टीप ही इतने हैं कि कोई इधर-उधर नहीं कर सकता। दूसरे किसानों के मजदूरों को भी तहसीलदार साहब ने ही इस बार धान दिया है, लेकिन कालीचरन को जमानतदार रखकर। धान वसूलवा देना कालीचरन का काम होगा। अरे, ड्योढ़ा नहीं तो सवैया ही सही।···जो भी हो, तहसीलदार के दिल में दया-धर्म है। बाकी मालिक लोग तो पिशाच हैं, पिशाच!

एक ओर लौटल बारी रे बिहउवा!

फगुआ का हरएक गीत देह में सिहरन पैदा करता है। फुलिया का चुमौना खलासीजी से हो गया है। खलासीजी विदाई कराने के लिए आये थे। लेकिन फुलिया इस होली में जाने को तैयार नहीं हुई। खलासीजी बहुत बिगड़े; धरना देकर चार दिन तक बैठे रहे। आखिर में रूठकर जाने लगे। फुलिया ने रमजू की स्त्री के आँगन में खलासीजी से भेंट करके कहा था—"इस साल होली मैहर में ही मनाने दो। अगले साल तो···।"

नयना मिलानी करी ले रे सैयाँ, नयना मिलानी करी ले!

अबकी बेर हम नैहर रैहबो, जो दिल चाहे से करी ले !

दोपहर से शाम तक रमजूदास की स्त्री के आँगन में रहकर फुलिया ने खलासीजी को मना लिया है। होली के लिए खलासीजी ने एक रुपया दिया है।···बेचारा सहदेव मिसर इस बार किससे होली खेलेगा ? पिछले साल की बात याद आते ही फुलिया का देह सिहरने लगता है। भाँग पीकर धुत्त था सहदेव मिसर। एक ही पुआ को बारी-बारी से दाँत से काटकर दोनों ने खाया था।···"अरे, जात धरम ! फुलिया, तू हमारी रानी है, तू हमारी जाति, तू ही धरम, सब कुछ।"···बाबू को दारू पीने के लिए डेढ़ रुपया दिया था और माँ को अठन्नी।···रात-भर सहदेव मिसर जगा रह गया था।···फुलिया के देह के पोर-पोर में मीठा दर्द फैल रहा है। जोड़-जोड़ में दर्द मालूम होता है। कोई बाँहों में जकड़कर मरोड़े कि जोड़ की हड्डियाँ पटपटाकर चटख उठें और दर्द दूर हो जाय।···सहदेव मिसर को खबर भेज दें ?···लेकिन गाँव वाले ?···ऊँह, होली में सब माफ है।···वह आवेगा ? नाराज जो है !

अरे बँहियाँ पकड़ि झकझोरे श्याम रे
फूटल रेसम जोड़ी चूड़ी
मसकि गई चोली, भींगावल साड़ी
आँचर उड़ि जाये हो
ऐसो होरी मचायो श्याम रे···!

कमला की आँखें लाल हो रही हैं। पिछले साल होली के ही दिन वह बेहोश हुई थी। इस बार क्या होगा ? वह बेहोश नहीं होगी इस बार। इस बार डाक्टर है; उसे बेहोश नहीं होने देगा।···लेकिन सुबह से ही डाक्टर बाहर है। रोगी देखने गया है रामपुर। यदि वह आज नहीं आया तो ?···नहीं, वह जरूर आयेगा। माँ ने एक सप्ताह पहले ही निमंत्रण दे दिया है। रंग, अबीर,···गुलाल ! पिचकारी !

"माँ !"

"क्या है बेटी ?"

"तुम्हारा डाक्टर आज नहीं आवेगा ?"

"क्यों क्या बात है बेटी ?"

"मेरा जी अच्छा नहीं।"

"ऐसा मत कहो बेटी, दिल को मजबूत करो। कुछ नहीं होगा।"

···आजु ब्रज में चहुदिश उड़त गुलाल !

चारों ओर गुलाल उड़ रहा है। डाक्टर को कोई रंग नहीं देता है। रामपुर में भी किसी ने रंग नहीं दिया। रास्ते में एक जगह कुछ लड़के पिचकारी लेकर खड़े थे, लेकिन डाक्टर को देखते ही सहम गए।···रंग नहीं, गोबर है। रंग के लिए इतने पैसे कहाँ ! डाक्टर को लोग रंग नहीं देते। वह सरकारी आदमी है, सरकारी उर्दी पहने हुए है। सरकारी उर्दी पर रंग देने से जेल की सजा होती है। डाक्टर, सरकारी आदमी है, बाहरी आदमी है। वह गाँव के समाज का नहीं।···यह डाक्टर की ही गलती है। शुरू से ही वह गाँव से, गाँव वालों से अलग-थलग रहा है। उसका नाता सिर्फ रोग और रोगी से रहा। उसने गाँव की जिन्दगी में कभी घुलने-मिलने की चेष्टा नहीं की। लेकिन डाक्टर को अब गाँव की जिन्दगी अच्छी लगने लगी है, गाँव अच्छा लगने लगा है और गाँव के लोग अच्छे लगते हैं। वह गाँव को प्यार करता है। उसे कोई रंग क्यों नहीं देता ? वह रंग में, गोबर में, कीचड़ में शराबोर होना चाहता है !

"अर र र र ! कोई बुरा न माने, होली है !"

डाक्टर के सफेद कुर्ते पर लाल-गुलाबी रंगों की छींटें छरछराकर पड़ती हैं।

"ओ कालीचरन !"

"बुरा मत मानिए डाक्टर साहब, होली है।"

डाक्टर मनीवेग से दस रुपये का नोट निकालकर कालीचरन को देता है—होली का चन्दा ! रंग और अबीर का चंदा !

होली है ! होली है ! होली है !

गनेश हाथ में पिचकारी लिये मौसी का आँचल पकड़कर खड़ा है। मौसी हँसकर कहती है, सुबह से ही रंग खेलने के लिए जिद्द कर रहा है। मेरी एक साड़ी को तो रंग से सराबोर कर दिया है। अब जिद्द पकड़ा है कि गाँव के लड़कों के साथ खेलेंगे।"

"आओ भैया गनेश !" कालीचरन गनेश का हाथ पकड़कर ले चलता है। गनेश खुश होकर डाक्टर पर रंग की पिचकारी से फुहारें बरसाता हुआ कालीचरन के साथ भाग जाता है। मौसी खुश है।

"जुगजुग जियो काली बेटा !"

"बड़ा मस्त नौजवान है," डाक्टर कहता है।

"कमला पाँच बार पुछवा चुकी है—डाक्टर साहब लौटे हैं या नहीं। मुझे धमकी दे गई है—आज डाक्टर को तुम नहीं खिला सकतीं। आज मेरे यहाँ निमंत्रण है।"

ढोल-ढाक, झाँझ-मृदंग और डम्फ !
होली, फगुआ, भड़ौवा और जोगीड़ा !

कालीचरन का दल बहुत बड़ा है। दो ढोल, एक ढाक है, झाँझ-डम्फ। सभी अच्छे गाने वाले भी उसी के दल में हैं। सुन्दरलाल, मुंजीलाल, देवीदयाल और जोगीड़ा कहने वाला महन्था। मिडिल में पढ़ता है; पढ़ने में बड़ा तेज है ! दोहा कवित्त जोड़ने में उसको चांदी की चकत्ती मिली है। गाँव के छोटे-छोटे दल भी कालीचरन के दल में मिल गए हैं।

जोगीड़ा सर···र र···
जोगीड़ा सर-र र···
जोगीजी ताल न टूटे
तीन साल पर ढोलक बाजे
ताक धिना धिन धिन्नक तिन्नक
जोगीजी !
होली है ! कोई बुरा न माने होली है !
बरसा में गड्ढे जब जाते हैं भर

वेंग हजारों उसमें करते हैं टर्र
वैसे ही राज आज कांगरेस का है
लीडर बने हैं सभी कल के गीदड़ ··जोगीजी सर···र र··
जागीजी, ताल न टूटे
जोगीजी, तीन ताल पर ढोलक बाजे
जोगीजी, ताक धिना धिन !
चर्खा कातो, खद्धड़ पहनो, रहे हाथ में झोली
दिन दहाड़े करो डकैती बोल सुराजी बोली···जोगीजी सरर्र··

सिर्फ़ जोगीड़ा ही नहीं। महंथा ने नया फगुआ गीत भी जोड़ा है बटगमनी फगुआ—राह में चलते हुए गाने के लिए।

आई रे होरिया आई फिर से !
आई रे !
गावत गाँधी राग मनोहर
चरखा चलावे बाबू राजेन्द्र
गूँजल भारत अमहाई रे ! होरिया आई फिर से !
बीर जमाहिर शान हमारो,
बल्लभ है अभिमान हमारो,
जयप्रकाश जैसो भाई रे ! होरिया आई फिर से !

होली है ! होली है ! होली है !

कोयरीटोले का बूढ़ा कलरू महतो कहता है, "अरे डागडर साहेब ! अब क्या लोग होली खेलेंगे ! होली का जमाना चला गया। एक जमाना था जब कि गाँव के सभी बूढ़ों को नंगा करके नचाया जाता था, एकदम नंगा। उस बार राज के मनेजर जनसैन साहेब के साथ तीन-चार साहेब आये थे। काला बक्सा में आँख लगाकर छापी लेते थे। बाद में खानसामाँ से मालूम हुआ कि बिलैत के गजट में छापी हुआ था। एकदम नंगा !"

कामरेड वासुदेव 'भँड़ौवा' गाने के लिए कह रहे हैं, "अब एक नया भंड़ौवा हो। एकदम नया ताजा माल ! जमनेवाला !"

ढाक ढिन्ना, ताक ढिन्ना।

अरे हो बुड़बक बभना अरे हे बुड़बक बभना,
चुम्मा लेवे में जात नहीं रे जाये।
सुपति मउनियाँ लाये डोमनियाँ, माँगे पियास से पनियां
कुआँ के पानी न पावे बेचारी दौड़ल कमला के किनरियाँ,
सोही डोमनियाँ जब बनली नटिनियाँ आँखी के मारे पिपनियाँ
तेकरो खातिर दौड़ले बौड़हवा, छोड़के घर के बभनिया।
जोलहा घुनियाँ तेली तेलनियाँ के पीये न छुअल पनियाँ
नटिनी के जोवना के गंगा जमुनुवाँ में डुबकी लगा के नहनियाँ।
दिन भर पूजा पर आसन लगा के पोथी पुरान बँचनियाँ
राती के ततमाटोली के गलियनमें जोतखीजी पतरा गननियाँ।
भकुआ बभना, चुम्मा लेवे में जात नहीं रे जाये!

कोई बुरा न माने होली है! होली है!

तहसीलदार साहब की ड्योढ़ी पर पैर रखते ही डाक्टर के मुँह पर गुलाल मल दिया गया। डाक्टर की आँखें बंद हैं, लेकिन स्पर्श में ही वह समझ गया है कि गुलाल किसने मला है। कमली!···वसन्तोत्सव की कमली! डाक्टर याद करने की चेष्टा करता है, एक बार किसी चित्रकार का 'मैथिली' शीर्षक चित्र किसी मासिक पत्रिका में देखा था! ···कौन था वह चित्रकार!

"डाक्टर बेचारे के पास न अबीर है और न रंग की पिचकारी। यह एकतरफा होली कैसी? ···लीजिए डाक्टर बाबू, अबीर लीजिए। और इस बाल्टी में रंग है।" माँ बेहद खुश है आज। पिछले साल होली के दिन इसी आँगन में मातम हो रहा था और इस साल उसकी बेटी चहकती फिर रही है। ···दुहाई बाबा भोलानाथ!

बेचारा डाक्टर रंग भी नहीं देना जानता; हाथ में अबीर लेकर खड़ा है। मुँह देख रहा है, कहाँ लगावे!

"ज़रा अपना हाथ बढ़ाइए तो।"

"क्यों ?"

"हाथ पर गुलाल लगा है ?"

"आप होली खेल रहे हैं या इन्जेक्शन दे रहे हैं ? चुटकी में अबीर लेकर ऐसे खड़े हैं मानो किसी की मांग में सिन्दूर देना है !" कमली खिलखिलाकर हँसती है। रंगीन हँसी !

डाक्टर अब पहले की तरह कमली की बोली को एक बीमार की बोली समझकर नहीं टाल सकता है। कमरे में लालटेन की हलकी रोशनी फैली हुई है; सामने कमली खड़ी हँस रही है। ऐसी हँसी डाक्टर ने कभी नहीं देखी थी। वह स्वस्थ हँसी है—विकारशून्य ! कमली का अंग-अंग मानो फड़क रहा है। डाक्टर अपने दिल की धड़कन को साफ़-साफ़ सुन रहा है। उसके ललाट पर आज भी पसीने की बूंदें चमक रही हैं। सामने दीवार पर एक बड़ा आईना है। डाक्टर उसमें अपनी सूरत देखता है···ललाट पर पसीने की बूंदें, मानो दूल्हे के ललाट पर चन्दन की छोटी-छोटी बिंदियां सजाई गई हैं ! ···डाक्टर को भवभूति के माधवमालती की याद आती है। होली को पहले मदनमहोत्सव कहा जाता था। आम की मंजरियों से मदन की पूजा की जाती थी। इसी मदनोत्सव के दिन माधव और मालती की आँखें चार हुई थी और दोनों प्रेम की डोरी में बँध गए थे। ···जहाँ राधेश्याम खेले होरी !

डाक्टर अबीर की पूरी झोली कमला पर उलट देता है। सिर पर लाल अबीर बिखर गया—मुँह पर, गालों पर और नाक पर।···कहते हैं, सिंदूर लगाते समय जिस लड़की के नाक पर सिंदूर झड़कर गिरता है, वह अपने पति की बड़ी दुलारी होती है।···

ऐसी मचायो होरी हो,
कनक भवन में श्याम मचायो होरी !

पच्चीस

बावनदास आजकल उदास रहा करता है।

"दासजी, चुन्नी गुसाईं का क्या समाचार है ?" रात में बालदेवजी सोने के समय बावनदास से बातें करते हैं।

"चुन्नी गुसाईं तो सोसलिट पार्टी में चला गया।"

बालदेवजी आश्चर्य से मुंह फाड़कर देखते ही रह जाते हैं।

"बालदेव भाई, अचरज की बात नहीं। भगवान् जो करते हैं अच्छा करते हैं।"

"याद है दासजी चम्पानपट्टी की सभा, तेवारीजी का लेक्चर और तनुकलाल का गीत। याद करके आज भी रोवां कलप उठता है। ···गंगा रे जमुनवां की धार···।"

"लेकिन भारथमाता अब भी रो रही है बालदेव!" बावनदास को नींद आ रही है।

बालदेवजी चमक उठते हैं। भारथमाता अब भी रो रही है ? ऐं ?··· क्या कहता है बावनदास ?

बावनदास करवट लेते हुए कहता है, "बिलैती कपड़ा के पिकेटिन के जमाने में चानमल-सागरमल के गोला पर पिकेटिन के दिन क्या हुआ था, सो याद है तुमको बालदेव ? चानमल मड़बारी के बेटा सागरमल ने अपने हाथों सभी भोलटियरों को पीटा था; जेहल में भोलटियरों को रखने के लिए सरकार को खर्चा दिया था। वही सागरमल आज नरपतनगर थाना कांग्रेस का सभापति है। और सुनोगे ?···दुलारचन्द कापरा को जानते हो न ? वही जुआ कम्पनी वाला, एक बार नेपाली लड़कियों को भगाकर लाते समय जो जोगबनी में पकड़ा गया था। वह कटहा थाना का सिकरेटरी है।···भारथमाता और भी जार-बेजार रो रही है।"

बालदेवजी को आश्चर्य होता है। वह बावनदास से बहस करना चाहता है। लेकिन बावन तो खर्राटा लेने लगा।···बालदेवजी के समझ

में कोई बात नहीं आ रही है।···भारथमाता जार-बेजार रो रही है?···

बावनदास, चुन्नी गुसाईं और बालदेवजी! तीनों ने एक ही दिन इस संसार के माया-मोह को त्यागकर सुराजी में नाम लिखाया था।

गृहस्थ चुन्नी गुसाईं! चार बीघे जमीन, दो-चार आम-कटहल के पेड़, एक गाय और दो छोटे-छोटे लड़कों का एकमात्र अभिभावक। स्वभाव से धर्मभीरु। चन्दनपट्टी में सभा देखने गया। तैवारीजी ने भाखन दिया और तनुकलाल ने गीत गाया। सभी रोने लगे। चुन्नीदास के मन का मैल भी आँसुओं की धारा में बह गया। उसी दिन सुराजी में नाम लिखा लिया। चर्खा-कर्घा, झंडा तिरंगा और खद्दड़ को छोड़कर सभी चीजें मिथ्या हैं। सुदेशी बाना, विदेशी बैकाठ!

अरे देसवा के सब धन-धान विदेसवा में जाये रहे।
महँगी पड़त हर साल कृसक अकुलाये रहे।

दुहाई गाँधी बाबा!···गाँधी बाबा अकेले क्या करें। देश के हरेक आदमी का कर्तव्य है···।

का करें गाँधीजी अकेले, तिलक परलोक बसे,
कवन सरोजनी के आस अवहिं परदेस रही।

दुहाय गाँधी बाबा! चुन्नीदास को अपने शरण में ले लो प्रभू!··· विदेशी कपड़ा बैकाठ···नीमक कानून···जेल। गाँजा-दारू छोड़िए प्यारे भाइयो···जेल। व्यक्तिगत सत्याग्रह···जेल। १९४२···जेल।···सब मिलाकर दस बार जेल-यात्रा कर चुका है चुन्नी गुसाईं!

और वह सोसलिट पाटी में चला गया?

बावनदास!

पूर्व जन्म का फल अथवा सिरजनहार की मर्जी। प्रकृति की भूल अथवा थायराएड, थायमस और प्युटिटिरी ग्लैंड्स के हेर-फेर! डेढ़ हाथ की ऊँचाई! साँवला रंग, मोटे होंठ, अचरज में डाल देने वाली दाढ़ी और चौंका देने वाली मोटी-भोंडी आवाज। ऊँचाई के हिसाब से आवाज दसगुना भारी। अजीब चाल, मानो लुढक रहा हो। अज्ञात कुलशील। जन्म-

जात साधु। जिस ओर होकर गुज़रता, लोगों की निगाहें बरबस अटक जातीं। फिर ताज्जुब की हँसी-मुस्कराहट। पीछे-पीछे बच्चों का हुजूम; तमाशा; कुत्ते भूंकते, इन्सान हँसते! गर्भवती औरतें छिप जातीं अथवा छिपा दी जातीं।...और जब भगवानू ने उसे चलता-फिरता तमाशा ही बनाकर भेजा है, लोग उसे देखकर खुश हो लेते हैं तो क्यों न वह पारिश्रमिक माँग ले।...दे दे मैया कुछ खाने को! भगवानू भला करेंगे। सेत्तारामं, सेत्तारामं!

चन्दनपट्टी की उस सभा ने, तैवारीजी के भाखन और तनुकलाल के गीत ने, इस डेढ़ हाथ के आदमी को भी झकझोर दिया था।...न जाने पूर्वजन्म के किस पाप का फल भोग रहा हूँ। क्या होगा यह सरीर रखकर? चढ़ा दो गांधी बाबा के चरण में, भारथमाता की खातिर!

अरे देसवा के खातिर मंजहरुलहक भइलै फकिरवा से
दीन भइलै राजेन्दरप्रसाद देसवासियो!

और वह तो फकीर ही है।...चुन्नी गुसाईं ने नाम लिखा लिया? मेरा भी नाम लिख लिया जाय।....रामकिसुन बाबू की स्त्री उसे देखते ही चिल्ला उठी थीं—भगवानू! बावन भगवानू!...उन्होंने पूर्णिया आने के लिए कहा था।

सेत्तारामं! सेत्तारामं! बन्देमहातरम्! बन्देमहातरम्!

जिले की राजनीति के जनक रामकिसुन बाबू के बंगले पर वह जिस समय हाजिर हुआ, उस समय पुलिस की लौरी खड़ी थी। दारोगा साहब इन्तिजार कर रहे थे। रामकिसुन बाबू अपनी आभारानी को जरूरी हिदायतें दे रहे थे।

बन्दे महातरम्! बन्दे महातरम्!

"तुमि जाओ! आमार जन्ये भेवो ना। ओई दूयाको, भगवान् आमार काछे निजेई एसे गेछेन।" आभारानी की आँखें आनन्द से चमक उठी-थीं।

आभारानी ने बावनदास को 'भगवान्' छोड़कर किसी दूसरे नाम से

कभी नहीं पुकारा।

कुछ दिनों बाद आभारानी भी गिरफ्तार हुई। बावन भी पकड़ा गया। पुलिस ने एकाध डंडा लगाकर उसे भगा देना चाहा, पर पहले ही डण्डे की चोट को आभारानी ने झपटकर अपने शरीर पर ले लिया तो पुलिस के पाँव के नीचे की मिट्टी खिसक गई थी।···"आमार भगवान् के मारो ना।"···खून से लथपथ सादी को सफेद साड़ी। पत्थर को भी पिघला देने वाली, करुणा से भरी बोली, 'आमार भगवान्!' बावन के पूर्वजन्म के सारे पाप मानो अचानक ही पुण्य में बदल गए। सूखे ठूंठ में नई कोंपल लग गई। उसके मुँह से मोटी आवाज़ निकली थी—"माँ!"

माँ! महात्मा गांधीजी भी आभारानी को माँ ही कहते। १९३४ में भूकम्प-पीड़ित क्षेत्रों के दौरे पर जब बापू आये थे, साथ में थे रामकिसुन बाबू, आभारानी और बावनदास। बावनदास के बिना आभारानी एक डेग भी कहीं नहीं जा सकतीं। गांधीजी हँसकर बोले थे, "माँ, तुम्हारे भगवान् से ईर्ष्या होती है।"···दन्तहीन, पोपले मुँह की वह पवित्र हँसी, बच्चों की हँसी जैसी!

फुलकाहा बाज़ार! लाखों की भीड़। ऊँचा मंच।···'महत्मा गांधी की जय!'···रह-रहकर आकाश हिल उठता है।···जय! फिर आकाश हिलता है। रेलमपेल! पुष्पवृष्टि!···चरणधूलि! सीटी···स्वयंसेवक। कॉर्डन डालो···घेरा···घेरा!

मंच पर आगे-आगे रामकिसुन बाबू, आभारानी के कन्धे का सहारा लिये गांधीजी।···वही गांधीजा!···जै!···जै!·· आभारानी हाथ का सहारा देकर फिर किसका मंच पर चढ़ा रही हैं? कौन है वह?·· अरे बावनदास! बोना!···गांधीजी तर्जनी से सबों को शान्त रहने के लिए कह रहे है।···लाखों की भीड़ में बावनदास खँजड़ी बजाकर गाता है, 'एक राम-नाम धन साँचा जग में कछु ना बाँचा हो!' आवाज़ दूर तक नहीं पहुँचती। लेकिन बावनदास! डेढ़ हाथ ऊँचा यह 'भर-आदमी' कितना बड़ा हो गया है! महात्माजी भीख माँगते हैं। हरिजनों के लिए

दान दीजिए ! रुपये की थैली, सोने की अँगूठी, चेन, बुताम, हार, कंगन, अठन्नी, चवन्नी, दुअन्नी, इकन्नी, पत्थर का टुकड़ा। किन्तु सब-कुछ देकर भी बावनदास से बड़ा होना असम्भव !

बावनदास को मानो कुबेर का भण्डार मिल गया; ठूँठ के कोंपल नवपल्लव हो गए···बापू !

१९३७। पण्डित जवाहरलाल नेहरू चुनाव के तूफानी दौरे पर आये हैं। बावनदास को देखकर ताज्जुब की मुद्रा बनाकर कुछ देर तक देखते ही रह गए। फिर ललाट पर बल और नाक पर अंगुली डालते हुए, गांगुली-जी से अंग्रेजी में बोले,"आई काण्ट रिमेम्बर दि नेम ऑफ दैट बुक।" (मुझे उस किताब का नाम याद नहीं आ रहा है)।

"किंग ऑफ दि गोल्डन रिवर !" गांगुलीजी ने छूटते ही जवाब दिया। फिर दोनों एक ही साथ हँस पड़े।

अब बावनदास भजन ही नहीं गाता, बिख्यान देना भी सीख गया है। वह बोलने को उठता है। माइक-स्टैंड काफी ऊँचा है। ऑपरेटर हैरान है। जल्दीबाजी में वह क्या करे ? कभी ऊँचा कभी नीचा करता है, फिर भी बावनदास से काफी ऊँचा है माइक-स्टैंड। नेहरूजी बड़ी फुर्ती से उठ-कर जाते हैं, माइक खोलकर हाथ में ले लेते हैं। झुककर बावनदास के मुँह के पास ले जाते हैं, "बोलिए !" जनता हँसती है। बावन ज़रा घबरा जाता है। नेहरूजी मुस्कराकर उसके गले में माला डाल देते हैं, "बोलिए !" प्रेस रिपोर्टरों के कीमती कैमरों के बटन एक ही साथ 'क्लिक-क्लिक' कर उठे थे। 'नैशनल हेरल्ड' के मुखपृष्ठ पर बड़ी-सी तस्वीर छपी थी— बावनदास के गले में माला है, नेहरूजी हाथ में माइक लेकर झुके हुए हैं, मुस्करा रहे हैं। तस्वीर के ऊपर लिखा हुआ था, 'माइक ऑपरेटर नेहरू !'

अगस्त १९४२। कचहरी पर चढ़ाई। धायँ-धायँ ! पुलिस हवाई फायर करती है। लोग भाग रहे हैं। बावनदास ललकारता है, जनता उलटकर देखती है। डेढ़ हाथ का इन्सान सीना ताने खड़ा है। '···बम्बई से आई आवाज !'···जनता लौटती है। बावनदास पुलिस वालों के पावों के बीच

से घेरे के उस पार चला जाता है और विजयी तिरंगा शान से लहरा उठता है।···महात्मा गांधी की जय !

बावन को गांधीजी जानते हैं, नेहरूजी जानते हैं और राजेन्द्र बाबू भी पहचानते हैं। प्रान्त-भर के लीडर और राजनीतिक कार्यकर्ता जानते हैं। कैम्प जेल में सुपरिटेण्डेण्ट की बदमाशी के खिलाफ कैदियों ने सामूहिक अनशन किया था। अन्त तक बावनदास और चुन्नी गुसाईं ही टिके रहे थे। पच्चीस दिन का अनशन ! रदरफोर्ड और आर्चर ने इन दोनों को 'देखने माँगा' था। गांधीजी की कठोर परीक्षा में, सत्य की परीक्षा में, सत्याग्रह की परीक्षा में, खरे उतरने वाले दो कुरूप और भद्दे इन्सान !

'सुराजी' में नाम लिखाने के बाद सिर्फ दो बार बावन को माया ने अपने मोहजाल में फँसाने की कोशिश की थी। दोनों बार वह चेत गया था। मोह-फाँस में फँसते-फँसते वह बच गया था।···महात्माजी की कृपा !

एक बार रामकिसुन बाबू ने सिमरबनी से मुठिया में वसूल हुआ चावल लाने को भेजा था—"चावल बेचकर रुपया ले आना।" पाँच रुपये तीन आने। लौटती बार सिमराहा स्टेशन बाजार में जगमोहन साह की दूकान पर वह दही-चूड़ा खाने गया था। जगमोहन साह जलेबियाँ छान रहा था और सहुआइन जलेबियों को रस में डुबो रही थी। बावनदास के मन में बहुत देर तक रस में डूबी हुई जलेबियाँ चक्कर काटती रहीं।···पथराहा के फागू बाबू ने अपने बाप के श्राद्ध में कंगाल भोजन कराया था। एक युग हो गया, बावन ने फिर जलेबी नहीं चखी। आखिर बावनदास ने दही-चूड़ा पर दो आने की जलेबियाँ ले लीं।

लेकिन पेट में पहुँचने के बाद उसे अचानक ज्ञान हुआ। उसकी आँखों के आगे से माया का पर्दा उठ गया।···ये पैसे ? मुठिया ?···उसकी आँखों के सामने गाँव की औरतों की तस्वीरें नाचने लगीं।·· हाँडी में चावल डालने के पहले, परम भक्ति और श्रद्धा से, एक मुट्ठी चावल गांधी बाबा के नाम पर निकालकर रख रही हैं। कूट-पीसकर जो मजदूरी मिली है, उसमें से एक मुट्ठी ! भूखे बच्चों का पेट काटकर एक मुट्ठी !

और बावन ने उस पैसे से अपनी जीभ का स्वाद मिटाया ?···व्रतभंग ! तपभ्रष्ट !·· दुहाई गांधी बाबा !···छिमा करो ! बावन फूट-फूटकर रोने लगा। उसकी आँखों से आँसू झड़ रहे थे और वह कण्ठ में अंगुलियाँ डाल-कर कै करता जाता था।···सेत्तराम! सेत्तराम ! दो दिनों का उपवास ! आत्माशुद्धि, प्रायश्चित ! रामकिसुन बाबू ने बहुत समझाया, आभारानी परोसी हुई थाली लेकर सामने बैठी रहीं, लेकिन बावन ने उपवास नहीं तोड़ा।···"माँ, इस अपवित्तर मन को डण्ड देने से मत रोको। अशुद्ध आतमा मुझे बाबा की राह से डिगा देगी !"

माया का दूसरा फन्दा···

नमक कानून तोड़ने के समय श्रीमती तारावती देवी पटना से आई थीं। उनकी बोली में मानो जादू था। वह जहाँ जातीं, लोग उनके भाषण सुनने के लिए उमड़ पड़ते थे।···जवान औरत ! सिर पर घूँघट नहीं। भगवती दुर्गा की तरह तेजी से जल-जल करती है, सरकार को पानी-पानी कर देती है। '···मुट्ठी-भर अंग्रेजों को हम नाच नचा देंगे। गोली सूली और फांसी का डर नहीं।' पुलिस दारोगा डर से थर-थर काँपते हैं।'··· अंग्रेजों के जूठे पत्तल चाटने वाले ये हिन्दुस्तानी कुत्ते !' · जरूर उसमें भगवती का अंश है। सभा खत्म होने के बाद उनके निवास-स्थान पर भी भीड़ लग जाती थी। बहुत-सी बाँझ निपुत्तर औरतें चरण-धूलि लेने आती थीं। भगवती !···उनके खाने-पीने और आराम करने के समय भी लोग जमे रहते थे। आखिर स्वयंसेवकों के पहरे का प्रबन्ध करना पड़ा था।

एक दिन चन्दनपट्टी आश्रम में, दोपहर को तारावतीजी बिछावन पर आराम कर रही थीं। सामने के दरवाजे पर पर्दा पड़ा हुआ था और पर्दे के इस पार ड्यूटी पर बावनदास। फागुन की दोपहरी ! आम की मंज-रियों का ताजा सुवास लेकर बहती हुई हवा पर्दे को हिला-डुलाकर अन्दर पहुँच जाती थी। तारावतीजी की आँखें लग गईं। बावन ने हिलते-डुलते पर्दे के फाँक से यों ही जरा झाँककर देखा था। उसका कलेजा धक् कर उठा था, मानो किसी ने उसे जोर से पीछे की ओर धकेल दिया हो।···

धीरे-धीरे, पर्दे को हिलाने वाली फागुन की आवारा हवा ने बावन के दिल को भी हिलाना शुरू कर दिया। बावन ने एक बार चारों ओर झाँककर देखा, फिर पर्दे के पास खिसक गया। झाँका। चारों ओर देखा और तब देखता ही रह गया मन्त्र-मुग्ध सा !···पलंग पर अलसाई सोई जवान औरत ! बिखरे हुए घुँघराले बाल, छाती पर से सरकी हुई साड़ी, खद्दर की खुली हुई अंगिया !···कोकटी खादी के बटन ! ···आश्रम की फुलवारी का अंग्रेजी फूल 'गमफोरना', पाँचू राउत का बकरा रोज आकर टप-टप फूलों को खा जाता है।···बावन के पैर थरथराते हैं। वह आगे बढ़ना चाहता है। ···वह जानवर है ! वह इस औरत के कपड़े को फाड़ कर चिथी-चिथी कर देना चाहता है। वह अपने तेज नाखूनों से उसके देह को चीर-फाड़ डालेगा। वह एक चीख सुनना चाहता है। वह अपने जबड़ों से पकड़कर उसे झकझोरेगा। वह मार डालेगा इस जवान गोरी औरत को। वह खून करेगा।···एँ ! सामने की खिड़की से कौन झाँकता है ? गांधीजी की तस्वीर ? दीवार पर गांधीजी की तस्वीर ! हाथ जोड़कर हँस रहे हैं बापू !···बाबा !···धधकती हुई आग पर एक घड़ा पानी ! बाबा, छिमा ! छिमा ! दो घड़े पानी ! दुहाई बापू ! पानी, पानी, पानी ! शीतल जल ! ठण्डक···!

बावन आँखें खोलता है। रामकिसुन बाबू पानी की पट्टी दे रहे हैं। माँ पंखा झल रही हैं। गांगुलीजी चुपचाप खड़े हैं और घबराई हुई तारावतीजी कह रही हैं, "चीख सुनकर मेरी नींद खुली तो देखा यह धरती पर छटपटा रहा है।"

दूसरे दिन आभारानी एक गिलास टमाटर का रस देते हुए बोली थीं, "भगवान्, आज थेके तोमाय रोज एक गिलास ऐई रस, आर रात्रे दूध खेते हबे।"

लेकिन, बावन तो सात दिनों का उपवास-व्रत ले चुका था। आत्मशुद्धि, इन्द्रियशुद्धि, प्रायश्चित ! आभारानी हारकर 'ता हले आमियो खाबो ना' धमकी देकर चली गई। तब बावन ने गांगुलीजी के पास

जाकर धीरे-धीरे सारी कहानी सुना दी—"गांगुलीजी ! आप माँ को समझा दीजिए। मैं व्रत तोड़ नहीं सकता। कल माया ने···!"

गांगुलीजी ने हँसते हुए आभारानी से कहा था, "भगवानेर व्रत-भंग हउवा असंभव। कारण गुरुतर। तवे आपनार भाग्य भालो जे वेचारा के सूरदासेर कथा मने पड़े नि, नईले एतखन आर भगवानेर चोख थाकतो ना।" (भगवान् का व्रत-भंग होना असम्भव है। आपका भाग्य अच्छा है कि उन्हें सूरदास की बात याद नहीं आई, वर्ना अब तक भगवान् की आँख नहीं रहतीं।)

आभारानी अवाक् होकर गांगुलीजी की ओर देखती रह गई थीं, "की जानी बापू ?"

देवताओं और मन्दिरों के नगर, बनारस में रहकर भी आभारानी को सबसे पहले अपने 'भगवान्' की याद आती है। कभी-कभी गांगुलीजी के नाम मनीआर्डर आता है, "भगवानेर कापडेर जन्य। ···भगवानेर दूधेर जन्य।"

···और वही बावनदास कहता है, भारतमाता ज़ार बेजार रो रही है!

बालदेवजी को लछमी दासिन की याद आती है।···वह भी रो रही रही थी। ···लेकिन कालीचरन ? सोसलिट पाटी !···

बालदेव निराश नहीं होगा। उसे नींद नहीं आ रही है। बहुत खटमल हैं। ···हाँ, वह कल बावनदास से पूछेगा, यदि घर में खटमल ज्यादा हो जाय तो क्या घर में ही आग लगा देनी चाहिए ?

छब्बीस

बाबू हरगौरीसिंह राज पारबंगा के नये तहसीलदार बहाल हुए हैं। 'बेतार का खबर'-सुमरितदास सबों से कहता है, "देखो-देखो, कायस्त के जूठे पत्तल में राजपूत खा रहा है। तहसीलदार विश्वनाथ बाबू को राज पार-

बंगा के कुमार साहेब ने बुलाकर बहुत समझाया-बुझाया, लेकिन तहसीलदार ने कहा, थूक फेंककर चाटना आदमी का काम नहीं। ···तहसीलदारी में अब क्या मजा है? अब तो यह सूखी हड्डी है।"

वास्तव में अब तहसीलदारी में कोई मजा नहीं रह गया है। जमाना बदल गया है। तहसीलदार साहब के बाप देवनाथ मल्लिक सिर्फ पाँच रुपये माहवारी पर बहाल हुए थे। लेकिन ऊपरी आमदनी? तीन साल बीतते-बीतते अस्सी-नब्बे बीघे धनहर[1] जमीन के मालिक बन गए थे। आदमी की ऊपरी आमदनी ही असल आमदनी है। और तहसीलदारी रोब का क्या पूछना! तहसीलदार के खेत में मजदूरी करने वालों को कभी मजदूरी नहीं मिलती थी। राज पारबंगा के राजा तो तिरहुत में रहते थे, उन्हें किसी ने कभी देखा भी नहीं। असल राजा तो बूढ़े देवनाथ मल्लिक ही थे। उस समय कटिहार शहर ठिकाने से बसा भी नहीं था। बूढ़े तहसीलदार साहब अपने सलीमशाही जूतों के तल्ले में ही काँटियाँ पुरैनियाँ से ठुकवाकर मँगाते थे और तीन महीने में ही काँटियाँ झड़ जाती थीं। सुनते है, वे बोलते बहुत कम थे, कान से कुछ कम सुनते थे; और जब बोलते थे तो '···मारो साले को दस जूता।' कमला नदी के बगल में जो गड्ढा है, उसीमें जोंक पालकर रखा था। जिसने तहरीर, तलबाना या नजराना देने में देर की, उसे गड्ढ में चार घंटों तक खड़ा करवा दिया। पाँव के अंगूठे से लेकर जाँघ तक मोटे-मोटे जोंक घुंघरू की तरह लटक जाते थे। ···वह जमाना तो बूढ़े तहसीलदार के साथ ही चला गया।

"जब नीलकोठी के साहबों के भी जुल्म से ऊबकर जगह-जगह किसानों ने बलवा करना शुरू किया तो देशी जमींदारों ने अपने तहसीलदार और पटवारियों को गुप्त रूप से हिदायत दी, ज्यादा जोर-जुल्म मत करो!

विश्वनाथ बाबू ने भी अच्छी तरह ही निभाया। रैयतों पर विशेष जोर-जुल्म करने का कभी जरूरत नहीं पड़ी। उनके पूर्वजों ने रैयतों के

१ उपजाऊ।

दिल और दिमाग पर तहसीलदारी की ऐसी धाक जमा रखी थी कि उन्हें विशेष कुछ नहीं करना पड़ता था। कहावत मशहूर थी, जमदूत थोड़ा मुहलत भी दे सकता है, पर तहसीलदार नहीं। हर बार तमादी के पहले जनरल मैनेजर डफ साहब का खीमा आता था। खीमा आने के पहले ही बगैर जोत-जमीन वाले आदमी भी गाँव छोड़कर नेपाल के जिले मोरंग भाग जाते थे। ···कोठी के बगीचे में पचासों छोटे-बड़े तम्बू और शामियाने तान दिये जाते थे। पचास सिपाही, चार हाथी, मोटरगाड़ी, खानसामा, बावर्ची, नाई और धोबी। पाँच गाँव की बैलगाड़ियों पर खीमे के सामान लदकर आते थे।

इलाके-भर के बदमाश और टेढ़े लोगों की फहरिस्त तहसीलदार पहले ही बनाकर रखते थे। सुमरितदास मोटे असामियों को चुपचाप एकान्त में ले जाकर खबर सुना देता था—तुम्हारा नाम तो फहरिस्त में सबसे ऊपर है!

···ऐं? सबसे ऊपर? सुनने वाले पर मानो वज्र गिर पड़ता था। ···जैसे भी हो, नाम तो कटाना ही होगा!

फहरिस्त बनाने के समय तहसीलदार साहब सुमरितदास की भी राय लेते थे। सुमरितदास साल-भर की घटनाएँ याद करते हुए लिखाता था—"हाँ, अनंत पर्व के दिन रनजीत दूध लाने के लिए गया था तो गुझरटोली के सतकौड़ी ने झूठ बोलकर बर्तन वापस कर दिया था—भैंस सूख गई। कुंजरटोली के फरजंद मियाँ ने करैला नहीं दिया था···।" तहसीलदार साहब ऐसे लोगों के नाम याद करते जिन्होंने राज के मुकदमों में गवाही देने से इनकार किया; दाखिल-खारिज करवाकर तहसीलदार का नजराना हड़प गया; किन लोगों को पैसे की गर्मी हो गई है, कौन राह चलते ऐंठकर चलते हैं और पंचायत में उनके सिपाहियों के विरुद्ध किन लोगों ने गवाहियाँ दी थीं।

डफ साहब खजाना-वसूली से ज्यादा महत्त्व देते थे राज के रोब को। राज का रोब ही असल चीज़ है। उनका कहना था—"अमारा स्टेट में

एक भी बडमाश को अम नही डेखने मांगटा। टुम अमारा टेसीलडार को झूठा बोला। अमारा अमला झूठा ? टुम साला का बच्चा सच्चा ?"

"चेटरु मांडल।"

"माय बाप !" हाथ जोड़े एक अर्धनग्न आदमी थर-थर काँपता हुआ खड़ा हुआ।

"तुम मुकडमा में गुआई क्यों नेई डिया ?"

"माय बाप · !"

"फँ···माय-बाप का बच्चा ! सिपाय, चाबुक डेगा।"

शपाक् ! शपाक् ! शपाक् ! ···कोड़े बरसने लगते।

"सि। टुम चेटरी आय ? राचपट आय ? टुम अमारा टेसीलडार से नेई जीट सकेगा। हम टुमको बेज्जट करेगा। बडमाश···।"

और इसके बाद साल-भर तक इलाके में अमन-चैन का राज ! तहसीलदार साहब के डर से लोग थर-थर काँपते रहते थे। लेकिन अब ? जमाना बदला ही नहीं है, साफ उलट गया है।

सिंघजी ने बहुत कोशिश पैरवी करके हरगौरीसिंह को तहसीलदारी दिला दी है। मैनेजर साहब को पूरे चार सौ रुपये की सलामी दी गई है। सुना है, बही-बस्ता लेते समय ही छींक पड़ गई है। अब नये तहसीलदार की तहसीलदारी कैसी चलती है, देखना है।

राजपूतटोली का बच्चा बच्चा खुश है। शिवशक्करसिंह सबों से कहते हैं, "हरगौरी एक किलास और पढ़ लेता तो मनेजरी धरी थी···"

काली कुर्ती वाले संयोजकजी बौद्धिक क्लास में समझा रहे है—"जिस तरह यह तहसीलदारी कायस्तों के हाथ से राजपूतों के हाथ में आई है, उसी तरह सारे आर्यावर्त के राजकाज का भार हिन्दुओं के हाथ में आएगा। और उस दिन आर्यावर्त के कोने-कोने में हिन्दू-राज्य की पताका लहराएगी।"

जोतखीजी सलाह देते है—"बिना लछमी की पूजा किये बही-बस्ता में हाथ नहीं लगाया जाय। शुक्रवार को शुभ दिन है। कार्यारम्भ, यात्रा,

गृहनिर्माण आदि।"

बालदेवजी को बार-बार अपने सपने की बात याद आती है—विशाल सभा, हरगौरी माला पहना रहा है लछमी को।

कॉमरेड कालीचरन और वासुदेव अपनी पार्टी के मेम्बरों से कहते हैं, "पुराने तहसीलदार यदि नागनाथ थे तो यह नया तहसीलदार सांपनाथ है। दोनों में कोई फर्क नहीं। दोनों ही जालिम जमींदार के कठपुतले है। सोशलिस्ट पार्टी के सिक्रेटरी साहब ने कहा है, लोग संघर्ष के लिए तैयार रहें।"

बावनदास के लिए यह गाँव नया है, गाँव के लोग नये हैं। वह अभी चुप है। न जाने क्यों, उसका जी नहीं लगता है।

चर्खा सेण्टर में सिर्फ चर्खा-कर्घा ही नहीं, बूढ़े लोगों को रात में पढ़ाया भी जाता है। औरतों और बच्चों को मास्टरनीजी पढ़ाती हैं और बूढ़ों को मास्टरजी। बूढ़ा विरंचीदास दस दिनों से 'क ख ग घ' पढ़ रहा है, लेकिन 'क' के बदले 'ग' से ही ककहरा शुरू करता है···'ग घ क ख'। मास्टरजी हैरान हैं···क्या सचमुच ही बूढ़ा तोता पोस नहीं मानता?

सत्ताईस

डॉक्टर की जिन्दगी का एक नया अध्याय शुरू हुआ है। उसने प्रेम, प्यार और स्नेह को बायोलॉजी के सिद्धान्तों से ही हमेशा मापने की कोशिश की थी। वह हँसकर कहा करता, "दिल नाम की कोई चीज आदमी के शरीर में है, हमें नहीं मालूम। पता नहीं आदमी 'लंग्स' को दिल कहता है या 'हार्ट' को। जो भी हो, 'हार्ट', 'लंग्स' या 'लीवर' का प्रेम से कोई सम्बन्ध नहीं है।"

अब वह यह मानने को तैयार है कि आदमी का दिल होता है, शरीर को चीर-फाड़कर जिसे हम नहीं पा सकते। वह 'हार्ट' नहीं, वह अगम

अगोचर जैसी चीज़ है, जिसमें दर्द होता है, लेकिन जिसकी दवा 'ऐड्रिलिन' नहीं। उस दर्द को मिटा दो, आदमी जानवर हो जायगा।···दिल वह मन्दिर है जिसमें आदमी के अन्दर का देवता वास करता है।

बचपन से ही वह अपने जन्म की कहानी को कभी भूल नहीं सका।

इतिहास पर गौरव करने वाले युग में पले हुए हर व्यक्ति को अपने खानदान की ऐसी कहानी चाहिए जिसके उजाले से वह दुनिया में चकाचौंध पैदा कर दे। लेकिन डॉक्टर के वंश-इतिहास पर काली रोशनाई पुती हुई है—जेल की सेंसर की हुई चिट्ठियों की तरह। काली रोशनाई से किसी हिस्से को इस तरह पोत दिया जाता है कि कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि उस हिस्से में कभी कुछ लिखा हुआ था।···जन्म देने वाली माँ ने भी जिसे दूर कर दिया।···अँधेरे में एक अभागिन माँ, दिल का दर्द दबाए और आँचल में अपने नवजात शिशु को छिपाए खड़ी है। एक काली और भयावनी छाया आकर हाथ बढ़ाती है, माँ अन्तिम बार अपने कलेजे के टुकड़े को, रक्त के पिण्ड को, एक पलक निहारती है, चूमती है। भयावनी छाया उसके हाथ से शिशु को छीन लेती है। माँ दाँतों से ओंठ दबाए खड़ी रह जाती है!

डॉक्टर ने अपनी माँ के स्नेह को, अँधेरे में खड़ी 'सिल्हुटेड' तस्वीर-सी माँ के दुलार की कीमत को, समझने की चेष्टा की है। वह गला टीपकर मार भी तो सकती थी। खटमल को मसलने के लिए अंगुलियों पर जितना जोर डालना पड़ता है, उस पाँच घण्टे की उम्र के शिशु की जीवन-लीला को समाप्त करने के लिए उतने-से ज़ोर की ही आवश्यकता थी। माँ ऐसा नहीं कर सकी।···शायद उसने चेष्टा की होगी। गले पर एक-दो बार उँगलियाँ गड़ी होंगी। सोया हुआ शिशु मुस्करा पड़ा होगा और वह उसे सहलाने लगी होगी।···उसने अपनी बेबस, लाचार और अभागिनी माँ के मन में उठनेवाले तूफान के झकोरे की कल्पना की है। ···वह अपनी माँ के पवित्र स्नेह का; अपराजित प्यार का जीता-जागता प्रमाण है!

किसी भी अभागिन माँ की कहानी सुनते ही वह मन-ही-मन उसकी भक्ति करने लगता है। पतिता, निर्वासिता और समाज की दृष्टि में सबसे नीच माँ की गोद में वह क्षण-भर के लिए अपना सिर रखने के लिए व्याकुल हो जाता है।···किसी स्त्री को प्रेमिका के रूप में कभी देखने की चेष्टा उसने नहीं की। वह मन-ही-मन बीमार हो गया था। एक जवान आदमी को शारीरिक भूख नहीं लगे तो वह निश्चय ही बीमार है, अथवा 'एब्नॉर्मल' है।

डाक्टर ने एक नये मोड़ पर मुड़कर देखा, दुनिया कितनी सुन्दर है!

वह लोक-कल्याण करना चाहता है। मनुष्य के जीवन को क्षय करने वाले रोगों के मूल का पता लगाकर नई दवा का आविष्कार करेगा। रोग के कीड़े नष्ट हो जायँगे; इन्सान स्वस्थ हो जायगा। दुनिया-भर के मेडिकल कॉलेजों में उसके नाम की चर्चा होगी। 'प्रशान्त मेथड', 'प्रशान्त रिऐक्शन'। डब्ल्यू० आर० की तरह पी० आर० कहेंगे लोग। इसके बाद!···'टेस्ट-ट्यूब बेबी' किसे माँ कहेगा? तब शायद माँ एक हास्यास्पद शब्द बनकर रह जायगा।···जानते हो, पहले माँ हुआ करती थी?··· एक अर्धनग्न से भी कुछ आगे लड़की, 'टेली-काफे' के द्वारा अमेरिकन पेस्ट्री का घर बैठे स्वाद लेती हुई मुड़कर कहेगी—'प्री-टेस्ट ट्यूब एज! सि सि!···म्वाँ! ट्यूब म्वाँ!'

···माँ! माँ वसुन्धरा, धरती माता! माँ अपने पुत्र को नहीं मार सकी, लेकिन पुत्र अपनी माँ को गला टीपकर मार देगा। शस्य श्यामला!···

भारतमाता ग्रामवासिनी!
खेतों में फैला है श्यामल,
धूल भरा मैला-सा आँचल!

मैला आँचल! लेकिन धरती माता अभी स्वर्णांचला है! गेहूँ की सुनहली बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है। सारे गाँव के लोग खेतों में हैं। मानो सोने की नदी में, कमर-भर सुनहले पानी में सारे गाँव के लोग कीड़ा कर रहे हैं। सुनहली लहरें! ताड़ के

पेड़ों की पंक्तियाँ, झरबेरी का जंगल, कोठी का बाग, कमल के पत्तों से भरे हुए कमला नदी के गड्ढे ! डॉक्टर को सभी चीजें नई लगती हैं। कोयल की कूक ने डॉक्टर के दिल में कभी हूक पैदा नहीं की। किन्तु खेतों में गेहूँ काटते हुए मजदूरों की 'चैती' में आधी रात को कूकने वाली कोयल के गले की मिठास का अनुभव वह करने लगा है।

सब दिन बोले कोयला भोर भिनसरवा···वा···या
बैरिन कोयलिया, आजु बोलय आधी रतिया हो रामा·· आं···आं
सूतल पिया के जगावे हो रामा···आं···आं

किसी के पिया की नींद न टूट जाय ! गहरी नींद में सोये हुए पिया के सिरहाने पंखा झलती हुई धानी को डर है, पिया की नींद न खुल जाय; सपना न टूट जाय !

डॉक्टर भी किसी की दुलार-भरी मीठी थपकियों के सहारे सो जाना चाहता है, गहरा नींद में खो जाना चाहता है। जिन्दगी की जिस डगर पर वह बेतहाशा दौड़ रहा था, उसके अगल-बगल, आप-पास, कहीं क्षण भर सुस्ताने के लिए कोई छाँव नहीं मिली। उसने किसी पेड़ की डाली की शीतल छाया की कल्पना भी नहीं की थी। जीवन की इस नई पगडण्डी पर पांव रखते ही उसे बड़े जोरों की थकावट मालूम हो रही है। वह राह की खूबसूरती पर मुग्ध होकर छाँव में पड़ा नहीं रह सकेगा। मंजिल तक पहुँचने का यह कितना ज़बरदस्त रास्ता है जो राही को मंजिल तक पहुँचने की प्रेरणा देता है। ···वह क्षण-भर सुस्ताने के लिए उदार छाया चाहता है। प्यार ! ··

सूतल पिया के जगावे हो रामा !

पिया जग गए, धानी ने पिया को विदाई दी। पिया को जाना है। हिमालय की चोटी को उषा की प्रथम किरण ने छूकर स्वर्णिम कर दिया। आम के बागों में कोयल-कोयली, दहियल और बुलबुल ने सम्मिलित सुर में मंगल-गीत गाए ! खेतों से गीत की कड़ियाँ पुरवैया के सहारे उड़ती आती हैं और डॉक्टर के दिल में हलचल मचा जाती हैं।···गेहूँ की

कटनी हो रही है। झुनाई हुई रब्बी की फसल की सोंधी सुगन्ध चारों ओर फैल रही है।

"डॉक्टर साहब !"

'क्या है ?'

"ज़रा चलिए ! मेरी बहन को कै हो रही है।'

"पेट भी चलता है ?"

"जी !"

डॉक्टर तुरत तैयार होकर चल देता है। पास के ही गाँव में जाना है।···डॉयरिया होगा। लेकिन 'सेलाइन ऐपरेटस' भी ले लेना अच्छा होगा।

"तीस बार पेट चला है ?"

बिछावन पर पड़ी हुई युवती पीली पड़ गई है। उसके हाथ-पाँव अकड़ रहे हैं। पेशाब बन्द है। हैजा ही है। डॉक्टर 'सेलाइन ऐपरेटस' ठीक करता है। स्पिरिट स्टोव जलाता है, नार्मल-सेलाइन की बोतल निकालता है। बूढ़ा बाप हाथ जोड़कर कुछ कहना चाहता है, और आखिर कह ही डालता है, *"डाक्टर साहब, यह जो जकसैन दे रहे हैं इसका फीस कितना* होगा ?"

छोटे जकसैन का फीस तो दो रुपया है। इतने बड़े जकसैन का तो जरूर पचास रुपैया होगा !

"क्यों ? पचास रुपया," डॉक्टर मुस्कराता है।

"तो रहने दीजिए। कोई दवा ही दे दीजिए।"

"दवा से कोई फायदा नहीं हो ।।"

"लेकिन मेरे पास इतने रुपये कहाँ है ?"

"बैल बेच डालो," डॉक्टर पहले की तरह मुस्कराते हुए सेलाइन देने की तैयारी कर रहा है।

"डॉक्टर बाबू, बैल बेच दूँगा तो खेती कैसे करूँगा ? बाल-बच्चे भूखों मर जायँगे।·· लड़की की बीमारी है।"

"क्या मतलब ?"

"हुजूर, लड़की की जात बिना दवा-दारू के ही आराम हो जाती है!"

"लड़की की जाति बिना दवा-दारू के ही आराम हो जाती है! लेकिन बेचारे बूढ़े का इसमें कोई दोष नहीं। सभ्य कहलाने वाले समाज में भी लड़कियाँ बला की पैदाइश समझी जाती हैं। जंगल-झार!

डिग डिग, डिडिग डिडिग!

"कल सुबह को इसपिताल में हैजा की सूई दी जायगी। सभी लोग—बाल-बच्चे, बूढ़े जवान, औरत मर्द—आकर सूई ले लें।"...डिग डिग डिडिग! गाँव का चौकीदार ढोलहा दे रहा है।

हैजा के पहले रोगी को तो बचा लिया गया, लेकिन गाँव को नहीं बचाया जा सका। डॉक्टर ने ढाल दिलवाकर लोगों को सूई लेने की खबर दी, लेकिन कोई नहीं आया। कुओं में दवा डालने के समय लोगों ने दल बाँधकर विरोध किया—"चालाकी रहने दो! डॉक्टर कूपों में दवा डालकर सारे गाँव में हैजा फैलाना चाहता है। खूब समझते हैं!"

डॉक्टर ने बालदेवजी, कालीचरन और चर्खा सेण्टर के लोगों को खबर देकर बुलवाया। सहायता माँगी, "यदि लोगों ने सूई नहीं लगवाई और कुओं में दवा नहीं डालने दी तो एक भी गाँव को बचाना मुश्किल होगा।"

दोपहर को बालदेवजी, कालीचरनजी और चर्खा सेण्टर के मास्टर-मास्टरनीजी डॉक्टर साहब के साथ दल बाँधकर निकले और कुओं में दवा डाल दी गई। सूई देने की समस्या जटिल थी। कालीचरन ने कहा, "एक बात! आज कोठी का हाट है। हाट लगते ही चारों ओर से घेर लिया जाय और सबों को जबर्दस्ती सूई दी जाय। जो लोग बाकी बच रहेंगे, उन्हें घर पर पकड़कर दी जाय।"

डॉक्टर को यह सुझाव अच्छा लगा, लेकिन बालदेवजी ने एतराज किया, "किसी की इच्छा के खिलाफ, जोर जबर्दस्ती करना...।"

"क्या बेमतलब की बात बोलते हैं," चर्खा सेण्टर की मास्टरनी बालदेवजी की बात को काटते हुए बोलीं, "कालीचरनजी ठीक कहते हैं।"

बालदेवजी की कनपट्टी गर्म हो जाती है।···यह औरत बोलने का ढंग भी नहीं जानती ! नारी का सुभाव करकस नहीं होना चाहिए। कोठारिनजी कितनी मीठी बोली बोलती हैं। और यह तो मर्दाना औरत है। चर्खा सेण्टर की मास्टरनी ! हुँ ! बहुत महिला कांग्रेसी को देखा है···मायजी, तारावती देवी, सरस्सत्ती, उखादेवी, सरधादेवी। लेकिन कोई तो इतना करकस नहीं बोलती थी।···हुँ ! कालीचरनजी ठीक कहते हैं ! ···जबर्दस्ती करना हिंसाबाद नहीं तो और क्या है ?

कालीचरन के दल वालों ने हाट को घेर लिया है। डॉक्टर साहब आम के पेड़ के नीचे टेबल पर अपना पूरा सामान रखकर तैयार हैं। कालीचरन एक-एक आदमी का पकड़कर लाता है, मास्टरनीजी स्पिरिट में भिगोई हुई रुई बाँह पर मल देती हैं और डॉक्टर साहब सूई गड़ा देते हैं। तहसीलदार साहब नाम लिखते जाते हैं। हाट में भगदड़ मची हुई है। लेकिन भागकर किधर जाओगे ? चारों ओर सुस्लिंग पार्टी का सिपाही खड़ा है।

"माई गे ! माई गे ! हे बेटा काली !"

"क्यों, रोती क्यों है ?"

"हे बेटा !"

सारे देह में गोदना गोदाने के समय देह में सूई नहीं गड़ी थी। चलो !"

सात सौ पचीस लोगों को सूई दे दी गई है। अब जो लोग घर में रह गए हैं, उन्हें कल सुबह ही, सूरज उगने के पहले ही दे देनी होगी।

डॉक्टर साहब कहते हैं, "बीमारों की सेवा के लिए स्वयंसेवक चाहिए।"

कालीचरन अपने दल के साठ स्वयंसेवकों के साथ रात को अस्पताल में दाखिल हो जायगा।

चर्खा सेण्टर की मास्टरनीजी बड़ी निडर हैं। वह भी सेवा करने के लिए अपना नाम लिखाती हैं।

बावनदास हँसकर कहता है, "मुझे देखकर तो रोगी लोग डर जायेंगे डॉक्टर साहब, मुझे और कोई काम दीजिए।"

बालदेवजी चुप हैं। उनको हैजा का बहुत डर है।

अट्ठाईस

डॉक्टर आदमी नहीं, देवता है देवता!

तन्त्रिमाटोली, पोलियाटोली, कुर्मछत्रीटोली और रैदासटोली में सब मिलाकर सिर्फ पाँच आदमी नुकसान हुए। घर-घर में एक-दो आदमी बीमार थे, लेकिन डॉक्टर देवता है। दिन-रात, कभी एक पल चैन से नहीं बैठा। मास्टरनीजी भा देवी हैं। कालीचरन भी बहादुर है। कै और दस्त से भरे बिछावन पर लेटे हुए रोगी की सेवा करना, कपड़े धोना, दवा डालकर गन्दगी जलाना आदमी का काम नहीं, देवता ही कर सकते हैं। एक पैसा भी फीस नहीं लिया और मुफ्त में रात-रात-भर जगकर लोगों का इलाज करते रहे। रेसमलाल कोयरी के इकलौते बेटे को जम के मुँह से छुड़ा लिया। रेसम ने डॉक्टर को खुशी-खुशी एक गाय बक्सीस दी, लेकिन डॉक्टर साहब ने कहा, "अपने लड़के को इस गाय का दूध पिलाओ। दूध बिक्री मत करो। यही हमारा बक्सीस है।"

बावनदास भी अवतारी आदमी हैं। रात-भर नीम के पेड़ के नीचे बैठकर खंजड़ी बजाकर गाते रहते थे—'मालिक सीताराम सोच मन काहे करो! सेत्ताराम! सेत्ताराम! वन्दे महात्तरम्।···मालिक सीताराम!'

भयावनी रात में, जब कि आदमी अपनी छाया से डरते थे, बावन का गीत डरे हुए लोगों को बल देता था···'मालिक सीताराम सोच मन काहे करो।'···निर्बल के बल राम!

ब्राह्मणटोले में तीन आदमी मरे। और जोलखीजी की स्त्री तो दूसरी बीमारी से मरी। बच्चा अटक गया था।···कायस्तटोली, संथालटोला

और यादवटोली में एक भी आदमी बीमार नहीं हुआ। राजपूतटोली में पांच-सात आदमी को रोग ने पकड़ा, लेकिन डॉक्टर साहब ने सबों को बचा लिया। पन्द्रह दिनों के बाद कमला ने डॉक्टर की सूरत देखी है।

कमला ने मन-ही-मन कितनी बातें गढ़ रखी थी। वह रूठी रहेगी, बोलेगी नहीं।...पन्द्रह दिनों में एक बार भी तो आते! रहने दीजिए, यही होता न कि रोग का छूत मुझे लग जाता। मैं मर जाती। आपका क्या बिगड़ता? चर्खा सेण्टर की मास्टरनीजी जो थीं!...रात-भर खूब चाय बनाकर पिलाती थीं न?

लेकिन डॉक्टर को देखते ही वह सब कुछ भूल गई। डॉक्टर का चेहरा एकदम काला हो गया है। आँखें धँस गई हैं। प्यारू ठीक ही कहता था, 'डॉक्टर साहब दुनिया-भर को आराम कर रहे हैं, लेकिन खुद बीमार होते जा रहे है। खाना-पीना तो एकदम कम हो गया है।'...कमला चाहती है कि माँ थोड़ी देर के लिए डॉक्टर को अकेला छोड़ दे। आज वह डॉक्टर से लिपट जायगी।

"कहिए हैजा डॉक्टर साहब!" कमली हँसते हुए डॉक्टर के पास जाती है। "हैजा डॉक्टर? सुनिए लड़की की बात जरा! मैं पूछती हूँ तुमसे, कि तुम दिन-दिन क्या होती जा रही हो?" माँ डाँटते हुए कहती है।

"वाह रे! रामपूर के बटैयादार लोग उस दिन आकर बाबूजी से पूछ रहे थे कि हैजा डॉक्टर कहाँ रहता है। सुना था नहीं? लोग इन्हें हैजा डॉक्टर ही कहते हैं।" कमला खिलखिलाकर हँसती है।

माँ हंसते हुए चली जाती है। डॉक्टर मुस्कराते हुए कहता है, "लोग हैजा डॉक्टर कहते हैं, लेकिन तुमको तो कहना चाहिए बेहोशी डॉक्टर!"

"अहा-हा! बेहोशी डॉक्टर की सूरत तो आज पन्द्रह दिनों बाद दूज के चाँद की तरह देखने को मिली है और बात बनाते हैं!" कमली मुँह फुलाती है।

"नहीं कमला, इस बीच मुझे बराबर यही डर लगा रहता था कि यदि तुमने कुछ गड़बड़ी पैदा की तो क्या होगा।"

"तो मैं जान-बूझकर बेहोश होती हूँ, क्यों ?"

"हाँ, जान-बूझकर।"

"क्यों ?"

"क्योंकि बेहोश होने से ही बेहोशी डॉक्टर आता है।"

"ऊँह ! डॉक्टर आवे न आवे मेरी बला से !"

"अच्छी बात है, तो मैं चला।"

"ऊँ !"

"डॉक्टर साहब इतने दिनों बाद आये हैं, चाय बना देगी, सो तो नहीं, बैठकर झगड़ा कर रही है," माँ अन्दर से ही कहती है।

कमला दांत से जीभ को दबाते हुए उठ भागती है—माँ सब सुन रही थी शायद !

डॉक्टर ने इस बार आसपास के पन्द्रह गाँवों का परिचय प्राप्त किया है; भयातुर इन्सानों को देखा है; बीमार और निराश लोगों की आँखों की भाषा को समझने की चेष्टा की है। उसे मध्यवित्त किसानों की अन्दर हवेली और बेजमीन मजदूरों की झोंपड़ियों में जाने का सौभाग्य या दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है। रोगियों को देखकर उठते समय, छींके पर टँगी हुई खाली मिट्टी की हाँडियों से उसका सिर टकराया है। सात महीने के बच्चे को बथुआ और पाट के साग पर पलते देखा है। उसने देखा है···गरीबी, गन्दगी और जहालत से भरी हुई दुनिया में भी सुन्दरता जन्म लेती है। किशोर-किशोरियों और युवतियों के चेहरे पर एक विशेषता देखी है उसने। कमला नदी के गड्ढों में खिले हुए कमल के फूलों की तरह जिन्दगी के भोर में वे बड़े लुभावने, बड़े मनोहर और सुन्दर दिखाई पड़ते हैं, किन्तु ज्यों ही सूरज की गर्मी तेज हुई, वे कुम्हला जाते हैं। शाम होने से पहले ही पपड़ियाँ झड़ जाती हैं !···कश्मीर के कमल और पूर्णिया के कमल में शायद यही फ़र्क है।···और कमला तो राजकमल है !

"मैं तुम्हें राजकमल कहूँगा।"

"और मैं तुम्हें प्रशान्त महासागर कहूँगी," कमला ने आज अनजाने

ही 'तुम' कह दिया।

"प्रशान्त महासागर में राजकमल नहीं खिलता; मैं कमला नदी का गड्ढा ही होना पसन्द करूंगा," डाक्टर हँसता है।

कमला की बड़ी-बड़ी आँखों की पलकें एक बार ऊपर उठकर झुक गईं।

"तुमने मुझे आज तक अपना अस्पताल क्यों नहीं दिखलाया? तुम्हारे चूहे, खरगोश, सियार और नेवले···"

"माँ और बाबूजी तुम्हें अस्पताल जाने देंगे?"

"क्यों नहीं?"

"तो आज ही चलो, अभी।"

कमला डॉक्टर के साथ अस्पताल की ओर जा रही है। चैत का सूरज पच्छिम की ओर निष्प्राण-सा, पूर्णिमा के उगते हुए चाँद-सा मालूम हो रहा है। दिन-भर घू-घू कर चलने वाली पछिया हवा गिर गई है।

गाँव के पनघट पर स्त्रियों की भीड़ आँखें फाड़कर इन दोनों को देखती है, झगड़े बन्द हो जाते हैं, पानी भरना रुक जाता है। नजर से ओझल होने के बाद फिर सबों के मुँह से अपनी-अपनी राय निकलती है।···कमली अब आराम हो गई। डाकडर साहब ने इसको बचा लिया। ·· दोनों की जोड़ी कैसी अच्छी है! सतलरैना बैसकोप का एक किताब लाया है, उसमें ऐसी ही एक जोड़ी की छापी है, ठीक ऐसी ही! ·· डॉक्टर भी कायस्त है क्या? कौन जात है? क्या जाने बाबा, इलाज करते-करते कहीं·· ! क्या बकती है—सिर की गर्मी शाम को मैदान की हवा में ठंडी होती है, जानती नहीं? मौसी ने जब जुगल-जोड़ी देखी तो उसके हाथ स्वयं ही आँचल के खूँट पर चले गए। आँचल पसारकर मन-ही-मन वह बोली, "दुहाई कमला मैया!"

गणेश पास ही गुल्ली खेल रहा था। वह जोर-जोर से चिल्लाया···

पूलव छे छाहेब आया
पच्छिम छे मेम

छाहेब बोले गिटिल-पिटिल
खिल-खिल हँछे मेम !

कमला और डॉक्टर ने उलटकर देखा। गणेश ताली बजाकर हँस रहा था, "देखो नानी, छाहेब मेम।"

दोनों ने हँसते हुए मौसी को प्रणाम किया। गणेश भागकर नानी के आँचल में छिप जाता है। कमला चिल्लाकर कहती है, "अच्छा, ठहरिए गोबरगणेश जी। अभी लौटती हूँ तो कान पकड़कर चाँद दिखाऊँगी।"

तहसीलदार साहब रास्ते में ही मिले। हँसते हुए बोले, "आज शायद यही पागलपन सवार हुआ था !···अच्छी बात है, सुबह शाम की हवा में बहुत गुण है।"

सभी एक ही साथ हंस पड़े।

कोठी के बाग में गुलमुहर की बड़ी-बड़ी डालियाँ, लाल-लाल फूलों से जलती हुई, हवा के हल्के झोंकों में हिल-डुल रही थीं। अमलतास के पीले फूल नववधू की पीली ओढ़नी की याद दिला रहे थे। योजन-गंधा शाम की हवा में पागलपन बिखेर रही थी। शिरीश के फूलों की पंखुड़ियाँ मंगल-आशीष की तरह झड़ रही थी। ···मार्टिन ने बड़े जतन से फूल लगाए थे। बाग लगाते समय उसने ऐसी ही शामों की कल्पना की होगी —बाँहों में पड़ी हुई मेरी के लाल होठों की ताजगी को और भी प्राण-मय बनाने के लिए। पानी पटाने वाले मालियों पर वह कड़कते हुए बोला होगा—'डेको। एक भी गाछ सूखने पर पचास बेंट डेगा।'

चैत की गोधूली में अपनी सारी तेजी खोकर सूरज ने श्याम सलोनी संध्या के आँचल में अपना मुँह छिपा लिया था। दूर तक फैली हुई ताड़ों की पंक्तियाँ, कुछ मटमैली, कुछ सिन्दूरी-सी पृष्ठभूमि में गर्दन ऊँची करके सूरज को अतल गहराई में डूबते देख रही थीं। गाय और बैलों के साथ घर लौटते हुए चरवाहे सावित्री-नाच का गीत गा रहे थे···

आहे सखी चलू फुलवारी देखे हे

देखिबो सुन्दर रूप
नाना रतना फूल अनूप, चलू फुलवारी देखे हे !

गुलमुहर के लाल-लाल फूल बुझ गए और अमलतास की पीली ओढ़नी *न जाने कब सरककर गिर पड़ी। किन्तु योजना-गंधा अब भी पागल* बना रही है।" डाक्टर देवता नहीं, आदमी बनना चाहता है।

एक जोड़ी निर्मल आँखों की पलकें जरा ऊपर की ओर उठीं और फिर झुक गईं।

उनतीस

कल 'सिरवा' पर्व है।

कल पड़मान नदी में 'मछमरी' होगी—मछमरी अर्थात् मछली का शिकार। आज चैत्र संक्रान्ति है। कल पहली वैशाख, साल का पहला दिन। कल सभी गाँव के लोग सामूहिक रूप से मछली का शिकार करेंगे। छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सभी टापी और जाल लेकर सुबह ही निकलेंगे। आज दोपहर को सत्तू खाएँगे। सतुआनी पर्व है आज। आज रात की बनी हुई चीजें लोग कल खाएँगे। कल चूल्हा नहीं जलेगा। बारहो मास चूल्हा जलाने के लिए यह आवश्यक है कि वर्ष के प्रथम दिन में भूमिदाह नहीं किया जाय। इस वर्ष की पकी हुई चीज़ उस वर्ष में खाएँगे।

सारे मेरीगंज के मछला मारने वालों का सरदार है कालीचरन। भुरुकवा उगने के समय ही निकलना होगा। बारह कोस जमीन तय करना होगा। इस बार कालीचरन ने ऐलान कर दिया है, जुलूस बनाकर चलना होगा, लाल झंडे के साथ। नारा भी लगाते चलना होगा। जमींदार फैजबख्श अली ने इस बार पड़मान नदी के 'जलकर' को खास में रखा है! उसके अमलों ने कहा है कि मछली नहीं मारने देंगे, मलेटरी मँगाकर तैनात रखेंगे। देखना है मलेटरी को!

नये तहसीलदार बाबू हरगौरीसिंह के यहाँ नया खाता खुलेगा। शाम को सतनारायण की पूजा होगी। डॉक्टर को भी निमंत्रण है।

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद ने तहसीलदारी छोड़ दी है तो क्या नया खाता भी नहीं करेंगे? उनके यहाँ भी सत्यनारायण व्रत की कथा होगी। डॉक्टर साहब को निमंत्रण है।

मौसी ने होली में डॉक्टर को नहीं खिलाया था। इस बार डॉक्टर को वही खिलाएगी।

मठ पर भी नया खाता होता है। इस बार नये महंथ रामदासजी के हाथ से खाता खुलेगा। इसीलिए विशेष आयोजन है। बीजक पाठ, साहेब भजनावली, ध्यान और अन्त में वैष्णव भोजन। बालदेवजी और बावन-दास को विशेष निमंत्रण है। लछमी दासिन ने भंडारी के मार्फत कहला भेजा है, "बालदेवजी जरूर आवें। गाँव में वैष्णव हैं ही और कौन!"

वेतार सुमरितदास अब नये तहसीलदार का कारपरदाज है। वह कहता फिरता है, "हरगौरी बाबू हीरा आदमी है। सारा कागज-पत्तर हमीं पर फेंककर निश्चिन्त! देखिए तो, हम कितना समझाते हैं कि बाबू साहेब! वही बस्ता, सेयाहा और कर्चा किसी दूसरे को छूने नहीं देना चाहिए। लेकिन हरगौरी बाबू हीरा आदमी हैं। विश्नाथपरसाद तो एक नम्मर के मखीचूस और सक्की आदमी हैं। कायस्त और राजपूत का कलेजा बराबर हो भला!···हुँ! कँगरेसी हुए हैं! सुमरितदास से कौन बात छिपी हुई है? अब तो गाँव का चाल-चलन एकदम बिगड़ जायगा। जवान बेटी को एक परदेसी जवान के साथ हँसी-मसखरी करने की, घूमने-फिरने की आजादी दे दी है विश्नाथपरसाद ने। गाँव का चाल-चलन नहीं बिगड़े तो सुमरितदास का नाम बदल देना।"

नये तहसीलदार बाबू हरगौरीसिंह के यहाँ रात में एक भी रैयत नहीं आया। पुण्याह में जो सलामी मिलती है, वह रक़म जमींदार की होती है, लेकिन खाता खुलने के दिन की सलामी तो तहसीलदार की खास आमदनी है। सुमरितदास ने आकर खबर दी—"सभी रैयत विश्नाथपरसाद के यहाँ

गये थे। डेढ़ सौ रुपये सलामी में पड़े थे। मछली मारकर लौटते समय रास्ते में ही रैयतों ने मिटिन किया था कि नये तहसीलदार के यहाँ नहीं जायेंगे। कुकरा का बेटा कलिया लीटरी करता है। बाप काटे घोड़ा का घास और बेटा का नाम दुरगादास! अभी ततमाटोली का बिरंचिया कहता था कि रैयतों का पेट जो भरेग। वही असल जमींदार है। नये तहसीलदार ने कभी एक चुटकी धान भी दिया है?'' शास्तर बचन कभी झूठ नहीं होता'''राड़ एड़ कनमोचड़, जूता मारं पवित्तरम! समझे तहसीलदार साहब, राड़ आर काँटों को काँटीवाले जूते से बस में किया जाता है।"

बालदेवजी का काम छूट गया।

कपड़े, चीनी और किरासन तेल की पुर्जी अब तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद देंगे। बालदेवजी को क्यों छुड़ा दिया?'''सायद उनका बिलेक पकड़ा गया। पाप कितने दिनों तक छिपेगा? खेलावन ने जो परमेसरसिंघ की जमीन मोल ली है, सो किस रुपये से? वह बालदेवजी की ही जमीन है। खेलावन के घर में जाकर देखा, आज भी गाँठ-का-गाँठ कपड़ा पड़ा हुआ है; टीन-का-टीन तेल है। खेलावन के सभी सगे सम्बन्धियों के यहाँ कपड़े गये हैं। यह बात कितने दिनों तक छिपी रहेगी? सुनते हैं कि कंगरेस ने अपना खौफिया बहाल किया है। अंगरेज का खौफिया तो ऊपर से ही किसी बात का पता लगाता था, कंगरेस के खौफिया को हाँडी के चावल का भी पता रहता है।

स्त्री की मृत्यु के बाद से जोतखीजी बहुत गुमसुम रहते हैं।'''डाक्टर को कितना कहा कि कोई दवा देकर रामनारायण की माँ को उबारिए लेकिन कौन सुनता है! बस, एक ही जवाब। बच्चा को पेट काटकर निकालना होगा। शिव हो! शिव हो! पराई स्त्री को बेपर्द करने की बात कैसे उसके मुँह से निकली?'''पारबती की माँ ने बदला ले लिया। पाँच साल पहले पंचायत में जोतखीजी ने कहा था कि पारबती की माँ को मैला घोलकर पिलाया जाय। विश्वनाथप्रसाद ने पारबती की माँ का पक्ष ले लिया था, नहीं तो उसी बार उसका सभी 'गुण मन्तर' शेष हो जाता।'''इस

बार पारवती की माँ ने बदला चुका लिया। ···अच्छा! ब्राह्मण का श्राप निष्फल नहीं होगा। देखना, देखना! इस कलियुग में भी असल ब्राह्मण रहता है, देखना!

अरे! वह जमाना चला गया जब राजपूत और बाभनटोली के लोग बात-बात में लात-जूता चलाते थे। याद नहीं है? एक बार टहलू पासवान का गुरु घोड़ी पर चढ़कर आ रहा था। गाँव के अन्दर यदि आता तो एक बात भी थी। गाँव के बाहर ही सिंघजी ने घोड़ी पर से नीचे गिराकर जूते से मारना शुरू कर दिया था—'साला दुसाध, घोड़ी पर चढ़ेगा!' ···अब वह जमाना नहीं है। गांधीजी का जमाना है। नया तहसीलदार हुआ है तो क्या? हमारा क्या बिगाड़ लेगा? न जगह, न जमीन है; इस गाँव में नहीं उस गाँव में रहें, बराबर है।···धमकी देते हैं कि जूते से रैट करेंगे। अच्छा! अच्छा!

युगों से पीड़ित, दलित और उपेक्षित लोगों को कालीचरन की बातें बड़ी अच्छी लगती हैं। ऐसा लगता है, कोई घाव पर ठंडा लेप लगा रहा हो। लेकिन कालाचरन कहता है—"मैं आप लोगों के दिल में आग लगाना चाहता हूँ। सोये हुए का जगाना चाहता हूँ। सोशलिस्ट पाटी आपकी पाटी है, गरीबों की, मजदूरों की पाटी है। सोशलिस्ट पाटी चाहती है कि आप अपने हकों को पहचानें। आप भी आदमी हैं, आपको आदमी का सभी हक मिलना चाहिए। मैं आप लोगों को मीठी बातों में भुलाना नहीं चाहता। वह कांग्रेस का काम है। मैं आग लगाना चाहता हूँ।"

कालीचरन आग उगलता है, लेकिन सुननेवालों का जलता हुआ कलेजा ठंडा हो जाता है।···जमीन, जोतने वालों की! पूँजीवाद का नाश!

बावनदास ने फिर एक फाहरम लाया है। मंत्रीजी ने भेज दिया है। इस बार पटना का छापा फाहरम है, पुरैनियाँ का नहीं। पटना का फाहरम कच्चा नहीं हो सकता।···इस फाहरम पर अपना नाम, अपने बाप का नाम, जमीन का खाता नम्बर, खेसरा नम्बर लिखकर पुरैनियाँ कचहरी में दे दो 'दफा ४०' के हाकिम को। जमीन नकदी हो जायगी।

सच ?···हाँ, अंगूठे का टीप देना होगा।···और जिन लोगों ने चर्खा सेण्टर में दसखत करना सीख लिया है, उन्हें भी टीप देना होगा ?

बालदेवजी क्या करें ? खेलावन भैया कुछ समझते ही नहीं। रोज कहते हैं, "बालदेव, कमला किनारेवाली जमीन में कलरू पासवान के दादा का नाम कायमी बटैयादार की सूरत से दर्ज है। कलरू से कहकर सपुर्दी दिला दो। ···लेकिन बालदेवजी क्या करें ? चौधरीजी को वह सब दिन से गुरु की तरह मानता आ रहा है। कभी किसी काम में तरोटी नहीं होने दिया। इतना चौअन्नियाँ मेम्बर बनाकर दिया। गाँव में चर्खा सेण्टर खुलवा दिया, लेकिन जिला कमेटी के मेम्बर तहसीलदार साहब हो गए। बालदेव को कोई खबर भी नहीं दी गई। कपड़े की मेम्बरी भी नहीं रही। नीमक कानून के समय से जेल जाने का यही बख्सीस मिला है। कालीचरन की पाटी वाले ठीक कहते हैं, 'कांगरेस अमीरों की पाटी है।'···लेकिन वह कालीचरन की पार्टी में तो नहीं जा सकता। कालीचरन की आँखें उसने ही खोलीं। रात-रात-भर जागकर कालीचरन को जेहल का कितना किस्सा, गांधीजी का किस्सा, जमाहिरलाल का किस्सा सुनाया। कालीचरन उसका चेला है। वह आखिर चेला की पार्टी में जायगा ? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता !···खेलावन भैया कुछ नहीं समझते हैं। पासवानटोली में अब उसकी पैठ नहीं। कलरू उसकी बात नहीं मानेगा। उसका लीडर कालीचरन है।···तहसीलदार साहब को तो लोग डर से लीडर मानते हैं।

नये तहसीलदार साहब भी फेहरिस्त तैयार कर रहे हैं। सुमरितदास सबों का नाम लिखा रहा है—"सबसे पहले लिखिए विरंचिया का नाम। सोनमा दुसाध, किराय कोयरी, ये सब देनदार कलम हैं। अब लिखिए—झोपड़िया कलम। हाँ, जिन लोगों को अपनी झोंपड़ी के सिवा कुछ भी नहीं।···बस, यह फिरिस्त मनेजर साहेब को दे दीजिएगा और कहिएगा कि खेमा लेकर जल्दी इलाके में आवें, नहीं तो सारा सर्किल खराब हो जायगा।"

लछमी दासिन के दिल में बालदेवजी ने घर कर लिया है। खाता-बही के दिन आये थे। एकदम भूल गए हैं बालदेवजी। लछमी कितना समझाती है कि काम-काज छोड़कर कुछ दिन आराम कीजिए, लेकिन कौन सुनता है ? पहले जान तब जहान ! जब शरीर ही नहीं रहेगा तो परमारथ का कारज कैसे होगा ? शरीर ही तीरथ है। कितना कहने पर, सतगुरु साहेब की कसम धराने पर यह मन्जूर किया है कि एक बेला रोज मठ पर आया करेंगे। शाम के सतसंग में बैठेंगे। भण्डारी से कह दिया है, घी और दूध की मलाई रोज कटोरे में चुराकर रख दिया करेगा। रामदास बालदेव का आना पसन्द नहीं करता है।···जैसे भी हो, बालदेवजी के शरीर की सेवा करेगी लछमी। अब बालदेवजी के आने में जरा भी देर होती है तो लछमी का दिल धड़कने लगता है; मन चंचल हो जाता है। सतगुरु साहेब ने कहा है—

ई मन चंचल, ई मन चोर,
ई मन शुध ठगहार
मन मन करत सुर नर मुनि
मन के लक्ष दुआर।

लछमी का मन चंचल है, पर चोर नहीं। बालदेवजी चोरी से उसके मन में नहीं आते हैं। मन के लक्ष दुआर हैं, बालदेवजी एक ही साथ लक्ष दुआर से उसके मन में पैठ जाते हैं।···एक लक्ष बालदेवजी !

तीस

अखिल भारतीय मेडिकल गजट में डॉ० प्रशान्त, मैलेरियोलॉजिस्ट के रिसर्च की छमाही रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। गजट के सम्पादक-मण्डल में भारत के पाँच विख्यात डॉक्टर है। इस रिपोर्ट पर उन लोगों ने अपना-अपना नोट दिया है।···मद्रास के डॉक्टर टी० रामस्वामी एम० एस-सी०,

डी० टी० एम० (कैल०), पी० एच-डी० (एडिन०), एफ० आर० एस० जे० (एडिन०) ने लिखा है : "हमें विश्वास हो गया है कि डॉ० प्रशान्त मैलेरिया और कालाआजार के बारे में ऐसे तथ्यों का उदघाटन करेंगे जिससे हम अब तक अनभिज्ञ थे ।···नई दवा तथा नये उपचार की सम्भावनाओं के लिए सारा मेडिकल- संसार उनकी ओर निगाहें लगाए बैठा है ।"

प्रशान्त की विस्तृत रिपोर्ट में मैलेरिया और कालाआजार से सम्बन्धित मिट्टी, हवा-पानी तथा इसमें पलने वाले प्राणियों पर नई रोशनी डाली गई है । अपनी रिपोर्ट में डॉक्टर ने एक जगह लिखा है :

"यहाँ के लोग सुबह को बासी भात खाकर, पाट धोने के लिए गन्दे गड्ढों में घुसते हैं और करीब सात घण्टे तक पानी में रहते हैं । गन्दे गड्ढों को देखने से ऐसा लगता है कि पानी के आध इंच धरातल की जाँच करने पर एक लाख से ज्यादा मच्छड़ के अण्डे जरूर पाये जायेंगे । किन्तु यहाँ के मच्छड़ गन्दे गड्ढों में बहुत कम अण्डे देते पाये गए हैं । इसका कोई-कोई ग्रुप तो इतना सफाई-पसन्द होता है कि निर्मल और स्वच्छ तालाबों को छोड़कर और कहीं अण्डे देता ही नहीं ।···बेचारे खरगोशों को क्या पता कि उनकी जीभ में जो दाने निकल आते हैं, कानों के अन्दर जो खुजलाहट होती है, कोमल-से-कोमल घास की पत्तियाँ भी खाने में अच्छी नहीं मालूम होती हैं, ये कालाआजार के लक्षण हैं ।"

मनुष्य के शत्रु, कीड़ों-मकोड़ों के बारे में डाक्टर ने लिखा है— "मच्छड़ों को नष्ट करने के उपाय जो हमें बहुत पहले बता दिये गए हैं, हम उन्हीं को आज भी आँख मँदकर दुहरा रहे हैं । जिन कीड़ों को हम नष्ट करना चाहते हैं, उनके बारे में हमारी जानकारी बहुत थोड़ी होती है । हमें उनकी आदत, स्वभाव और व्यवहार के ढंगों के बारे में जानना होगा ।···एनोफिलीज के भी कई ग्रुप हैं, हर ग्रुप के अलग-अलग ढंग हैं । किन्तु, किसी-किसी ग्रुप में भी तरह-तरह के छोटे-छोटे सब-ग्रुप होते हैं जिनकी आदतों और प्रजनन-ऋतु में विभिन्नता पाई गई है ।···उनके

लुकने-छिपने, पसन्दीदगी और नापसन्दीदगी में भी फर्क है।···मैंने एक ही ग्रुप के मच्छड़ों को तीन किस्म से अण्डे छोड़ते पाया है और हर ग्रुप में कुछ दल-विशेष हैं जो हवा में अण्डे छोड़ते हैं।···इनकी चालाकी और बुद्धिमानी का सबसे दिलचस्प उदाहरण यह है कि एक ही मौसम में, एक ही ग्रुप के मच्छड़ हमले के लिए पन्द्रह तरह के तरीके व्यवहार करते हैं। ·· कुछ तो एकदम डाइव फ्लाइंग करके ही हमला करते हैं।"

इसके अलावा डॉक्टर ने मैलेरिया और कालाआज़ार में रक्त-परिवर्तन पर भी कुछ नई बातें कही हैं।

ममता की चिट्ठी आई है···"पटना मेडिकल कॉलेज को इस बात पर गर्व है कि बिहार का एकमात्र मैलेरियोलॉजिस्ट डॉ० प्रशान्त उसी की देन है।" ममता ने और भी बहुत-सी बातें लिखी हैं। बहुत-सी बातें, जिसे प्रशान्त करीब-करीब भूल गया है या भूल जाना चाहता है।···पटना क्लब का नाम पाटलिपुत्र क्लब हो गया है। मिस रेवा सरकार ने बैडमिन्टन में रोमेश पाल को हरा दिया।···इन बातों में प्रशान्त को अब कोई दिलचस्पी नहीं, लेकिन ममता जब पत्र लिखती है तो वह कुछ भी बाद नहीं देती, छोटी-से-छोटी बात का भी जिक्र करती है।···"पटना मार्केट के सामने जो चाय की दूकान थी, उसका बूढ़ा मालिक मर गया। तुम्हें याद है? वही जो तुमको रोज सलाम करके चाय के लिए निमन्त्रित करता था···कश्मीरी चाय!"···प्रशान्त को हँसी आती है। बेचारी ममता! उसे क्या मालूम कि मछली को लेकर पालतू नेवले से झगड़ा करने में जो आनन्द आता है, वह किसी खेल में नहीं। प्रशान्त कभी स्पोर्ट्समैन नहीं रहा। वह किसी भी खेल का खिलाड़ा नहीं रहा। फिर भी उसे खेलों से बड़ी दिलचस्पी रहती थी। उसने ताश के पत्तों को कभी हाथ से स्पर्श नहीं किया, लेकिन साप्ताहिक ब्रिज नोट्स को वह गम्भीरता से पढ़ जाता था। चर्चिल का भाषण पढ़ना भले ही भूल जाय, कलकत्ता के आइ० एफ० ए० के मैचों की रिपोर्ट वह सबसे पहले पढ़ लेता था।··· लेकिन अब तो वह खुद खिलाड़ी है। नेवले का गुर्राना, चिल्लाना, पूँछ के

रोग्रों को खड़ा कर हमला करना और हमला करते हुए इसका ख्याल रखना कि चोट नहीं लग जाय, नाखून नहीं गड़ जाय। स्पोर्ट्समेन्स-स्पिरिट और किसको कहते हैं ?

डॉक्टर ममता श्रीवास्तव ! दरभंगा के प्रसिद्ध डॉक्टर कालीप्रसाद श्रीवास्तव की सुपुत्री ममता ने डॉक्टरी पास करने के बाद एक हेल्थ-यूनिट की स्थापना की है। शहर के गरीब मुहल्लों में यूनिट ने अपने सेवा-कार्य का जो परिचय दिया है, वह प्रशंसनीय है। पटना की महिला-समाज-सेविकाओं में ममता का नाम सबसे पहल लिया जाता है। गरीब की झोंपड़ी से लेकर गवर्नमेण्ट हाउस तक उसकी पहुँच है। जो उसके निकट सम्पर्क में रह चुके हैं, उनका कहना है कि ममता दीदी दिन-रात मिलाकर सिर्फ चार घण्टे ही आराम करती हैं। दूर से देखने वाले उसके चरित्र पर भी सन्देह करते हैं। उसकी सार्वजनीन मुस्कराहट लोगों को कभी-कभी भ्रम में डाल देती है। और जिन लोगों का काम सिर्फ बैठकर आलोचना करना है, वे कहते हैं कि तरह-तरह के जाल फैलाकर सरकार से रुपया वसूलना और उड़ाना ही ममतादेवी का काम है।··· विकारपूर्ण मस्तिष्क वाले किसी मिनिस्टर का नाम लेकर मुस्करा देते हैं —मिस ममता श्रीवास्तव नहीं मिसेज···कहो !

डॉक्टर प्रशान्त ममता का ऋणी है। ममता से उसे प्रेरणा मिली है।

···"डॉक्टर ! रोज डिस्पेन्सरी खोलकर शिवजी की मूर्ति पर बेल-पत्र चढ़ाने के बाद, संक्रामक और भयानक रोगों के फैलने की आशा में कुर्सी पर बैठे रहना, अथवा अपने बंगले पर सैकड़ों रोगियों की भीड़ जमा करके रोग की परीक्षा करने के पहले नोटों और रुपयों की परीक्षा करना, मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थियों पर पाण्डित्य की वर्षा करके अपने कर्तव्य की इतिश्री समझना और अस्पताल में कराहते हुए गरीब रोगियों के रुदन को जिन्दगी का एक संगीत समझकर उपभोग करना ही डॉक्टर का कर्तव्य नहीं !"

···ममता को प्रशान्त पर संदेह है। वह समझती है कि घोर देहात

में प्रशान्त छटपटा रहा है; अपनी गलती पर पछता रहा है! इसलिए वह हर पत्र में, शहर की सामाजिक जिन्दगी पर कुछ लिख डालती है। एक पत्र में उसने लिखा है, "बुश-शर्ट का युग है। पाँच साल पहले बाँकीपुर की सड़कों पर, पार्कों और मैदानों में दानापुर कैण्ट के गोरे फौजियों ने जिन्दगी के जिन कुत्सित और बीभत्स पहलुओं का प्रदर्शन किया, हमारे समाज के अचेतन मन पर उसकी ऐसी गहरी छाप पड़ी कि आज हर आदमी के अन्दर का भूखा टामी अधीर हो उठा है। युद्ध के विषैले गैसों ने सारे समाज के मानस को विकृत कर दिया है। काले बाजार के अँधेरे में एक नई दुनिया की सृष्टि हो गई है, जहाँ सूरज नहीं उगता, चाँद नहीं चमकता और न सितारे ही जगमगाते हैं।···इस दुनिया में माँ-बेटा, पिता-पुत्र, भाई-बहन और स्वामी-स्त्री जैसा कोई सम्बन्ध नहीं।···कल एक गरीब ने विटामिन 'सी' की सूई आठ रुपये में खरीदी है। पाँच आने का छोटा सा ऐम्प्यूल!···मेरे मुहल्ले के महाराज महतो को तुम जरूर जानते होगे, उसकी छोटी बेटी फुलमतिया, जो मिल्क सेण्टर में पिछले साल तक दूध पीने आती थी और ताली बजा-बजाकर नाचती थी, उसे तुम भूले नहीं होगे, शायद। परसों से अस्पताल में पड़ी हुई है। रामनवमी की शाम को नई रंगीन साड़ी पहनकर फुदकती हुई राममन्दिर गई थी और रात को दो बजे पुलिस ने 'सिटी' के एक पार्क में उसे कराहते हुए पाया। फुलमतिया का बयान है—टेढ़ीनीम गली के पास एक मोटरगाड़ी रुक गई और दो आदमियों ने पकड़कर उसे मोटर में बिठा दिया।···बड़े-बड़े बाबू लोग थे!···

"मंजरअली रोड से लेकर अशोकपथ तक विदेशी शराब की दस दुकानें खुल गई हैं।

"···कल विलिंगडन हॉल में टी० बी० सेनेटोरियम के लिए स्थानीय महिला कॉलेज की लड़कियों ने एक 'चैरिटी शो' का आयोजन किया था। ज्योंही वाणी (बैरिस्टर प्राणमोहन सिन्हा की पुत्री) स्टेज पर उतरी कि ऊपर की गैलरी से दुअन्नी-इकन्नी फेंकी जाने लगी और तरह-तरह की

भद्दी आवाज़ें कसी जाने लगीं। पुलिस ने शान्ति कायम करने की चेष्टा की, किन्तु उन पर ईंट-पत्थरों की ऐसी वर्षा की गई कि हॉल के सभी दरवाज़ों और खिड़कियों के काँच टूट गए। बहुत लोग घायल हुए। घायलों में महिलाओं और बच्चों की संख्या ही ज्यादा थी। ···और सबसे आश्चर्य की बात सुनोगे? कहा जाता है कि खुराफ़ातियों का लीडर था अमलेश सिन्हा, वीणा का चचेरा भाई। प्राणमोहन बाबू ने, कुछ दिन हुए, अपने घर में अमलेश का आना-जाना बन्द कर दिया था। शराब के नशे में अमलेश ने कई बार घर की नौकरानियों के साथ अशोभनीय व्यवहार किया था। इसलिए (उनकी पुत्री और अपनी चचेरी बहन) वीणा के पीछे हाथ धोकर पड़ गया है।"

···कोठी के जंगल में संथालिनें लकड़ी काट रही हैं और गा रही हैं। कुछ दिन पहले इसी जंगल में संथालिनों ने एक चीते को कुल्हाड़ी और दाव से मार दिया था। शोरगुल सुनकर गांव के लोग जमा हो गए थे। मरे हुए बाघ को देखकर भी लोगों के रोंगटे खड़े हो गए थे और बहुत तो भाग खड़े हुए थे, किन्तु संथालिनें हमेशा की तरह मुस्करा रही थीं। मकई के दानों की तरह सफ़ेद दन्त-पंक्तियाँ···और वही सरल मुस्कराहट! चीते के अचानक हमले से दो-तीन युवतियाँ सामान्य घायल हो गई थीं। उनके होठों पर भी वैसी ही मुस्कराहट खेल रही थी। उनके जख्मों को धोकर मरहम-पट्टी करते समय डॉक्टर के शरीर में एक बार सिहरन की हल्की लहरें दौड़ गई थीं और संथालिनें खिलखिलाकर हँस पड़ी थीं···हुँ···!···हुँ···हुँ! जख्म पर तेज़ दवा लगने पर इस तरह हँसना डॉक्टर ने पहली बार देखा, सुना।

आबनूस की मूर्तियाँ, जूड़े में गुंथे हुए शिरीश और गुलमुहर के फूल! संथालिनें गाती हैं :

छोटी-मोटो पुखरी, चरकुलिया पिंड रे
पोरोइनी फूटे लाले-लाल
पासचे तेरी फूल देखी फूलय लावेलब

पासचे तेरी आधा दिन लगित् !

चारों ओर से बँधाए हुए एक छोटे-से पोखरे में पुरइन (कमल) के लाल-लाल फूल खिले हैं। उस फूल पर तुम मुग्ध हुए हो। मुझे भी देखकर तुम मोहित होते हो। किन्तु वह मोह आधे दिन का ही तो नहीं ?···

नहीं, नहीं ! आधे दिन के लिए नहीं। प्राणों में घुले हुए रंगों का मोह आधे दिन में ही नहीं टूट सकता।

इकतीस

मंगलादेवी, चर्खा सेण्टर की मास्टरनीजी बीमार हैं।

डॉक्टर ने खून जाँचकर देखा, कालाआजार नहीं, टाइफायड है। चर्खा सेण्टर के दोनों मास्टर तहसीलदार साहब के गुहाल में रहते हैं और मास्टरनीजी भगमान भगत की एक झोंपड़ी में। भगमान भगत ने गाड़ी-बैल रखने के लिए एक झोंपड़ी बनाई थी, लेकिन अब अगले साल टीन का मकान देने का इरादा है, इसलिए इस बार गाड़ी-बैल नहीं खरीद सका। चर्खा सेण्टर खुलने पर गाँव के लोगों ने भगमान भगत से कहा—'घर तो खाली ही है। मास्टरनीजी के रहने के लिए घर नहीं है ! चर्खा सेण्टर का घर बनेगा तो आपका घर खाली कर दिया जायगा।'···कोटा-परमिट के जमाने में कंगरेसी लोगों की बात काटना ठीक नहीं। नहीं तो कटिहार में इतनी बड़ी झोंपड़ी का ही किराया पन्द्रह रुपया मिलता !

मंगलादेवी ने हैजा के समय रात-रात-भर जागकर रोगियों की सेवा की और जब वह खुद बीमार पड़ी तो उसके पास बैठने वाला भी कोई नहीं। चर्खा सेण्टर के दोनों मास्टर साहब बारी-बारी से एक घंटा ड्यूटी दे जाते हैं। रात में चिचाये की माँ आकर सोती है। लेकिन, बूढ़ी इतना हुक्का पीती और खाँसती है कि मंगलादेवी के ज्वर की ज्वाला और भी तीव्र हो जाती है। बुढ़िया जब सोती है तो इतने जोरों से खर्राटे लेती है

कि पास-पड़ोस की नींद खुल जाय। डॉक्टर कहता है—यदि यही हालत रही तो सँभालना मुश्किल होगा। घर खत लिखकर किसी को बुला लेना ठीक होगा।

घर ? यदि घर से कोई आने वाला होता अथवा खबर लेने वाला होता तो मंगलादेवी चर्खा सेण्टर में क्यों भर्ती होती ? उसे घर छोड़े हुए पाँच साल हो रहे हैं। मंगलादेवी ने दुनिया को अच्छी तरह पहचाना है। आदमी के अन्दर के पशु को उसने बहुत बार करीब से देखा है। विधवा-आश्रम, अबला-आश्रम और बड़े बाबुओं के घर आया की जिन्दगी उसने बिताई है। अबला नारी हर जगह अबला ही है। रूप और जवानी ?···नहीं, यह भी गलत। औरत होना चाहिए, रूप और उम्र की कोई कैद नहीं। एक असहाय औरत देवता के संरक्षण में भी सुख-चैन से नहीं सो सकती। मंगलादेवी के लिए जैसा घर वैसा बाहर। उसका कौन है अपना ? कोई नहीं !

"कौन··· ?···कालीचरन बाबू !"

"डॉक्टर साहब ने कहा है कि इस झोंपड़ी में आपकी बीमारी अच्छी नहीं होगी। हम लोगों का कीर्तन वाला घर साफ-सुथरा है, हवादार है।"

मंगलादेवी यादवटोली के कीर्तन-घर में लाई गई है। कीर्तन-घर में ही सोशलिस्ट पार्टी का ऑफिस है। कालीचरन इसे ऑफिस ही कहता है।···लेकिन सोशलिस्ट ऑफिस का नाम सुनकर मंगलादेवी शायद नहीं आती।

"दवा पी लीजिए।"

"नहीं पिऊँगी।"

"पी लीजिए मास्टरनीजी ! दवा ···"

"काली बाबू, एक बात कहूँ ?"

"कहिये !"

"आप मुझे मास्टरनीजी मत कहिए।"

"तब क्या कहूँ ?"

"क्यों ? मेरा नाम नहीं है ?"

"मंगलादेवी ?"

"नहीं।"

"तो ?"

"सिर्फ···मँगला।"

"दवा पी लीजिए।"

"मँगला कहिए।"

"मँगला !"

पन्द्रह दिनो से कालीचरन मंगलादेवी की सेवा कर रहा है। दिन में तो और लोग भी रहते हैं, लेकिन रात में कालीचरन की ड्यूटी रहती है। डॉक्टर कहते हैं, अब कोई खतरा नहीं। कमजोरी है, कुछ दिनों में ठीक हो जायगी।

मंगलादेवी के शरीर में सिर्फ हड्डियाँ बच रही हैं। बाल झड़ रहे हैं। वह खाने के लिए बच्चों की तरह रूठती है, रोती है और बर्तन फेंकती है।···बार्ली नहीं पिऊँगी। छेना का पानी भी कोई भला आदमी पीता है ! कालीचरन हाथ में पथ्य का कटोरा लेकर घण्टों खुशामदें करता—लीजिए इसमें नीबू डाल दिया है। अब खा लीजिए। कल नहीं, परसों भात मिलेगा।

कालीचरन का व्रत टूट गया है। उसके पहलवान गुरू ने कहा था—'पट्ठे ! जब तक अखाड़े की मिट्टी देह में पूरी तरह रचे नहीं, औरतों से पाँच हाथ दूर रहना।' कालीचरन का व्रत टूट गया। पाँच हाथ दूर रहने से मंगलादेवी की सेवा नहीं की जा सकती थी। बिछावन और कपड़े बदलते समय, देह पोंछ देने के समय कालीचरन को गुरूजी की बात याद आती थी, लेकिन क्या किया जाय !

"काली कहाँ गया ? काली !"

"क्या है ?"

"कहाँ की चिट्ठी है ?"

"सिक्रेटरी साहेब ने लिखा है, सोमवार को जिला पार्टी की रैली है। लेकिन···मैं कैसे जाऊँगा ?"

"क्यों ?···तुम जाओ। मैं तो अब अच्छी हो गई।"

रैली के बाद सेक्रेटरी साहब ने कालीचरन को रोक लिया है—"कॉमरेड ! आप दो दिन और रह जाइए। सैनिकजी की स्त्री अस्पताल में भर्ती हैं। सैनिकजी पटना गये हैं। परसों आ जायेंगे। अस्पताल में दोनों वेला खाना पहुँचाना है···कोई है नहीं।"

सेक्रेटरी साहब की बात को टालना बड़ा कठिन है। कॉमरेड की स्त्री ! ···कालीचरन को रह-रहकर मंगला की याद आती है। वह रात देख रही होगी। वासुदेव जाकर कहेगा कि दो दिन के बाद आवेंगे। सुनते ही उसका मुँह सूख जायगा, चेहरा फक् हो जायगा। एकदम बच्ची की तरह है मँगला का मुँह !···कालीचरन ने बिहदाना और संतोला भेज दिया है। वह छुएगी भी नहीं। वासुदेव क्या समझाएगा ?···हत्तेरे की ! ये शहर के लौण्डे बड़े बदमाश होते हैं। ठीक पीठ के पास जाकर सैकिल की घण्टी बजावेगा। अ···अभी तो सब खाना गिर जाता।

"उल्लू कहीं का ! गिलास ऐसे हो धोना है ?"···उल्लू ! कालीचरन के गाल पर मानो किसी ने जोर से एक तमाचा जड़ दिया। उल्लू ! उसका सारा शरीर झिनझिन कर रहा है। सैनिकजी की स्त्री ने उसे क्या समझा है ?···नौकर ?

"बहनजी गिलास···"

"खबरदार ! बहिनजी मत बोल !"

बगल की खाट पर जो चमगादड़ जैसी औरत लेटी हुई थी, बोली, "कौन देस का आदमी है ! आदमी है या भूत ? बात भी नहीं करना जानता है !"

"अरे जानती नहीं हैं, ग्वाला साठ बरस तक···।" सैनिकजी की स्त्री बोलीं।

कालीचरन पूरा नहीं सुन सका। उसका सिर चकराने लगा। सैनिकजी भी तो ग्वाला ही हैं ! कालीचरन की आँखों के आगे सरसों के

फूल जैसी चीजें उड़ने लगीं। यदि किसी मर्द ने ये बातें कही होतीं तो आज खून हो जाता खून। कालीचरन की कनपट्टी गर्म हो गई है।···मंगलादेवी भी तो औरत ही है। हुँ! कहाँ मँगला और कहाँ यह भूतनी!···गले की आवाज एकदम सिखिर[1] की तरह है। सेंक, सेंक! बातें करती है तो लगता है मानो दाँत काटने के लिए दौड़ रही है। शायद यह भी कोई रोग ही है!

रौतहट स्टेशन पर गाड़ा से उतरकर कालीचरन जल्दी-जल्दी घर लौट रहा है।···उसे देखते ही मँगला खुशी से खिल जायगी। संतोला सूख गया होगा, बिहदाना मड़ा होगा। दोनों ओर का रेल-भाड़ा बचाकर कालीचरन ने एक पैकिट बिस्कुट खरीद लिया है। डॉक्टर साहब ने मँगला को बिस्कुट खाने के लिए कहा है। कालीचरन ने कभी बिस्कुट नहीं खाया है। शायद इसमें मुर्गी का अण्डा रहता है। वह रह-रहकर बिस्कुट के डब्बे को छूकर देखता है! इसके अन्दर 'फुड़कुड़' क्या बोलता है! कहीं अण्डा फूटकर···!

"सेत्ताराम! सेत्ताराम! जै हिन्द कालीजी!"

"ऐं?···ओ बावनदासजी, हम तो चमक गए। यहाँ क्यों पड़े हैं?"

"आप तो इस तरह आँख मूँदकर सरेसा[2] घोड़े की तरह चल रहे हैं कि···!"

जंगली जामुन के पेड़ की छाया में बावनदास लेटा हुआ था। छाया में जाने पर कालीचरन को मालूम हुआ कि धूप कितनी तेज है।

"हम तो रात की गाड़ी से ही उतरे। कल दफा ४० का फैसला हो गया।"

"हो गया?···क्या हुआ?"

"अरे होगा क्या? सबों की दरखास खारिज हो गई।···हम पहले ही जानते थे। कल गाँव के सभी रैयत आये थे। फैसला सुनकर सभी रोने

१. लोमड़ी।

२. तेज दौड़नेवाले घोड़े की एक जाति।

लगे। अब जमींदार जमीन भी छुड़ा लेगा।"

"जमीन छुड़ा लेगा ?···नहीं, उस दिन हम लोगों की रैली में परसताव पास हो गया। जमींदार लोग रैयतों को जमीन से बेदखल नहीं कर सकते। इसके लिए पाटी संघर्ष करेगी।"

"कालीबाबू ! परसताव-उरसताव से कुछ नहीं होता है।" बावनदास के होठों पर भेद-भरी मुस्कान दौड़ जाती है।

"आप बैठिए दासजी, हमको जरा जल्दी है।"

"हाँ आप जाइए।···हम आपके डेग पर जा भी नहीं सकेंगे।"

कालीचरन चलते-चलते सोच रहा है, अब ठीक हुआ है। यदि रैयत की दरखास मंजूर हो जाती तो सभी लोग कांगरेस में चले जाते। अब संघर्ष में सभी सोशलिस्ट पाटी में ही रहेंगे।

"क्या है ? बिस्कुट !" मंगलादेवी प्यार-भरी झिड़की देती है। "किसने कहा फिजूल पैसा खर्च करने को ? वह देखो तुम्हारा सन्तरा और बेदाना पड़ा हुआ है। मैं नहीं खाती।"

"डॉक्टर साहेब ने कहा था···"

"डॉक्टर साहब ने कहा था !" मँगला बनावटी गुस्सा दिखाते हुए कहती है, "डॉक्टर साहब ने कहा था कि खुद भूखे रहकर सन्तरा, बेदाना और बिस्कुट खरीदकर लाना ?"

कालीचरन को सैनिकजी की स्त्री की याद आती है। उल्लू !···साठ साल तक नाबालिग !···

"खा लो मंगला !"

"पहले तुम एक बिस्कुट खाओ।"

बिस्कुट मीठा, कुरकुरा और इतना सुआद वाला होता है ? इसमें दूध चीनी और माखन रहता है, अण्डा नहीं ?

बत्तीस

बैशाख और जेठ महीने में शाम को 'तड़वन्ना' में जिन्दगी का आनन्द सिर्फ तीन आने लबनी बिकता है।

चने की घुघनी, मूढ़ी और प्याज; और सुफेद झाग से भरी हुई लबनी! ···खट-मिट्ठी, शकर-चिनियाँ और बैरचिनियाँ ताड़ी के स्वाद अलग-अलग होते हैं। बसन्ती पीकर बिरले पियक्कड़ ही होश दुरुस्त रख सकते हैं। जिसको गर्मी की शिकायत है, वह पहर-रतिया पीकर देखे। कलेजा ठण्डा हो जायगा, पेशाब में जरा भी जलन नहीं रहेगी। कफ प्रकृति वालों को संझा पीनी चाहिए; रात-भर देह गर्म रहता है।

साल-भर के झगड़ों के फैसले तड़वन्ना की बैठक में ही होते हैं और मिट्टी के चुक्कड़ों की तहर दिल भी यहीं टूटते हैं। शादी-ब्याह के लिए दूल्हे-दुलहिन की जोड़ियाँ भी यहीं बैठकर मिलाई जाती हैं और किसी की बीवी को भगा ले जाने का प्रोग्राम भी यहीं बनता है।

जगदेवा पासमान, दुलारे, सनिच्चर और सुनरा ताड़ी पी रहे हैं। सोमा जट आज आने वाला है। रौतहट के हाट में उसने कहा था, एतवार को तड़वन्ना में आएँगे। सोमा जट हाल ही में जेल से रिहा हुआ है। नामी डकैत है, लेकिन अब सोशलिस्ट पार्टी का मेम्बर बनना चाहता है। सुनरा ने कालीचरन से पूछा और कालीचरन ने जिला सिक्रेटरी साहब से पूछा। सिक्रेटरी साहब ने कहा, साल-भर तक उसके चालचलन को देखकर तब पार्टी का मेम्बर बनाया जायगा। उस पर नजर रखना होगा।

नजर क्या रखना होगा, बीच-बीच में सिकरेटरी साहब को जाकर कहना होगा—सोमा का चाल-चलन एक दम सुधर गया है। कालीचरन को वासुदेव समझा देगा।···सोमा यदि पाटी में आ जाय तो सारे इलाके के बड़े लोग ठीक हो जायँ। पाटी में आ जाने से थाना-पुलिस क्या करेगा? सिकरेटरी साहब क्या दारोगा साहब से कम है? देखते हो नहीं, जब भाखन देने लगते हैं तो जमाहिरलाल को भी पानी-पानी कर देते हैं। मजाल है

दारोगा निसपिट्टर की कि पाटी के खिलाफ मुंह खोले ! खेल है ? 'लाल पताका' अखबार में तुरत 'गजट छापी' हो जायगा···'दारोगा का जुलुम !'

···चलित्तर करमकार को तो पाटी से निकाल दिया है। मोमेन्ट में बहुत पैसा गोलमाल कर दिया। हिसाब-पत्तर कुछ भी नहीं दिया तो उसको निकालेगा नहीं ? पाटी का बन्दूक-पेस्तौल भी नहीं दिया।···लेकिन सिकरेटरी साहब कालीचरनजी से प्रायविट में बोले हैं, किसी तरह उससे बन्दूक-पेस्तौल ऊपर करो। सरकार को जमा देना है। इसीलिए कालीचरनजी उससे हेल-मेल कर रहे हैं।···यह बात एकदम गुपुत है। खबरदार, कहीं बोलना नहीं सनिचरा ! हाँ, नहीं तो जानते हो ? किरान्ती पाटी की बात खोलने की क्या सजा मिलती है ?···ठायँ ! लोग पूछें तो कहना चाहिए कि···

"क्या पाटी को अब बन्दूक-पेस्तौल का काम नहीं है ?"

"नहीं।" सुन्दर मुस्कराता है। अर्थात् इतनी जल्दी तुम लोग सभी बातों को जान लेना चाहते हो ? अभी कुछ दिन और मेम्बरी करो। जब तुम्हारा कानफारम[1] हो जायगा तब सारी बातें जानोगे। नये मेम्बरों का कान कच्चा होता है। यहाँ सुना और वहाँ उगल दिया। कानफारम होने दो ··।

"कामरेड सोमा ? आओ ! तुम्हारी ही बात हो रही थी। आसरा में बैठे-बैठे दो लवनी ताड़ी खतम हो गई।" सुन्दर हँसता है।

सुन्दर आजकल हमेशा खद्दर का पंजाबी कुर्ता पहने रहता है। पंजाबी के गले में दो इंच की ऊँची पट्टी लगी हुई है। इसको 'सोशलिट-काट' कुर्ता कहते हैं; सोशलिट को छोड़कर और कोई नहीं पहन सकता। गाँव के मेम्बरों में सिर्फ तीन मेम्बर ही ऐसा कुर्ता पहनते हैं—काली, वासुदेव और सुन्दर। बाकी मेम्बरों ने जीवन में कभी गंजी भी नहीं पहनी है। लेकिन बिना सोशलिट-काट कुर्ता पहने कोई कैसे जानेगा कि सोश-

१. कन्फर्म।

लिट है, किरान्ती है ! एक कुर्ते में सात रुपए खर्च होते हैं।···वासुदेव आजकल बीड़ी नहीं पीता, मोटरमार-सिकरेट पीता है। सिक्रेटरी साहब, सैनिकजी, चिनगारीजी, मास्टर साहब, सभी बड़े-बड़े लीडर सिकरेट पीते हैं। सोशलिट पाटी के मेम्बर को बीड़ी नहीं, सिकरेट पीना चाहिए।

आज की बैठकी का पूरा खर्चा सोमा ही देगा। इसलिए हाथ खींच-कर चुक्कड़ भरने की जरूरत नहीं। ढाले चलो। एक लवनी, दो लवनी, तीन लवनी !···चर्खा सेण्टर वाले कह रहे हैं, अगले साल से ताड़ी का गुड़ बनेगा। कोई ताड़ी नहीं पी सकेगा। इस साल पी लो, जितना जी चाहे।

सोमा का शरीर कालीचरन से भी ज्यादा बुलन्द है। पुलिस-दारोगा की मार से हड्डियाँ टूटकर गिरहा[1] गई हैं। गिरहवाली हड्डी बड़ी मजबूत होती है। कालीचरन के देह में हाथी-दाँत का कड़ापन है और सोमा के चेहरे पर लोहे की कठोरता। कालीचरन की आँखों में पानी है और सोमा की आँखें बिल्ली की तरह चमकती हैं।

"कौन हरगौरी ? शिवशङ्करसिंह का बेटा ?···तहसीलदार हुआ है ? कालीचरनजी हुकुम दें तो एक ही रात में उसकी हड्डी-पसली एक कर दें।" सोमा मूँछ में लगी हुई ताड़ी की झाग को पोंछते हुए कहता है।

"कामरेड ! अब मूँछ कटाना होगा। पाटी का मेम्बर होने से मूँछ नहीं रखना होगा," सुन्दर कहता है।

"कटा लेंगे, लेकिन कालीचरनजी हुकुम दें तो···!"

"अच्छा, अच्छा, कामरेड अभी ठहरो। संघर्ष होने वाला है। परस-ताव पास हो गया है। तब देखेंगे तुम्हारी बहादुरी !"

"बलदेवा को गाँव से भगा नहीं सकते हो तुम लोग ? सुनते हैं कि मठ की कोठारिन से खूब हेल-मेल हो गया है। कालीचरनजी हुकुम दें तो एक ही दिन में उसको चन्ननपट्टी का रास्ता दिखला दें।"

"अरे, बालदेवजी तो मुर्दा हो गए मुर्दा ! अब उनको कौन पूछता है ! उनको एक बच्चा भी अब कुछ नहीं लगाता है। कांगरेस में भी उनकी

१. गाँठदार हो जाना।

बदनामी हो गई है। वह तो हम लोगों के बल पर ही कूदते थे।···कोठारिन तो सत्तर चूहा खाई हुई है। बालदेवजी को उसके फेर में पड़ने तो दो। हम लोग यही चाहते हैं। हाँ···समझे ?···चर्खा सण्टर पर भी अब अपना ही कब्जा समझो। मास्टरनीजी बिना कालीचरन से पूछे पानी भी नहीं पीती हैं। कुछ दिन में वह भी कामरेड हो जायंगी।···एक बौनदास है, सो डेढ़ वित्ते का आदमी कर ही क्या सकता है ?"

चार लबनी संझा ताड़ी खत्म हो रही है। सूरज डूबने के समय जो लबनी पेड़ से उतारी जाती है, उसकी लाली तुरत ही आँख में उतर आती है। नशा के माने हैं और भी थोड़ा पीने की ख्वाहिश !···और एक लबनी !

"अरे बेचारे डॉक्टर के पास पैसा कहाँ ? मुफ्त में तो इलाज करता है। एक पैसा भी तो नहीं छूता है।"

"डॉक्टर के पास पैसा नहीं ? क्या कहते हो ?···लोचनपुर के डॉक्टर ने पोख्ता मकान बना लिया है। जीवछगंज के डॉक्टर ने तीन सौ बीघे की पतनी खरीदी है। सिरुवा गरैया का डॉक्टर डकैती करता है, सरदार है डकैतों का। कैसा डॉक्टर है तुम्हारे गाँव का ?"

"हसलगाँव के हरखू तेली ने अलबत्त पैसा जमाया है। पैसा महकता है।"

"महमदिया के तालुकचन्द को बन्दूक का लैसन मिल गया है और लोहा का बक्सा कलकत्ते से ले आया है।"

"अरे, कितने बंदूक और तिजोरी वालों को देखा है !···बल्लम बर्छा से ही तो सारे इलाके को हम मछली की तरह भूनकर खाते रहे हैं। यदि एक नाल भी बन्दूक हाथ लग जाय तो साले भूपतसिंह की कचहरी के नेपाली पहरेदारों को भी देख लें।"

जो कभी नहीं गाता है, वह भी नशा होने पर गाने लगता है और सुन्दर तो कीर्तनियाँ है, सुराजी कीर्तन भी गाता है और किरांती-गीत भी। नशा होने पर किरांती-गीत खूब जमता है !

अरे जिन्दगी है किरान्ती से किरान्ती में बिताये जा

दुनियाँ के पूँजीवाद को दुनियाँ से मिटाये जा !

सनिचरा लबनी को औंधा कर तबला बजाता है, और मुँह से बोल बोलता है।

चके के चकधुम मकै के लावा···

दुनियाँ के गरीबों का पैसा जिसने चूस लिया,
अरे हाँ, पैसा जिसने चूस लिया
हाँ जी, पैसा जिसने चूस लिया,
उसकी हड्डी हड्डी से पैसा फिर चुकाये जा !
हँस के गोली दागे जा !
हँस के गोली खायें जा !

"वाह वाह ! क्या बात है ! इन्किलाब है, जिन्दाबात है। जरा खड़ा होकर बतौना बता के[1], कमर लचका के सुन्दर भाई !"

सुन्दर खड़ा होकर नाचने लगता है,—'जिन्दगी है किरांती से, किरांती में···।'

चके के चकधुम मकै के लावा···

कालीचरन ने आज शाम को बैठक बुलाई थी। ऊपर से सबसे बड़े लीडर आ रहे हैं पुरैनियाँ। थैली के लिए चन्दा वसूलना है। सिकरेटरी साहेब कह रहे थे···सबसे बड़े लीडरजी पुरैनियाँ आने के लिए एकदम तैयार नहीं हो रहे थे। बहुत कहने-सुनने पर, सारे जिले से दस हजार रुपये की थैली पर राजी हुए हैं। कालीचरन को तीन सौ रुपये वसूल कर देना है।···इस बार की रसीद-बही पर सबसे बड़े लीडर की छापी है।

"लेकिन तुम लोग गये थे कहाँ ?···ओ ! आसमान बाग ! बड़ी देर हो गई। ऐसा करने से पाटी का काम कैसे चलेगा ? बोलो कौन कितना रुपैया वसूल करेगा। तीन सौ रुपैया दस दिन में ही वसूल कर देना है।"

"बस तीन सौ ? कोई बात नहीं, हो जायगा।"

"दस दिन क्या, पाँच ही दिन में हो जायगा।"

१. भाव दिखलाकर।

"तीन सौ रुपये की क्या बात है ?"
"इनकिलाब है, जिन्दाबात है !"

तेतीस

अमंगल !

"गाँव के मंगल की अब कोई उमेद नहीं।"

हरगौरी तहसीलदार दुर्गा के वाहन की तरह गुर्राता है। "साले सब ! चुपचाप दफा ४० का दर्खास देकर समझते थे कि जमीन नकदी हो गई। अब समझो। बौना और बलदेवा से जमीन लो। सब सालों से जमीन छुड़ा लेने के लिए कहा है मैनेजर साहेब ने। लो जमीन ! राम नाम का लूट है !···अरे, कंगरेसी राज है तो क्या जमींदारों को घोलकर पी जायगा ?"

सुमरितदास वेतार की जीभ थकती नहीं। सुबह से ही बक-बक करता जा रहा है। ततमाटोली में, पासवानटोली में और कोयरीटोले में घूम-घूमकर वह लोगों को सुना रहा है—"मैनेजर साहेब ने परवाना में क्या लिखा है, मालूम ? नया तहसीलदार तो एकदम घबड़ा गया था। मैंने कितना समझाया—तहसीलदार, आप एकदम चुपचाप रहिए। जिन लोगों को दरखास देना है, देने दीजिए। जिस दिन मुकदमे की तारीख होगी, उससे एक दिन पहले हम आपको एक नोक्स बता देंगे। वही हुआ। जमीदारी वकील तो सुनकर उछलने लगा। चाहे जो भी कहो, तहसीलदार बिस्नाथपरसाद ने कभी कोई नोक्स हमसे छिपाकर नहीं रखा।···मैनेजर साहेब ने क्या लिखा है, मालूम है ? सुमरितदास को एक बार सरकिल कचहरी में भेज दो। · सुस्लिंग-मुस्लिंग क्या करेगा ?"

"सुमरितदास ! बुढ़ापे में यदि इज्जत बचानी है तो जरा होस-हवास दुरुस रखकर बोला करो। समझे ?" कालीचरन की आँखें लाल-लाल

हैं। सुबह से ही वह सुमरितदास को खोज रहा है। सोसलिस्ट पाटी के खिलाफ बूढ़ा कल से ही अटर-पटर[1] परोपगंडा कर रहा है।

"समझे ? हाँ।···पीछे यह मत कहना कि सोसलिस्ट पाटी के लौंडों को बड़े-छोटे का विचार नहीं।"

"हम क्या बोले हैं ? पूछो, इन्हीं लोगों से पूछो ! बोलो जी गुलचरन। सुस्लिग पाटी···।"

"सुस्लिग मत कहिए सोसलिस्ट कहिए।···बात तो सही मुँह से निकलती ही नहीं है और मुँसियाती बघारते हैं।···जमींदार के तहसीलदार से और अपने मैनेजर से भी जाकर कह दो, रैयतों से जमीन छुड़ाना हँसी-ठट्ठा नहीं। पाटी के ऐजकूटी में परसताव पास हो गया है। संघर्ख होगा संघर्ख ! समझे ?"

कालीचरन गर्दन ऐंठता हुआ चला गया। करैत साँप को गुस्से में ऐंठते देखा है न, ठीक उसी तरह ! सुमरितदास को कँपकँपी लग जाती है। आस-पास बैठे हुए लोगों की भी धुकधुकी तेज हो जाती है। अभी तो ऐसा लगता था कि जुलुम हो जायगा।···अलबत्त देह बनाया है कलिया···कालीचरन ने। देखकर डर लगता है। सुस्लि···सुस्लि···सोस्टलिस्ट पाटी में जाकर तो और भी तेजी से जल-जल कर रहा है। संघर्ख क्या होगा ?···

डा डिग्गा डा डिग्गा !

संथालटोली में दो दिनों से दिन-रात मादल बजता रहता है। डा डिग्गा डा डिग्गा ! औरतें गाती हैं। नाचती हैं—झुमुर-झुमुर !···दरखास्त नामंजूर हो गई। जमींदार जमीन छीन लेगा। कोठी के जंगल में, जामुन और गूलर में बहुत फल लगे हैं इस बार। जंगली सूअरों के बच्चे भी किलबिल कर रहे है। हल के फाल को तोड़कर तीर बनाओ। लोहा मँहगा है। रे ! हाय रे हाय ! डा डिग्गा, डा डिग्गा···!

कालीचरन ने कहा है—संघर्ख करेंगे। संघर्ख क्या ? परसताव क्या ?

रिंग रिंग-ता-धिन ता !

---

१. अटूल-जलूल।

डा डिग्गा, डा डिग्गा !

···खेत में पाट के लाल पौधों को देखकर जी ललच रहा है। धान की हरी-हरी सूई खेत में निकल आई है। माटी का मोह नहीं टूटता। बधना पर्व[1] की रात में तूने जो जूड़े में फूल लगाया था, उसे नहीं भूला हूँ। धरती का मोह भी नहीं टूट रहा। प्यारी, हमारे दादा परदादा-पुरैनियाँ-के जेल में मर-खप गए। मकई के बाल की तरह उनके बाल भूरे हो गए होंगे। हमारे बच्चों के दाँत दूधिया मकई के दानों की तरह चमकेंगे। उनसे कहना, धरती माता के प्यार की जंजीर में हम बँध गए। रे ! हाय रे हाय ! रिंग रिंग-ता-धिन ता ! डा डिग्गा डा डिग्गा !···

"यदि जमीन पर कोई आवे तो गर्दन काट लो !"

तहसीलदार हरगौरीसिंह ने नये रैयतों के साथ जमीन बन्दोबस्ती का ऐलान कर दिया है।···बस, एक सौ रुपये बीघा सलामी देकर कोई भी रैयत जमीन की बन्दोबस्ती के लिए दर्खास्त दे सकता है।···अरे, तुम लोग बेकूफ हो। ये जमीनें एक साल पहले ही नीलाम होकर खास हो गई हैं। पुराने तहसीलदार ने ही सारी कार्रवाई की थी। नीलाम होकर खास हुई जमीन पर दफा ४० की दर्खास्त करने से नकदी कैसे होगी ?···हाँ, नये बन्दोबस्त लेने वालों को जमा बाँध देंगे। यह तो हमारे हाथ की बात है। इसके लिए कचहरी की दौड़-धूप करने की क्या जरूरत ?···अरे सूखानूदास, मुकदमा में कितना खर्चा हुआ तुम लोगों का, जरा इन लोगों को बता दो।···हाँ, कंगरेसी और सोसलिस्ट पाटी वालों की खुराकी भी जोड़ना।···सुना ? हरेक तारीख में चन्दा वसूल कर पैरवीकार नेताजी लोगों को देना पड़ता था—दस रुपये नकद; सिकरेट और पान की बात तो छोड़ ही दीजिए ! यही पेशा है भाई इन लोगों का।···हाँ, जिसकी जमीन नीलाम हो गई है, वह यदि जमीन पर आवे तो उसकी गर्दन उड़ा दो। राज से मदद मिलेगी !

राम नाम की लूट है, लूट सके सो लूट !

गाय-बैल, बाछा-बाछी और भैंस के पाड़ा की बिक्री धड़ाधड़ हो रही

१. संथालों का एक प्रसिद्ध पर्व।

है। दूने सूद पर भी रुपया कर्ज लेकर जमीन मिल जाय तो फायदा ही है। पाट का भाव पन्द्रह रुपया है; ऊपर पचास भी जा सकता है, सौ भी हो सकता है। धान सोने के मोल बिक रहा है। जमीन! जिसके पास जमीन नहीं, वह आदमी नहीं, जानवर है। जानवर घास खाता है, लेकिन आदमी तो घास खाकर नहीं रह सकता! अरे! छोड़ो जी कंगरेस और सुशलिट पाटी की बात को।'''दरखास नामंजूर हो गई। जमीन बन्दोबस्ती'''

गाँव के मंगल की अब कोई उम्मीद नहीं।

हर टोले के लोग आपस में ही लड़ेंगे क्या? कोयरीटोले के भजू महतो की जमीन उसी का भगिना सरूप महतो बन्दोबस्ती ले रहा है। सोबरन की जमीन पर उसका चचा रामेसर नजर लगाए बैठा है। सोबरन की जमीन सोना उगलती है। यादवटोली के सभी रैयतों की नीलाम हुई जमीन खेलावनसिंह यादव ले रहे हैं। संथालों की जमीन राजपूतटोले के लोग ले रहे हैं।'''सुमरितदास कहते हैं, यह बात गुप्तुत है। किसी से कहना मत कि संथालों की जमीन खुद तहसीलदार साहब ले रहे हैं। लेकिन, अपने नाम से तो नहीं ले सकते! इसीलिए दूसरों के नाम से लिया है।

गाँव के मंगल की अब कोई उम्मीद नहीं। तहसीलदार विश्वनाथप्रसादजी बालदेव और बावनदास को पंचायत बुलाने कहते हैं।'''पंचायत तुम्हीं लोग बुलाओ। मेरे बुलाने से ठीक नहीं होगा।'

कालीचरन की पार्टी के सबसे बड़े लीडर पुरैनियाँ आ रहे हैं। कॉमरेडों ने पाँच ही दिनों में तीन सौ रुपये वसूल किये हैं। अकेले सोमा ने दो सौ पचास रुपये दिये हैं। ''सबसे बड़े लीडर से कहना होगा। गाँव में इस तरह फूट रहने से तो संघर्ष नहीं होगा। फिर एक बार सैनिकजी और चिनगारीजी को लाना होगा। बहुत दिनों से सभा नहीं हुई है। खेत में कोड़-कमान नहीं करने से जिस तरह जंगल-झाड़ हो जाता है, उसी तरह इलाके में सभा मीटिंग नहीं करने से इलाका भी खराब हो जाता है। सिक्रेटरी साहब को भी इस बार लाना होगा। इस बार लौडपीसर भी लाना होगा।

चर्खा सेण्टर की मास्टरनीजी और मास्टरजी लोगों में झगड़ा हो गया है।

करघा मास्टर टुनटुनजी को मंगलादेवी का सोशलिस्ट आफिस में रहना बड़ा बुरा लगता है। जब तक बीमार थीं, वहाँ थीं, तो थीं। अब अच्छी हो गईं तो वहाँ रहने की क्या आवश्यकता ? और मंगलादेवी को पटना से ही जानते हैं टुनटुनजी। गाँव तरफ़ की सेण्टर में जब ट्रेनिंग लेती थीं तभी से उड़ती थीं। व्यवस्थापिकाजी इनके मिलने वालों से परीशान रहती थीं। रोज नये-नये लोग ! बहुत बार मंगलादेवी को चेतावनी भी दी गई—लेकिन इनके मिलने वालो में कालेज के विद्यार्थी, एम०एल०ए०, साहित्य-गोष्ठी के मंत्रीजी, चर्खा-संघ के कार्यकर्ता तथा कई हिन्दी दैनिकों के सहायक सम्पादक भी थे। व्यवस्थापिकाजी हार मानकर चुप हो गईं। मंगलादेवी की स्वतंत्रता पर आघात करके वह एक दर्जन से ज्यादा व्यक्तियों का कोप-भाजन नहीं बनना चाहती थीं। इसीलिए व्यवस्थापिकाजी ने मंगलादेवी को इस पिछड़े हुए गाँव में भेजा था। लेकिन यहाँ भी ··?

मंगलादेवी बात करने में मर्दों के भी कान काटती हैं; पाजामा और कुर्ता पहनती हैं; बाहर निकलते समय खद्दर का दुपट्टा भी डाल लेती हैं। कद नाटा, रंग साँवला और शरीर गठा हुआ है। आँखें बड़ी अच्छी, खास तिरहुत की आँखें ! करघा मास्टर को वह तांत-मास्टर कहती हैं और चर्खा-मास्टर को धुनिया-मास्टर। जोलहा धुनिया मंगलादेवी से क्या बात करेंगे ? ···जब बीमार पड़ीं तो झाँकी मारकर भी देखने के लिए नहीं आते थे और आज नैतिकता पर प्रवचन दे रहे हैं ! मंगलादेवी इन लोगों को खूब पहचानती हैं। व्यवस्थापिकाजी को लिखेंगे तो लिखें। क्या करेंगी व्यवस्थापिकाजी ? ऐसी धमकियों से मंगलादेवी नहीं डरतीं। टुनटुनजी जो चाहते हैं, सो वह जानती हैं। पटना से आते समय समस्तीपुर में लेकर उतर गए। बोले, यहाँ गाड़ी बदलनी होगी। बाद में मालूम हुआ कि वही गाड़ी सीधे कटिहार जाती है। दूसरी गाड़ी फिर सुबह आठ बजे। रात

को बारह बजे धर्मशाला में ले गए। ···दुनदुनजी का परिचय मिल गया है, और कहना नहीं होगा!

बालदेवजी को खेलावनसिंह यादव ने साफ जवाब दे दिया है। सकलदीप का गोना होने वाला है। नई दुलहिन ससुराल में बसने के लिए आ रही है। बाहरी आदमी का परिवार में रहना अच्छा नहीं। चम्पापुर के आसिन बाबू की बेटी है। जरा भी इधर-उधर होने से बाप को चिट्ठी लिख देगी। बड़े आदमी की बेटी है···!

बालदेवजी ने झोली-झंडा खेलावन के यहाँ से हटा लिया है। बालदेव की मौसी गाँव में घूम-घूमकर शिकायत कर रही है। लेकिन बालदेवजी साधु आदमी हैं; मान-अपमान से परे हैं। वे चुप हैं।

लछमी उन्हें कंठी लेने के लिए जिद कर रही है। पुपड़ी मठ के महंत रामसरूप गुसाईं आये हुए हैं। बालदेवजी कंठी ले लें तो मठ पर रहने में कोई असुविधा नहीं हो।

बावनदास का मन बड़ा अविश्वासी हो गया है। किसी पर विश्वास करने को जी नहीं करता है। गाँधीजी को छोड़कर अब किसी पर विश्वास नहीं होता! वह गाँधीजी को एक खत लिखवाना चाहता है। गंगुलीजी जरूर लिख देंगे। बराबर लिख देते हैं! उसके मन में बहुत सी शंकाएँ उठ रही हैं।

चौंतीस

फुलिया पुरैनियाँ टीसन से आई है।

एकदम बदल गई है फुलिया। साड़ी पहनने का ढंग, बोलने-बतियाने का ढंग, सब कुछ बदल गया है। तहसीलदार साहब की बेटी कमली अँगिया के नीचे जैसी छोटी चोली पहनती है, वैसी वह भी पहनती है। कान में पीतल के फूल हैं। फूल नहीं, फुलिया कहती है—कनपासा। आँचल में

चावी का गुच्छा बाँधती है, पैर में शीशी का रंग लगाती है।···हाँ, खलासी-जी बहुत पैसा कमाते हैं सायद।···अरे! खलासी के मुँह पर झाड़ू मारो! वह क्या खाकर इतना सौख-मौज करेगा? क्या पहनावेगा? फुलिया ने खलासी को छोड़ दिया है। खलासी को खोक्सीबाग की एक पतुरिया से मुहब्बत थी, रोज ताड़ी पीकर वहीं पड़ा रहता था। तलब मिलने के दिन वह पतुरिया खलासी का पीछा नहीं छोड़ती थी। तलब का एक पैसा इधर-उधर हुआ कि पैर की चट्टी खोलकर हाथ में ले लेती थी। आखिर फुलिया कितना बर्दास करती। टीसन के पैटमानजी नहीं रहते तो फुलिया की इज्जत भी नहीं बचती। फुलिया अब पैटमानजी के यहाँ रहती है। खलासी एक दिन पैटमान से लड़ाई करने आया। टीसन मास्टर बाबू ने कहा कि यदि खलासी टीशन के हाता में आवे तो पकड़कर पीटो। उसी दिन खलासी जो दुम दबाकर भागा तो फिर खाँसी भी नहीं करने आया कभी। पैटमानजी जात के छत्री हैं—तंत्रिमा छत्री नहीं, असल बुंदेला छत्री। पान-जर्दा खाते-खाते दाँत टूट गए हैं; पत्थर का नकली दाँत लगाते हैं। कहने को नकली दाँत हैं, मगर असली दाँत से भी बढ़कर है। चना-भुट्टा और अमरूद सब कुछ चबाकर खाते हैं पैटमानजी। पचीस साल पहले हासाम मुलुक में चाह पीते और पान-जर्दा खाते-खाते दाँत टूट गए हैं, उमेर तो अभी कुछ भी नहीं है। दस बरस से 'बेवा' थे, मन के लायक स्त्री मिली ही नहीं। पैटमानजी ने मँहगूदास के लिए एक पुरानी नीली कमीज भेंज दी है। कमीज पहनने पर मँहगू को पहचानने में गलती हो जाती है। ठीक रेलवे का आदमी!···बुढ़िया के लिए नई साड़ी भेज दी है। एक बित्ता काली किनारी है।···इस बार के कोटा में असली 'सन्तीपूरी साड़ी' मिलेगी तो फुलिया को भेज देगा। फुलिया कहती है, इस बार माँ को भी साथ ले जायगी।

फुलिया का भाग! रमपियरिया की माँ कहती है—"रमिया भी अब बिहाने के जोग हो गई। बिना बाप की बेटी है! जब से तुम ससुराल गई हो, रोज एक बार तुम्हारा जिकर करती है रमिया—'फुलिया दीदी कब

आवेगी ? इस बार फुलिया दीदी आवेगी तो साथ में मैं भी जाऊँगी।' जहि उधर कोई बर नजर में आवे तो रमिया को भी अपने साथ ले जाओ फूलो बेटी ! यहाँ कोयरीटोले के छोकड़े दिन-दिन बिगड़ते जा रहे हैं।...''

सहदेव मिसर पर तंत्रिमाटोली का कुत्ता भी भूंकता है ! बहुत दिनों के बाद वह तंत्रिमाटोली में आया है—फुलिया के बुलाने पर।...दस दिन रहेगी, फिर चली जायगी। फुलिया अब जात-समाज से नहीं डरती। वह तंत्रिमा छत्री नहीं, वह असल बुन्देला छत्री की स्त्री है। आँगन में अपने से पकाकर खाती है।...माँ का छुआ भी नहीं खाती ?

वह तो मेहमान होकर आई है। उसके जी में जो आवे, वह करेगी। कोई कुछ नहीं बोल सकता।...वह सहदेव मिसर को बैठने के लिए चटाई देती है। एक काँच की छोटी-सी थरिया में सुपारी, सौंफ और दालचीनी के टुकड़े बढ़ा देती है।...तो फुलिया भूली नहीं है उसे ? वाह ! सहर का पानी चढ़ने पर बाहर तो एकदम बदल गया है पर भीतर जैसा का तैसा। काजल वाली आँखें और भी बड़ी मालूम होती हैं। अँगिया और नक्सा कोर की सफेद साड़ी। सहदेव मिसर डरते-डरते कहता है—

"फुलिया !"

"क्या ?" फुलिया मुस्कराती है।

सहदेव मिसर का चेहरा एकदम लाल हो रहा है। कान लाल हो गए हैं। नाक के पास वाला सिरा धकधक कर रहा है—"फुलिया ! जबसे तुम गई मैंने कभी इस टोले में पैर नहीं दिया।"

"रहने दो ! गहलोतटोले में नहीं जाते थे ?·· पनबतिया के यहाँ कौन जाता था ? झूठ मत बोलो।" फुलिया हँसती है।

"नहीं फूलो !"

ढिबरी की रोशनी में सहदेव मिसर फुलिया की आँखों की नई भाषा को पढ़ता है।...हवा के झोंके से ढिबरी बुझ जाती है। फुलिया बालों में महकौआ[1] तेल लगाती है। अँगिया के नीचे वाली छोटी चोली में

१. सुगन्धित।

रब्बड़[1] लगा रहता है शायद।···फुलिया के देह से अब धाम की गन्ध नहीं निकलती। सौंफ, दालचीनी खाने से मुँह गमकता है।···शहर की बात निराली है। शहर की हवा लगते ही आदमी बदल जाता है।·· तहसीलदार की बेटी तो कभी शहर गई भी नहीं।···जाति की बन्दिश और पंचायत के फैसले को तो सबसे पहले पंच लोगों ने ही तोड़ा है।···तंत्रिमाटोली का छड़ीदार है नोखे और उचितदास; जिसे चाल से बेचाल देखेगा, छड़ी से पीठ की चमड़ी खींच लेगा। नोखे की स्त्री रामलगनसिंह के बेटे से फंसी हुई है और उचितदास की बेटी कोयरीटोले के सरजन महतो से। पंचायत का फैसला ज्यादा-से-ज्यादा दस दिनों तक लागू रह सकता है। पुश्त-दरदैनी से जो रीत-रेवाज गाँव में चला आ रहा है, उसको एक बार ही बदल देना आसान नहीं। जिनके पास जगह-जमीन है, पास में पैसा है, वह भी तो अपने यहाँ का चाल-चलन नहीं सुधार सकते।···बाबूटोली के किस घर की बात छिपी हुई है।···पंच लोग पंचायत में बैठकर फैसला कर सकते हैं, उसमें कुछ लगता तो नहीं है। लेकिन पंचायत के फैसले से चूल्हा तो नहीं सुलग सकता? पंचों को क्या मालूम कि एक मन धान में कितना चावल होता है! सास्तर में कहा है, 'जोरू जमीन जोर का, नहीं तो किसी और का।' और देह के जोर से आजकल सब कुछ नहीं होता। जिसके पास पैसा है वही बोतल मिसर[2] पहलवान है। वही सबसे बड़ा जोरावर है।

···तहसीलदार साहब की बेटी शाम से ही, आधे पहर रात तक, डागडर बाबू के घर में बैठी रहती है; चाँदनी रात में कोठी के बगीचे में डागडर के हाथ-में-हाथ डालकर घूमती है। तहसीलदार साहब को कोई कहने की हिम्मत कर सकता है कि उनकी बेटी का चाल-चलन बिगड़ गया है?··· तहसीलदार हरगौरीसिंह अपनी खास मौसेरी बहन से फंसा हुआ है।··· बालदेवजी कोठारिन से लटपटा गए हैं। कालीचरन ने चर्खा स्कूल की मास्टरनीजी को अपने घर में रख लिया है। उन लोगों को कोई कुछ कहे

१. रबर।

२. मिथिला का एक प्रसिद्ध पहलवान।

तो ?···जितना कानून और पंचायत है सब गरीबों के लिए ही ? है !

जमीन के लिए गाँव में नई उथल-पुथल हुई है। जिन लोगों की जमीन नीलाम हुई है, बर्खास्तें खारिज हुई हैं, वे एक तरफ हैं। जिन्होंने नई बन्दोबस्ता ली है अथवा जमींदार से माफी माँग ली है, मुट्ठी भिलाकर दे दी है या जो जमीन बन्दोबस्त लेना चाहते हैं, वे सभी दूसरी तरफ हैं। गरीबों और मजदूरों के टोलों पर भी इसका प्रभाव पड़ा है। सेलावन के हलवाहों को कालीचरन ने हल जोतने से मना कर दिया है। तहसीलदार हरगौरी-सिंह का नाई, धोबी और मोची बन्द करने के लिए कालीचरन घर-घर घूमकर भाषण देता है। गाँव से सारे पुराने बाँध टूट गए हैं, मानो बाढ़ का नया पानी आया हो।···

गरीबों और मजदूरों की आँखें कालीचरन ने खोल दी हैं। सैकड़ों बीघे जमीन वाले किसानों के पास पैसे हैं; पैसे से गरीबों को खरीदकर, गरीबों के गले पर गरीबों के जरिये ही छुरी चलाते हैं।···होशियार ! जिन लोगों ने नई बन्दोबस्ती ली है, वे गरीबों की रोटी मारने वाले हैं···।

कालीचरन ने चमारटोली में भात खा लिया ?

जात क्या है ? जात दो ही हैं, एक गरीब और दूसरी अमीर।··· सेलावन को देखा, यादवों की ही जमीन हड़प रहा है।···देख लो आँख खोलकर, गाँव में सिरिफ दो जात हैं।

अमीर-गरीब !

तहसीलदार हरगौरीसिंह काली टोपी वाले नौजवानों से कहते हैं, "इस बार मोर्चे पर जाना पड़ेगा। हिन्दू राज कायम करने के लिए पहले गाँव में ही लोहा लेना पड़ेगा ···।"

संयोजकजी आजकल महीने में दो बार घर मनीआर्डर भेजते हैं। संयोजकजी जो कहेंगे उसे काली टोपी वाले नौजवान प्राण रहते नहीं काट सकते हैं। आग और पानी में कूद सकते हैं। इसी को कहते हैं अनुशासन !

बावनदास जिला कांग्रेस के नेताओं को खबर देने गया है—'गाँव में जुलुम हो रहा है।'

पैंतीस

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद के सामने विकट समस्या उपस्थित है। नई बन्दोबस्ती वाले किसान रोज उनके यहाँ आते हैं। मामला-मुकदमा उठने पर विश्वनाथप्रसाद की गवाही की जरूरत होगी। बेजमीन लोग अपनी पार्टीबन्दी कर रहे हैं; जमीन वालों को भी भेदभाव, लड़ाई-झगड़ों को भूलकर एक हो जाना चाहिए।" तहसीलदार हरगौरीसिंह दिन-रात विश्वनाथ बाबू के घर पर ही रहते हैं।

"काका! इस बार इज्जत बचा लीजिए। क्या आप यही चाहते हैं कि नाई, धोबी और चमार के सामने हम हाथ जोड़कर गिड़गिड़ावें? ·· कल से ही रामकिरपाल काका के गुहाल में गाय मरी पड़ी है। चमार लोगों ने उठाने से साफ इनकार कर दिया है। जीवेसरा चमार को लीडर आपने ही बनाया है।···राजपूतटोले के लोगों को देखिए, दाढ़ी कितनी बड़ी-बड़ी हो गई है। नाइयों ने काम करना बन्द कर दिया है। आपके हाथ में सबों की चुटिया है। आप एक बार कह दें तो सबों की नानी मर जाय···"

कालीचरन आकर कहता है, "विसनाथ मामा, आप काँगरेस के लीडर हैं। इसी बार देखना है कि काँगरेस गरीबों की पाटी है या अमीरों की। ···आज तक मैंने आपको देवता की तरह माना है। लेकिन गरीबों के खिलाफ आप पैर बढ़ाइएगा तो हम भी मजबूर होकर···।"

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद क्या करें, क्या नहीं करें, कुछ समझ नहीं पा रहे हैं।

बावनदास पुरैनियाँ से लौट रहा है।

वह गया था 'जुलुम हो रहा है' सुनाने। उसने पुरैनियाँ में देखा, जलुम हो रहा है।

कचहरी में जिले-भर के किसान पेट बाँधकर पड़े हुए हैं! दफा ४० की दर्खास्तें नामंजूर हो गई हैं, 'लोअर कोट' से। अपील करनी है।···

अपील ? खोलो पैसा, देखो तमाशा । क्या कहते हो ? पैसा नहीं है ! तो हो चुकी अपील । पास में नगदनारायण हो तो नगदी कराने आओ !'''

क़ानून और कचहरी कम्पौन्ड में पलने वाले कीट-पतंग भी पैसा माँगते हैं ।

जिला कांग्रेस ऑफिस में जुलुम हो रहा है । जिला कांग्रेस के सभापति का चुनाव होने वाला है । चार उम्मीदवार हैं, दो असल और दो कमअसल[1] । राजपूत और भूमिहार में मुकाबिला है । जिले-भर के सेठों और ज़मींदारों की मोटर गाड़ियाँ दौड़ रही हैं । एक दूसरे के गड़े मुर्दे उखाड़े जा रहे हैं । कटिहार कॉटन मिल वाले सेठजी भूमिहार पार्टी में हैं और फ़ॉरबिसगंज जूट मिल वाले राजपूतों की ओर । '''पैसे का तमाशा कोई यहाँ आकर देखे !

बावनदास सोचता है, अब लोगों को चाहिए कि अपनी-अपनी टोपी पर लिखवा लें—भूमिहार, राजपूत, कायस्थ, यादव, हरिजन !'''कौन काजकर्ता किस पार्टी का है, समझ में नहीं आता ।

"जुलुम हो रहा है ?"

"जी हाँ, जुलुम हो रहा है ।"

"देखिए बावनदासजी, बात यह है कि ९५ सैंकड़े लोगों ने तो गलत और झूठा दावा किया होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं । सही और वाजिब हक़ वाले बाकी रैयत भी इन्हीं झूठे दावे करने वालों के कारण बेमौत मर गए । इसमें कानून का क्या दोष है ? लोगों का नैतिक पतन हो गया है । देखिए, इस बार जिला कमिटी में, इस सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पास होने वाला है ।"

"बेदखल किसानों से क्या कहेंगे ?"

"क्या कहिएगा ? कहिए कि ज़मींदारी प्रथा तो खत्म हो रही है । आज बिहार मंत्रीमण्डल ने ऐलान कर दिया है—ज़मींदारी प्रथा को खत्म करने के लिए बिहार सरकार कटिबद्ध है !"

१. डम्मी कैण्डिडेट ।

बावनदास किसानों से क्या कहेगा ?

जमींदारी प्रथा खत्म हो जायगी ? तब ये कांग्रेसी जमींदार लोग क्या करेंगे ? सब मिल खोलेंगे शायद। इसीलिए प्रायः हरेक छोटे-बड़े लीडर के साथ एक मारवाड़ी घूमता है।···बावनदास को याद आती है पाँच महीने पहले की बात ! पुरैनियाँ टीसन में तीलझाड़ी के शंकर बाबू ने अपने साथ के दस काजकर्ताओं को पूड़ी-मिठाई का जलपान कराया और पैसा दिया तीलझाड़ी हाट के मारवाड़ी चोखमल जुहारचन्द के बेटे ने। '···हाँ जी, खाओ जी ! तुम्हीं लोग तो देश के असल सेवक हो। जेहल में खिचड़ी खाते-खाते जिन्दगी बिता दी।' सारे इलाके के काजकर्ता को खिलाया और एक-एक सेर मिठाई भी खरीद दी।···चोखमल जुहारचन्द का बेटा आजकल अररिया सबडिवीज़न कांग्रेस का खजांची है। साठ रुपये जोड़ी खादी की धोती पहनता है। चर्खा संघ के बाबू कितना खातिर करते हैं !···

"जुलुम हो गया।"

"क्या हुआ ?"

"जमींदारी परथा खत्तम।"

"जुलुम बात !"

यहाँ के लोग सुख-संवाद सुनकर भी कहते हैं—जुलुम बात ! जुलुम हँसी, जुलुम खुसी ! बंगला के 'भीषण सुन्दर' की तरह !

"जुलुम बात !"

"क्या है ?"

"बावनदास ने जमींदारी परथा खत्तम कर दिया।" कॉमरेड वासुदेव दौड़ता हुआ आकर कालीचरन को खबर देता है।

"बावनदास ने ?"

"नहीं। बावनदास खबर लेकर आया है। कांग्रेस के मंत्रीजी ने जमींदारी को नास कर दिया है।"

"जब तक 'लाल पताका' अखबार में यह खबर छापी नहीं हो, इस पर विश्वास मत करो कॉमरेड ! यह सब कांगरेसी झाई है। खैर, मैं कल ही सिकरेटरी साहेब से पूछ आता हूँ। तुम लोगों ने मेम्बरी का पैसा जमा नहीं किया आफिस में। सब कॉमरेडों को खबर दे दो। इस बार आखिरी तारीख है, इसके बाद 'लाल पताका' में नाम निकल जायगा।"

"सनिचरा ने तो मेम्बरी के पैसे से सोसलिट-काट कुर्त्ता बना लिया है। कहता है, सन-पटुआ होने पर पैसा जमा कर देंगे।"

"जुलुम बात है। मेम्बरी के पैसे से कुर्ता ? नहीं, उससे कहो, पैसा जमा करना होगा।"

तहसीलदार हरगौरी और तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद अब एक पान को दो टुक करके खाते हैं। सच ? सच नहीं तो क्या ? वेतार सुमरितदास सबों से कहता फिरता है···'कलम और कानून की बात जहाँ आएगी, वहाँ लाठी-भाला चलाने वाले क्या करेंगे ? तहसीलदार विस्नाथपरसाद पुराने तहसीलदार हैं। राज पारबंगा के नीमक पानी से ही सब कुछ हुआ है। कायस्त नमकहरामी नहीं कर सकता कभी।···कंगरेसी हुए हैं तो क्या अपने पेसे को भूल जायेंगे ?"

संथालटोली में मादल बज रहा है—

सोनो रो रूप, रूपे रो रूप
सोनो रो रूप लेका गातेन मेलाय
गातेन दिसोय रे सोना मुन्दोम
गातेन उईहय जीवीदो लोकतिय।

डा डिग्गा डा डिग्गा ! रि रि-ता-धिन ता !

सोने और चाँदी के बीच मेरे प्रियतम का रूप सोने की तरह है। सोने की अंगूठी को देखकर अपने प्रियतम की याद आती है।

संथाल परगना के आदिवासी संथालों को सोने की झलक लगी है या नहीं, कौन जाने ! लेकिन यहाँ के संथाल, सोने और चाँदी में क्या फर्क है, जानते हैं।

···जमींदारी प्रथा खतम हो गई। अब जमींदार जमीन से बेदखल नहीं कर सकता। हमने उन्हें जमीन से बेदखल कर दिया। जो जोतेगा, जमीन उसकी है। जो जितना जोत सको, जिसकी जमीन मिले जोतो, बोओ, काटो। अब बाँटने का भी झंझट नहीं।···धरती माता का प्यार झूठा नहीं। फिर खेतों में जिन्दगी झूमेगी। आसाढ़ के बादल बजा रहे हैं मादल, बिजली नाच रही है। तुम भी नाचो। नाचो!···नाच रे! मादल बजाओ जोर-जोर से। पँचाय[1] का नशा आज नहीं उतरेगा; जब तक पूर्णिमा का चाँद नहीं डूब जाय, घने बादलों में नाचना बन्द नहीं होगा। चाँदनी की तरह प्रियतमा की मुस्कराहट, बाँसुरी-सी मीठी बोली तीर की तरह दिल पर घाव करती है।···मेरे कलेजे पर फूलों से भरा हुआ सिर रख दो प्रिये!

डा डिग्गा रिं रिं ता धिन!···

छत्तीस

डॉक्टर पर यहाँ की मिट्टी का मोह सवार हो गया। उसे लगता है, मानो वह युग-युग से इस धरती को पहचानता है। यह अपनी मिट्टी है। नदी-तालाब, पेड़-पौधे, जंगल-मैदान, जीव-जानवर, कीड़े-मकोड़े, सभी में वह एक विशेषता देखता है। बनारस और पटना में भी गुलमुहर की डालियाँ लाल-लाल फूलों से लद जाती थीं। नेपाल की तराई में पहाड़ियों पर पलास और अमलतास को भी गले मिलकर फूलते देखा है, लेकिन इन फूलों के रंगों ने उस पर पहली बार जादू डाला है!

गोल्डमोहर—गुलमुहर—कृष्णचूड़ा!···गुलमुहर का कृष्णचूड़ा नाम यहाँ कितना मौजूं लगता है! काले कृष्ण के मुकुट में लाल फूल कितने सुन्दर लगते होंगे!

१. संथालों के घर में बनी हुई शराब।

आम से लदे हुए पेड़ों को देखने के पहले उसकी आँखें इन्सान के उन टिकोलों पर पड़ती हैं, जिन्हें गामों की गुठलियों के सूखे गूदे की रोटी पर जिन्दा रहना है।···और ऐसे इन्सान ? भूखे, अतृप्त इन्सानों की आत्मा कभी भ्रष्ट नहीं हो या कभी विद्रोह नहीं करे, ऐसी आशा करनी ही बेवकूफी है।···डाक्टर यहाँ की गरीबी और बेवसी को देखकर आश्चर्यित होता है। वह संतोष कितना महान् है जिसके सहारे यह वर्ग जी रहा है ? आखिर वह कौनसा कठोर विधान है, जिसने हजारों-हजार क्षुधितों को अनुशासन में बाँध रखा है ?

···कफ से जकड़े हुए दोनों फेफड़े, ओढ़ने को वस्त्र नहीं, सोने को चटाई नहीं, पुआल भी नहीं ! भीगी हुई धरती पर लेटा न्युमोनिया का रोगी मरता नहीं है, जी जाता है !···कैसे ?

···यहाँ विटामिनों की किस्में उनके अलग-अलग गुण और आवश्यकता पर लम्बी और चौड़ी फेहरिस्त बनाकर बँटवाने वालों की बुद्धि पर तरस खाने से क्या फायदा ! ···मच्छरों की तस्वीरें, इससे बचने के उपायों को पोस्टरों पर चित्रित करके अथवा मैजिक लालटेन से तस्वीरें दिखाकर मैलेरिया की विभीषिका को रोकने वाले किस देश के लोग थे ?···यहाँ तो उन मच्छरों की तस्वीरें देखते ही लोग कहते हैं—"पुरैनियाँ जिला को लोग मच्छर के लिए बेकार बदनाम करते हैं, देखिए पच्छिम का मच्छर कितना बड़ा है, एक हाथ लम्बा देह, चार हाथ मूँड। बाप रे !"

डी० डी० टी० और मसहरी की बात तो बहुत बड़ी हुई, देह में कड़वा तेल लगाना भी स्वर्गीय भोग-विलास में गण्य है।···तेल-फुलेल तो जमीदार लोग लगाते हैं; स्वर्ग की परियाँ तेल-फुलेल लेकर पुण्य करने वालों की सेवा करती हैं···!

खेतों में फैली हुई काली मिट्टी की संजीवनी इन्हें जिलाए रखती है। शस्य श्यामला, सुजला-सुफला···इनकी माँ नहीं ? अब तो शायद धरती पर पैर रखने का भी अधिकार नहीं रहेगा। कानून बनने से पहले ही कानून को बेकार करने के तरीके गढ़ लिए जाते हैं। सूई के छेद से हाथी

निकाल लेने की बुद्धि ही आज सही बुद्धि है।···और लोग तो बकवास करते हैं, बुद्धि-विभ्रम रोग से पीड़ित हैं।···जिसके पास हजारों बीघे जमीन है, वह पाँच बीघे जमीन की भूख से छटपटा रहा है।···बेजमीन आदमी, आदमी नहीं; वह तो जानवर है !

डॉक्टर ममता को लिखता है—

"तुम जो भाषा बोलती हो, उसे ये नहीं समझ सकते। तुम इनकी भाषा नहीं समझ सकती। तुम जो खाती हो, ये नहीं खा सकते। तुम जो पहनती हो, ये नहीं पहन सकते। तुम जैसे सोती हो, बैठती हो, हँसती हो, बोलती हो, ये वैसा कुछ नहीं कर सकते। फिर तुम इन्हें आदमी कैसे कहती हो! "

···वह आदमी का डॉक्टर है, जानवर का नहीं।···'टेस्ट ट्यूबों' में आदमी और जानवर के खून अलग-अलग रखे हुए हैं। दोनों के सिरम की अलग-अलग जरूरतें हैं। डॉक्टर आदमी के खून वाले ट्यूब को हाथ में लेकर, जरा और ऊपर उठाकर, गौर से देखता है। वह जानना चाहता है, देखना चाहता है, कि इन इन्सानों और जानवरों की रक्तकणिका में कितना विभेद है, कितना सामंजस्य है।···

खून से भरे हुए टेस्ट-ट्यूबों में अब कोई आकर्षण नहीं !···

क्या करेगा वह संजीवनी बूटी खोजकर ? उसे नहीं चाहिए संजीवनी। भूख और बेबसी से छटपटाकर मरने से अच्छा है मैलेग्नेंट मैलेरिया से बेहोश होकर मर जाना। तिल-तिल कर, घुल-घुलकर मरने के लिए उन्हें जिलाना बहुत बड़ी क्रूरता होगी।···सुनते हैं, महात्मा गाँधी ने कष्ट से तड़पते हुए बछड़े को गोली से मारने की सलाह दी थी। वह नये संसार के लिए इन्सान को स्वस्थ और सुन्दर बनाना चाहता था। यहाँ इन्सान हैं कहाँ ?···अभी पहला काम है, जानवर को इन्सान बनाना !

उसने ममता को लिखा है—

"यहाँ की मिट्टी में बिखरे, लाखों लाख इन्सानों की जिन्दगी के सुनहरे सपनों को बटोरकर, अधूरे अरमानों को बटोरकर, यहाँ के प्राणी के

जीवकोष में भर देने की कल्पना मैंने की थी। मैंने कल्पना की थी, हजारों स्वस्थ इन्सान हिमालय की कन्दराओं में, त्रिवेणी के संगम पर, अरुण, तिमुर और सुणकोशी के संगम पर एक विशाल डैम बनाने के लिए पर्वत तोड़ परिश्रम कर रहे हैं। ···लाखों एकड़ बन्ध्या धरती, कोशी कवलित, मरी हुई मिट्टी शस्य श्यामला हो उठेगी। कफन जैसे सफेद बालू-भरे मैदान में धानी रंग की जिन्दगी के बेल लग जायेंगे। मकई के खेतों में घास गढ़ती हुई औरतें बेवजह हँस पड़ेंगी। मोती जैसे सफेद दाँतों की चमक···!"

डॉक्टर का रिसर्च पूरा हो गया; एकदम कम्पलीट। वह बड़ा डॉक्टर हो गया। डॉक्टर ने रोग की जड़ पकड़ ली है···।

गरीबी और जहालत—इस रोग के दो कीटाणु हैं!

एनोफिलीज से भी ज्यादा खतरनाक, सैण्ड्फ्लाई[1] से भी ज्यादा जहरीले हैं यहाँ के···

नहीं। शायद वह कालीचरन की तरह तुलनात्मक उदाहरण दे बैठेगा।·· कालीचरन किसानों के बीच भाषण दे रहा था, "ये पूँजीपति और जमींदार, खटमलों और मच्छरों की तरह सोसख हैं।···खटमल! इसीलिए बहुत से मारवाड़ियों के नाम के साथ 'मल' लगा हुआ है और जमींदारों के बच्चे मिस्टर कहलाते हैं। मिस्टर···मच्छर!"

दरार पड़ी दीवार! यह गिरेगी। इसे गिरने दो! यह समाज कब तक टिका रह सकेगा?

···कविवर हंसकुमार तिवारी की कविता की कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं—

दुनिया फूस बटोर चुकी है,
मैं दो चिनगारी दे दूंगा।

गुलमुहर—आग का फूल! सारी कुरूपता जल रही है। लाल! लाल!

···कमल—कमला नदी के गड्ढे में कमल की अधमुँदी कलियाँ

१. कालाआजार का मच्छर।

अपने कोप में नई जिन्दगी के पराग भरकर खिलना ही चाहती हैं।

"ओ ! तुम ! कमला ! इतनी रात में ?···अकेली आई हो ?"

"डॉक्टर !···बोलो। सच बोलो। मैं डेढ़ घण्टे से खड़ी देख रही हूँ। तुमको क्या हो गया है ? क्या तुम्हें भी अब डर लगता है ?···सिर चकराता है ? देखो, कान के पास गर्मी-सी मालूम होती है ? दुनिया घूमती-सी मालूम पड़ती है ?···डॉक्टर !···डॉक्टर !···प्यारू !"

···कमल की भीनी-भीनी खुशबू ! कोमल पंखुड़ियों का कमनीय स्पर्श ! कमला !···ओ ! मैं कमला की गोद में हूँ ? मुझे नींद न लग जाय। मुझे उठकर बैठ जाना चाहिए। मेरी मंजिल ।

"कमला, चलो तुम्हें पहुँचा दूँ।"

"लेटे रहो बेटा !"

"ओ ! मौसी ! तुम आ गईं ?"

प्यारू कहता है, "कल सुबह से ही सिरफ चाये पीकर हैं, तो सिर नहीं चक्कर देगा ?"

सैंतीस

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद के दरवाजे पर पंचायत बैठी है। दोनों तहसीलदार के अगल-बगल में बालदेवजी और कालीचरनजी बैठे हैं। बाभन-राजपूत के साथ में बैठा है यादव—एक ही ऊँचे सफरे[1] पर। अरे ! जीवेसर मोची भी उसी कम्बल पर बैठा है ? बस, अब रास्ते पर आ रहा है। देखो, आज तहसीलदार हरगौरी किस तरह हँस-हँसकर कालीचरन से बात कर रहा है—मानो एक पियाली का दोस्त है। हाँ, तो यादवों को अब जमाहिरलाल भी छत्री मान लिये हैं। कौन क्या बोल सकता है ?···बावनदास कौन् जात है ? ···कहाँ है बावनदास ?

१. बिछावन, दरी।

पुरैनियां गया है ? आज पंचायत के दिन उसको रहना चाहिए था।··· अरे भाई, बाहरी आदमी फिर बाहरी आदमी है। उसको इस गाँव से कौन जरूरत है ? यहां नहीं, वहां। लेकिन, कालीचरन ···बाल···।···डोमन ठाकुर क्या कहता है, सुनो !

"ठाकुर (नाई) टोले से और रजकटोले से एक-एक आदमी को ऊँचे सफरे पर बैठने के लिए चुन लिया जाय।"

"ओ ! आओ डोमन भाई ! तुम अपने टोले से किसको पंच चुनते हो ? बोलो ! तुम्हीं आओ ! और रजकटोले से तो प्यारेलाल है ही। आओ, प्यारे !" कालीचरन प्यारे को अपने ही पास बिठलाता है।

"तो बात यह है कि," तहसीलदार-विश्वनाथप्रसादजी सुपारी कतरते हुए कहते हैं, "जमाना बहुत खराब आ रहा है। जो लोग अखबार-गजट पढ़ते हैं, वही जानते हैं कि कितना खराब जमाना आ रहा है। ···बंगाल की तरह अकाल फैलेगा। बंगाल के अकाल के बारे में नहीं जानते ?··· अरे, चरवाहा सब गाता है, सुने नहीं हो—

बड़ जुलुम कइलक अकलवा रे
बंगाला मुलुकवा में।
चार करोड़ अदमी मरल···

"···पूछो कालीचरन से, बालदेव भी कहेगा कि बंगाल के अकाल जैसा अकाल कभी पड़ा ?···उम्र ज्यादा होने से क्या हुआ ? जो लोग अखबार नहीं पढ़ते हैं, वे दुनिया की बातों से वाकिफ कैसे हो सकते हैं ? मैं ही पहले से यदि कर-कचहरी, कटिहार-पूर्णिया नहीं जाता तो कूपमंडूक रहता। कुएँ का बेंग ! ···देखो, सरकार सभी धानवालों से धान वसूल रही है। क्यों ? सरकार को पूरा डर है कि अकाल फैलेगा। इसलिए अपने हाथ में बेर-बखत के लिए पूरा स्टौक रखना जरूरी है। अरे, तुमको तो तीन आदमी की फिक्र करनी पड़ती है तो साल-भर बाप-बाप चिल्लाते हो, कभी इन्द्र भगवान् से पानी माँगते हो, सूरज भगवान् से धूप उगाने के लिए कहते हो, नौकरी करते हो, कर्ज लेते हो ! और जिसको समूचा

भारथवरश हिन्दुस्थान की फिक्र करनी पड़तीहै, उसकी क्या हालत होती होगी ? अभी तुरत ही तो सभी लाडर जेहल से निकले हैं; तुरत मिनिस्टरी लिया है। यदि अकाल पड़ गया तो जो सुराज मिलने वाला है, वह नहीं मिलेगा। यदि मिलेगा भी तो उसकी सारी ताकत तो लोगों को खिलाने में ही लग जायगी। इसलिए हम लोगों को धरती से ज्यादा अन्न उपजाना चाहिए।" अभी मान लो कि कर-कचहरी, फर-फौजदारी करके तुम खेत पर दफा १४४ लगा देते हो, फिर १४५ होगा, इससे जमीन में धान तो रोपा नहीं जायगा ! खेत परती रहेगा और अन्न होगा नहीं। इसके बाद मालिक लोगों से ही यदि धान मांगोगे तो कहाँ से देंगे मालिक लोग ? अपने खर्च के लायक धान मालिकों के पास होगा नहीं और सरकार वसूल करेगी लाठी के हाथ से, कानून से। बड़े मालिकों के बखारों में भी चमगादड़ झूलेंगे।"'तो हमारा यही कहना है कि सभी भाई आपस में विचार कर, मिलकर देखो कि किस काम में भलाई है !"

"'ओ ! तो यह पंचायत सिरफ बेजमीन वालों को ही सीख देने के लिए बैठाई गई है !"'चुप रहो ! तहसीलदार जो कह रहे हैं, नहीं समझ रहे हो। पक्की बात कहते हैं तहसीलदार !"'काबिल आदमी हैं। अरे, आज ही यह कालीचरन और बालदेव आया है न ! पहले तो हम लोगों के आँख-कान यही थे। इन्हीं के यहाँ बैठकर गजट में सुना था कि नेताजी सिंघापूर में पुसुप बिमान पर आ गए हैं।"'तहसीलदार ठीक कहते हैं।

"तहसीलदार बाबू ! माये बाप,"'आप ठीक ही कहते हैं। अब आप ही कोई रास्ता बताइए।"

"हाँ हाँ, तहसीलदार काका आप ही जो कहिए।"

"ठीक है ! "'क्या कालीचरनजी ?" तहसीलदार हरगौरी हँसकर पूछता है।

कालीचरन को 'जी' कहते हैं हरगौरी बाबू भी !

"ठीक है। ठीक है। तहसीलदार साहब ठीक कहते हैं।"

"'तो भाई, हम तो हिन्दुस्थान, भारथवरश की बात नहीं जानते।

हम अपने गाँव की बात जानते हैं। आप भला तो जग भला ! हम तो इसीमें गाँव का कल्याण देखते हैं कि सभी भाई, क्या गरीब, क्या अमीर, सब भाई मिलकर एकता से रहें। न कोई जमीन छुड़ावे और न कोई गलत दावा करे। जैसे पहले जोतते आबादते थे, आबाद करें, बाँट दें। न रसीद माँगें, न नकदी के लिए दरखास्त दें।···दोनों को समझना होगा। ···क्यों हरगौरी बाबू ! सुनते हो तो ? अपने मैनेजर से जाकर कह देना कि हुजूर अब भी होश करें। यदि इस तरह रैयतों के साथ दुश्मनी करेंगे, कम-से-कम हमारे यहाँ के रैयतों से, तो फिर बात बिगड़ जायगी।··· सभी बात तो हमारे ही हाथ में है। हम अभी गवाही दे दें, कि हाँ हुजूर आली, यह सब फर्जी काम हम से करवाया गया है, और कुल कागज-पत्तर, चिट्ठी-चपाटी, रुक्का-परवाना दिखला दें तो बस खोप सहित कबूतर-राय नमः···।"

हें-हें हो-हो !···पंचायत के सभी लोग मुक्त अट्टहास कर उठते हैं।

"अरे तो, किस खानदान का तहसीलदार है, यह भी तो देखना चाहिए !" सिंघजी हँसते हुए कहते हैं।

"महारानी चम्पावती···"

हो हो हो हो,···हँसी का दूसरा वेग, सैकड़ों सरल हृदय इन्सानों को गुदगुदी लगाता है।

"अच्छा ! अच्छा ! अब काम की बात हो।···सुनो कालीचरन बेटा! लीडर बने हो तो बड़ा अच्छा काम है बाबू गाँव का नाम तो इसी में है। कोई सोशलिस्ट का लीडर है, तो कोई काँगरेस का, तो कोई काली टोपी का। लेकिन देख लो भैया, हम गाँव के सभी लौंडों के अकेले मालिक हैं। यदि गाँवमें इधर-उधर कुछ किये तो पीठ की चमड़ी भी उधेड़ लें।···खेलावन ! जोतखीजी ! आप ही लोग कहिए, जो लौंडे हमको कहते हैं काका, मामा, भैया, फूफा, उन लड़कों की गलती पर यदि हम कान पकड़कर मल दें या दो कड़ी बात कह दें तो हमको कोई दोख देगा ?"

"नहीं, नहीं। आप वाजिब बात कहते हैं।"

"हम गाँव से बाहर थोड़े ही हैं। लेकिन एक बात हम भी पहले ही कह देते हैं। अभी आप जैसा करने के लिए कहते हैं, हम लोग करें। बाद में फिर हमारी गर्दन पर छुरी चले तब ?" कालीचरन कहता है।

"इसका जिम्मा हम लेते हैं। अरे, हमने कहा न कि सभी खेला मेरे हाथ में है।"

"तो ठीक है। हम गाँव से बाहर थोड़े हैं।"

"ठीक बात ! ठीक बात !"

"लेकिन सभी भाई सुन लीजिए। यदि गाँव के बाहर का कोई बाहरी हम पर हमला करे तो इसका मुकाबला सभी को मिलकर करना होगा। हाँ, यदि बाहर वाले इस गाँव के जमीन वालों पर हमला करें तो सबों को सहायता करनी होगी।···गाँव की जमीन गाँव में रहेगी। बाहर वाले क्यों लेंगे, समझे ?"

"हाँ-हाँ, ठीक है। ठीक है। बहुत रात हो गई। आसमान में बादल उमड़ आए हैं। बरसा होगी।···दुहाई इन्द्र महाराज ! बरसो बरसो !"

हर साल बरसात के मौसम में यही होता है। भगवान् के हाथ की बात इन्सान क्या जानें ! इन्द्र भगवान् से प्रार्थना की जाती है—बरसाओ ! हे इन्द्र महाराज !···जरा भी आसमान के किसी कोने में काले बादलों का जमाव हुआ, बिजली चमकी, कि 'बरसो' 'बरसो' की पुकार घर-घर से सुनाई पड़ती है। जमीन वालों, बेजमीनों, सबों की रोजी रोटी का प्रश्न है। और यदि लगातार पाँच दिनों तक घनघोर बरसा हुई और खेतों के आल डूबे कि '···जरा एक सप्ताह सबुर करो महाराज !'

इन्द्र महाराज की खुशी ! यदि उनका मिजाज अच्छा रहा तो प्रार्थना पर विचार कर एक सप्ताह सब्र कर गए। मौके से बरसा होती गई, धूप भी उगती रही तो फिर धान रखने की जगह नहीं मिलेगी। 'मूसिन पूछे मूस से कहाँ के रखब धान'[1] ! ·· तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद के पास डाक वचनामृत, भविष्यफल और खनावचन है। पंजिका से हिसाब निकाल-

१. धाघ की एक सूक्ति।

कर बता देंगे कि यह पक्ष सूखेगा या झरेगा।···नक्षत्रों की गणना में यदि स्त्री-स्त्री का संयोग हुआ तो शून्य, यदि पुरुष-पुरुष संयोग निकला तो शून्य। एक बूंद भी बरसा नहीं होगी, चिल्लाने से क्या होगा ?···

···ततमाटोला, पासवानटोला, धानुक-कुर्मीटोला तथा कोयरीटोला की औरतें हर साल ऐसे समय में इन्द्र महाराज को रिझाने के लिए, बादल को सरसाने के लिए, 'जाट-जट्टिन' खेलती हैं।

आज भी 'जाट-जट्टिन' का आयोजन है। कल तो पिछयारीटोले की औरतों ने किया था। बादल का एक टुकड़ा थोड़ी देर के लिए आकर चाँद को ढँक गया था। आज पुरनिमाँ है। कल से यदि बरखा नहीं हुई तो सारा पख सूखा रहेगा। ···ततमाटोली की औरतों ने बाबूटोला की औरतों को निमन्त्रण दिया है—"एक साथ सब मिलकर जाट-जट्टिन खेलें, जरूर बरखा होगी।"

गुआरटोली और कायस्तटोली के बीच में जो पन्द्रह रस्सी मैदान खाली है, उसी में औरतें जमा हुई हैं।

···जाट के पास हजारों-हजार भैंसें हैं। वह उन्हें चराने के लिए कोशी के किनारे जाता है। जट्टिन घर में रहती है; दूध, घी और दही की बिक्री करती है, हिसाब रखती है।···सास या पति से झगड़कर, रूठ कर जट्टिन नैहर चली गई। जाट उसे ढूंढ़ने जा रहा है। जट्टिन बड़ी सुन्दरी थी, उसकी सुन्दरता की चारों ओर चर्चा होती थी।

सुनरी हमर जटिनियाँ हो बाबूजी,
पातरी बाँस के छौंकिनियाँ हो बाबूजी,
गोरी हमर जटिनियाँ हो बाबूजी,
चाननी रात के इंजोरिया हो बाबूजी !
नान्हीं-नान्हीं दँतवा, पातर ठोरवा···
छटके जैसन बिजलिया··· !

इसलिए जाट को गाँव के हरेक मालिक, नायक या मंडल पर सन्देह।···जट्टिन नैहर नहीं जा सकेगी, किसी ने जरूर उसे अपने घर में रख

लिया होगा।···रास्ते में कितने गांव हैं, कितनी नदियां हैं, कितने घाट हैं और घटवार हैं। वह रास्ते के हर गांव के मालिक, मड़र[1] और नायक के यहां जाता है :

नायकजी हो नायक हो,
खोले देहो किवड़िया हो नायकजी,
ढूंढ़े देहो जटिनियां हो नायकजी···

जट्टिन बनी है रमपियरिया, और जाट बनी है कोयरीटोला की मखनी। मखनी ठीक मर्दों जैसी लगती है।

'जाट-जट्टिन' अभिनय के साथ और भी सामयिक अभिनय तथा व्यंग-नाट्य बीच-बीच में होते हैं।···फुलिया बनी है डॉक्टर। उसने कमल के फूल की डण्डी को किस तरह जोड़-तोड़कर डॉक्टर के गले में झूलने वाला आला बनाया है। सनिचरा का नया पैजामा मांग लाई है और विहुला नाचवालों के यहां से साहबी टोपा और कोट मांग लाई है।

"ए मैन ! इदार आता हाए। बोलो क्या होता हाए !"

"हुजूर ! थोड़ा सिर दुखता है, थोड़ा आंख भी दुखता है, थोड़ा कान भी दरद करता है और कलेजा भी धुकधुक करता है। सर्दी भी होता है, गर्मी भी लगता है। भूख नहीं लगता है और जब भूख लगता है तो खाना नहीं मिलता है।"·· रोगी बनी है धानुकटोले की सुरती ! खूब बात जोड़ती है·· हा हूँ हूं हूं हूँ !···

"अरे बाप रे बाप ! ऐसा बेमारी तो कभी नाहीं देखा। तुम्मारा नेबज देखे ! (देखकर) उँहू ! तुम नेही बचेगा। तुमारा बेमारी को कीड़ा हो गया। ····ज़कसैन लगेगा।"

दूसरी रोगिनी आती है— कुमीटोले की तरावली।

"ऐ औरत ! तुमको क्या हुआ ?"

"हमरा दिल दकदक करता है।"

"अरे बाप ! यहां तो सबों का दिल धकधक करता हाए। अमारा भी

१. मंडल, मालिक।

दिल धकधक करने लगा !"

डॉक्टर और रोगिनी दोनों डरते हुए एक दूसरे को बाँहों में पकड़ लेती हैं—दिल धकधक, दिल दकदक !

···औरतों की मंडली हँसते-हँसते लोटपोट हो जाती है। बूढ़ियों की खाँसी उभर आती है। हो हो हो खों खों, अक्खों !····खूब किया !

मर्दों को 'जाट-जट्टिन' देखने का एकदम हक नहीं है। यदि यह मालूम हो गया कि किसी ने छिपकर भी देखा है तो दूसरे ही दिन पंचायत में चली जायगी बात ! ····जिसको मूँछें नहीं उगी हैं, वह देख सकता है।

अन्त में औरतें मिलकर हल जोतती हैं। हल और बैल किसी का ले आती हैं और जोतते समय गाँव के बड़े-बड़े किसानों को गाली देती हैं—"अरे बिस्नाथ तहसीलदरवा ! जल्दी पानी ला रे ! पियास से मर रहे हैं रे !"

"अरे.! सिघवा सिपैहिया रे ! पानी लाओ रे !"

"अरे रमखेलोना रे !···पानी ला रे !"

···इस गाली को कोई बुरा नहीं मानते। बल्कि किसी बड़े किसान का नाम छूट जाय तो उसे तकलीफ होती है। ···बहुत दुख होता है।

इस बार डाक्टर को भी गाली दी जाती है— "अरे डकटरवा रे ! ···अरे परसन्तो रे; जल्दी से बोतल में पानी लेके आ रे !···"

हो हो हा हा···

आसमान में काले बादल घुमड़ रहे हैं।···बिजली भी चमक रही है।

अड़तीस

दो दिन से बदली छाई हुई है। आसमान कभी साफ नहीं होता। दो-तीन घंटों के लिए बरसा रुकी, बूंदा-बांदी हुई, फिर फुहिया। एक छोटा-सा सफेद बादल का टुकड़ा भी यदि नीचे की ओर आ गया तो हरहराकर

बरसा होने लगती है। आसाढ़ के बादल···!

रात में मेढकों की टरटराहट के साथ असंख्य कीट-पतंगों की आवाज शून्य में एक अटूट रागिनी बजा रही है—टर्र ! मेंक् टर्रर्र···मैंकू!···झि झि चि···किर किर्र····सिं, किटिर-किटिर ! झि···टर्र···।

कोठारिन लछमी दासिन को नींद नहीं आ रही है; चित्त बड़ा चंचल है। रह-रहकर ऐसा लगता है कि उसके शरीर पर कोई पतंगा घुरघुरा रहा है। वह रह-रहकर उठती है, बिछावन झाड़ती है, कपड़े झाड़ती है। लेकिन वही सरसराहट···। वह लालटेन की रोशनी तेज कर बीजक लेकर बैठ जाती है—

जाना नहिं बूझा नहिं
समुझि किया नहीं गौन !
अंधे को अंधा मिला
राह बतावे कौन ?

कौन राह बतावे ? नहीं, उसने बालदेवजी को जाना है, अच्छी तरह पहचाना है।···महंथ सेवादासजी कहते थे—'लछमी ! बालदेव साधु पुरुष है।' ···लेकिन बालदेवजी तो इतने लाजुक हैं कि कभी एकान्त में बात करना चाहो तो थरथर काँपने लगें; चेहरा लाल हो जाय। लाज से या डर से ?···लेकिन बिरहबाण से घायल लछमी का मन सिसक-सिसक-कर रह जाता है।

बिरह बाण जिहि लागिया
ओषध लगै न ताहि।
सुसकि सुसकि मरिमरि जिवै,
उठै कराहि कराहि !

किन्तु बालदेवजी को क्या पता ! ···लछमी क्या करे ?

···टर्र-र-मेंक, मेंक, झी···ई···टिक टिक—झी रिं !···

नहीं। लछमी अब नहीं सह सकेगी। वह बालदेवजी के पास जायगी। मसहरी नहीं है बालदेवजी को ! मच्छर काटता होगा। ···नहीं। वह

नहीं जायगी। वह क्यों जायगी ?···

पानी प्यावत क्या फिरो
घर घर सायर वारि,
तृषावन्त जो होयगा,
पीवेगा झख मारि !···

रामदास—महंथ रामदास अब लछमी से बहुत कम बोलते हैं। वे नाम के महंथ हैं। वे कुछ नहीं जानते, कुछ नहीं समझते। उन्हें कुछ भी नहीं मालूम। कितनी आमदनी और कितना खर्च होता है—उनको क्या पता ? बीस से ज्यादा तो गिनना नहीं जानते। कोड़ी का हिसाब जानते हैं।···रामदासजी समझ गए हैं कि यदि लछमी मठ को एक दिन के लिए भी छोड़ दे तो रामदास के लिए यहाँ टिका रहना मुश्किल होगा। लछमी जादू-मन्तर जानती है। क्या कागज-पत्तर, क्या खेती-बारी और क्या हाकिम-महाजन, सभी में वह अव्वल है। महंथ रामदासजी समझ गए हैं कि यदि इज्जत के साथ बैठकर दूध-मलाई भोग करना हो तो लछमी को जरा भी अप्रसन्न नहीं किया जाय।···तन का ताप मन को चंचल तो करता है, लेकिन क्या किया जाय ! ···यदि एक दासिन रखने का हुकुम लछमी दे-दे तो··· !

गड़गड़ाम···गड़गड़··· बादल घुमड़ा। बिजली चमकी और हरहराकर बरसा होने लगी।

हाँ, अब कल से धनरोपनी शुरू होगी।···जै, इन्दर महाराज बरसो, बरसो !·· लेकिन बीचड़[1] के लिए धान कहाँ से मिलेगा ? आज तो पंचायत में सभी बड़े मालिक लोग बड़ी-बड़ी बात बोलते थे, कल ही देखना कैसी बात करते हैं···अपने खर्चा के जोग ही धान नहीं है', 'बीहन नहीं है' अथवा 'पहले हमको बोने दो'।

गड़गड़ाम···गुड़ुम !

"बीहन का धान मालिकों को देना होगा। हमेशा देते आये हैं, इस

१. बीहन धान, धान का छोटा पौधा।

बार क्यों नहीं देंगे ?" कालीचरन आफिस में सोये, अधसोये और लेटे लोगों से कहता है, "और बार दूना लेते थे, दौहन का दूना, इस बार सौ सब नहीं चलेगा। यदि तहसीलदार मामा ने ऐसा प्रबन्ध नहीं किया तो फिर···संघर्ष।"

बिजली चमकती है। बादल झूम-झूमकर बरस रहे हैं।

मँगला अब कालीचरन के आँगन में रहती है। कालीचरन की माँ अन्धी है। कालीचरन की एक बेवा अधेड़ फूफू है। मँगला की मीठी बोली सुनकर कालीचरन की माँ की आँखें सजल हो उठती हैं और फूफू की आँखें लाल! जब-जब बिजली चमकती है, पछवरिया घर के ओसारे पर सोई फूफू पुअरिया घर की ओर देखती है। आदमी की छाया ?·· नहीं। बाँस है।···पुअरिया घर में सोई मँगला भी जगी है। बादलों के गरजने और बिजली के चमकने से उसे बड़ा डर लगता है। बचपन में ही वह बादल, बिजली और आँधी से डरती है। और यहाँ की बरसा तो···। फिर बिजली चमकी। "कौन···?" मँगला फुसफुसाकर पूछती है, "कौन ?"

भीगे हुए पैरों के छाप बिजली की चमक में स्पष्ट दिखाई देते हैं।

सोनाई यादव अपनी झोंपड़ी में बारहमासा का तान छेड़ देता है :

एहि प्रीति कारन सेत बाँधल,
सिया उदेस मिरी राम हे।
सावन हे सखी, सबद सुहावन,
रिमिझिमि बरसत मेघ हें !··

रिमिझिमि बरसत मेघ !···कमली को डॉक्टर की याद आ रही है। कहीं खिड़कियाँ खुली न हों। खिड़की के पास ही डॉक्टर सोता है। बिछावन भीग गया होगा। कल से बुखार है। सर्दी लग गई है।···न जाने डॉक्टर को क्या हो गया है ?···कहीं मौसी सचमुच में डायन तो नहीं ? डॉक्टर को बादल बड़े अच्छे लगते हैं। कल कह रहा था—'मैं वर्षा में दौड़-दौड़कर नहाना चाहता हूँ।'

छररर !छररर ! ···बादल मानो धरती पर उतरकर दौड़ रहे हैं। छहर···छहर···छरर !

बिरसा माँझी अब लेटा नहीं रह सकता।···परसों गाँव वालोंने मिटिंग किया है—बाहरी आदमी यदि चढ़ाई करे तो सब मिलकर मुकाबला करेंगे। कालीचरन भी था और बालदेव भी !···संथाल बाहरी लोग हैं।

तहसीलदार हरगौरी का सिपाही आज जमीन सब देख रहा था—अगता भदै धान पक गया है। काटेंगे क्या ? किस खेत में कौन धान बोयेंगे ? तो क्या सचमुच में संथालों की जमीन छुड़ा लेंगे तहसीलदार ? जमींदारी प्रथा खतम हुई, लेकिन तहसीलदार जमीन से बेदखल कर रहा है।···बात समझ में नहीं आ रही है।···क्या होगा ? कल ही देखना है। जमीन पर हल लेकर आवेगा तहसीलदार, भदै धान काटने आवेगा, तब देखा जायगा। पहले से क्या सोच-फिकर ?···वह अब लेटा नहीं रह सकता। ···लेटे-ही-लेटे मादल पर वह हाथ फेरता है—रिं रिं ता धिन ता।

गुड़गुड़ुम···गुड़ुम···गुड़ुम !

बिजलियाँ चमकती हैं !

कल बीचड़ मिलेगा या नहीं ?···बालदेवजी को मच्छर क्यों नहीं काटता है, कालीचरन की फूफी सोती क्यों नहीं, और डॉक्टर की खिड़की बन्द है या खुली, इसका जवाब तो कल मिलेगा। अभी जो यह सोनाय यादव बारहमासा अलाप रहा है, इसको क्या कहा जाय ?···गाँव घर में गाने की चीज नहीं बारहमासा। अजीब है यह सोनाय भी। कुमर-बिजैभान या लोरिक नहीं, बारहमासा ! खेत में रोपनी करते समय गाने वाला गीत बारहमासा ! धान के खेतों में पाँवों की छप-छप आवाज के साथ यह गीत इतना मनोहर लगता है कि आदमी सब-कुछ भूल जाय ! ···यह संथाल टोली में मांदर क्यों बजा रहा है, बेवजह, और जब यह सोनाय बारहमासा ! गा ही रहा है तो चार कड़ी सुनने दो बाबा ! बेताल का ताल बजा रहे हो ! बरसा की छपछपाहट और बादलों की घुमड़न में मांदर की आवाज स्पष्ट नहीं सुनाई पड़ती है, गनीमत है। ···ओ ! सोनाय

ने अब झूमर बारहमासा शुरू किया है—

अरे फागुन मास रे गवना मोरा होइत
कि पहिरू बसन्ती रंग हे,
बाट चलैत-आ केशिया संभारि बान्हू,
अँचरा हे पवन झरे हे ए ए ए !

डॉक्टर अब गाँव की भाषा समझता ही नहीं, बोलता भी है। ग्राम्य गीतों को सुनकर वह केस-हिस्ट्री लिखना भी भूल जाता है। गीतों का अर्थ शायद वह ज्यादा समझता है। सोनाय से भी ज़्यादा ? ···अँचरा हे पवन झरे हे !···आँचल उड़ि-उड़ि जाय !

···गाँव के और लोग कहेंगे कि रात में रह-रहकर वर्षा होती थी। आधा घण्टा बन्द, फिर झर-झर ! लेकिन डॉक्टर कहेगा, सारी रात बरसा होती रही; कभी बूंद रुकी नहीं। विशाल बड़ के तले, 'करकट टीन' के छप्पर वाले घर पर जो बूंदें पड़ती थीं ! कोठी के बाग में जो झरझराहट कभी बन्द नहीं हुई !···

तो सुबह हो गई।···सोनाय अब खेत में गीत गा रहा है। सोनाय अकेला नहीं है, सैकड़ों कण्ठों में एक-एक विरहिन मैथिला बैठी हुई कूक रही है—

आम जे कटहल, तूत जे बड़हल
नेबुआ अधिक सूरेब !
मास असाढ़ हो रामा ! पंथ जनि चढ़िह,
दूर ही से गरजत मेघ रे मेरो !

बाग में आम-कटहल, तूत और बड़हल के अलावा कागजी नीबू की डाली भी झुकी हुई है और दूर से मेघ भी गरजकर कह रहा है—आ पंथी ! अभी राह मत चलना !···लोग दूर के साथी को अपने पास बुलाते हैं, विरह में तड़पते हैं, मेघों के द्वारा सन्देश भेजते हैं और घर आया हुआ परदेशी बाहर लौट जाना चाहता है ? नहीं, नहीं !···बिजली की हर चमक पर मैं चौंक-चौंककर रह जाऊँगी। बादल जब गरजते हैं तो कलेजे की

धड़कन बढ़ जाती है।

अरे मास आ सा ढ़ हे ! गरजे घन
बिजूरी-ई चमके सखि हे ए ए !
मोहे तजी कंता जाये पर-देसा आ···आ···
कि उमड़ू कमला माई हे !
···है रे ! है रे !···

कमला में बाढ़ आ जाय तो कंत रुक जायँ। इसलिए कमला नदी को उमड़ने के लिए आमन्त्रित किया जाता है।···जिनके कंत परदेश से लौट आए हैं, उनकी खुशी का क्या पूछना ! झुलनी रागिनी उन्हीं सौभाग्यवतियों के हृदय के मिलनोच्छ्वास से झूम रही है खेतों में !

मास असाढ़ चढ़ल बरसाती
घर-घर सखी सब झूलनी लगाती
झूली गावे,
झूली गावति मंगलबानी
सावन सखि अलि हे मस्त जवानी···
देखो, देखो !
देखो-देखो सखि री वृजबाला
कहाँ गये जशोधाकुमार, नन्दलाला
···देखो, देखो !

घर का कंत कहीं गाँव में हा राह न भूल जाय ! ··देखो देखो, कहाँ गये ? किसी की झूलनी पर झूल तो नहीं रहे ?

"चाय !"

"कौन ? कमला !" डॉक्टर अकचका जाता है।

"हाँ, चमकते हो क्यों ? तुमको भी सूई का डर लगता है ? यह मीठी दवा नहीं, मीठी चाय है डॉक्टर साहब ! जब चाय पीकर ही जीना है तो आँख खुलते ही गर्म चाय की प्याली सामने रखने की जरूरत है।" कमला पास की कुर्सी पर बैठकर चाय बनाती है। प्यारू खड़ा-खड़ा मुस्करा रहा

है। ···प्यारू को इतना खुश बहुत कम बार देखा गया है।····अब समझें ! यह प्यारू नहीं कि हर बात में 'नहीं' कर टाल दिया।···चाय बनावें ? तो नहीं। अण्डा बनावें ? तो नहीं। खाना परोसें ? तो नहीं। ···अब समझें !'

उनतालीस

संथाल लोग गाँव के नहीं, बाहरी आदमी हैं ?

"····जरा विचारकर देखो। यही तो तंत्रिमा का सर्दार है···अच्छा तुम्हीं बंताओ जगरू, तुम लोग कौन ततमा हो ? मगहिया हो न ? अच्छा कहो, तुम्हारे दादा ही पच्छिम से आये और तुम्हारी बेटी तिरहुतिया तंत्रिमा के यहाँ ब्याही गई है। मगहिया चाल-चलन भूल गए, अब तिरहुतिया और मगहिया एक हो गए हो। लेकिन संथालों में भी कमार हैं, माँझी हैं; वे लोग अपने को यहाँ के कमार और माँझी में कभी खपा सके ? नहीं। वे तो हमेशा हम लोगों को ही छोटा कहते हैं। गाँव से बाहर रहते हैं।···कहो तो गाने किसी संथाल को, विदेशिया का गाना या एक कड़ी चैती ! कभी नहीं गावेगा। इस देश का दारू हरगिज नहीं पियेगा। जब पियेगा तो 'पँचाय' ही। समझो ! सोचो !" तहसीलदार साहब दरवाजे पर बैठे हुए बीहन लेने वालों से कहते हैं।···डेढ़ सौ से ज्यादा लोग हैं। कालीचरनजी भी हैं, वासुदेवजी और बालदेवजी भी हैं।

तहसीलदार साहेब एकदम ठीक कह रहे है।···नहीं भाई, जो भी कहो, तहसीलदार साहेब ही एक आदमी हैं जो कि गाँव की भलाई-बुराई की बात समझते हैं।···ठीक कहते हैं तहसीलदार साहेब। एकदम से 'फाटक खोल' हुकुम दे दिये हैं, "कोई बात नहीं। इस बार तुम लोगों को सन्देह क्यों हुआ ? अधियादार लोग तो बीहन के वाजिब हकदार हैं। और जो लोग मेरे अधिया नहीं हैं, उन्हीं से पूछो कि किसी साल हमने

लोटाया है किसी को ? तब बात यह है कि पिछले साल जैसी उपज हुई थी सो तो देखा ही हुआ है। तिस पर पेडीलाभी[1] कानून का देना अभी बाकी है। बहुत कोशिश-पैरवी करके किसी तरह एक सौ मन कराया है। हरगौरी बाबू की किरपा से तो पाँच सौ मन लग गया था। इनसे शायद दारोगा साहेब ने पूछा और इन्होंने बता दिया कि पाँच हजार मन धान होता है। वह तो याना काँग्रेस के सिकरेटरी ने कितनी कोशिश करके इसको एक सौ मन बनाया है।"···कल हरगौरी बाबू से पूछ रहे थे कि कहिए बाबू हरगौरीजी ! यदि पाँच सौ मन धान अभी दे देते तो गाँव वालों को बीहन और खर्चा कहाँ से मिलता ? तहसीलदार होने से ही नहीं होता है···।

ठीक बात ! ठीक बात!···वाजिब कहते हैं तहसीलदार साहेब।

·· कालीचरन के मन में बहुत से सवाल आते हैं, पर वह नहीं पूछेगा। उस दिन सिकरेटरी साहेब ने साफ कह दिया कि 'कॉमरेड, अभी संघर्ष मत छेड़ो। सबसे पहले अभी किसी एक इलाके में, एक एरिया लेकर इसको इसपारमिन[2] करेंगे तब इसके बाद और इलाके में इसके लिए हुकुम देंगे। सो भी संघर्ष से एक महीना पहले दरखास्त लेना होगा लोगों से, फिर इनकुआएरी, फिर ऐंजकूटी मिटि, तब जाकर राय निकलेगी कि संघर्ष करना चाहिए कि नहीं। मेल-माफत और पंचायत से अभी जो काम चले, चलाइए। कुछ दिनों के बाद तो पार्टी एकदम धावा बोल देगी।'

"हाँ, तहसीलदार साहेब ठीक कहते हैं।" कालीचरन भी कहता है। बालदेवजी भी कहते हैं।···बौनदास कहाँ है ? पुरैनियाँ से लौटकर नहीं आया है ?

हरगौरी बाबू भी अच्छी तरह समझ गए हैं कि काली टोपी वाले नौजवानों की लाठियों से ज्यादा खतरनाक हथियार है—कानूनी नुक्स ! तहसीलदार त्रिभवनारायणप्रसाद इसके माहिर हैं। उनसे अभी वैर मोल

१. पैडो लेवी कानून।

२. एक्सपेरिमेंट।

लेना ठीक नहीं।

सिंघजी को हरगौरी की तहसीलदारी पर पूरा भरोसा था, काली टोपी वाले संयोजकजी पर पूरा विश्वास था।···लेकिन तहसीलदार विश्वनाथ ने तो कानून की ऐसी लकड़ी लगाई है कि भूमिहार भी मात! राजपूत का बल्लम-बर्छा उसके आगे क्या करेगा?···ऊपर से कितना हँसमुख और कितना मीठबोलिया है तहसीलदार विसवनाथ, लेकिन पेट में जिलेबी का चक्कर है। राज का नया सरकिल मैनेजर दाँतों तले उँगली दबाता है। ऐसा कानूनची आदमी!·· कहा, इस्तीफा दे दो। इसीलिए तड़ाक से दे दिया। कागरेस का लीडर हो गया। हद है! इससे पार पाना मुश्किल है!

हरगौरी ने सिंघजी के नाम संथालटोली की पचीस एकड़ जमीन बेनामी करवाई है, जिसमें से दो एकड़ सिंघजी को मिलेगी।···

सेलावन ने भी पाँच बीघा संथालटोली की बन्दोबस्त ली है।

बेतार का खबर सुमरितदास कोयरीटोले वालों से कहता है, "यदि हरगौरी तहसीलदार ने तहसीलदार बिसनाथपरसाद के नाम दो सौ बीघे और मेरे नाम से पचास बीघे की लिखा-पढ़ा नहीं की तो फिर देख लेना! हाँ, कायस्त हैं, खेल नहीं।"

सुमरितदास बेतार अब फिर तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद के साथ है। अब तो जैसे हरगौरी तहसीलदार वैसे विश्वनाथ तहसीलदार। लेकिन शर्त यही है···।

संथालों को सब मालूम है!

अभी बालदेवजी, बावनदासजी और कालीचरनजी सब एक हो गए। संथाल लोग अच्छी तरह जानते हैं, कोई साथ देने वाला नहीं। धरमपुर में देखा नहीं? ऐसा ही हुआ। इसीलिए बड़े-बूढ़े ठीक कह गए हैं—यहाँ के लोगों का विसवास मत करना। जब जिससे जो फायदा हो ले लेना, मगर किसी के साथ मत होना। संथाल संथाल है और दिक्कू दिक्कू[1]। पँचाय देह को पत्थल की तरह मजबूत बनाता है और पीकर देखो यहाँ का दारू, पत्थल

१. संथाल लोग गैर-संथाल को दिक्कू कहते हैं।

को गला देगा। हरगिज नहीं। दिवकू आदमी, भट्ठी का दारू, इसका विसवास नहीं।···अरे, तीर तो है! यही सब से बड़ा साथी है। साथी साथ छोड़ सकता है, तीर कभी चूकता नहीं···।

चुनका मांझी क्या बोलता है ?···डॉक्टर से क्या पूछने गया था ? पूछना चाहिए था कालीचरन से, बालदेवजी से, तहसीलदार साहेब से।

बालदेव और कालीचरन लोगों को धान दिला रहे हैं, तहसीलदार से।

"डॉक्टर ने कहा कि तुम लोग ही जमीन के असल मालिक हो। कानून है, जिसने तीन साल तक जमीन को जोता-बोया है, जमीन उसी की होगा।"

"डॉक्टर ने कहा है ?"

डॉक्टर ने ?···सनियाँ मुरमुर हँसती है—हँ हँ हँ हँ! "डॉक्टर हम लोगों का नाच देखना चाहता है। रोज टोकता है। हँ हँ हँ!"

जवान जोगिया मांझी तीर के पूंछ पर जंगली हंस के परों को बांधते हुए कहता है, "डॉक्टर ने एक खरगोस का दाम दिया था दस रुपैया। बारह रुपैया दर्जन चूहा।" दो सियार के बच्चों का दाम पचास रुपैया। दे सकता है कोई बड़ा आदमी इतना दाम ?···सरकारी आदमी है, मगर घूसखोर नहीं।"

कालीचरन को एकान्त में कहती है मंगलादेवी। एकदम अनुनय करके कहती है, "काली, तुम मत जाना। संथाल लोग नहीं मानेंगे; जरूर तीर चलावेंगे। मैं जानती हूँ। तुम नहीं जानते काली बाबू, ये लोग कैसे होते हैं। उनकी सूरतें भ्रम में डालने वाली हैं। देखने से पता चलेगा कि बहुत सीधे हैं, मगर···। तुम मत जाना काली, तुम्हें मेरे सिर की कसम!"

ठीक ही तो है, जो लोग सरगना मेम्बर हैं, वे क्यों जायँगे!

···वासुदेव, सुनरा और सनिचर भी नहीं जायगा!

···हाँ, प्यारे भी नहीं जायँगे।

···सोमा जट जायगा ?···जाने दो, वह मेम्बर नहीं है।

बालदेवजी तो ऐसी जगह जायँगे ही नहीं। वहाँ हिंसा का भय है; वे

नहीं जा सकते।···तहसीलदार साहेब लीडर हुए हैं, खुद जायँ या लठैतों को भेजें। हिंसा करें या अहिंसा करें। बालदेवजी तो सिर्फ चवन्निया मेम्बर हैं। बावनदास यदि रहता तो अभी अकेले सबको, मय तहसीलदार विसनाथ के कानून के, मात कर देता। लेकिन उसका भी दिमाग खराब हो गया है। सात दिन हुए चिट्ठी लिखाने गया है, सो लौटा नहीं है। गांधीजी को चिट्ठी देगा।···गांधीजी को इतनी फुर्सत कहाँ है बाबा, जो तुमको जवाब देंगे?···लेकिन नहीं, बावन ने बहुत बार चिट्ठी लिखवाई है और हर बार जवाब आया है—'भाई बावनदासजी, आपका खत मिला।' उस बार ससांकजी सबको पढ़कर सुना रहे थे—महात्माजी ने बावनदास को परनाम लिखा है।···बावनदास को महात्माजी भी 'भगवान्' कहते थे।···बावन जरूर अवतारी आदमी है। वह ठीक कहता था—भारथमाता और भी जार-बेजार रो रही है!

"मैया रे मैया! बाबा हो बाबा!···"

कौन रोती है?···कौन? रमपियरिया रोती है, उसके भाई गनोरी को तीर लग गया? कहाँ लगा? किसने मारा? ···संथालों ने? कहाँ? लोग भागे क्यों आ रहे हैं?···

गाँव में कुत्ते भूंक रहे हैं। कौए कांव-कांव कर रहे हैं।···जोतखी काका ठीक कहते थे—गाँव में चील-काग उड़ेगा।

·· "हँसेरी! बलवा! लाठी निकाल रे!"

"कहाँ हँसेरी?"

"भाला निकालो रे!"

"कहाँ हँसेरी? कैसा बलवा? क्या बात है?"

"संथाल लोग तहसीलदार विस्नाथपरसाद के चालीस बीघा वाले बीहन के खेत में बीहन लूट रहे हैं।"

"नई बन्दोबस्ती वाली जमीन में?"

"नहीं भाई, अपनी खास जमीन में, कोठी के पास वाली जमीन में, ···लाठी निकालो।"

"गनोरी ने हल्ला किया; तीर छोड़ दिया। जांघ में लगा है तीर। लहू की नदी बह रही है।···बेहोस है। इसपिताल में टांगकर लाया गया है।···संथाल लोग बेखौफ धान का बीचड़ उखाड़ रहे हैं।"

चलो! चलो! मारो!···साला संथाल! बाहरी आदमी!···जान जाय तो जाय। तहसीलदार विस्नाथपरसाद की ही जमीन पर धावा किया है? ···चलो रे!···

···भौं भौं भूं ऊँ ऊँ! कुत्ते परेशान हैं भूंकते-भूंकते।

···रिंग रिंग रिंग रिंग!

···डा डा डा डा डा डा···

संथालों के डिग्गा और मादल एक स्वर में बोल उठे—रिंग रिंग रिंग रिंग रिंग! डा डा डा डा!

आज रिंग रिंग ता घिन ता अथवा डा डिग्गा डा डिग्गा नहीं, सिर्फ रिंग रिंग रिंग रिंग ··, डा डा डा डा···! यह खेत में बजा रहा है, संथालिनों को सचेत कर रहा है, तुम लोग भी तैयार रहो···डा डा डा डा! ···संथालिनें जवाब देती हैं—रिं रिं रिं रिं! अर्थात्, तैयार हैं, जूड़े में फूल खोंसने में बस जितनी देर लगे!···तैयार है!···

"जै काली माई की जै!" दो सौ गलों की आवाज सुनकर कालीथान के बड़गाछ पर बैठे हुए कौए एक ही साथ कांव-कांव कर उड़ते हैं। कुत्ते और भी जोर से भूंकने लगते है।

"जै! काली माई की जै!"

"महात्मा गांधी की जै!"

"इनकिलास जिन्दाबाद!"

"भारथमाता की जै!"

'सोशलिट पाटी जिन्दाबाद!"

"झंडा हिन्दू राज का!"

"हिन्दू राज की जै!"

"तहसीलदार विस्नाथपरसाद की जै!"

"बालदेवजी की जै !"

घेर लो चारों ओर से ! भागने न पावें !···हो हो हो हो हो !···

अब नारा नहीं । सिर्फ हो हो हो हो !

···"घेर । घेर ।···मारो । हो हो हो !"

"तीर चला रहा है । लेट जाओ । ···तीर चलाओ !"

"मारो ! गुलेटा चलाओ ।"

"बिरसा माँझी भागा जा रहा है, मारो भाला !"

···बिरसा पानी में गिर पड़ा—छप् ! भाला लग गया ।

···मुखानू को क्या हुआ ? तीर लग गया, कलेजे में ?

संथालिनें भी तीर चलाती हैं ?

बच्चे भी ?

"बिरसा माँझी गिर पड़ल रे !" डा डा डा डा डा !

···रिं रिं रिं रिं ! "···गिरने दो । तुम भी गिरो !"

"बैठ के तीर चला सोनिया !"

"सुखी मुरमू गिरल रे !" डा डा डा डा !

"गिरने दो !···तुम भी गिरो ।" ···रिं रिं !

"जगारी बेटा, ठीक निसाना लगा बेटा । हरगौरी तहसीलदार के कलेजे पर ! हाँ ! वाह बेटा !"

···डा डा डा डा ! "···हरगौरी तहसीलदार गिरल रे !"

"गिरने दो !" ···रिं रिं रिं रिं !

···तहसीलदार ? हरगौरी तहसीलदार गिर पड़ा ?···भागो मत । ऐ ! ऐ ! सुनो ! तुम लोगों को अपना माँ-बहन की कसम, गुरु-देवता की कसम, काली किरिया !···जो भागे वह दोगला !···संथालों के तीर खतम हो रहे है । अब घेर के मारो ।···मंगलदास को सँभालो । चलो ! जै, काली माई की जै !

"मारो भाला ! अरे बच्चा नहीं है, इसी ने तहसीलदार को मारा है ।"

"वाह बहादुर ! ठीक है ।···अब लगाओ गुलेटा उस बूढ़े को, साला

डिग्गा बजा रहा है।"

"भाग रहा है। साले सब भाग रहे हैं। घेरो! भागने न पावे! संथालिनें पाट के खेत में छिपी हुई हैं। घेर लो।"

···एकदम 'फिरी'! आजादी है, जो जी में आवे करो! लूटो, जबान बच्ची जो मिले। आजादी है। पाट का खेत है। कोई परवाह नहीं है। ···फांसी हो या कालापानी, छोड़ो मत।

संथालिनें भी रोती हैं, दर्द से छटपटाती हैं?·· चिल्ला-चिल्लाकर रोती हैं या गाती हैं?

···कुहराम मचा हुआ है पाट के खेतों में, कोठी के जंगल में। ··· कहां दो सौ आदमी और कहां दो दर्जन संथाल, डेढ़ दर्जन संथालिनें! सब ठंडा। ···सब ठंडा!

संथालटोली के चार आदमी ठंडे हुए, सात घायल हुए और एक लड़के की हालत खराब है। संथालिनें दुहरे दर्द से कराह रही हैं।···

तहसीलदार की हेंसेरी में दस ठंडे हुए, बारह बुरी तरह जख्मी हुए और तीस आदमी को मामूली घाव लगा है।

संथालटोली को लूट लिया गया। तहसीलदार हरगौरी की हालत बहुत खराब है, शायद नहीं बचेंगे।

चालीस

जोतखीजी ठीक कहते थे—गाँव में चील-काग उड़ेंगे और पुलिस दरोगा गली-गली में घूमेगा।

पुलिस-दरोगा, हवलदार और मलेटरी, चार हवागाड़ी में भरकर आए हैं। ···दुहाई माँ काली!

इसपी, कलक्टर, हाकिम अभी आने वाला है।

लहास!···लहास!···बाप रे—कौन कहता था कि अंगरेज बहादुर

का अब राज नहीं रहेगा ?

"तहसीलदार हरगौरी भी मर गए ?···एँ ! कोई घर से मत निकलो ! पाखाना पेसाब सब घर के ही अन्दर करो। घर से निकले कि गिरिफ्फ कर लेगा।···दुहाई काली माई !"

"बालदेवजी को दारोगा साहेब ने बुलाया है ? कलिया···कालीचरन-जी को भी ?···देखें, ये दोनों तो किसी से डरने वाले नहीं हैं, क्या होता है ? ···दो लीडर तो हैं।"

"ओ ! आप ही यहाँ के लीडर हैं ?" दारोगा साहब बालदेवजी से पूछते हैं। इसपिताल के फालतू घर में दारोगा साहब कचहरी लगाकर बैठे हैं। मलेटरी ने संथालों को गिरिफ्फ कर लाया है। जखमी, घायल, और बूढ़े-बच्चों को भी !···सबको गिरफ्तार किया है ? नहीं, जखमी लोगों की मरहम-पट्टी तो कल ही डॉक्टर साहब ने कर दी है। दो संथाल और चौदह गैर-संथाल घायलों को पुरैनियाँ के बड़े इसपिताल भेजा गया है। सबों की लहास भी चली गई है। सिंघजी, शिवशङ्करसिंह और हरेक टोला से दो-चार आदमी लहास के साथ गये हैं। न जाने कब लहास मिले ? उँह, चीर-फाड़कर मिलेगी ! हे भगवान् !···

बालदेवजी क्या जवाब दें ?···लीडर हैं। किसके लीडर ? संथालों के या गैर-संथालों के ? ···खखारकर गले को साफ करते हुए बालदेवजी के मुँह से बस वही पुराना जवाब निकलता है, जो उसने हरगौरी को दिया था, जिस दिन कलिया पगला गया था।

"नहीं हुजूर ! हम तो मूरख और गरीब ठहरे। मूरख आदमी, चाहे गरीब आदमी, कभी लीडर हुआ है हुजूर ?"

दारोगा साहब बालदेवजी को पास की कुर्सी पर बैठने को कहते है, "अरे हम आपको जानते हैं बालदेवजी, बैठिए !"

वासुदेव और सुन्दर एक दूसरे का मुँह देखते हैं।···कालीचरनजी को कुछ पूछा भी नहीं ?···लो, तहसीलदार साहब सँभाल लेते हैं।

"दारोगा साहब, यही हैं कालीचरन बाबू, यहाँ के सोशलिस्टों के

लीडर ! बड़े बहादुर हैं ! लेकिन सिर्फ बहादुर ही नहीं, मगज भी है !"

"ओ हो ! कालीचरनजी हैं ? आइए साहब, आप लोग तो साहब, क्या कहते हैं, जो न करवाइए।" दारोगा साहब मुँह में पान-ज़र्दा डालते हुए कहते हैं, "लेकिन यहाँ तो सुना कि आप लोगों ने बड़े दिमाग से काम लिया है। हमको तो सुबह आते ही सारी बातों का पता चल गया। तारीफ करने के काबिल ! वाह !···बैठिए।"

कालीचरन बैठते हुए कहता है, "देखिए दारोगा साहेब, यदि आपस की पंचायत से सारी बातों का फैसला हो जाय तो हम लोगों को पागल कुत्ते ने नहीं काटा है जो···"

"आपस की पंचायत से ? यह खूनी केस···?" दारोगा साहब का पान-भरा मुँह एक दम गोल हो जाता है।

"नहीं, यह नहीं, यही आधी बट्टेदारी का सवाल !"

"ओ !" दारोगा साहब ने पीक की कुल्ली फेंकते हुए कहा, "ओ ! सो तो ठीक है ! अरे आप ही हैं, सोशलिस्ट पार्टी वाले हैं। कहिए तो, जो काम पंचायत से या चार आदमी की राय से नहीं होगा, वह क्या कहते हैं, तूल-फजूल से हो सकता है ?"

"हिंसा के रास्ते पर तो हरगिज जाना ही नहीं चाहिए," बालदेवजी बहुत गम्भीर होकर कहते हैं।

"क्या कहते हैं !" दारोगा साहब बालदेवजी की बात में टीप का बन्द लगा देते हैं, "क्या कहते हैं !" दारोगा साहब बात करते समय हाथ खूब चमकाते हैं और कनखी भी मारते हैं।

बासुदेव और सुनरा एक दूसरे को देखते हैं—बालदेवजी जानते ही क्या हैं जो बोलेंगे। देखा, कालीचरनजी ने कैसा गटगटाकर जवाब दे दिया !

"हिंसा अहिंसा का सवाल नहीं है बालदेवजी, असल है बुद्धि ! यहीं पर हमारी पार्टी के कोई और कॉमरेड रहते तो हो सकता है, दूसरी बात होती। बुद्धि की बात है।" कालीचरन बालदेवजी को जवाब देता है।

कालीचरन और बालदेवजी ने दारोगाजी को दिखला दिया कि बुद्धि है ! उमेर देखकर मत भूलिए दारोगा साहब, अब वह बात नहीं है।

"अच्छा तो बालदेव बाबू, जब यह बकूआ हुआ तो, क्या कहते हैं, आप कहाँ थे ?" दारोगा साहब पूछते हैं।

बालदेवजी फिर खखारते हैं—"ह ख् जी ! हुजूर ! ···हम तो मठ पर थे। ···जी, बात यह है कि हम वैष्णव हैं। उस दिन हमको गुरुजी कंठी देने वाले थे। सुबह तो धान दिलाने में ही कट गई। पिछले पहर को हम जैसे ही कंठी लेकर उठे कि···ततमाटोली की रमपियरिया रोती हुई गई।"

"ओ ! आपको पहले से कुछ पता नहीं था ?" दारोगा साहब गम्भीर होकर पूछते हैं।

"जी ! उनको क्या, किसी को पता नहीं।" खेलावनसिंह यादव हिम्मत से काम लेते हैं। आखिर, दारोगा साहब के लिए इतना खाने का इन्तजाम भी तो वही कर रहे हैं। वह दारोगा साहब से क्यों नहीं बोलेंगे ? तहसीलदार साहब कुछ नहीं बोलते हैं।

"ओ ! खेलावनजी ! आइए, बैठिए !"

"ठीक है। हम यहीं हैं। ···जरा हुजूर जल्दी किया जाय ! उधर ठंडा हो जायगा।" खेलावनजी कहते हैं।

सिर्फ यहाँ के दोनों लीडर ही बुद्धि वाले नहीं। और लोग भी बुद्धि रखते हैं !···

"हुजूर ! हमारा लड़का अभी रहता तो हुजूर से अभी अंग्रेजी में बतिया लेता। रमैन के जैसी एक किताब है, लाल, मोटी···उसी में देख-कर वह आप से अंग्रेजी में बतिया लेता।" खेलावनसिंह यादव कहते हैं।

"अच्छा ? आपका लड़का अंग्रेजी बोल लेता है ?"

"हाँ, डागडर बाबू से बराबर अंग्रेजी में ही बोलता है।"

"मोकदमा का राय भी पढ़ लेता है," बालदेवजी कहते हैं।

"एड किलास में पढ़ता है," कालीचरनजी कहते हैं।

"अच्छा, आप कहाँ तक पढ़े हैं कालीचरनजी ?···कोई स्कूल में नहीं ?···वाह साहब, क्या कहते हैं, आपकी बोली सुनकर तो कोई नहीं कह सकता है कि आप जाहिल···। ओ ! पढ़-लिख लेते हैं, अखबार भी पढ़ लेते हैं ? वाह ! रमैन भी पढ़ते हैं ? महाभारत भी ? ओ, क्या कहते हैं कि···।"

"बालदेव भी 'अकबार' पढ़ता है," खेलावनसिंह यादव कहते हैं, "अकबार तो हम लोग भी पढ़ लेते हैं।···लेकिन बहुत झूठ बात लिखता है अकबार में। उस बार लिखा था कि एक औरत थी, सो कुछ दिनों के बाद मर्द हो गई। कहिए भला !"

"अच्छा तो कालीचरनजी, आप कहाँ थे, जब यह बकूआ हुआ ?" दारोगा साहब कमर के बेल्ट को खोलते हुए कहते हैं।

अगमू चौकीदार को डर होता है, कहीं दारोगाजी पेटी खोलकर मारना न शुरू कर दें बालदेव और कालीचरनजी को।·· जहाँ दारोगाजी पेटी खोलते हैं कि अगमू का चेहरा फक् हो जाता है। ···नहीं, ऐसा नहीं कर सकते हैं दारोगाजी !

"जी, मैं तो उसी दिन सुबह को धान दिलाकर, ठीक बारह बजे दिन में ही पुरैनियाँ चला गया था। तहसीलदार हरगो···तहसीलदार विस्नाथपरसादजी जानते हैं।"

"ओ ! आप पुरैनियाँ गये थे।" दारोगा साहब एक लम्बी साँस छोड़ते हैं।

"अच्छा, तो अब उस पहर को काम कीजिएगा दारोगा साहब !" तहसीलदार साहब कहते हैं।

"नहीं तहसीलदार साहब ! एस० पी० आने वाले हैं। हमको अभी सब काम खतम कर रखना है। गवाहों के इजहार ·"

"जी, कुछ असल गवाही, दो-तीन ले लीजिए। और सब बाद में। ···अरे काली बाबू, बालदेव बाबू, तुम लोग तो जो सच्ची बात है, वही कहोगे। कोई झूठी गवाही तो नहीं।···लिख लीजिए इन दोनों के बयान,

दस्तखत करना दोनों जानते हैं।"

"आप लोगों का क्या खयाल है ?" दारोगा साहब धीरे से पूछते हैं।

"हाँ, दस्तखत करने में क्या है ?" कालीचरन कहता है।

···कालीचरनजी हाथ झाड़कर दस्तखत करते हैं और बालदेवजी बड़े 'प रे म' से, आस्ते-आस्ते लिखते हैं। ···भाई बालदेवजी सचमुच में साधू हैं !

"बलदव ?" दारोगा साहब कहते हैं, "बालदेवजी, जरा 'ब' में एक लाठी लगा दीजिए और 'द' के ऊपर, क्या कहते हैं, एक तलवार-सी। ···और वाकलम खुद !"

"दारोगा साहब, बालदेवजी नाम में भी लाठी-तलवार नहीं लगाते हैं। हिंसावाद···!" कालीचरन मुस्कराकर खड़ा हो जाता है।

दारोगा साहब ठठाकर हंस पड़ते हैं। इसके बाद सभी लोग हंस पड़ते हैं।

अलबत्त जवाब दिया कालीचरनजी ने।···दारोगा साहेब पानी-पानी हो गए

···देखो ! बुद्धि है या नहीं ?

इकतालीस

नौ आसामी का चालान कर दिया।

नौ संथालों के अलावा जो लोग घायल होकर इसपिताल में पड़े हैं वे लोग भी गिरिफ्फ हैं। पुरैनियाँ इसपिताल में बन्दूक वाले मलेटरी का पहरा है।

गैर-संथालों में कोई गिरिफ्फ नहीं हुआ।···लेकिन, यह मत समझो कि मुफ्त में यह काम हुआ है।···दारोगा साहब कहने लगे कि खेलावनजी, आपके बारे में एस० पी० साहब को सन्देह हो गया है कि आपने सभी

यादवों को हँसेरी में जाने के लिए जरूर हुकुम दिया होगा।···खेलावनजी की हालत खराब हो गई। वह तो तहसीलदार भाई थे, तो पाँच हजार पर बात टूट गई। नहीं तो···नहीं तो अभी बड़ घर की हवा खाते रहते खेलावनजी। सिंघजी घर में नहीं थे; शिवशंकरसिंह भी नहीं। अब सिंघजी लोगों के मन में क्या है सो कौन जाने ?···दारोगा भी तो राजपूत ही है। आदमी के मन का कुछ ठिकाना नहीं, कब क्या करे।···मुफ्त में सबकी गर्दन नहीं छूटी है। पाँच हजार !

तहसीलदार बिस्नाथ को कुछ लगा कि नहीं ?···सुमरितदास बेतार को आज तीन दिनों से पेट में सूल हो गया है, नहीं तो सब बात कह जाता।···अरे ! बहुत दिन जियेंगे सुमरितदासजी ! बहुत उमेर है !

"तो हमारा उमेर तुम लोग क्या लगाते हो ?"

"यही चालीस।"

"चालीस नहीं; पैंतीस।···जामुन का सिरका बिना पानी के पी गए थे, इसीलिए दाँत सब झड़ गए।"

"अच्छा सुमरितदासजी, कुछ पता है कि···?"

"अरे ! यह मत समझो कि सुमरितदास सूल से घर में पड़ा हुआ था। राम-झरोखे बैठ के सबका मोजरा लें ··। पूछो, क्या जानना चाहते हो ?"

"क्या तहसीलदार साहेब को भी रुपैया लगा है ?"

"तहसीलदार बिस्नाथपरसाद को इतना बेकूफ नहीं समझना। वह दारोगा तो यह तहसीलदार। तुम कौआ तो हम कैथ वाली कहानी नहीं सुने हो ?"

"तहसीलदार हरगौरी बेचारा···"

"अति संघर्ष करे जो कोउ, अनल प्रगट चन्दन ते होहि ! सियावर रामचन्द्र की जै !"

"लेकिन राजपूतटोले को तो इसपी साहेब भी नहीं छोड़ सकते हैं। जानते हो इसपी साहेब क्या कहते थे ? ···यह समझ में नहीं आता है कि तहसीलदार बिस्नाथपरसाद की जमीन से वीहन बचाने के लिए तह-

सीलदार हरगौरीसिंह क्यों गये ! जरूर कोई बात है !'···सिंघजी को एक चरन लगेगा ।"

"गवाही में किन लोगों का नाम है ?"

"अरे, गवाही क्या ? बोलो तुम्हीं, ईमान-धरम से कि संथाल लोग ने जोर जबर्दस्ती किया है या नहीं ?"

"इसमें क्या सन्देह !"

"तो गवाही के लिए कोई बात नहीं । ··लेकिन गाँव की तकदीर चमकी है । इतना बड़ा केस कभी हाथ नहीं लगेगा । इसमें जो गवाही देने जायगा, उसको तो तीन-तीन खिलाने वाले रहेंगे । तीनों एक ही केस में नत्थी हैं । समझे ?···खबरदार ! मेरा नाम नहीं लेना । हाँ !···और मेरा भी ता फैसला नहीं हुआ है । हमको क्या देते है लोग ? जितना कागज-पत्तर, लिखा-पढ़ी होगी, सब तो सुमरितदास के मत्थे पड़ेगा । लेकिन इस बार नहीं । पहले फैसला कर लें ।"

"संथालों में किस-किसकी गवाही हुई ?"

"अरे, संथालटोली में गवाह आवेगा कहाँ से, सभी तो आसामी हैं । चड़का माँझी का बारह साल का बेटा भी । ···दारोगाजी ने जब पूछा कि बताओ क्यों बीचड़ लूट रहे थे, तो बिरसा ने जवाब दिया कि हम लगाया है । इसके बाद, दारोगाजी ने झाड़-झपट के पूछा तो बिरसा के बाद सबों ने तुरत कबूल कर लिया कि बीचड़ तहसीलदार बिस्नाथपरसाद का है। औरतों और बच्चों ने भी कहा—तहसीलदार का बीचड़ है । तब ? उखाड़ता था जबर्दस्ती क्यों तुम लोग ? तो जवाब दिया कि जमींदारी परथा खत्तम हो गई, लेकिन हमारे गाँव के जमींदारों ने मिलकर हमारी जमीन छुड़ा ली है । ···इसीलिए लूट लिया ।"

"हा हा हा हा ! साफ जवाब ? जमीन छुड़ा लिया तो बीहन लूट लिया ! हा हा हा ! सच ? काली किरिया ! ऐसा ही जवाब दिया ?"

"नहीं तो तुम समझते हो कि सुमरितदास झूठ कहता है ? अरे, यदि संथालों ने ऐसा बयान नहीं दिया होता तो क्या समझते हो, तुम लोग

अभी घर में बैठकर हा-हा-ही-ही करते ? अभी जेहलखाना में केलू पेड़ते रहते। समझे ? दारोगाजी ने भी सोचा कि आग लगते झोंपड़ा जो मिले सो लाभ ! ···इसीलिए न कहा कि तहसीलदार इतना बेवकूफ नहीं। तब, दारोगाजी का इलाका है, जो ऊपरी झाड़-झपड़, पान-सुपाड़ी वसूल सकें। इसमें तहसीलदार साहेब क्या कर सकते हैं ? ···तिवजी को पांच हजार और शिवसक्करसिंह को भी उतना ही लगेगा। ···डागडर से भी कुछ पूछा है दारोगा साहेब ने। पता नहीं, अंग्रेजी में क्या झिमडाम बात हुई ! इसपी साहेब से भी डागडर साहेब अंग्रेजी में ही बोल रहे थे। आदमी काबिल है यह डागडर !···हरेक लहास के बारे में क्या लिखा है, जानते हो ? लिखा है कि संथालों की मार से मालूम होता है और घाव के मुंह देखकर मालूम होता है कि किसी ने अपनी जान बचाने के लिए ही इस पर हमला किया है।···और, इधर वालों का लहास को लिखा···।"

"लहास ?"

···लहास ! लाश ! पुलिस-दारोगा, मलेटरी ! मार ! जेहल !···काला-पानी ! नहीं, फांसी !···सचमुच ! यदि तहसीलदार विस्नाथपरसाद नहीं होते तो आज फांसी ! ···कालीचरन के आफिस में जाने से और बातों का पता लग जायगा।

सोशलिस्ट पार्टी के आफिस में भीड़ लगी हुई है।···कालीचरन ने कहा है, आज सुराजी, सोशलिस्ट और भगवान् कीर्तन एक साथ गाये जायेंगे। सबसे पहले पुराने जमाने का कीर्तन नारदी-भठियाली कीर्तन होगा।···बूढ़े लोगों के गले में अब भी जादू है !

आजु से बिराजू श्याम कदली के छैयाँ,
आवत मोहनलाल बंशी बजैयाँ !
पीतबसन मकराकृत कुण्डल··· !

यही नारदी है ! मृदंग कैसा बजता है—धिधनक-तिधनक ! धिधनक-तिधनक !···

"अब किरान्ती कीर्तन। ····गंगा रे जमुनवाँ' बहुत पुराना हो गया।

यह रुलाने वाला कीर्तन मत गवाइए कालीचरनजी !···"

बम फोड दिया फटाक से मस्ताना भगतसिंह !

·· हैं ! वाह रे सुनरा ! क्या सँभाला है ! वाह ! भारत का बीर लड़ाका था, मस्ताना भगतसिंह !···सिंह ? भगतसिंह कौन जात था ?

मस्ताना भगतसिंह । जानते हो ?···कालीचरनजी कहते थे, पाँच बार फाँसी की रस्सी खींचा । दस-दस आदमी एक-एक ओर लटक गए । खींचने लगे, खींचते रहे और उधर भगतसिंह के मुँह से निकलता जाता था—इन-किलास, जिन्दाबाघ ।

"इनकिलाव, जिन्दाबाद !"

जै ! जै ! ··

हाँ । आज कौन इतने जोरों से नारा लगा रहा है ? सोमा जट ? ·· अरे बाप ! तीन दिन से एकदम लापता था । एकदम लापता ! लेकिन जानते हो हँसेरी में सबसे ज्यादा मार किसने किया था ? चार को सोमा ने अकेले गिराया है ।···हाँ, खबरदार ! तहसीलदार साहेब ने मना किया है, सोमा का नाम कोई नहीं ले ।···दागी है ! लेकिन, देखते हैं, इधर सुधर रहा है । कालीचरनजी सुधार देंगे ।···

अब एक सुराजी कीर्तन होना चाहिए । हाँ, भाई ! सब सन्तन की जै बोलो ! गाँव के देवताओं के परताप से, काली माय की कृपा से, महात्माजी की दया से और किरान्ती···इनकिलास जिन्दाबाघ से, गाँव के लोग बाल-बाल बच गए । सभी कीर्तन होना चाहिए ।

भारत का डंका लंका में
बजवाया बीर जमाहिर ने !

राजबल्ली महतो भी हरमुनियाँ बजाता है ? कहाँ सीखा ?···सिरिफ दाँत बड़े हैं सामने वाले । गाने के समय मुँह कुदाली की तरह हो जाता है ।···भारथ का डंका लंका में ··

···बालदेवजी कहाँ हैं ?·· सुना कि बालदेवजी साधू हो रहे हैं । कंठी ले ली है । कंठी पर किसका नाम जाप करेंगे ? महतमाजी का या सत-

गुरु का ?

वर्षा स्कूल की मास्टरनीजी कितना मुटा गई हैं ! अरे बाप !··· सिरिफ कालीचरनजी से ही हंसकर बोलती हैं। कालीचरनजी आज कुर्ता में गोल-गोल क्या लगाये हुए हैं ? सुसलिट पाटी का मोहर है ?···देखो, कालीचरनजी मोहर वाले लीडर हो गए हैं। बालदेवजी को, बावनदास को या तहसीलदार साहब को मोहर है ? मास्टरनीजी उसमें क्या लगा रही हैं ? फूल ? वाह ! अब और बना ! फूलमोहर छाप सिकरेट !··· डाकडर साहब का नोकर कहां आया है !···ऐ ! चुप रहो ! चुप रहो ! शांती, शांती !···

"कालीचरनजी को डॉक्टर बाबू बुलाते हैं," प्यारू मंगलादेवी से कहता है।

"अ···ज्जा ! काली ! डॉक्टर बाबू को निमन्त्रण नहीं दिया ? तहसीलदार साहेब, खेलावनजी वगैरह तो कचहरी गये हैं। डॉक्टर साहेब तो थे।···जाओ, बुला रहे हैं।"

क्या बात है ?···जरूर कोई बात है।···सुमरितदास बेतार कहाँ है ? एक बार बोलिए प्रेम से···

कालीमाई की जै !
महत्मा गांधी की जै !
सोसलिट पाटी की जै !
इनकिलास···!

"कालीचरनजी !"

"जी !"

"एक बात कहूँ ! बुरा मत मानिएगा।···हरगौरी बाबू की माँ रो रही है और दूसरे टोले में भी औरतें रो रही हैं। आप लोग कीर्तन कर रहे हैं, यह अच्छा नहीं लग रहा है। मुझे लगता है कि आज के कीर्तन से आपके भगवान् भी दुखी होंगे।"

"हम लोग भगमान को नहीं मानते," कॉमरेड वासुदेव ने बीच में

ही टोक दिया।

"तुम चुप रहो!" कालीचरन कहता है, "हर जगह मत टपका करो।"

सब चुप हैं। हरगौरी की माँ अब भी रो रही है—राजा बेटा रे! ·· गौरी बेटा रे!

कालीचरन की आँखें भी सजल हो जाती हैं। बचपन से ही वह हरगौरी के साथ खेला-कूदा था। पूँजीवादी हो या बुर्जुआ, आखिर वह बचपन का साथी था। वह आज नहीं है। उसकी माँ रो रही है। यह हरगौरी की माँ नहीं रो रही है—सिर्फ 'माँ' रो रही है!

"वासुदेव!"

"....."

"सबों से जाकर कहो—कीर्तन बन्द करें।···और कोठी के बगीचे में कल सोक सभा होगी। एलान कर दो। समझे?"

वासुदेव सोचता है, सब बात तो समझे, मगर सोक सभा का क्या मतलब? उसमें गीत नहीं गावेगा, भाखन नहीं होगा?···बस पाँच मिनिट चुपचाप खड़ा रहना होगा?···वाह रे सभा!

बयालीस

हरगौरी की माँ रो रही है—"राजा बेटा रे!···गौरी बेटा रे!"

हरगौरी की सोलह साल की स्त्री बिना गौना के ही आई है। वह बहुत धीरे-धीरे रोती है। घूँघट के नीचे उसकी आँखें हमेशा बरसती रहती हैं।

शिवशङ्करसिंह पूर्णिया से लौट आये हैं। पुत्र का दाह-कर्म करके लौटे हुए पिता को देखकर डर लगता है। झुकी कमर पर हाथ रखे शिवशङ्करसिंह बैलों की ओर देख रहे हैं। दो दिनों से घास-पानी छोड़े बैठे हैं दोनों बैल। आँखों में आँसू भर-भरकर, दोनों कभी-कभी चौकन्ना होकर इधर-

उधर देखते हैं। फिर एक लम्बी साँस लेकर एक दूसरे को देखते हैं। एक दूसरे को जीभ से चाटते हैं, मानो ढ ढ़स बंधा रहे हों।···हरगौरी इन्हें कितना प्यार करता था! जब ये दो साल के बाछे थे, तभी से हरगौरी इनके साथ खेलता था। उसकी बोली सुनते ही दोनों खुशी से नाचने लगते थे। जान से भी बढकर प्यार करता था वह···।

शिवशङ्करसिंह की आँखें आँसू से धुंधली हो रही हैं।···जब तक हरगौरी की लाश नहीं मिली थी, उन्हें अपने गिरफ्तार होने का डर लगा हुआ था। दाह-क्रिया समाप्त करके वोकील साहेब ने रामकिरपालसिंह को रोका, तो शिवशङ्करसिंह को लगा कि पुल नीचे धँस रहा है, धरती हिल रही है।

दारोगा साहब रामकिरपालसिंह को गिरिफ्त करके उधर ले गए और शिवशङ्करसिंह अपने साथियों के साथ वहो से लौट गए। टीसन तक दौड़ते ही आये थे। न जाने दारोगा साहब के मन में कब क्या हो? ···भाग की बात हुई कि विरजूसिंघ फिसलकर गिर गए और गाड़ी खड़ी हो गई, नहीं तो शिवशङ्करसिंह वहीं लाटफारम पर ही खड़े रह जाते। सबने तो कूद-कूदकर हत्था पकड़ लिया, सिंहजी ने ज्यों ही एक हत्था में हाथ लगाया कि एक काले कोट वाले ने पकड़कर खींच लिया। सिकन्दर के पास जाते-जाते विरजूसिंघ गिर गए तो गाड़ी खड़ी हो गई। वेचारे विरजूसिंघ का एक हाथ कट गया है। गाट बाबू उसको कटिहार इसपिताल ले गए। जब तक घर नहीं पहुँच गए थे, शिवशङ्करसिंह को भरोसा नहीं था। क्या जाने किधर से लाल पगड़ी वाला निकल पड़े! हसलगाँव हाट के पास एक लाल चादर वाले को देखकर उनका कलेजा धुकधुका उठा था। ···भले आदमी ने लाल चादर की पगड़ी क्यों बाँध ली थी?

घर आते ही हरगौरी की माँ को छाती पीटते और जमीन पर लोटकर रोते देखा तो वे भी बच्चों की तरह बिलख-बिलख रोने लगे। 'पुबरिया घर' के ओसारे पर हरगौरी की विधवा बहू घूँघट काढ़े रो रही

थी। सामने दीवार पर हरगौरी का फोटो टँगा हुआ है। रौतहट मेला में खपाया था—पगड़ी बाँधकर, हाथ में तलवार लेकर।

"बेटा रे !···गौरी बेटा रे !"

शिवशङ्करसिंह बैल की गर्दन पकड़कर रो रहे हैं—"बेटा रे ! गौरी बेटा रे !"

सुमरितदास के कान में सबसे पहले आवाज पहुँचती है—ओ ! शिवशङ्करसिंह आ गए सायद !

"शिवशंकर बाबू ! रोइए मत ! देखिए, कलेजा पोख्ता कीजिए। ···आप ही इतना जी छोटा कीजिएगा तो औरतों का क्या हाल होगा ? हे···! हरगौरी की माँ मर जायगी। उसको समझाइए सिंहजी ! रोइए मत !" सुमरितदास शिवशंकरसिंह को अकवार[1] में पकड़कर ले आते हैं, समझाते हैं तथा आसपास खड़े लोगों से कहते हैं—"भाई ! क्या समझाया जाय, किसको समझाया जाय ! पुत्रसोक से बढ़कर और कोई सोक क्या हो सकता है ? हम क्या समझावेंगे ! हमको तो···खुद भोगा हुआ है। एक-एक कर चार लाल को कमला किनारे अपने हाथ से जला आये हैं। कलेजा पत्थल हो गया है। पुत्रसोक ! हे भगवान् ! किसी को न हो।"

शिवशंकरसिंह और जोर-जोर से रोने लगते हैं। धीरे-धीरे भीड़ बढ़ती जाती है। सभी आकर यही जानना चाहते हैं कि और आगे क्या हुआ ? ··हरगौरी की मृत्यु से ज्यादा दिल दहलाने वाली बात थी रामकिरपालसिंह की गिरफ्तारी ! क्यों गिरफ्तार किया ? कैसे गिरफ्तार हुआ ? और किन लोगों पर···उवारन्ट है ? तहसीलदार विस्नाथ पर भी ? ""···तहसीलदार साहेब आ रहे हैं। मोढ़ा दो रे !"

तहसीलदार को देखते ही शिवशंकरसिंह फिर धरती पर लोट गए और जोर-जोर से रोने लगे—"विस्नाथ भैया ! कलेजा टूक-टूक हो रहा है। भैया हो ! कलेजा···"

१. बाँहों में भरकर।

तहसीलदार साहब समझाते हैं—"शिवशक्करसिंह, रोइए मत ! यह रोना तो जिन्दगी-भर के लिए मिला है। एक दिन रोने से दिल ठंडा नहीं होगा। लेकिन, अभी रोने का समय नहीं। मालूम होता है, मुकदमा खराब हो गया। सिंहजी के गिरफ्तार होने का मतलब ही है कि मुकदमा खराब हो गया। अब किसके सिर पर कौन आफत है, कौन जाने ! खूनी केस है ! उठिए, आपसे प्राइविट में एक बात करना है।"

शिवशक्करसिंह तुरत उठकर खड़े हो गए और तहसीलदार साहब के साथ दरवाजे से जरा दूर चले गए। सुमरितदास भी प्राइविट सुनेगा ? ···तब ठीक है, असल बात का पता अभी तुरत लग जायगा।

दरवाजे पर खड़े सभी एक ही साथ लम्बी साँस छोड़ते हैं—अब किसके सिर पर क्या आफत है, कौन जाने ! हे भगवान् !

"परनाम जोतखी काका !"

जोतखी काका के साथ खेलावन भी आया है। जोतखीजी पास के खाली मोढ़े पर बैठ जाते हैं। खेलावन भी तहसीलदार साहब के प्राइविट में जाकर शरीक हो जाता है। जोतखीजी धीमी आवाज में लोगों से कहते हैं—"तुम लोग यहाँ खड़े होकर क्या कर रहे हो ?" उनके कहने का ढंग ही ऐसा था, जिसके माने निकलते थे—'तुम लोगों की जान बलाई हुई है क्या ? यहाँ से जितना जल्दी हो सके, खिसक जाओ ! वर्ना क्या ठिकाना···!'

सब जल्दी से मौका देखकर उठ खड़े होते हैं। जोतखीजी कहते हैं—"यहीं चले आइए तहसीलदार ! सभी चले गए।"

'···लेकिन बात यह है कि एसपी ने तो यह नोक्स पकड़ा है—तहसीलदार विश्वनाथ की जमीन का बीहन बचाने के लिए तहसीलदार हरमोरी क्यों गया था ?" तहसीलदार साहब कहते हैं।

"रामकिरपाल भैया तो हैं नहीं। हम आपको क्या कहें ? ·· लेकिन मोकदमा तो आपका ही है। वाजिबन खर्चा तो···आपको ही देना चाहिए।" शिवशक्करसिंह गिड़गिड़ाकर कहते हैं।

जोतखीजी कुछ कहने के लिए खखारते हैं, लेकिन सुमरितदास बेतार बीच में ही जवाब देता है—"शिवशङ्करसिंह, मोकदमा तहसीलदार विस्नाथ का नहीं, तहसीलदार हरगौरी का है। पूछिए कैसे ? तो बात यह है कि असल में यह सब 'खुरखार', बेदखली-नीलामी तो हरगौरी बाबू ने ही सुरू किया था। हमसे ज्यादे कौन जानेगा ?···तहसीलदारी कारबार को आप क्या समझिएगा ? यदि बेदखली और नई बन्दोबस्ती की बात नहीं उठती तो गाँव में यह लंकाकाण्ड नहीं होता। पहले तो तहसीलदार हरगौरी ने ही सुरू किया। तहसीलदार विस्नाथ उनके मदतगार हुए तो इन्हीं की जमीन पर संथालों ने धावा कर दिया। अब बताइए कि असल में यह मोकदमा किसका हुआ ? असल बात हम जानते हैं··· दारोगा को दस हजार देना ही होगा।"

खेलावन कहता है—"तहसीलदार, अब जैसे भी हो, सब कोई सलाह करके गाँव के इस गरह को टालिए।"

"रामकिरपाल भैया हैं नहीं, हम क्या कहेंगे ?" शिवशङ्करसिंह बस यही एक जवाब देते हैं।

बहुत देर के बाद जोतखीजी कहते हैं, "जो भी हो, न्याय बात तो यही है कि विश्वनाथ बाबू इस मुकदमे में अभी पूरी पैरवी करें।"

अन्त में यही तय हुआ कि सबसे पहले रामकिरपालसिंहजी को जमानत पर छुड़ाया जाय। इसके बाद, सब मिलकर, जो वाजिब हो, सोचें। जो खर्चा होगा, सिंहजी लोगों को देना होगा।

जोतखीजी ने मुस्कराते हुए कहा, "आज 'शोशलिष्ट' लोग शोक सभा करने गये। एक भी आदमी सभा में नहीं गया। अब लोग सभा का अर्थ समझ रहे हैं ! ···हुँ, कोई बात हो तो फुच्च से सभा। हम कहते थे न, गाँव में एक दिन चील-काग उड़ेगा !"

"जोतखी काका, सभा-जुलूस को दोख मत दीजिए।" कालीचरन बगल में, अँधेरे में खड़ा था।

"आओ काली !" तहसीलदार साहब हँसते हुए कहते हैं, "तुम लोगों

का गवाही देनी होगी, सो जानते हो न ? बालदेवजी को भी। तुम्हीं दोनों लीडरों की गवाही पर सारी बात है।"

कालीचरन ने मोढ़े पर बैठते हुए कहा, "गवाही देनी होगी तो देंगे। जो बात जानते हैं वह कहने में क्या है ! दारोगा हो, इसपी हो, चाहे मजिस्टर-कलक्टर हो। सच्ची बात कहने में किसका डर है !"

"वाजिब बात ! वाजिब बात !" जोतखीजी को छोड़कर बाकी सभी कहते हैं—"वाजिब बात !"

तहसीलदार साहब का नौकर रनजीत दौड़ता-हाँफता आता है, "कमली दैया···फिर !"

"तो यहाँ क्या है ? डाक्टर के यहाँ जाओ !" तहसीलदार साहब झुंझलाते हुए उठते हैं। "भगवान् जाने क्या दवा करते हैं डाक्टर लोग ! इतने दिन हो गए, बीमारी सोलह आना से बारह आना भी नहीं हुई !"

·· तो असल बात खुल गई ! मामले मुकदमे की सोलहो आने बात जो है सो, कालीचरन और बालदेव के हाथ में है !

"शिव हो ! शिव हो !" जोतखी काका उठते हुए कहते हैं, "काली बाबू, कल जरा अपना हाथ दिखाना तो ! देखें, तुम्हारे हाथ की रेखा क्या कहती है। जन्म-दिन और महीना याद है ?"

जोतखीजी के पेट में डर समा गया है—कालीचरन और बालदेव के ही हाथ में जब सब कुछ है तो वे जिसका नाम बतला दें, वह गिरिफ्फ हो जायगा—तुरत। और कालीचरन, कालीचरन ही क्यों, बालदेव भी उन पर मन-ही-मन नाराज है।···बालदेव का तो उतना डर नहीं, मगर कलिया···शिव हो ! शिव हो !

तेतालीस

लछमी दासिन आज मन के सभी दुआर खोल देगी। एक लक्ष दुआर!

"बालदेवजी!"

"जी!"

"रामदास फिर बौरा गया है। कल भंडारी से कह रहा था लछमी से कहो, एक दासी रखने की आज्ञा दे।···कहिए तो भला!"

बालदेवजी क्या जवाब दें? दासी रखना धरम के खिलाफ है, यह उनको नहीं मालूम।···दो-तीन महीने ही हुए, उन्होंने कण्ठी ली है। मठ के नियम-धरम, नेम-टेम के बारे में वे क्या कह सकते हैं! लेकिन महंथ सेवादास ने भी तो···।

लछमी कहती है—"आप उसे समझाइए बालदेवजी! वह बौरा गया है। आजकल ततमाटोली में आना-जाना सुरू कर दिया है। भगवान भगत ने कल हिसाब किया है, रमपियरिया की माँ को चार सेर चावल दिलवा दिया है रामदास ने। मैंने पूछा तो बोला—'मठ का पुराना नौकरान है, भूख से मरेंगे वे लोग? जब दिन-भर बैठकर सिरिफ बीजक बाँचनेवाला दूध-मलाई खाता है तो'···।" लछमी कहते-कहते रुक जाती है।

बालदेवजी आजकल कुछ 'मतिसून्न' हो गए हैं। सीधी बात भी समझ में नहीं आती। ···कुछ नहीं समझते हैं। कितने सीधे-सूधे हैं!

"आपका मठ पर रहना उसको पसन्द नहीं।" लछमी बालदेव की ओर देखती है।

"तो हम चले जाते हैं। यदि हमारे रहने से मठ का नियम भंग होता है तो हम चले जाते हैं।"

"कहाँ जाइएगा?"

"चन्ननपट्टी।"

लछमी का कलेजा धड़क उठता है—धक्···! इधर कई दिनों से बालदेवजी बहुत उदास रहते हैं। खाना-पीना भी बहुत कम हो गया है। कहीं

घूमने-फिरने भी नहीं जाते। आसन पर पड़े बीजक पाठ करते रहते हैं। तहसीलदार साहब कह गए हैं—'बालदेव की गवाही पर ही मुकदमे की सारी बात है।' बालदेवजी सुनकर बोले, गवाही के लिए हम कठघरा में नहीं चढ़ सकते। महतमाजी कहिन हैं—झगड़ू न जाहू कचहरिया, बेइमनमाँ के ठाठ जहाँ।···आज मठ सूना है, आज ही लछमी सब कुछ कह देगी बालदेवजी से।

"आप चन्ननपट्टी चले जाइएगा ··और मैं ?"

"आप ?"

लछमी बालदेव की आँखों में आँखें डालकर देखती है। लछमी जब-जब इस तरह देखती है, बालदेव न जाने कहाँ खो जाता है!···एक मनोहर सुगन्ध हवा में फैल जाती है। पवित्र सुगन्ध! बीजक से जैसी सुगन्धी निकलती है।

"हाँ! मैं कहाँ जाऊँगी ? मेरा क्या होगा ? महंथ की दासी बनकर ही मैं मठ पर रह सकती हूँ।" लछमी की आँखें भर आती हैं।

"नहीं लछमी, तुम···रामदास की दासी नहीं। मैं···तुम···आप···।"

"बालदेवजी!" लछमी पगली की तरह बालदेवजी से लिपट जाती है, "रच्छा करो बालदेव! तुम कह दो एक बार—तुम्हें रामदास की दासी नहीं बनने दूंगा! तुम बोलो—चन्ननपट्टी नहीं जाऊँगा। मुझे छोड़कर मत जाओ बालदेव। दुहाई!"

"लछमी!" बालदेवजी लछमी को सँभालते हुए कहते हैं, "कोई देख लेगा।"

लछमी बालदेवजी के गले से हाथ छुड़ाकर अलग बैठ जाती है। सिर नीचा करके सिसकती है।

बालदेव की सारी देह झन्न-झन्न कर रही है। कनपट्टी के पास, लगता है, तपाये हुए नमक की पोटली है। ···एक बार आसरम में उसके कान में दर्द हुआ था। गाँगुलीजी ने नमक की पोटली से सेंकने के लिए कहा था।···कलेजा धड़-धड़ कर रहा है। लछमी की बाँह ठीक बालदेव के

नाक से सट गई थी। लछमी के रोम-रोम से पवित्र सुगन्धी निकलती है। चन्दन की तरह मनोहर शीतल गन्ध निकल रही है। बालदेव का मन इस सुगन्ध में हेलडूब[1] कर रहा है। वह लछमी को छोड़कर चम्पानपट्टी में कैसे रह सकेगा ?···रूपमती, मायजी, लछमी !

"महतमाजी के पंथ को मत छोड़िए बालदेवजी ! महतमाजी अवतारी पुरुख हैं। आजकल उदास क्यों रहते हैं ? महतमाजी पर भरोसा रखिए। जिस नैन से महतमाजी का दरसन किया है उसमें पाप को मत पैसने दीजिए। जिस कान से महतमाजी के उपदेस को सरवन किया है, उसमें माया की मीठी बोली को मत जाने दीजिए। महतमाजी सतगुरु के भगत हैं।" लछमी आँखें मूँदकर ध्यान की आसनी पर बैठी है। सफेद मलमल की साड़ी पर बिखरे हुए लम्बे-लम्बे, काले बाल !···और गोरा मुखमंडल ! ध्यान-आसन पर इस तरह बैठकर उपदेश देने वाली यह लछमी कोई और है ! ···बालदेवजी के हाथ स्वयं ही जुड़ जाते हैं।

लछमी की पवित्र आत्मा की वाणी फिर मुखरित होती है—"दुनिया के दोख-गुन को देखने के पहले अपनी काया की ओर निहारो ! मन मैला तन सूथरो, उलटी जग की रीत !···पहले मन को साफ करो। मन पवित्र नहीं, इसलिए वह दुखी होता है, निरास होता है। तुम पंथ पर उदास होकर क्यों बैठ रहे हो ? क्यों ?···डरते क्यों हो ?···"

चलते चलते पगु थका
नगर रहा नौ कोस,
बीचहि में डेरा परा
कहहु कौन का दोख !

बालदेव को लगता है, खुद भारथमाता बोल रही है। यही रूप है ! ठीक यही रूप है जिनके पैर खून से लथपथ हैं। जिनके बाल बिखरे हुए हैं। ···बावनदास कहता था, भारथमाता जार-बेजार रो रही है। नहीं, माँ रो नहीं रही। अब पंथ बता रही है। उचित पंथ पर अनुचित करम

१. डूबना उतराना।

करने वालों को चेता रही है। बावनदास 'भरम' गया है। ···और खुद बालदेव, महतमाजी के पंथ पर निरास और उदास होकर चल रहा है।

"···भारथमाता की जै! महतमा जी की जै! भारथमाता, भारथ-माता!"

महंथ रामदास बहुत देर से कनैल गाछ की आड़ में खड़े होकर देख-सुन रहे थे।···ध्यान-आसन पर बैठी हुई लछमी उपदेश दे रही है और बालदेवजी हाथ जोड़े एक टक से लछमी को देख रहे हैं। अचानक बाल-देवजी लछमी के चरन पकड़कर हल्ला करने लगे—भारथमाता की जै!

"भंडारी! भंडारी!" महंथ रामदास पिछवाड़े की ओर भागते हुए चिल्लाते हैं, "भंडारी! बालदेव पगला गया! दौड़ो!"

मठ पर तुरत भीड़ लग गई। डॉक्टर साहब, तहसीलदार साहब, कालीचरन और खेलावनसिंह यादव भी आये हैं। बालदेव की बूढ़ी मौसी बीच-बीच में गा-गाकर रोने को सुरसुर[1] करती है, किन्तु एक ही साथ इतने लोग डाँट देते हैं कि वह चुप हो जाती है और बारी-बारी से सब के मुंह की ओर देखती है। कुछ देर के बाद ही वह फिर शुरू करती है—"बाबू रे!···"

"ए बूढ़ी! ठहर!···चुप!"

डॉक्टर साहब बालदेव के बाहु में रबर की पट्टी बाँधकर, मुट्ठी से एक छोटे से गेंद को दबाते हैं।···ओ! इसी मीसीन से तो तहसीलदार की बेटी कमली का भी जाँच होता है! ओ!

बालदेवजी रह-रहकर बाँहें ऐंठकर, हाथ छुड़ाकर उठ खड़े होते हैं, "आप लोग क्या समझते हैं मैं पागल हो गया हूँ? कभी नहीं, हर-गिस नहीं।···हमको पागल कहते हैं? इस गाँव में क्या था? कोई जानता भी था इस गाँव का नाम? इसको होल इण्डिया में मसहूर कौन किया? हमको छोड़ दीजिए! हम महत्माजी के पंथ से नहीं हट सकते।"

भीड़ में कोई कहता है—"मठ पर रहने से गाँजा पीने की आदत लग

१. तैयारी।

ही जाती है।"

"कौन कहता है हम गाँजा पीते हैं ? दारू-गाँजा-भाँग की दुकान में पिकेटिन किया है हम, और हम गाँजा पीयेंगे ? छिः छिः ! हम महतमाजी के पंथ को कभी छोड़ नहीं सकते। साच्छी हैं महतमाजी !"

बालदेव की बुढ़िया मौसी अब नहीं मानती। वह गा-गाकर रोती है—"डागडर ने तहसीलदार को बेटी कमला की बेमारी को उतारकर बालदेव पर चढ़ा दिया है। यह भले आदमी का काम नहीं। तहसीलदार की बेटी अभी तक कुमारी है। हे भगवान् ! अब बालदेव का बिहा नहीं होगा ! दैवा रे दैवा !"

"बालदेवजा !" लछमी कहती है, "चित्त को सान्त कीजिए।"

"ओ ! लछमी !···लछमी दासिन ! साहेब बंदगी ! · ठीक है, कोई बात नहीं। हम पर कभी-कभी महतमाजी का भर[1] होता है। चुन्नी गुसाईं को तो रोज भोर को होता है।" बालदेवजी चुपचाप बैठ जाते हैं।

"डाकडर साहेब ! बालदेवजी इधर कई दिनों से बहुत उदास रहा करते थे। रात में नींद, पता नहीं, आती थी या नहीं। एक सप्ताह पहले एक दिन बोखार लगा था। बोखार की पीली गोली एक ही साथ सात ठो खा गए।"

"पीली गोली ? सातों एक ही बार ?" डाक्टर आश्चर्य से पूछता है।

"जी ! बोखार की पीली गोली बाँटने के लिए मिली थी न ! उसी में से सात ठो एक ही बार खा गए। बोले कि रोज कौन खाये ! एक ही साथ सात दिनों का खोराक ले लेते हैं !"

डाक्टर ठठाकर हँस पड़ता है, "कितना बढ़िया हिसाब है। बालदेवजी, दस दिनों तक घोल का शर्बत पीजिए। ठीक हो जायगा। कुछ नहीं है, दवा की गर्मी ही है।"

रामकिरपालसिंह कहते हैं, "बिहदाना, अनार, संतोला का रस तो ठंढा होता है, गरमी को सान्ती करेगा।···जेहल में हम सिरिफ बिहदाना संतोला

१. देवी-देवता का सवार होना।

खाकर रहते थे। दो बिहदाना मेरे पास अभी भी है।"

बालदेव और कालीचरन के बयान पर ही सब कुछ है—जिसको चाहे फँसा दें, चाहे बचा दें। खुद दारोगा साहब कहते थे कि बालदेव की गवाही की बहुत कीमत है!

खेलावनसिंह यादव आजकल कालीचरन का आगा-पीछा खूब करते हैं। पाटी ऑफिस के बगल में एक चौखड़ा घर बनवा देंगे, सुनते हैं, 'साथी निवास' घर! जैसा घर जिला पाटी ऑफिस में है। मीटिंग के दिन जितने साथी आते हैं, उसी घर में रहते हैं। जो सिकरेटरी होगा, वह ऑफिस घर में रहेगा।···कालीचरन ने खेलावनसिंह से कहा तो वे तुरत तैयार हो गए।

जोतखी काका ने कालीचरन का हाथ देखा है—"खूब नच्छत्तरवली है कालीचरन! राजसभा में जश है। बेटा-बेटी भी है। धन भी है। मगर एक गरह बड़ा 'जब्बड़' है···।"

सिंहजी बालदेवजी को बिहदाना-संतोला खाने के लिए मना रहे हैं—"खा लो बालदेव! बड़ा पूस्टीकारी चीज है। दवा की गरमी दूर हो जायगी।"

गवाही ने बालदेवजी की खोई हुई कीमत को फिर बहुत तेजदर कर दिया है।

बालदेवजी कहते हैं, "महतमाजी का रस्ता हम कभी छोड़ नहीं सकते। ···झगड़ू न जाहू कचहरिया, दललवा के ठाठ जहाँ।"

लेकिन बालदेवजी को तो कुछ भी नहीं कहना पड़ेगा। उनसे पूछा जायगा कि यह दसखत आपका ही है? ये कहेंगे कि—हाँ। बस और कुछ कहना ही नहीं है। दसखत तो बालदेवजी ने किया था। यह तो झूठ बात नहीं। कालीचरन ने भी किया था।

···चाहे जैसे भी हो, बालदेवजी को गवाही के लिए राजी करना ही होगा, नहीं तो सारे गाँव पर आफत है।···कोठारिन लछमी दासिन को तहसीलदार साहेब समझाकर कह दें तो बात बैठ जायगी।

चवालीस

इधर कुछ दिनों से डाक्टर मौसी के यहाँ ज्यादा देर तक बैठने लगा है। मौसी के यहाँ जब तक रहता है, ऐसा लगता है मानो वह शीतल छाया के नीचे हो। काम में जी नहीं लगता है। ऐसा लगता है, उसका सारा उत्साह स्पिरिट की तरह उड़ गया। क्या होगा मानव-कल्याण करके? मान लिया कि उसने काला-आजार की एक रामबाण औषधि का अनुसंधान कर लिया; अमृत की एक छोटी शीशी उसे हाथ लग गई। किन्तु इसके बाद? इसके बाद जो होता आया है, होगा। आखिर, पाँच आने का एक ऐम्पुल पचास रुपये तक बिकेगा। यहाँ तक उसकी पहुँच नहीं होगी!···और यहाँ का आदमी जीकर करेगा क्या? ऐसी जिन्दगी? पशु से भी सीधे हैं ये इन्सान। पशु से भी ज्यादा खूँखार हैं ये।···पेट! यही इनकी बड़ी कमजोरी है। मौजूदा सामाजिक न्याय-विधान ने इन्हें अपने सैकड़ों बाजुओं में जकड़कर ऐसा लाचार कर रखा है कि ये चूँ तक नहीं कर सकते।···फिर भी ये जीना चाहते हैं। वह इन्हें बचाना चाहता है। क्या होगा?

मौसी कहती है, "बेटा, तुम भागवत गीता नहीं पढ़ते?"

डॉक्टर मौसी की ओर अकचकाकर देखता है। जेल में उसने 'गीता-रहस्य' पढ़ने की चेष्टा की थी। ममता भी हमेशा 'गीता' तथा 'राम-कृष्ण कथामृत' झोली में लिये फिरती है। शायद समझती भी हो। ममता ने कई बार कहा है—'फुरसत के समय गीता जरूर पढ़ो, नहीं ··समझो, कुछ ढूंढ़ो। कुछ-न-कुछ जरूर मिलेगा।'···वह गीता पढ़ेगा!"

"डॉक्टर साहेब! जय हिंद!"

"आओ कालीचरन! क्या हाल है? तुम भी पूर्णिया गये थे न?"

"जी। अभी तुरत आ ही रहा हूँ। उम्मीद है, गाँव के सभी लोग छूट जायेंगे। हम लोगों को तो सत्तो बाबू वकील ने जिरह में बहुत तोड़ना चाहा, मगर उनको भी मालूम हो गया। बालदेवजी की बात हम नहीं

जानते, लेकिन सुना है वह भी खूब डटकर जवाब दीहिन है।'''हमसे कहा कि आप पढ़ना-लिखना नहीं जानते, आप दसखत करना नहीं जानते। मैंने कहा, मैं पढ़ना-लिखना भी जानता हूँ और दसखत करना भी जानता हूँ। दारोगा साहेब के सामने भी दसखत किया था। आप कहिए तो आपको भी दिखा दूँ।'''हाकिम ने कहा कि आप अपना दसखत चाँहिये। हमको भी क्या चसमा की जरूरत है? फटाक से चिन्हिये तो दिया!"

"लेकिन जिस काग़ज पर तुम लोगों ने दस्तख़त किया था उसमें क्या लिखा हुआ था?" डॉक्टर पूछता है।

"क्या लिखा हुआ था? सो तो'''सो'''तो नहीं पढ़ा। दारोगा साहेब ने तो अंगरेजी में लिखा था।'''सरकारी कागज पर कोई खिलाफ बात थोड़ो लिखेगा!"

"हो-हो-हो-हो!" डॉक्टर ठठाकर हँस पड़ता है। "और बालदेवजी ने भी वही कहा होगा!"

"हाँ, लेकिन इसमें हँसने की क्या बात है?" कालीचरन जरा रुखा होकर कहता है।

"हाँ भाई, हँसने की बात नहीं।'''बात रोने की है कालीचरन! मुझे तो कुछ बोलना नहीं चाहिए लेकिन'''! मत समझना कि संथालों की जमीन छुड़ाकर ही जमींदार सन्तोष कर लेगा। अब गाँव के किसानों की बारी आएगी। और तुमको तथा बालदेवजी को ही उन्होंने अपना पहला हथियार बनाकर इस्तेमाल किया है। यह रोने की बात नहीं?" डॉक्टर एक ही साँस में सब कह गया।

"लेकिन'''लेकिन, आपने भी तो लिख दिया है कि संथालों की मार को देखकर पता चलता है कि किसी ने अपनी जान बचाने के लिए इन पर हमला किया है?" कालीचरन तमतमा गया है।

"यह किसने कहा तुमसे?" डॉक्टर आश्चर्य से मुँह फाड़ते हुए कहता है, "ऐसा कहीं लिखा जाता है? मैंने तो सिर्फ़ जख्म के बारे में लिखा है। संथाल अथवा गैर-संथाल मैं नहीं जानता। मैं तो रोग और घावों की

जाति के बारे में ही जानता हूँ।" डॉक्टर उत्तेजित होकर कहता ही जाता है, "काली, तुम लोगों ने अच्छा नहीं किया। लेकिन तुम लोगों को दोष भी तो नहीं दे सकता हूँ।"

"तहसीलदार साहेब तो आपको खूब मानते हैं।" कालीचरन सीधी बात करना जानता है, "कमली दीदी···कमली दीदी···"

"क्या मतलब ?" डॉक्टर बीच में ही टोक देता है।

···"क्या कहना चाहता है ? मौसी कहती है, कमली दीदी खूब मानती है। उसकी माँ भी इज्जत-खातिर करती हैं। यही न ?"

"हाँ।" कालीचरन को मानो सहारा मिलता है।

"तो क्या हुआ ? तहसीलदार साहब गाँव के रईस हैं। मुझसे उम्र में बड़े हैं। कमला की बीमारी के चलते मुझे कुछ ज्यादा आना-जाना पड़ता है। वे मुझे बहुत प्यार करते हैं। मैं भी उन लोगों की इज्जत करता हूँ। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं तहसीलदार साहब के अन्याय का भी समर्थन करूँगा अथवा पक्ष लूँगा !"

कमला बहुत देर तक मौसी के आँगन में खड़ी होकर सुन रही थी। डॉक्टर की अन्तिम बातों को सुनकर उसका कलेजा धक्-धक् करने लगता है। वह अपने को सँभाल नहीं सकती है। उस पर घटनाओं की प्रतिक्रिया बड़ी तीव्र गति से होती है। नाटकीय ढंग से वह प्रवेश करती है।

"इसीलिए आप आजकल मेरे यहाँ नहीं आते। इसीलिए आपने उस दिन कहला भेजा था कि तहसीलदार साहब कमली को पटना ले जायँ, यहाँ इलाज नहीं होगा। क्यों ?"

सभी एक ही साथ चमक उठते हैं। मौसी हँसकर कहती है, "तू आज लड़ने के लिए कमर कसकर आई है ? पगली !···बैठ !"

डॉक्टर कमला की ओर टकटकी लगाकर देख रहा है—चेहरा लाल हो गया है कमला का। आँखें डबडबाई हुई हैं। गले के पास की रग तीव्र गति से फड़क रही है।···डॉक्टर ने बहुत बड़ा अन्याय किया है। रक्त का दबाव जरूर बढ़ गया होगा। कमला के ओठ फड़क रहे हैं, थर-

थरा रहे हैं। ···वह रो पड़ती है— "मौसी !"

"कमला !" डॉक्टर जोर से कहता है, "तुमने तो कुछ समझा-बूझा नहीं और लगीं आकर बरसने। मैं तो कालीचरन को समझा रहा था कि यदि मैं किसी राजनीतिक पार्टी में होता तो ऐसा नहीं करता···।"

डॉक्टर ने वातावरण को हल्का बनाने की पूरी कोशिश की। लेकिन अच्छा होता यदि कमला उससे रूठी रहती। इसी दिन के इन्तजार में वह था। आज कमला को पूर्ण स्वस्थ बनाया जा सकता था। लेकिन अब वह चूक गया। ···अब परिणाम के लिए तैयार रहना है।

जब तक डॉक्टर बोलता रहा, कमली चुपचाप सुनती रही। अचानक उसके मुख-मण्डल पर छाए बादल फट गए। एक हल्की मुस्कराहट उसके ओठों पर धीरे- धीरे जगने लगी, नाक के बगल की नीली रेखा धीरे-धीरे खिल रही है, मानो कमल की पंखुड़ियां धीरे-धीरे खुल रही हों !

मौसी चुपचाप कभी कमला की ओर, कभी डॉक्टर की ओर देखती है। उसके ओठों पर भी मन्द मुस्कराहट खिची हुई है।

"प्यारू मेरे यहां दो बार खोज गया है। शायद आज भी कोई खरगोश भाग गया है।" कमली मौन भंग करती है। उसकी बोली सहज हो गई है।

कालीचरन कमला के चेहरे पर कुछ देखकर चमक उठता है। उससे बातें करते-करते, कभी-कभी मंगला के चेहरे पर भी ऐसे ही भाव आ जाते हैं। इसी तरह तुनुक-तुनुककर बोलती है। वह डॉक्टर की ओर देखता है, फिर उठ खड़ा होता है, "अच्छा तो बैठिए डॉक्टर साहब ! हम अभी चलते हैं। ···फिर कल भेंट करेंगे।"

मौसी भी उठकर जाते हुए कहती है, "तुम लोग चाय तो जरूर पीओगे !"

कुछ देर तक दोनों चुप रहते हैं।···कमला पास में पड़ी सीकी की बनी हुई एक फूलडलिया को उठाकर उसकी बुनावट देखने लगती है। डॉक्टर मुस्कराते हुए पूछता है, "एक बात पूछूं कमला, बुरा तो न मानोगी ? अपने बाप की शिकायत कोई नहीं बरदाश्त कर सकता है, क्यों ?"

"कैसे बरदाश्त कर सकता है कोई ?"

"मुझे क्या मालूम ? मुझे···मुझको अपने बाप की याद नहीं।"

कमला मुस्कराती जाती है। कहती है, "विवाह के गीत में···एक जगह शिवजी पार्वती के पिता की टोकरी-भर शिकायत करते हैं—

एक बेर गेलों गौरा तोहरो नैहरवा से,
बइठे ले देलक पुआर,
कोदो के खिचुड़ी रेंघाओल मैना सासू···!

"हा-हा-हा-हा !"

"हा-हा-हा-हा !" दोनों एक ही साथ हँस पड़ते हैं। मानो पंछी का एक जोड़ा एक ही साथ दिल खोलकर किलक पड़ा हो। नर और नारी के पवित्र आकर्षण की रुपहली डोरी लकपक कर रही है। नर आगे बढ़ता ··· नारी को खींच लेता है···।

बड़ी-बड़ी, मद-भरी आँखों की जोड़ी ने मुस्कराकर पूछा, "आप··· मेरी शिकायत बरदाश्त कर सकते हैं ?"

"रोज तो कर रहा हूँ।" दो लापरवाह आँखों ने मानो चुटकी ली "कमली दवा नहीं पीती है। कमली रात में देर तक बैठकर पढ़ती है। ···कमली पगली है।···पगली है कमली।···तू पगली है ! तू मेरी पगली है ! पागल-पगली···

···अधरक मधु जब चाखल कान्ह,
तोहर शपथ हम किछु यदि जानि !

दूसरा खण्ड

सुराज मिल गया ?

"अभी मिला नहीं है, पन्द्रह तारीख को मिलेगा। ज्यादा दिनों की देर नहीं, अगले हफ्ता में ही मिल जायगा। डिल्ली में बातचीत हो गई। ···हिन्दू लोग हिन्दुस्थान में, मुसलमान लोग पाखिस्थान में चले जायँगे।" बावनदासजी फिर एक खबर ले आए हैं। ताजा खबर !

···दफा ४० की लोटस की तरह फिर झूठ-मूठ कोई फाहरम तो नहीं लाया है बावनदास ?···झूठ नहीं सच बात है ! टागडर बाबू के बेतार में भी बोला है, सुनते हैं।

"तहसीलदार साहेब भोज खिलाएँगे उस दिन," सुमरितदास बेतार घर-घर खबर फैला रहा है। "सब इसमिट[1] अभी-अभी हम पक्का करके आ रहे हैं। पूड़ी, जिलेबी, हलुआ, दही और चीनी !"

"जै हो ! जै हो !"

"महतमा गांधी की जै !"

महंथ साहेब के भंडारा से भी बड़ा भोज होगा। तीन मेर[2] नाच होगा—बलवाही, बिदेसिया, कमला और महमदिया की नौटंगी कम्पनी। कालीचरन का सुसील कीरतन भी होगा। पुरैनियाँ से अंग्रेजी बाजा आएगा। ···अरे ! अंग्रेजी बाजा नहीं जानते ? रौतहट मेला में सरकल के नाच में बजते नहीं सुना है—भेकर भेकर में भें !··· धमदाहा-संकरपुर का

१. एस्टिमेट।

२. दल।

विदापद। बँसगड़ा की बलवाही और औराही-हिंगना का भठियाली भकतै[1]। सुध नारदी[2] गाते हैं औराही वाले। कोयलू खोलवाहा और सीतानाथ बाबू मुलगैन! सीतानाथ बाबू का गला बुढ़ारी में भी कितना तेज है!

"मुसलमानों का हिस्सा सुराज पाकिस्थान में चला जावेगा?··· एकदम काटकर हिस्सा लेगा?"

"हाँ, जब हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई हैं तो भैयारी हिस्सा तो रकम आठ आना के हिसाब से ही मिलेगा।"

"बावनदास ने सुराज को काटते देखा है या अन्दाज से ही बोल रहा है? चलो, पूछें।"

बावनदास कहता है—"अरे सुराज क्या कद्दू-कोंहड़ा है जो काटकर बँटेगा?"

"···तब सुराजी कीरतन में जो कहा है कि 'जब तक फल सुराज नहीं पावें, गांधीजी चरखा चलावें, मोहन हो! गांधीजी चरखा चलावें···"

"कीर्तन की बात छोड़ो! सुराज माने···" बावनदासजी समझाते हैं, "सुराज माने अपना राज, भारथवासी का राज। अब अंगरेज लोग यहाँ राज नहीं कर सकते।···'ए अंगरेजो! भारथ छोड़ो' क्यों कहा था गांधीजी ने? इसीलिए।"

"अपने गाँव का तो राज तहसीलदार साहेब को ही मिलेगा। राज पारबंगा के तहसीलदार हरगौरी तो अब हैं नहीं।"

बालदेवजी का दिमाग बहुत शान्त हो गया है। जिस दिन उन्होंने परसाद उठाया[3], उसी दिन से माथा ठंडा हो गया। लछमी तीन-चार दिन तक सतसंग करती रही। आखिर बालदेवजी हार गए। बालदेवजी अब गृहस्थ नहीं रहे, साधू हो गए। ···मोछभदरा[4] करवाकर बालदेवजी

१. भठियाली कीर्तन।
२. नारदी सुर।
३. वैरागी धर्म स्वीकार करना।
४. क्षौर कर्म।

का मुँह ठीक सोलह पटनियाँ भानू की तरह हो गया है।

"...साहेब बंदगी बालदेवजी !"

"साहेब बंदगी ! जय हिंद !" बालदेवजी आजकल साहेब बंदगी और जय हिंद को एक साथ गड्डमड्ड करके बोलते हैं।

"जय हिंद कौमरेड बालदेवजी !" कालीचरन मुट्ठी बाँधकर कहता है—कौमरेड !

"नहीं। हम कौमरेड नहीं हैं।" बालदेवजी ने नाक सिकोड़ते हुए कहा, "हमको कौमरेड क्यों कहते हो ?"

"कौमरेड कोई गाली नहीं बालदेवजी ! कौमरेड माने साथी। जो भी देश का काम करे, पब्लिक का काम करे, वह कौमरेड है," कालीचरन हँसते हुए कहता है।

"तुम नहीं जानते," बालदेवजी चिढ़कर कहते हैं, "तुम तो आज आये हो, हम सब तीस से हो जानते हैं। टीक-मोंछ काटकर, मुर्गी का अंडा खिलाकर कौमरेड बनाया जाता है। कम्फ-जेहल में कितने लोगों को कौमरेड होते देखा है।...मोजफ्फरपुर के एक सोसलिट नेता थे। उनका काम ही यही था—लोगों की टीक-मोंछ काटना। जेब में कैंची रखे रहते थे। जाति के बाभन थे। ...और हमको कौमरेड का माने सिखाते हो तुम ?"

लगता है बालदेवजी फिर सनकेंगे।

सबों ने एकमत होकर कहा, "हाँ कालीचरन बाबू, यह गलती तुमसे हो गई। आज तुम लीडर हो गए हो, खुशी की बात है, लेकिन हो तो तुम बालदेवजी के ही चेला ! तुम मानो या नहीं मानो, बात वाजिब है !"

कालीचरन लजा जाता है। ...तब उस दिन सिकरेटरी साहेब जो कह रहे थे, बाप-बेटा दोनों कौमरेड हो सकता है ?...सायद सुनने में-ही गलती हो गई।...वह अपनी गलती मान लेता है—"हाँ, अभिमन्यु-वध नाटक में अरजुन ने दुरनाचारज के पैर पर फूल का तीर मारा था।"

वाह रे कालीचरन ! अब बात समझता है ! पहले तो बात समझने के पहले ही लड़ाई कर लेता था।

बालदेवजी भी हँसते हैं। कहते हैं, "सुराज उतसव के लिए तुम लोगों को पाटी की ओर से क्या हुकुम आया है ?"

"ठीक है। सुराज क्या अकेले कांगरेस को ही मिला है ?"

"सुराज उतसव के दिन रहोगे या नहीं ?" बालदेवजी पूछते हैं।

"जरूर ! उस दिन हाथी पर भारथमाता की मुरती बैठाकर जुलूस निकलेगा," कालीचरन गर्व से छाती फुलाकर कहता है। "अपने गांव का जुलूस, कटहा थाना में क्या, हौल इण्डिया में फस्ट होगा। मुरती का औडर दे दिया है।"

बालदेवजी की आँखों के सामने भारतमाता के विभिन्न रूप आ रहे हैं—माँ, रूपमती, मायजी और लछमी !

···लछमी को हाथी पर नहीं बैठाया जा सकता है ?···भारतमाता का रूप ? आजकल लछमी भी खद्धड़ पहनती है, चर्खा कातती है। ···महीन सूत कातना तो वह पहले से ही जानती है।

जै ! भारथमाता की जै !

दो

मुकदमा में भी सुराज मिल गया।

सभी संथालों को दामुल होज[1] हो गया। धूमधाम से सेसन केस चला। संथालों की ओर से भी पटना से बालिस्टर आया था। बालिस्टर का खर्चा संथालिनों ने गहना बेचकर दिया था। लेकिन बालिस्टर पर भी बालिस्टर हैं। यदि इस मुकदमा में तहसीलदार साहेब जैसे कानूनची आदमी नहीं लगते तो इस खूनी केस से शिवशङ्करसिंह, रामकिरपालसिंह

१. आजीवन कारावास।

और खेलावनसिंह तो हरगिस नहीं छटते। ···खर्चा ? अरे भाई ! जान है तो जहान है ! जब फांसी ही हो जाती तो जगह-जमीन, रुपैया-पैसा क्या काम देता ?

रामकिरपालसिंह ने संथालटोली की नई बन्दोबस्ती वाली जमीन में से दस एकड़ तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद को लिख दी है।···हाँ, सुमरितदास बेतार को भी चार कट्ठा ज़मीन मिली है।···खेलावनसिंह यादव को भी देन हो गया है। ···देन कैसे नहीं होगा भाई, पास में जितना कच्चा रुपैया था वह तो दारोगा साहेब के पान-सुपाड़ी में ही चला गया। पुराना पटुआ हाथ से पहले ही निकल गया था। इसीलिए करीब डेढ़ हजार हथ-फेर पैचा हो गया है। तहसीलदार साहेब ने कहा, कागज बनाने की क्या ज़रूरत है, जब सन-पटुआ बिके तो दे देना।

मुकदमा उतसब भी सुराज उतसब के दिन होगा ?···हाँ, सुराज उतसब दिन में, मुकदमा उतसब रात में।

तहसीलदार साहब ने कहा है, महमदिया की नौटंगी कम्पनी जितना में हो, एक सा, दो सौ, जा ले, मगर सट्टा करा लेना। सुमरितदास कहते हैं—"इसमें कनकसन है, पीछे बतावेंगे।"

···महमदिया वाले भी पूरी तैयारी कर रहे हैं। नखलौ से बाईजी मँगाया है, चन्दा करके। नौटंगी के कम्पनी[1] हैं नितलरैन बाबू। लछमी महारानी ने उनको खूब निहारा है, अपनी आँखों से ही निहारा है।···

इस इलाके के मँझले दर्जे के किसानों के पास यदि थोड़ी पूँजी हो गई, तम्बाकू, धान, पाट और मिर्चा का भाव एक साल चढ़ गया, घर में शादी-गमी नहीं हुई तो वह तुरत टनमना[2] जाते हैं। यदि मालिक जवान हो तो तुरत औन-पौन करने लगता है। हरमुनियाँ, फर्श, शतरंजी, शामियाना, जाजिम, लैट, पंच-लैट, पहड़िया घोड़ा, शम्पनी, टेबल-कुर्सी, बेंच खरीदकर ढेर लगा देता है। इससे भी जब गरमी कम नहीं होती है

१. मालिक।

२. खुशहाल हो जाना।

तब बन्नूक के लैसन के लिए आफिसरों को डाली देना शुरू करता है।'''लाल बाग मेला के समय रात-रात-भर मुजरा सुनता है और दिन-भर आफिसरों के साथ कचहरी में घूमता है। बन्नूक के लैसन के बाद नौटंगी कम्पनी खोलता है। इससे भी मगज ठंडा नहीं होता तो कोई खूनी केस होकर समापत्तन[३]।'''महमदिया के नितलरैन बाबू नौटंगी के कंपनी हैं। तहसीलदार साहब ने कहा है, महमदिया की नौटंगी कम्पनी का सट्टा लिखा जाना चाहिए।

"बड़ा भारी कनकसन है जी इसमें!" सुमरितदास बेतार कब तक पेट में बात रखे, "एकदम प्राइविट गप है। महमदिया वालों को क्यों बुलाया जा रहा है, समझे नहीं? नौटंगी की बाईजी के बिलौज पर टका साटा जायगा। अब समझे कुछ?"

संथाल लोग इस सुराज उतसव में नाचेंगे।'''कहीं नाचने के समय तीर चला दें, तब? नहीं, नहीं, डागडर साहेब बोलते थे कि संथालिनें खुद आकर कह गई हैं—नाचबो। तहसीलदार साहेब को भी इसमें एतराज नहीं होना चाहिए।'''भाई, जो भी कहो, संथाली नाच देखते समय होस गुम हो जाता है। जूड़े में सादे फूलों के गुच्छे, कसमकस देह, उजले दाँत की पाँती की चमक! सफ़ेद आँचल! जब झुमुर-झुमुर कर नाचने लगती हैं तो मन करता है, नाच में उतर पड़ें।

डा डिग्गा डा डिग्गा!
रि रि ता धिन ता!

आज से ही वे पराटिस कर रहे हैं।'''लेकिन मांदर और डिग्गा की बोली सुनकर डर लगता है। हँसेरी के दिन तो ऐसा लगता था कि जमराज नगाड़ा बजा रहा है और जमदूत सब उसी ताल पर नाचकर तीर चला रहे हैं।

---

३. समाप्त।

तीन

"खबरदार ! गरम जिलेबी मत खाना !"

आजकल सुमरितदास बेतार का बोलबाला है। हमेशा एक नई खबर! आजकल किसी भी टोले के नौजवान से भेंट होते ही वह फिक् से हँसकर एक दिल्लगी कर लेता है, "खबरदार ! गरम जिलेबी मत खाना !"

"माने ?"

"माने सुनोगे ? गरम जिलेबी का तासीर बड़ा गरम होता है। सर्दी से नाक बन्द हो, सिर दुख रहा हो, गरम जिलेबी खा लो ! भक से नाक खुल जायगी। इतना जल्दी असर करता है !···आज हम डागडरी में जरा दिनाय[1] की दवा लाने के लिए गये थे। जानते हो ? डागडर बाबू ने फुलिया—अरे वही मँहगूदास की बेटी फुलिया—का क्या कहा है?···फुलिया को गरमी की बेमारी हो गई है। चेहरे पर फुसरी-फुसरी[2]-सा हो गया है। डागडर ने कहा कि परनियाँ जाओ।···इसीलिए लोजमान लोगों से कहते हैं कि खबरदार ! गरम जिलेबी मत खाना।"

"लेकिन दासजी ! लोजमानों से पहले बूढों को सँभालिए !"

"चुप, चुप ! सभी बेपर्दे हो जायँगे।"

सुमरितदास बेतार जब फिक् से हँसता है तो उसके लाल मसूड़े दिखाई पड़ते हैं। लाल हँसी-हँसता है बेतार !···बेतार फिर फिक् से हँसकर कहता है, "और कुछ मालूम है ? महंथ रामदासजी रमपियरिया को दासिन रखेंगे। कोठारिन ने हुकुम दे दिया है।···बालदेव तो कोठारिन के पीछे वैरागी ही हो गया।"

कालीचरन का चेहरा अचानक उतर जाता है।···अब मँगला के बारे में तो कुछ नहीं बोलेगा बेतार ? लेकिन बेतार जानता है कि कहाँ कैसी बात करनी चाहिए। बात में उससे जीतना मुश्किल है।

१. दाद।

२. दाने-फुन्सी।

चर्खा सेण्टर के मास्टरों और मास्टरनी में लड़ाई-झगड़े हो गए हैं। टुनटुनजी इस्तीफा देकर चले गए। दूसरे मास्टर साहब को सूल उखड़ गया, देस चले गए। अब अकेली मंगलादेवी चर्खा सेण्टर के नाम पर गाँव-घर में घूमती है, बातें करती है गांधीजी की, जमाहिरलाल की और सुराज की ···कालीचरन कहता है, "हाथी पर भारतमाता की मुरती के पास बैठकर मुरछल[1] डुलाने के लिए मंगलादेवी को ही कहना चाहिए।"

बालदेवजी तहसीलदार साहब से कहते हैं, "लेकिन यदि अपने गाँव में औरत नहीं रहे तब बाहरी औरत से कहना चाहिए। यदि गाँव में ही मिल जाय! कमली दीदी ही क्यों न बैठेंगी?"

"नहीं, कमली की बीमारी का बड़ा डर है। कब क्या हो जाय!"

"तब कोठारिनजी से कहा जाय। अब तो खद्दड़ पहनती हैं। खूब नेम-टेम भी करती हैं। रोज नहाने के बाद महतमाजी की छापी पर फूल चढ़ाती हैं।"

···लो मजा! मंगलादेवी को हाथी का बड़ा डर! हाथी को देखते ही उसका सब सरीर केले के भालर[2] की तरह थर-थर काँपने लगता है। कालीचरन ने कितना समझाया-बुझाया, 'बूध-भरोसा' दिया, मगर तैयार नहीं हुई। आखिर में कहने लगी, कालीचरन यदि साथ में रहे तब तो वह हाथी पर चढ़ सकती है। लेकिन कालीचरन को लाज हो गई, सायद। बोला—"धत्त!"

दुलरिया भा अलबत्त बात जोड़ता है। इधर-उधर देखकर मटकी[3] मारकर देह हाथ फैलाकर कहता है—"मंगलादेवीजी जब लीला सिलवार पहनकर निकलती हैं तो लगता है कि मोकनी हथिनी[4] झूमती चली जा रही है।"

१. चंवर।
२. पत्ता।
३. कनखी।
४. जवान हथिनी।

"हो हो हो हो ! हा हा खी खी !"

भोओथ ! ···ओ ओ !

डॉक्टर साहब की घड़ी में ठीक दोपहर रात का 'टैम' देखकर टीन के करनाल में मुंह सटाकर कालीचरन ने हल्ला किया, 'भो ओ थ···ओ ओ !"

इसके बाद लौजवानों ने दुहराया—"भारथ आ जा द !"

मठ पर खँजड़ी डिमक उठी—डिम डिम डिम डिमिक ! बालदेवजी ने भावावेश में चौकीदार की तरह हांक लगाई—"ह ह ह ह ह ह ! भारथ आजाद हो गया ! ह ह ह ह हो य ! महतमा गांधी की जै !"

रिं रिं ता धिन ता !

डा डिग्गा !

संथाल टोली में मांदर और डिग्गा घनघना उठते हैं।

तू ऊ ऊ ऊ ! मौसी शंख फूंकती है—तू ऊ ऊ ऊ !

सात माइल दक्खिन, कटिहार की पांचों बड़ी-बड़ी मिलों के भोंपे एक साथ बज रहे हैं—"भौं ओं ओं···घू ऊ ऊ !" आवाज एकदम साफ सुनाई पड़ती है।

···'डिल्ली' में बांटबखरा करके सुराज मिल गया। जै ! जै ! इस-लामपुर पाखिस्थान में रहेगा या हिन्दुस्थान में ? पाखिस्थान में ? अभी पाखिस्थान में मारे खुसी के खचाखच गोरू काट रहा होगा।···धत्, गोरू ने क्या बिगाड़ा है ? ···बड़े भाग से मेरीगंज बच गया। दस मुसलमान भी होते तो पाखिस्थान लेकर ही छोड़ता !

चार

भो ओ थ ! ओ ओ !

कालीचरन का गला बैठ गया। नारा लगाते समय भाथी की तरह गले से आवाज निकलती है—फोंयें फोंयें सोंयें सोंयें !···सुबह से कॉमरेड बासुदेव

और कॉमरेड सोमा जट बारी-बारी से नारा लगा रहे हैं।···नारा बन्द नहीं हो, जारी रहे—'अष्टजाम कीरतन' की तरह ! सुराज-उत्सव जब तक खतम नहीं हो, नारा बन्द नहीं हो !

टन टनाक्, टन टनाक्! सजाई हुई मोटली हथिनी जा रही है।

ढन ढन ढनांग ढनांग ! कीर्तनियों का घड़ीघंट बोल रहा है।

धू ऊ ऊ तू तू तू ! शंखनाद।

भों भों पों !···भों पों पों ! अंगरेजी बाजा।

तक तक तक तक धिनाग धिनाग ! अमहरा का चानखोल[1] बजा।

पीं पीं पीं ई ई ई पीं पीं पीं···! चानखोल वालों की पीपही गा रही है।

चाँदो बनियाँ साजिलो बरात ओ हो
एक लाख हाथी साजिलो, दुई लाख घोड़ा
चार लाख पैदल, दुलहा बाला लखिन्दर !

पीपही पर बिहला[2] नाच का बरात वाला गीत बजा रहा है।

धू धू धू धू धू तु धुतु धुतु ! करनाल[3] बोलता है।

हि हि हि हि हि हि हि ! पहड़िया घोड़ा हिनहिनाया। किसका घोड़ा है ? धरमनाथ बाबू का या हरि बाबू का ?

भारत में आयल सुराज
चलु सखी देखन को···

यह नया सुराज कीर्तन कितने जोड़ा है ? वाह ! एकदम ताजा माल है। सुनो, सुनो !

कथि जे चढ़िये आयेल
भारथ माता
कथि जे चढ़ल सुराज
चलु सखी देखन को !

१. एक तरह का बाजा।
२. सती बेहुला।
३. सिंघा बाजा।

कथि जे चढ़िये आयेल
वीर जमाहिर
कथि पर गंधी महराज ! चलु सखी···
हाथी चढ़ल आवे भारथ माता
डोली में बैठल सुराज ! चलु सखी दखन को
घोड़ा चढ़िये आये वीर जमाहिर
पैं द ल गंधी महराज ! चलु सखी देखन को !

वाह ! खूब कीर्तन जोड़ा है उजाड़ू दास ने ! उजाड़ू दास को नहीं चीन्हते हो ? वारा मानिकपुर में घर है । वह भी सनतीस से ही सुराजी में है ।

कू कू ! मोकनी हाथी ठीक ताल पर कैसा कूकती है ! वाह !

अलवत्त सजाया है हाथी को फिलवान ने ! ठीक कपाल पर पुरैन[1] का फूले वनाया है—फुलखल्ली से । कितना रंग-टीप किया है । भारथ-माता की मुरती तो ठीक दुरगा माई की मुरती जैसी लगती है ! लछमी, सरस्वती पारवती-गौरा और भारथमाता सब सगी वहन हैं । ओ !···· इसीलिए ! वालदेवजी देखते हैं—सादा खद्धड़ की साड़ी ! गले में फूल की माला ! लम्बे-लम्बे काले वाल विखरे हुए पीठ पर ! ठीक भारथ-माता के ठोर[2] पर जसी हँसी है, कोठारिन वैसी ही हँसी हँस रही है और धीरे-धीरे मुरछल डुला रही है ।

धिन, तक तक तक, ताक धिनाधिन ! भठियाली कीर्तन का खोल वोल रहा है—ताक धिनाधिन तिन्नक तिन्नक !

हाँ रे मोरी रे ए ए ए ! हाँ आँ आँ
आँ आँ आँ आरो हे !
वहु कस्टे सू रा ज पैलो रे
भारऽऽथऽऽ सन्तान ओ रे

१. कमल ।
२. ओठ ।

कोटि कोटि छइला पोयेला
दिलो बो लि दान आ रे
हां रे मोरी रे ए ए ए ! हां आं आं !

औराही-हिंगना का भकतिया है बाबू ! खेल नहीं ! सीतानाथ बाबू ने पूआ बोली[1] में कैसा भठियाली कीर्तन जोड़ा है, देखो।···सीतानाथ बाबू ने जोड़ा है कि उनका छोटका बेटा महेन्दर ने ?···महेन्दर बाबू भी गीत खूब जोड़ते हैं, सुना है।

झरक झरक झर झर्र र र र ! एकपुरिया ढोल तो सब बाजा को मात कर देता है। सभी बाजा को 'झांप' लिया है।

डमाक् डिमाक् डिम ! एकपूरिया ढोल के साथ एक छोटी ढोलकी बोलती है।

भों ओ थ ! ओ ओ !
"महतमा गांधी की जै !"
"जमाहिरलाल नेहरू की जै !"
"रजिन्दर बाबू की जै !"
"जयपरगास जिन्दाबाद !"
"यह आजादी झूठी है !"
"देस की जनता भूखी है।"···यह नया नारा कौन लगाता है ?
"ऐ ! ऐ !···नहीं हुआ।"
"सुन लो पहले !"
"आजादी झूठी है। मारो साले को ! कौन बोला ?"
"जरूर गांव का नहीं, बाहरी आदमी है।"
"ऐ ऐ ! बाजा बन्द करो !"
"हटो ! हटो !"
"ऐ कालीचरन ! ऐ बासुदे ··!"
"बालदेव !···सान्ती करो !"

१. बंगला बोली, पूरब की बोली।

"अरे ! बात क्या हुई ?"

"हर बात में ऐसे ही कोई 'लेकिन' लगायेगा ये लोग ?"

"सुनिए तहसीलदार साहेब ! बात यह हुई कि"···बालदेवजी आज फिर सनके हैं, "बात यह हुई कि बाबू कालीचरन के पेट में रहता है कुछ और, और कहता है कुछ और !···हम इससे पहले ही पूछ लिये थे कि तुम्हारी पाटी की ओर से क्या हुकुम हुआ है सुराज उतसब के बारे में। तो बोला कि सुराज क्या सिरिफ कंगरेसी को मिला है !···अभी देखिए, सुभ-लाभ करके जब हम लोग जुलूस निकाला है तो एक बाहरी आदमी को मँगाकर के हम लोगों के उतसब को भंग कर रहा है। यह कैसी बात ! अरे भाई, हिंगना आराही का सोसलिट है तो हिंगना औराही में जाकर अपने गाँव का लारा लगावे। यहाँ काबिलयती छाँटने का क्या जरूरत था ? अपना मुँह है —बस लगा दिया लारा—यह आजादी झूठी है !"

"ठीक बात ! वाजिब बात !" जनता एक ही साथ कहती है।

"ओंयें सोंयें सोंयें···" कालीचरन क्या कहता है, समझा भी नहीं जाता है।

"अरे हाँ हाँ, गलती हो गई !" कॉमरेड वासुदेव समझा रहा है। यानी कालीचरनजी की बात को जोर-जोर से सुना रहा है—"अरे गलती हो गई। वह नहीं जानता था। चमड़े की जीभ है, लटपटा गई। कालीचरनजी का इसमें कोई दोख नहीं !"

यहाँ के सोसलिट पाटी वालों को भी यह बात अच्छी नहीं लगती है।···दूसरे गाँव से आकर यहाँ लारा लगाने की क्या जरूरत थी ? कालीचरनजी का गला बुझ गया था तो वासुदेव और सोमा तो लारा लगा ही रहे थे। बीच में फुटानी छाँटकर सब गड़बड़ा दिया।

"अच्छा ! अच्छा ! माफ कर दो !"

"हाँ हाँ, छोड़ो ! आज सुराज का दिन है।"

टन् टनाक् टन टनाक् ! मोकनी हथिनी फिर चली। जुलूस आगे बढ़ा !

सभी ढोल-बाजे एक ही साथ बजने लगे ! ढिम् ढिम् झरं झरं····पी ओ धू ऊ तक तक धिन !

भों ओं ऊँ धू तू—ताक धिना धिन !

कूई कू ! कूई कू ! मोकनी हथिनी ताल पर कूकती है ।

बालदेवजी फिर सनके हैं क्या ? हाथ में झण्डा लेकर अब हाथी के आगे-आगे नाच रहे हैं। झण्डे को इस तरह भाँजते हैं मानो गाट साहेब रेलगाड़ी को झण्डी दिखला रहे हों ! हाँ भाई, सुराज का असल हथियार है तेरंगा झण्डा । पहले के जमाने में तलवार से लड़ाई होती थी, इसलिए लोग हाथ में तलवार लेकर नाचते थे। सुराज की लड़ाई का हथियार झण्डा है । इसलिए झण्डा नचा रहे हैं बालदेवजी । सनके हैं नहीं । जिसका जो हथियार···!

किरं र र घन घन धड़ाम धा, धड़ाम धा ! नौटंगी का नगाड़ा बोल रहा है ।

···भोज तो दिन से ही खाते-खाते मन अघा गया है।···इधर देरी करोगे तो आगे में जगह नहीं मिलेगी । चलो, जल्दी !

किरं र र घन घन धड़ाम धा, धड़ाम धा !

अरे खिस्सा होता सुरु अब सुनहु पंच भगवानों की,
गाँधी महतमा बीर जमाहिर करे सदा कलियानों की !

किरं रं घन घन धड़ाम धा, धड़ाम धा !

···कौन खेला होगा ? क्या कहा ? मस्ताना भगतसिंह ! वाह ! अभी जाकर रंग आँट किया । दिन से पूछते थे तो बोलता था कि सुलताना डाकू का पाठ होगा ।

जिसका जो हथियार !···भगतसिंह का पाठ खुद नितलरैन बाबू लिये हैं । दाहिने हाथ में पिस्तौल है और बाँयें हाथ में बेल के बराबर गोल क्या है ? बम !···अरे बाप ! हाँ, जिसका जो हथियार ! भगतसिंह का हथियार तो बम-पिस्तौल ही था ।

किरं र घन घन धड़ाम धा, धड़ाम धा !

अजी बेटा हम मादरे वतन भारथ का
हमें डर नहीं फाँसी सूली का···!

किर्र रं किर किर धड़ाम धड़ाम !

भगतसिंह नाच रहा है। एक हाथ में बम और दूसरे में पिस्तौल। नाचकर स्टेट[1] के एक कोने से दूसरे कोने पर जाता है। खूब नगाड़ा बजाता है नगाड़ची ! ठीक पन्नालाल कम्पनी के तरह ! इटहरा का नकछेदी है। और कौन ऐसा साफ हाथ बजावेगा !···सिरिफ ताल काटने के समय जरा डर लगता है। ताल काटने के समय धड़ाम धा धड़ाम धा ताल पर भगतसिंह बम वाले हाथ को दो बार पबलि की ओर चमकाता है, मानो बम फेंक रहा हो। और जब-जब वह ऐसा करता है आगे में बैठे सभी लोग जरा करवट होकर एक-दूसरे की पीठ के पीछे मुँह छिपा लेते हैं।···कौन ठेकाना, कहीं इधर ही फेंक दे तब ?···कभी नकली तलवार से देह नहीं कटता है क्या ? तब नकली बम हो चाहे असली, हाथ से छूट जाने पर कुछ-न-कुछ घबैल तो जरूर करेगा !···अरे नखलौ की बाईजी कहाँ है ? उसको सामने लाओ ! डोली में क्या छिपाकर रखा है ?···ताली बजाओ, तब निकलेगी।

"आ गई ! ऐ, देखो नखलौ की बाईजी को !"

"आकर चुपचाप खड़ी काहे हो गई ?"

"देखने से तो मालूम होता है कि जमान है, मगर···।"

"गला से तो जरूर पकड़ी जायगी। गाने तो दो जरा !"

"रोगन-पौडर लगाकर खपसूरत लगती है। दिन में देखना, खपरी की पेंदी की तरह···।"

"हो हो हो ! साला दुलरिया बात बनाने जानता है।"

बाईजी शुरू करती है :

खादी के चुनरिया रंग दे छापेदार रे रंगरेजवा
बहुत दिनन से लागल बा मन हमार रे रंगरेजवा !

१. स्टेज।

धड़ धड़ाम धड़ धड़ाम !

"नाचती है तो नाचती है, दाँत बिचकाकर हँसती क्यों है ?"

"ए राम ! दाँत और ठोर तो एकदम काला भुजुंग है !"

"अजी दाँत नहीं, काबली अनार के दाने हैं दाने !"

···हो हो ! हो हो ! वाह, ठीक कहा दुलरिया ने !

बाईजी गा रही है :

कहीं पे छापो गंधी महतमा
चर्खा मस्त चलाते हैं,
कहीं पे छापो वीर जमाहिर
जेल के भीतर जाते हैं।
अँचरा पे छापो झंडा तेरंगा
बाँका लहरदार रे रंगरेजबा !···

किर्र रि रि रि रि धड़क धड़क धड़क-धड़म धा धड़म धा !

अजी अंगिया पर छापो·····।

···ऐ ! ऐ ! वाह ! हो—हो !···वाह वाह !

"साटो इसके बिलोज पर टका !" एक आवाज आती है।

"जरूर साटो !"

"अरे टका मत बोलो, मिडिल बोलो मिडिल। देहाती की तरह काहे बात करते हो ! चाँदी की चकती को 'मिडिल' कहते हैं।"

"सुनो···भगतसिंह फिर काहे स्टेट पर आया ?"

"प्यारे भाइयो, आप लोग हल्ला मत कीजिए···। अब एक गाना होगा—'मोरा बाँका सिपैहिया टटूटू से गिरा जाय' !"

"अरे लचकर काहे झाड़ता है ? बजाओ नगाड़ा।···रात-भर का सट्टा है। तेरी सिपैहिया की ऐसा-तैसी ! खेला सुरू करो !"

"हाँ, ये लोग तो यही चाहते हैं कि इसी तरह 'रिब-रिब' में ही रात काट दें।···नाचो !"

"ए ! पंचलैट में हवा दो ! भुकभुका रहा है !"

"हवा क्या देगा, आंधी आ रही है। पानी भी बरसेगा।"

किर्र घन घन घड़ाम घा, घड़ाम घा ! नगाड़ा घनघनाया।

गुड़ गुड़म ! आसमान में बादल घुमड़े।

फटाक् ! पटाखा फूटा।

अजी भगतसिंह है नामी इनमें सरदार
अजा करना है उसको गिरिफदार !

···किर्र किर्र घन घन घड़ाम घा !

"मारो साले को ! यही साला सब असल देसदुरोहित है, पहचान रखो !"

"मारो ! मारो !···रे मार साले को !"

"हो हो ! हो हो !" आंधी आ रही है सायद···। गाय-बैलों को घर से निकालकर बाहर करना होगा। चूल्हों में आग छोड़कर ही जलाना लोग सो जाती है। बहुत खराब आदत है। आग रखती है हुक्का पीने के लिए। रे चलो···। बांस-फूस के घर का क्या ठिकाना ! आंधी आई, उड़ा ले गई। बरसा हुई तो टपकने लगी और एक चिनगी भी कभी उड़ी तो सोहा !···चलो। क्या देखेंगे अब नाच ! कटिहार की चवनियां माल को उठा लाया है और कहता है कि नखलो की है। चलो !

गुड़गुड़ुम ! गुड़गुड़ुम !

कमला को डॉक्टर ने अपनी बाँहों में जकड़ लिया है !···तीन बजे दिन में ही संथाली नाच देखने अस्पताल आई थी कमली ! नाच खत्म हो गया, शाम हो गई, उधर नौटंगी कब शुरू हुई, कब खत्म हुई, शायद दोनों में से कोई नहीं बता सकेगा।···जब बादल गरजे, बिजलियां चमकीं और हर-हराकर वर्षा होने लगी तो कमली को डॉक्टर ने अपनी बाँहों में जकड़ लिया।

कमली ने बाँहें छुड़ाने की एक हल्की चेष्टा की।···

बिजली चमकी।

गुड़गुड़ुम ! गुड़गुड़ुम !

रि रि ता धिन ता !
डिग्गा टा डिग्गा !

संथाली नाच के मांदर और डिग्गा के ताल पर दोनों की घुकघुकी चल रही है। छम्म छम्'''आज कमली इस इलाके में पहने जाने वाले सभी किस्म के गहनों से लदी है।'''बांक, हंसुली, बाजू, कँगना, अनन्त, चूर, झंझनी, अर्थात् झुनुक-झुनुक बजने वाली बेड़ियां जिसे 'झंझनी-कड़ा' कहते हैं !'''और चूर तो देह के सिहरन पर भी खनकते हैं—टुन टुन !

टुन टुन !
छम् छम् !
गुड़गुड़ुम !
छम्म, छम् ! छम्म, छम् !
टुन टुन !
डॉक्टर ! डा क्ट र ! ओ !'''प्र शा न्त म हा सा ग र !
रा ज क म ल !'''

पाँच

बावनदास को अब अपने पर भी परतीत नहीं होता है। '''बालदेवजी कहते हैं—चित्त चंचल हो गया है बौनदास का और थोड़ा 'भरम' भी गया है। बस सिरिफ गांधीजी पर भरोसा है बावन को।'''बापू सब पार लगावेंगे ! बहुत-बहुत कठिन परीच्छा में बापू अकेले सबको सँभाल लेंगे। जै ! बाबा ! बापू !

'''लेकिन उसके दिल में न जाने क्या समा गया है कि हर बात का खराब रूप ही पहले देखता है। सन्देहात्मक दृष्टिकोण से ही वह सारी दुनिया को परखता है। बापू ने चिट्ठी का जवाब दिया है :

"भगवान् बावनदासजी। आप ही धीरज छोड़ दोगे तो भक्तजनों का

क्या होगा ?···बापू के प्रणाम !"

बावन कठहँसी हँसते हुए कहता है, "गंगुलीजी ! बापू को देखिए। ···अब हम क्या करें ? मन में सन्देह होता है, दिल उदास हो जाता है। फिर आदमी को अपने करम पर भी बिसवास कैसे हो ? बापू से पूछते हैं तो दिल्लगी में ही टाल देते हैं। लिखते हैं कि आप ही धीरज छोड़ दीजिएगा···। अरे ! छलिया रे ! जनम-जनम छल करके ठगा, कभी रामा औतार तो कभी क्रिसना औतार और···"

"कभी बावन अवतार !" गांगुलीजी चट से कह देते हैं।

'धत् ! आप भी तो··· हो-हो-हो !" बहुत दिनों के बाद आज ही बावन ऐसा दिल खोलकर हँसा है।

बावनदास जब दिल खोलकर हँसता है तो उसकी आँखें खुद-बखुद बन्द हो जाती हैं, और तब ऐसा लगता है मानो एक बड़ा-सा सेलुलाइड का खिलौना हिल रहा हो। बावन अवतार !

रावन अवतार ! यह चलित्तर रावन का औतार बनकर आया है भाई, सुने हो या नहीं, हसलगंज के हरखू तेली के घर में डकैती हो गई !

···आयें ! कब ?···सुराज उतसव की रात में ही ? बन्दूक वाले थे ? घवैल तो नहीं हुआ कोई ?···दो खून ? एं ?

सुमरितदास बेतार अभी तुरत कटिहार से आया है।

"बात यह है कि हसलगंज के हरखू तेली की कंजूसी के बारे में तो सभी जानते ही हो !···चलित्तर करमकार, या भगवान् जाने कौन था सो, एक दिन ठीक दोपहर को उसके दरवाजे पर आया। पानी पीने के लिए माँगा तो, सुनते हैं कि, पैसा माँगा। लेकिन सहुआइन कहती है, दूकान पर जलपान करके, हाथ-मुँह पोंछ के जाने लगा तो हम पैसा माँगा। बोला कि तुम्हारे यहाँ एक गिलास पानी पियेंगे तो पैसा माँगोगी ? भाई, हम भी सुनती-उड़ती बात कहते हैं, खाँटी हाल एक-दो दिन में खुद औट हो जायगा।···सुनते हैं कि सुराज उतसब की रात में एक दर्जन लोगों को लेकर, पहड़िया घोड़ा पर सवार होकर आ गया। आते ही बोला—कहाँ

सहुआइन ! पूड़ी बनाओ !···नहीं बनाएगी कैसे ? हाथ में रैफल-बन्दूक लेकर दो-दो आदमी सहुआइन के अगल-बगल में एकदम तैयार। हरखू साह को चारों ओर से घेरकर चौकी पर बैठाया और कहा कि रमैन पढ़ो। गाँव में दो आदमी चले गए, लोगों से कहा कि हम लोग हरखू साह की लड़की को देखने आये हैं।···सुबह होते-होते सब काम फिनिस ! जहाँ-जहाँ मिट्टी के नीचे घड़ा गाड़कर रखा था, सब खोद लिया। एक जगह खोदकर गिनता था और हिसाब करके कहता था—'नहीं, और है। बताओ बुड्ढे ! नहीं तो चढ़ाओ इसको चूल्हे पर, ढालो ऊपर से किरासन तेल।' सहुआइन तो रात-भर पूड़ी छानती रही और मिठाई बनाती रही। सुनते हैं, सहुआइन बीच-बीच में कहता थी—'ऐ बेटा ! तीरथ करे खातिर कुछ रख ली है, कुछ छोट दिहऽऽ···।' उसको एक हजार रुपैया दे दिया। ···हरखू साह को कहा कि तुम आठ साल से एक ही धोती पहन रहे हो, तुमको रुपये की क्या जरूरत है ?···जनाना लोगों को देह पर हाथ भी नहीं दिया, सुनते हैं ! मगर जाते-जाते दो खून कर दिया।"

सुमरितदास बात करते-करते चारों ओर देखते हैं। क्यों ?···कहते-कहते रुक क्यों जाते हैं ? आज फिक् से हँसते भी नहीं हैं। मुंह बड़ा चटपटाया हुआ देखते हैं। क्या बात है ? ऐसा तो कभी नहीं देखा ?···'सुनते हैं, सुनते हैं' की झड़ी लगाये हुए हैं। आखिर असल बात क्या है ?

"अरे दासजी ! कोई प्राइविट बात ?"

"नहीं, प्राइविट बात कुछ नहीं है भाई !···दंगा हो रहा है। सुनते हैं कि डिल्ली, कलकत्ता, नखलो, पटना सब जगह हिन्दू-मुसलमान में लड़ाई हो रही है। गाँव-के-गाँव साफ ! ···आग लगा देते हैं।" सुमरितदास हाथ में लोटा लेकर दिसा-मैदान को ओर चले जाते हैं।

···बालदेव अनसन करगे। क्यों, क्या बात हुई इस बार ? बालदेव-जी कहते हैं, "पियारे भाइयो ! हम अभी डाकटर साहेब के बेतार में खबर सुनकर आ रहे हैं। अंधेर हो गया। एक दम सब पगला गए हैं, मालूम होता है। गांधीजी खिलाफत के जमाना से ही कह रहे हैं—हिन्दू-मुसलमान

भाई-भाई हैं। तैवारीजी भी गीत में, आज से पन्द्रह-बीस साल पहले कहिन हैं :

अरे, चमके मन्दिरवा में चाँद
मसजिदवा में वंसी वजे !
मिली रहू हिन्दू-मुसलमान
मान-अपमान तजो !

"···सो, गांधीजी की बात काटकर जो लोग यह सब अंधेर कर रहे हैं, वे भी एक दिन अपनी गलता मान लेंगे। ···गांधीजी अनसन करेंगे सायद।···आजकल तूवाँखाली गये हैं। अभी बावनदास आया है पुरैनियाँ से। बोलता है कि गांधीजी ने रामलाल बाबू को तूवाँखाली बुलाया है। गांधीजी ने सिवनाथ चौधरीजी को चिट्ठी दिया कि सनतीस में गांधी आसरम भेंजो आदमी पुरैनियाँ से आया था, उसको तूवाँखाली भेज दो। रमैन पढेगा।···रामलाल बाबू जब गा-गाकर रमैन पढ़ने लगते हैं तो सुनने वालों की आँखों से खुद हा नीर ढरने लगता है।···"

जोतखी काका आजकल बहुत चुप रहते हैं। फिर भी इतनी बड़ी-बड़ी घटनाओं पर वह कुछ नहीं बोलें, यह कैसे हो सकता है ? उनकी राय है कि यह सब सिर्फ सुराज का नतीजा है।···जिस बालक के जन्म लेते ही माँ को पक्षाघात हो गया और दूसरे दिन घर में आग लग गई, वह आगे चलकर और क्या-क्या करेगा, देख लेना। कलियुग तो अब समाप्ति पर है। ऐसे-ऐसे ही लड़-झगड़कर सब शेष हो जायँगे।

अब लोग सोशलिस्ट पार्टी ऑफ़िस में भी दरखास-फरियाद लेकर आते हैं। जुमराती मियाँ रोता हुआ आया है। सुमरितदास ने उससे पाँच रुपैया छीन लिया है। "काली बाबू ! जुलुम···अब गरीब लोग कैसे रहेंगे ?"

"अच्छा-अच्छा ! आज शाम को यही पाटी ऑफिस में रहिए। रात में हम आपकी पंचैती कर देंगे।" कालीचरन विश्वास दिलाता है।

"कॉमरेड बासुदेव !···सुमरितदास को बुला लाओ तो।" शाम को कालीचरन गंभीर मुद्रा बनाये हुए है।

मच् मच् मच् !···वासुदेव कलपुरैनियाँ से लौटा है। भाटा कंपनी का जूता खरीदा है चौबीस रुपये में । चलने के समय मच् मच बोलता है । रात में भी, आँख पर धूप-छाँहा काला चसमा लगाकर, पैजामा-कुर्ता पहनकर, जूता मचमचाकर चलने के समय घोड़ा नमा जैसा लगता है । परेड करते हुए चलने का मजा आ जाता है ।···वासुदेव स्टेशन पर पान-बीड़ी-सिकरेट वालों की तरह बात को ऐंठकर आवाज गहरी करके पुकारता है—"सो म रे ट ड ँ स !"

सुमरितदास की पिल्ही चमक गई होगी ! वासुदेव मन-ही-मन हँसता है—"स् यो म रे ट ड ँ स !"

एक छोटी-सी छपरी में किधर छिपेंगे दासजी ! वासुदेव ने पहले ही देख लिया है । वह उसे हाथ पकड़कर घसीट लाता है । सुमरितदास थर-थर काँप रहे हैं । "ह जौ र, दुहाई···!"

"बेतार, बुलाहट है !" वासुदेव हँसते हुए कहता है ।

"कौ···कौन, वा···वासुदेव ? हेत् ! हम समझे कि···दारोगा साहेब हैं । वाह ! खूब डराया ! अलवत्त बोली सीखे हो बाबू ! होनी ही चाहिए। देस-बिदस घूमते हो तुम लोग । किसने बुलाया है ?···कालीचरन ने ? अच्छा, एक बात बहुत दिन से पूछते-पूछते भूल जाते हैं । कहो तो, तुम्हारी पाटी में भी दो पाटी है क्या···?"

"काहे ?"

"पहले बताओ तो," सुमरितदास फिक् से हँसता है ।

"नहीं, पहले आप बताइए," वासुदेव कम जिद्दी नहीं ।

"यही···कालीचरन एक दिन बोल रहा था कि सिकरेटरी साहेब वासुदेव पर बिसवास नहीं करते हैं । हम बोले कि वासुदेव में तो कोई डिफेट नहीं तो बोला कि दासजी आप क्या जानिएगा भीतरी बात ।··· इसीलिए पूछते हैं कि···"

"अरे हाँ-हाँ दासजी, हम समझ गए । असल में कालीचरन है धरमपुरीजी की पाटी का । धरमपुरीजी भी सोशलिट पाटी में ही हैं, मगर

हमार सिकरेटरी साहब के सामने वह कुछ नहीं हैं। एकदम ठंडा खेयाल के आदमी हैं। सभी से हँस-हँसकर बोलेंगे, कांगरेसियों के साथ बैठकर दुकान में दही-चूड़ा खाते हैं। अब सोचिए कि···यह फलहार करने वाला आदमी, इस किरान्ती पाटी में कैसे···? आप ही सोचिए दासजी !"

"ओ ! ओ···ओ ! यह बात है ?" सुमरितदास गंभीर होकर कहता है। "वाजिब बात है।"

"हाँ, और यह कालीचरनजी उन्हीं की पाटी में हैं।" फिर फिस-फिसाकर कहा, "मंगलादेवी के साथ आजकल ऐसा रसलीला होता है कि क्या कहेंगे।···यही सब बात हम सिकरेटरी साहेब से बोले। कालीचरन को सिकरेटरी साहेब ने डाँटा है। इसीलिए ऐसा बोलता होगा।···देखिए न ! इसी बार मजा लगेगा, सम्मेलन में जाने के समय।"

"ओ-ओ-ओ।···हाँ भाई ! हर जगह यह पाटीबंदी ठीक नहीं।··· लेकिन आखिर एक हद है। धरमपुरीजी के बारे में तुमने जैसा कहा, वैसा आदमी किरान्ती पाटी में कसे रह सकता है ? वाजिब बात !·· अलबत्त ···बोलता है तुम्हारा सिकरेटरी किसनकान्तजी—गरमागरम ! बोलने के समय वाँह जब मरोड़ता है तो लगता है कि···। अच्छा, हाकिम का पर-वाना क्यों जारी हुआ है ? क्यों बुलाहट है ?"

"अरे, वही जुमराती मियाँ ने न जाने क्या-क्या कहा है जाकर। बोलता था कि रुपैया छीन लिया है।" वासुदेव आँख पर काला चश्मा चढ़ाते हुए कहता है, "मुसलमानों का क्या बिस्वास ?"

"समझो जरा !" सुमरितदास फिक् से हँसकर कहता है, "समझने ो बात है !"

"मैं जाकर कह दूँगा कि घर पर नहीं हैं। कोई लाट साहेब थोड़ो हैं ो लोग हाथ बाँधे खड़े रहेंगे। हम किसी का परवाह नहीं करते।" वासु-देव पैकेट से सिगरेट निकालकर दियासलाई के डब्बे पर ठोंकता है— "दिन-भर हम लेक्चर झाड़ते रहे हैं, सिगरेट मत पिओ, अंडा मत खाओ। और भीतरे-भीतरे ··।" वासुदेव माचिस जलाकर सुलगाने लगता है।

...दियासलाई की रोशनी चश्मे के दोनों शीशों पर चमक उठती है। काले चश्मे पर जलती हुई माचिस ! सुमरितदास के सारे देह में एक सिहरन दौड़ जाती है, रोयें खड़े हो जाते हैं।...लेकिन वह हँसते हुए कहता है, "डूबकर पानी पिओ, एकादसी का बाप भी न जाने !"

"हुँ !" बासुदेव धुएँ का गुबारा छोड़ते हुए खाँसता है।

...दारू की महक ! सुमरितदास की आँखें चमक उठती हैं, "बासुदेव बाबू, कुछ नेपलिया माल आया है क्या ? ज़रा हमको भी तो चखाओ !"

"ओल रैट ! कल चखावेगा। लाल सलाम !"

मच् मच्, मच् मच् !

छः

तंत्रिमाटोली में आज घमाघम[1] पंचायत हो रही है।

बहुत दिनों की बन्दिश है कि पंचायत में कोई भी घर की बोली नहीं बोले। काहे-कूहे, माने कचराही मोगलाही[2] जितना बोल सको, अच्छा है। पंचायत में कोई हटा नहीं सकता। लौजमानों के दल ने रमपियरिया के दासिन होने का घोर विरोध किया है।

"खेल बात है ? जात है कि ठट्ठा है ? जब जिसका मन हुआ किसी की रखेलिन बन गई, दासिन बन गई, रंडी बन गई ? खेल है ?" आज गरभू भी गरम होकर बोलता है।

पंचायत में सबों को बोलने का हक है, इसीलिए घमाघम पंचायत हो रही है।

"कहाँ है रमपियरिया की माये ?"

सबों की निगाह टट्टी की आड़ में खड़ी औरतों पर जाती है। रमजू-

१. गरम।

२. कचहरी में बोली जाने वाली उर्दू।

दास की स्त्री खखारकर गला साफ़ करती है, "रमपियरिया की माये को क्या कहते हैं ?"

"तुम मत बोलो !"

"धान न बोले, बोले भूसा टन !"

"हम बोलेंगे ही !" रमजूदास की स्त्री उठ खड़ी होती है।···लगता है आज मारपीट भी होगी।

"कहाँ, उचित और नोखे ! छड़ीदार काहे बने हो ?"

"हाँ, मारने कहो छड़ा।···जो न छड़ी से पीटे वह दोगला का बेटा !···रमपियरिया की माये के मुंह में बोली नहीं है तो आज धोंवी का भी मुंह खुला है !···रमपियरिया जवान है, उसके जो जी में आवे कर सकती है।···पंचायत में तो बड़ा फड़फड़ करते हो गरभू, रमपियरिया तो तुम्हारी भतीजी लगेगी न ?···बोल, खोल दें बात ?···सात बेटे का बाप है छीत्तन, इससे पूछिए कि रमपियरिया के माये के मचान पर दिन-रात, भूख-पियास भूलकर पेट के बल क्यों पड़ा रहता है ? यही निसाफ़ है···? अरे जवान-जहान की बात हो तो कहा जा सकता है कि एक दिन पैर भँस[1] गया। इस घुर-घुर बूढ़े की यह चाल !"

"चुप रहो।···ऐ ! चुप !···कहाँ छीत्तन ?"

"सिर में तो अब एक भी काला बाल खोजने पर मिलेगा नहीं और यह तेजी ?···काहे जी छीत्तन, क्या कहती है रमपियरिया की माये ?"

छीत्तन का तोतरहवा[2] बेटा गरम हो जाता है, "मूं ससंभाय कय बोग्रो!"

"मारो ! पकड़ो !"

"ऐ ! ऐ !"

"लगाओ गले में कपड़ा ! मारो झाड़ू ऊपर से !···सान दिखाता है !"

नोखे और उचितदास छड़ीदार हैं। पंचायत जब धमाधम होने लगती है, तब वे दोनों छड़ी हाथ में लेकर नचाते रहते हैं। नोखे और उचित-

१. बहक जाना।

२. तोतला।

दास छीत्तन को पकड़कर गले में कपड़ा लगा देते हैं। मँहगूदास, चेथरू, मुसहरू, अनपू और घोतन बीच-बिचाव करते हैं—"मारो मत !"

"सभी बूढ़े एक तरफ हैं." एक आवाज आती है।

अब रमपियरिया की माये के बदले छीत्तनदास को पंचैती होती है। छि: छि: ! लाज से डूब मरने की बात है ! इस बार पाँच ही रुपैया जरिमाना हुआ। सस्ते छूट गए !

छीत्तनदास को पाँच रुपैया जुर्माना हुआ है और उसके तोतरहवा बेटा को पाँच बार कान पकड़कर उठने-बैठने की सजा। नोखे गिनता है—"एक दो तीन चार पाँच—बस !"

रमपियरिया की माये को एक साम भोज देना होगा। महंथ साहेब जात ले रहे हैं तो भात दें।'' क्या कहती है रमपियरिया की माये ?''' देगी ?'''तब ठीक है। बोलिए, पंच-परमेसर क्या बिचार ?'''जो दस का बिचार !

दस का बिचार हो गया—रमपियरिया दासिन बन सकती है। जाति की बन्दिस में जरा भी ढील देने से सब गड़बड़ा जाता है। इसी तरह बराबर पंचायत होती रहे तब तो ? ' अभी यह भोज तो फोकट में चला जाता हाथ से।

रमजू की स्त्री रमपियरिया की माये के आँगन में बैठी समझा रही है रमपियरिया को—"जब दूध की छाली और मालभोग केला खाकर आँख पर चरबी चढ़ जायगी, तब मौसी को पहचानोगी भी नहीं। महंथ से कह देना, जोड़ा साड़ी से काम नहीं चलेगा। दही खिलाने से बाकी भोजर नहीं होगा।'''कठसर[1] लेकर छोड़ेंगे।"

रमपियरिया हँसती है—"उनको तो जो कहेंगे, करेंगे। मगर कोठारिन'''"

"कैसी पगली है रे ! कोठारिन वह कैसी ? अब तो कोठारिन तें है। इसी मुँह से मठ पर रहेगी रे ?'''लछमिनियाँ को कम मत समझो। उसका

१. कठसर, एक गहना।

जहर चौआ[1] यदि नहीं उखाड़ सकी तब तो तुम्हारा महंथ सब दिन खंजड़ी बजाकर फटकनाथ गिरधारी गाता रहेगा। पगली ! इसी लूरमुंह से…"

"सुनती है रे ! रमपियरिया ! कहाँ गई उठकर ? · सायद महंथ आया है…।" उसकी माँ पुकारती है।

"साहेब बंदगी हो महंथ ! पिछवाड़े में अब काहे छिपे हो ? अब तो तुम अपने आदमी हुए।…इधर आओ !" रमजू की स्त्री आंख टीपकर मुस्कराती है।

महंथ साहेब रमपियरिया के साथ केलाबाड़ी से निकलकर आंगन में आते हैं।

"पीढ़ी दो रे !…बैठिए।"

"जात वाले तो भात मांग रहे हैं। हमने तो कबूल लिया है।" रमपियरिया की माये चिलम फूंकते हुए कहती है।

"लछमी से पूछेंगे," महंथ साहेब आंखें नीची करके कहते हैं। रमपियरिया की माये अब उनकी सास है। सास के सामने जरा लिहाज से बातें करनी चाहिएँ।

"क्या बोले ?" रमजू की स्त्री फटे कनस्तर की तरह झनझना उठती है, "लछमी से पूछेंगे ? रमपियरिया की माये ! सुनती हो ? हम कहा था न, उसने तो इनको भेंड़ा बना लिया है। अरे, महंथ साहेब ! लछमी कौन होती है जो आप उससे पूछिएगा ?"

"नहीं, वह बोली है…!"

"महंथ साहेब, बुरा मत मानिएगा, आप हिजड़ा हैं।" रमजू की स्त्री जाने के लिए उठकर खड़ी होती है, "रमपियरिया को लछमिनियाँ की लौंडी बनावेंगे महंथ साहेब, हम सब समझ गए।"

"नहीं, नहीं ! ऐसा नहीं हो सकता। डमपियाड़ी जो कहेगी…वही होगा।" रासदासजी के दोनों हाथ जुड़ जाते हैं।

"…डमपियाड़ी जो कहेगी !' महंथ साहेब हर बात में अब कहते हैं—

१. विषदंत।

'जाने डमपियाड़ी।'

"रमपियरिया क्या जानती है ?" लछमी कुढ़ जाती है, "साल-भर तो उसे मठ के नेम-टेम सीखने में ही लग जायगा। हाथ की सभी अंगुलियों को सही-सही गिन भी नहीं सकती है और उसके पास जनमजूरों का हिसाब है। सतगुरु हो, सतगुरु हो !"

जिस दिन से रमपियरिया मठ पर दासिन होकर आई है, लछमी का मुंह हांडी की तरह लटका रहता है।···महंथ रामदास सब-कुछ समझते हैं। रमपियरिया को मजूरों की मजूरी का धान नापने को कहते हैं महंथ साहेब। "नहीं जानती है हिसाब-किताब, तो समझा दो। सिखावेगी-पढ़ावेगी तो कुछ नहीं, बस खाली लचकर झाड़ती रहेगी !"

"मैं लचकर झाड़ती हूं ? सतगुरु हो ! मुझे अपने पास बुला लो प्रभू ! अरे, अभी उसकी देह में एक मन साबून घँसो तब कहीं उसके सरीर में प्याज-लहसुन की गंध कम होगी। भोर को उठना सिखाओ। मुंह तो कभी धोती भी नहीं है। बीड़ी पीती है। डोलडाल से आकर नहाती भी नहीं है। झूठे हाथ से बीजक उठाती है। मैं क्या सिखाऊँ-पढ़ाऊँगी ? तुम क्या कहते हो ? आंचल में चाबी लटकाये बिना कुछ नहीं सीख सकती, तो लो न चाबी अपने भंडार की। मुझे चाबी लटकाने का सौख नहीं है। जानते हैं सतगुरु !" लछमी झन से चाबी का गुच्छा फेंक देती है।

···महंथ रामदास देखते हैं, यह तो सिर्फ गोदाम-घर की चाबी है। संदूक की चाबी कहाँ है ?···"चाबी काहे फेंकती हो ? बात-बात में इतना गुस्सा होने से कैसे काम चलेगा ?" महंथ साहेब गंभीर होकर कहते हैं, "तुम मेरी गुरुमाई हो !···डमपियाड़ी को रास्ते पर लाना तुम्हारा काम है।"

"देह का मैल भी मैं ही छुड़ा दूंगी ? कपड़ा मैं ही साफ़ कर दूंगी ? ···दस दिन भी नहीं हुए हैं, गद्दीघर[1] की दीवाल पर थूक-खखार की ढेरी लग गई। अधजली बीड़ी के टुकड़ों से घर भरा हुआ है। वह भी मैं ही

१. बीजक और महंथ के रहने का कमरा।

साफ करेंगी ?···अब यह मठ नहीं, सूअर का खुहार है खुहार।"

"तुमको डमपियाड़ी के देह का मैल छुड़ाने के लिए कहेंगे ? हम पागल नहीं हैं। तुम बाबू बालदेव की गर्दन का मैल छुड़ाओ···।" महंथ रामदास क्यों छोड़ देंगे ? सच्ची बात तो लोग अपने बाप के मुंह पर भी कह देते हैं।

"बालदेवजी का नाम मत लो।"

"क्यों नहीं लेंगे ? ···मठ को सूअर का खुहार बनाया कौन ?"

"मैंने बनाया है ?"

"हां, तुमने बनाया है। मेरा भीतर जल रहा है। बात मत बढ़ाओ !"

"भीतर जलता है तो मारकर ठंढा कर लो।"

मारपीट का नाम सुनकर बालदेवजी कैसे चुप रहें ! हिंसावाद का डर है ! "महंथ साहेब ! ···कोठारिनजी ! सान्ती ! सान्ती से सब बात कीजिए !"

"अहा-हा ! कोठारिन रे कोठारिन !" रमपियरिया को बचपन से ही झगड़ने की तालीम मिली है। वह किवाड़ की आड़ से निकल आती है और हाथ चमका-चमकाकर कहती है— "रोज आध पहर रात को कोठारिन की कोठरी खुलती है।···संदूक की चाबी कहां है ? ··गुदामघर में है क्या ? सब तो बेंच-बांचकर छुट्टी कर दिया।"

लछमी के नथने फड़कने लगते हैं। लगता है किसी ने बांस की पतली छड़ी से उसकी पीठ पर शपाक् से मार दिया। ·· बारह बजे रात को कोठरी खुलती है !···सब बेंच-बांचकर छुट्टी कर दिया !···सतगुरु हो, किस पाप का डंड दे रहे हो प्रभू ?

"रामदास ! अपनी फैकसियारी[1] का मुंह बन्द करो, नहीं तो अच्छा नहीं होगा। क्या चाहते हो तुम लोग ?···संदूक की चाबी के लिए कलेजा ऐंठ रहा है तो ले लो।" लछमी सन्दूक की चाबी भी फेंक देती है।

रमपियरिया अब गद्दीघर से बकर-बकर कर रही है।···अलबत्त

१. लोमड़ी की एक जाति।

बोल सकती है रमपियरिया ! लौंगी-मिरचा की तरह वह तेज है। उसकी बातें सुनकर देह लहरने लगता है। बात में भी ऐसा···झाल ?

"लड़ि मरे बरदा, बैठल खाये तुरंग। दिन-भर बैठकर महतमाजी-महतमाजी कहता है नालदेव, कभी एक लोटा पानी भी किसी पेड़ में दे तो समझें कि हाँ ! सुबह से साम तक ऐना-फकही लेकर महरानी सिंगार-पटार करेंगी ! यहाँ कोई किसी का नौकर नहीं। ···मेरे देह में मैल है, मन में नहीं। ऊपर से तो गमकौआ साबुन और चंपा-चमेली का तेल लगाती हो—भीतर ? राम-राम ! रात-भर मुँह में मुँह सटाकर सोने-वाली, भोर में मुँह धोकर सुध तो नहीं हो सकती।···नट्टिन ! कसबिन !" रमपियरिया बड़बड़ा रही है।

'डमपियाड़ी ! बेसी मत बोलो, सिर में दरद हो जायगा।" राम-दासजी कहते हैं, "ऐसा जानता तो···।"

लछमी दासिन कुछ नहीं बोलती है। चुपचाप, टकटकी लगाकर नीबू के पेड़ की ओर देखती है।

रमपियरिया की एक-एक बात तीर की तरह उसके मर्मस्थल में गुँथ गई है। ···गमकौआ साबुन और चमेली का तेल ? ···महंथ सेवादास ने उसे यही एक बहुत खराब आदत लगा दी है, बिना साबुन के वह नहा ही नहीं सकती है। मन पवित्र ही नहीं होता है बिना साबुन के ! केशरंजन तेल तो सिर-दर्द के दिन ही अब लगाती है वह। ···महंथ साहेब जब पूर्णियाँ कचहरी से लौटते तो झोरी में तेल, साबुन, किसमिस, अखरोट और तरह-तरह का फल-मेवा ले आते थे। कोई-भी नई चीज बिकते देखा, बस खरीद लिया।

···महंथ सेवादास के साथ सभी तीरथ कर चुकी है लछमी···क्या इसी नरक-भोग के लिए ? उसकी तकदीर ही खराब है। अब मठ में रहना नरकवास है ! छिः-छिः, दस दिन हुए, परसाद जरा भी नहीं रुचता है, पानी में मछली की गंध पहले ही रोज लग गई, सो अब पानी पीते ही कै हो जाती है।···मठ पर आने के समय रमपियरिया की माये ने ठूँस-ठाँस-

कर मछली खिला दिया था। सतगुरु हो ! ···सब-कुछ करो, पंथ मत भरस्ट करना गुरु··· ! वह फल ही अलग हो जायगी मठ से । महंथ साहेब उसके नाम से तीस बीघा जमीन और कलमी आमों का एक बाग लिख गए हैं। उस पर मठ का कोई अधिकार नहीं। ···सब एक सप्ताह में ही, सतगुरु की कृपा से, ठीक हो जायगा।

लछमी की आँखों के आगे सपनों जैसी एक दुनिया बस रही है। ···कलमी आम के बाग में, ठीक बम्बई आम के पेड़ के पास, दो खूबसूरत झोंपड़ियाँ हैं। वह चरखा चला रही है, बालदेवजी बीजक बाँच रहे हैं ! ··

"बालदेवजी ! अब आसन तोड़िए !"

बालदेवजी लछमी के चेहरे की ओर भकरभकर[1] देखते हैं। जब-जब वह लछमी की आँखों में खोते हैं, उनका चेहरा ठीक ऐसा ही अर्थ-भाव-हीन हो जाता है।···आसन तोड़ना होगा ?

"हाँ, आसन तोड़ना होगा। यहाँ धरम नहीं बचेगा।" लछमी की आँखें डबडबा आती हैं।

आ रे ! जोगिया के नग्र बसे मति कोई
आहो संतो···जो रे बसे सो···जोगिया होई !

···डिम डिमिक डिमिक्, डिम डिमिक डिमिक् !

सात

कमली दिन-दिन खूबसूरत होती जा रही है।

गले में अब दो रेखाएँ ऐसी उभरती हैं जो उसके मुख-मण्डल को और भी आकर्षक बना देती हैं। आँखों में चंचलता नहीं, एक मद है। ··· अचानक देखने पर लगता है कि आँखों में काजल पड़ा है।

"माँ ! अब तुम्हारा डॉक्टर···खुद बेहोश होने लगा। आध घंटे से

१. अर्थ-भावहीन दृष्टि से देखना।

दीवार की ओर एकटक देख रहा है।" कमला अपने कमरे में बाल झाड़ रही है।

माँ डाँटती है, "कमली, डाक्टर साहेब गोल कमरे में बैठे हैं।"

"तो क्या हुआ ?"

कई दिनों से माँ चाहती है कि कमली को कहे, इतना हेल-मेल अच्छा नहीं। लेकिन, अभी उसकी ओर देखते ही माँ ने न जाने क्या देखा कि मोम की तरह गल गई।···दूधिया गौर वर्ण, सुडौल बाँहें, लम्बे-लम्बे बाल, सुगठित मांसपेशियाँ और आँखों में यह क्या ?···काँप जाती है माँ। यह क्या रे अभागी ? हतभागिन ! आँचल को मैला मत करना बेटी, दुहाई ! नहीं, नहीं···वह भी कैसी है ? उसकी बेटी तो 'माँ कमला' है···वह जो चाहे, करे ! माँ के ओठों पर स्वाभाविक मुस्कराहट लौट आती है, "मालूम होता है, तुम्हारा रोग उतारकर डाक्टर ने अपने ऊपर ले लिया है।"

"हो-हो !" डॉक्टर अब हँसी जब्त नहीं कर सकता है, "हो-हो !" कमला पर्दे की आड़ से गला निकालकर इशारे से कहती है, "चुप ! आप बीमार हैं। मालूम ?"

तहसीलदार साहब की खड़ाऊँ खटखटाती है। हँसी सुनकर वे भला कोई और काम कर सकते हैं !

डॉक्टर को तहसीलदार साहब के दोनों रूपों के दर्शन हो चुके हैं। जब वह घर-गृहस्थी, मामले-मुकदमे, लेन-देन, नफा-घटी वगैरह की बातें करते रहें तो उनका कोई और रूप देखिएगा। घर में, आराम से बैठकर दीन-दुनिया की बातें करते समय अथवा रामायण-महाभारत, देश-विदेश से लेकर घरेलू चीजों पर टीका करने के समय, किसी और तहसीलदार साहब को आप देखिएगा।···हास्यप्रिय, रसिक और कुशल गृहस्थ ! भोला-भाला इन्सान !

डॉक्टर को उनके प्रथम रूप से बेहद घृणा है, किन्तु दूसरे रूप के इन्द्रजाल में तो वह फँस ही चुका है।

"क्या बात थी ?" तहसीलदार साहब हँसी का टटका स्वाद लेने के

लिए तुरत पूछ बैठते हैं—"कमली की मां ! क्या बात थी ? ये दोनों नहीं बतावेंगे !"

"अरे, तुम्हारी पगली बेटी के मुंह में जो आता है बक देती है। तुम्हारी बहकाई हुई बेटी अभी कह रही थी कि डाक्टर साहेब अब खुद बेहोश हो जाते हैं।"

"अच्छा,·· तब ?" तहसीलदार साहब मुस्कराहट को रोकने की मुद्रा बनाकर, चाय के प्याले में चुस्की लेते हुए पूछते हैं, "तब फिर ?"

मां हँसी को रोकते हुए कहती है, "तो मैंने कहा कि मालूम होता है, तुम्हारा रोग उतारकर उन्होंने अपने ऊपर ले लिया है। डाक्टर साहेब भी सुन रहे थे···।"

"हा-हा-हा-हा !" तहसीलदार साहब की ऐसी हँसी को कमली कहती है, 'बाबा पछतिया[1] हँसी हँसते हैं।'

तहसीलदार साहब भी देखते हैं, कमला के स्वभाव में बहुत परिवर्तन हुए हैं। ऐसी बेटी का बाप चुपचाप बैठा है; लाचार है। भगवान् ! शंकर भगवान् ! कमली पर कृपा-दृष्टि फेरो !

डॉक्टर तहसीलदार साहब की बुझती हुई हँसी को गौर से देखता है।···यह शायद एक तीसरा रूप है जिसे देखकर पत्थर भी पिघल जाय ! कितना करुण !

"डॉक्टर साहेब !" मां दो प्लेटों में जलपान ले आती है, "कमली रेडियो की दीदी से मटर-पोलाव सीखकर आई है उस दिन !"

"तो यह ऑल-इंडिया रेडियो वाला मामला है ! शुरू कीजिए डॉक्टर साहब ! देखिए कि मटर की घुघनी को किस सफ़ाई से मटर-पुलाव बना दिया है।"

"कुछ भी हो, खयाली पुलाव से तो अच्छा है," डॉक्टर कमला की ओर हँसते हुए देखता है।

"हो-हो-हो-हो !"

१. देर से फलने-फूलने वाली।

हँसी-खुशी के इन्द्रजाल में फँसकर डॉक्टर अपने कर्तव्य की अवहेलना तो नहीं कर रहा है ? वह कभी-कभी रुककर सोचता है—वह जो कुछ भी कर रहा है, उसके विरोध में हृदय के किसी कोने का तार बेसुरा तो नहीं बज उठता है ?'' नहीं, वह जो भी कर रहा है, सही हो या गलत, अच्छा लगता है उसे !

प्यारू ने कई बार कहा है, आँगन की ओर खुलने वाली खिड़की पर भी पर्दा रहना चाहिए। नंगी-सी लगती है यह खिड़की ! डॉक्टर प्यारू को इसीलिए इतना प्यार करता है।'''कमला अब रोज डॉक्टर के यहाँ आती है।

"मौसी कहती थी'''कहती था कि'' तू गलत कर रही है। तुम दोनों गलत कर रहे हो।'''इसके बाद क्या होगा, सोचा है कभी ? क्या होगा इसके बाद डॉक्टर ? कहो तो !" कमला आम के फाँकों जैसी आँखों से मधु ढालते हुए पूछती है।

"कहो तो डॉक्टर, क्या होगा ?"

"क्या होगा ? जो भी हो, बुरा नहीं होगा।"

"तुम हमेशा मेरे पास नहीं रह सकते ?"

"फिर पागलपन ?"

"डॉक्टर, तुम जिन तो नहीं ?"

"जिन ? क्या जिन ?"

"जिन एक पीर का नाम है। वह कभी-कभी मन मोहने वाला रूप धरकर कुमारी और बेवा लड़कियों को भरमाता है। गरीब-से-गरीब को धनी बना देना उसकी चुटकी बजाने-भर की बात है। जिस पर बिगड़े, बरबाद कर दे, जिस पर ढरे उसे निहाल कर दे।" कमला के गले की दोनों नई रेखाएँ जल्दी-जल्दी बनती-बिगड़ती हैं'''। वह डर तो नहीं रही ?'' वह डॉक्टर को पकड़ लेती है।

"क्यों झूठ-मूठ डरने लगीं ? फिजूल की बातें भरे रहती हो दिमाग में !"

"नहीं, मुझे डर नहीं लगता है। यदि तुम जिन भी रहो तो···मैंने तुमको जीत लिया है।"

"इतना भरोसा ?" डॉक्टर कमला की आँखों में चमकते विश्वास का स्पष्ट रूप देख लेता है।···कमला नीरोग है ! स्वस्थ है कमला !

"तुम बाँहों पर उस दिन कौनसा जेवर पहनकर आई थीं ? अब क्यों नहीं पहनतीं ?"

"बाबू।···क्यों ग्वालिनी-जैसी लगती थी न ? गोकुल की ग्वालिन !" कमला ठठाकर हँस पड़ती है।

इसी को रसलीला कहते हैं।···देखते हो ? अभी दो पहर रात को डाकडर का नेंगड़ा नौकर लैंट भुकभुकाता हुआ, तहसीलदार की बेटी को घर पहुँचाने जाता है।···सादी ही क्यों न करा देते हैं ? एकदम साहेब-मेम ! डॉकडर साहेब भी कैसे आदमी हैं !

"डॉक्टर साहेब कैसा आदमी है ?" अगमू चौकीदार से कटहा थाना के नये दारोगा साहब पूछते हैं।

"हुजूर ! अच्छा आदमी है, मगर···"

"मगर क्या रे ? साला आधा बात बोलता है, बटच्··· आधा बात पेट में रखता है। साले, हमको चीन्ह लो। हम दूसरे जिला के नहीं, हमारा घर इसी जिला में है। जानते हो न ? हमसे साले बात छिपाते हो ? क्या मगर ?" नये दारोगा साहब जलजल करते हैं। हवा को भी गाली देते हैं, "साला ! रात में बटच्···ऐसा हवा बहता था हवलदार साहब कि नींद तो बुझिये कि बोझ दिया। हवलदार साहब जरा वह फाइल दीजिए तो ! देखें, क्या-क्या सब पूछा है ? नया-नया पार्टी होता है, साला हम लोगों का जान जाता है !"

दारोगा साहब नई उम्र के हैं। कहते हैं कि इस जिले के पहले पाँच दारोगों में से एक हैं। बातें करते समय वह यह कहना नहीं भूलते—"साहब ! मैं बाहरी आदमी नहीं, इसी जिले का हूँ।" हर मौके पर इसका बढ़िया इस्तेमाल करते हैं,—"मैं यदि एक पैसा खा भी लूंगा तो इसी जिले

में रहेगा।" दारोगा साहब जबर्दस्त गलतफहमी से परेशान रहते हैं कि बाहर के जितने भी लोग यहाँ आये हैं, उन्हीं के हिस्से का सुख-मौज लूट रहे हैं।···फारबिसगंज के नवतुरिया नेता छोटन बाबू जिला कांग्रेस के सिक्रेटरी हुए हैं।···लिखा है···यह डॉक्टर कौमनिस्ट पाटी का है।

दारोगा साहब ने अस्पताल को चारों ओर से एक दर्जन सिपाहियों से घिरवा रखा है।

"आपका घर···असल में कहाँ है ?" दारोगा साहब हैरान होकर पूछते हैं।

"विराटनगर।"

"विराटनगर तो नेपाल में है। आप नेपाली हैं ?"

"नहीं।"

"तब ?"

"आप इतना हैरान क्यों हो रहे हैं, दारोगा साहब ? मैं जो कुछ भी कहता हूँ, लिखते जाइए।"

"सो···लिखते जाइए। वाह ! आखिर क्या लिखें ?"

"मैं जो कुछ भी जवाब देता हूँ।"

तहसीलदार साहब पसीने से तरबतर हो रहे हैं। प्यारू का मुँह सूख गया है। क्या बात है कुछ पता नहीं चलता।···मौसी का कलेजा धड़क रहा है।···लेकिन आश्चर्य ! कमली पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। '···डॉक्टर को कुछ नहीं हो सकता। कोई बात नहीं है।' कमली को दृढ़ विश्वास है।

दारोगा साहब डॉक्टर को दो बात में ही पहचान गए हैं,—"अजीब किस्म का आदमी है यह डॉक्टर !"

सुमरितदास बेतार से आज बच्चा-बच्चा पूछता है—"सुमरितदास, डागडर साहेब ने क्या किया है जो दरोगा साहेब पकड़ने आये हैं ?···घूस लेने की सिकायत तो नहीं किया है किसी ने ?"

"देखो न जी ! बड़ा खराब है यह दुनिया ! किसी का बिसवास नहीं।

"रमैन में कहा है न—बिस रस भरे कनक घट जैसे ! यह डाकडर तो सुनते हैं कि···जरमन वाला का आदमी है ! जोतखीजी ठीक ही कहते थे··· जरमन वाला का सीआईडी है यह डाकडर ! यहाँ के लोगों को सूई भोंक-कर कमजोर करने का काम करता था । कुआँ में दवा डालकर सचमुच में हैजा फैलाया है । जरमन वाला का एक पाटी है यहाँ, कमसीन···कौम-नीस पाटी सुनते हैं, उसी पाटी का आदमी है ।"

इस दारोगा की हरकतों पर डॉक्टर को ताज्जुब होता है । बार-बार कहता है, हम इसी जिले के हैं । बेवकूफों की तरह सवाल करता है, "आपको···बहुत लड़कियों से ताल्लुक रहा है ?"

"रहा है । कम-से-कम···चार सौ लड़कियों के साथ मैं दिन-रात रह चुका हूँ ।" डॉक्टर मुस्कराता है ।

"चार सौ ?" दारोगा साहब को जब किसी बात पर अचरज होता है तो उनकी आँखें उल्लू की आँखों का तरह गोल हो जाती हैं, "चार··· चार सौ ? बटच्···इतनी लड़कियाँ कहाँ से मिलीं ?"

"मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में ।"

"ओ !···नहीं, मेरे पूछने का मतलब है कि भले घर की लड़कियाँ···!"

"क्यों, हॉस्पिटल में भले घर की लड़कियाँ नहीं जातीं ?"

"मेरा मतलब···। खैर, छोड़िए इन बातों को । 'कौमनिस्ट पाटी' वालों से आपका कैसा रिश्ता है ?"

"मेरे बहुत से दोस्त कम्यूनिस्ट हैं ।"

"आपने संथालों को भड़काया···समझाया था कि जमीन पर जबर्दस्ती हमला कर दो ? संथालों ने अपने बयान में कहा है ।"

"संथाल लोग समय-समय पर मुझसे पुराने कागजात पढ़वाने आया करते थे—जजमेंट वगैरह···।"

"आप अपनी किताबें दिखला सकते हैं ?" दारोगा साहब उठकर किताबों की अलमारी के पास जाते हैं ।

···साला, सब डाक्टरी किताबें हैं !···चिल्ड्रेन ऑफ यू० एस० एस०

आर० । लाल रूस, लेखक : बेनीपुरी ।'''लाल चीन, लेखक : बेनीपुरी ।

"ये सब तो रूस की किताब है !"

"रूस की नहीं, रूस के बारे में ।"

"दोनों एक ही बात है ।" दारोगा साहब उस किताब को निकालकर उलटते हैं—मानो किताब के पन्नों में बम छिपा हो । बहुत सतर्क होकर पृष्ठ उलटते हैं ।

'''डागडर साहेब गिरिफ्फ ।'''जुलुम बात ! संथालों को डागडर साहेब ने ही भड़काया था । गाँव में हैजा भी उन्होंने ही फैलाया था ।'''गाँव के लोगों को कमजोर कर दिया ।'''हाँ, हैजा की सूई लेने के बाद'''आज भी जब काम-धंधा करने लगते हैं तो आँखों के आगे भगजोगनी उड़ने लगती है ।'''देखने में कैसा बमभोला था ! मालूम होता था, देवता है । भीतर-ही-भीतर इतना बड़ा मारखू[1] आदमी था सो कौन जाने ! जोतखी काका ठीक ही कहते थे ।

'''गोनौरी के यहाँ फारबिसगंज का एक मेहमान आया है । कहता है, उसके गाँव के पास, सिझवा-गरैया में एक डागडर है जो डकैती कराता है । डागडर तो घर-घर में जाता है, अगवार-पछवार सब देखता है, रुपैया का बक्सा भी वह देखता है ।'''वह अपने दल वालों को पूरा नकसा बता देता है । घर वाले को सोने की दवा दे देता है, उधर चोरी-डकैती करवा देता है । गाँव के आस-पास के लोगों को सूई भोंककर डरपोक बना दिया है ।'''जो उसकी बात से बाहर हुआ, उसका बैल-गाय कटवा देता है, भैंस चोरी करवा देता है या घर में आग लगवा देता है । कई बार बेल-केस[2] उस पर चला, लेकिन रुपैया खर्च करके जीत जाता है । नाम भी अजीब है—डागडर नटखटपरसाद !

"हाँ भाई, किसी का बिसवास नहीं !"

"सोमा जट कल तामगंज मेला में गिरिफ्फ हो गया ।" सोमन मोची

१. बदमाश ।

२. बी० एल० केस ।

कहता है—"अभी मेला से जो लोग आये हैं, बोल रहे हैं।···अब हम अखाड़ा में ढोल नहीं बजाएँगे।"

आठ

जोतखी काका आजकल बहुत खुश रहते हैं।

गाँव केलोग आजकल दिन में पाँच बार परनाम करते हैं।···अलबत्त बरमगियानी हैं जोतखी काका! कलजुग में भी यदि कुछ तेज बाकी है तो बाभन में ही।···जोतिस विद्दा हँसी-खेल नहीं।···बरमतेज अभी भी है। सोना यदि कीचड़ में रहे तो उस पर काई नहीं लग सकती।···परनाम जोतखी काका!

"जीओ, आओ बैठो! क्या बात है?"

"जोतखी काका, हम लुट गए। मेरा तोता कल उड़ गया। हँसते-खेलते चला गया जोतखी काका!" पोलियाटोली का हीरू जोतखी काका के पाँव पर लोटकर रोता है।

"ऐ हीरू, क्या हुआ?" जोतखीजी पूछते हैं।

"मेरा बेटा! मेरा बच्चा जीवानन, कल ही···एक ही दिन के बुखार में···कलेजा तोड़कर चला गया। मेरा सिखाया-पढ़ाया तोता उड़ गया जोतखी काका!" हीरू अब सिर पर हाथ रखकर झुककर बैठा हुआ रो रहा है।

"इतना जल्दी? कल कौन दिन था—सोमवार? हुँ! साम को मरा है न?"

"हाँ, ठीक सूरज डूबने के समय!"

"करसामाँ[1] है। डाइन का करसामाँ है। समझे हीरू? सुक्रवार को अमावस्या है। जिस पर तुमको सन्देह हो, उसके पिछवाड़े में बैठ

१. करिश्मा।

रहना। ठीक दो पहर रात को वह निकलेगी। उसका पीछा करना। वह तुम्हारे बच्चे को जिलाकर, तेल-फुलेल लगाकर, गोदी में लेकर जब नाचने लगेगी तो···उस समय यदि उससे बच्चा छीन लो तो फिर उस बच्चे को कोई मार ही नहीं सकता।···इन्द्र का बज्र भी फूल हो जायगा।"

"इसमें और सन्देह की क्या बात है जोतखी काका!···सफासफी ऐना की तरह बात झलकती है।···पाँच महीना पहले, दफा चालीस के समय, जब सभी लोग दखास देने लगे तो हमने भी दे दिया। मेरा साला कचेहरी में मोहर्रिल है। उसके पैरवी से जमीन हमको नगदी हो गई। सभी की दरखास नामंजूर हो गई और हमको जमा बाँध दिया। एक दिन पारवती की माँ गेहूँ हिस्सा माँगने लगी तो हम कह दिया कि अब बाँटकर नहीं देंगे। हमको नगदी हो गया है जमीन—दफा ४० में। बस, तुरत आसीख-सराप देने लगी। उसको दसों बीघा जमीन हम ही जोतते थे। बस, वही गोस्सा मन में पालती रही और कल हमको लूट लिया राच्छसनी ने।"

"ऐ हीरू, रोओ मत! हल्ला मत करो! चुपचाप! अमावस्या की रात को, दो पहर रात को···। याद रखना!"

अमावस्या की रात!

पारवती की माँ के पिछवाड़े में मरद भर-भर भाँग की झाड़ी है। हीरू उसी झाड़ी में बैठकर खैनी चुनता और खाता है।···मोरंगिया गाँजे का नशा बड़ा तेज होता है। कातिक महीने से ही रात में सीत गिरने लगती है। हीरू का देह एकदम ठंडा हो गया है। खैनी खाकर गर्म हो लेता है; कहता है—"साली घर में गुटुर-गुटुर कर बोलती है, बाहर नहीं निकलती है। निकलो आज!···कहीं घर में-ही तो नहीं नाचेगी? यदि बाहर नहीं हो···तब? जोतखी काका ने भी नहीं बताया।"

मौसी को शाम से परीशान कर रखा है गेरोश ने! आज उसकी आँखों से नींद गायब हो गई है। रह-रहकर वह ऐसी-ऐसी बात पूछ बैठता है कि मौसी को अच्छी तरह समझ-बूझकर जवाब देना पड़ता है।

"मामा को जेहल में मारता होगा?"

"नहीं रे ! तुम्हारा मामा चोर-डकैत नहीं ।"

"तो फिर, पकड़ा क्यों ? जेहल काहे ले गया ?"

"सरकार की जो मरजी !"

"सरकार की जो मरजी ! सरकार से तुम क्यों नहीं पूछतीं ?"

"चुप रहो ! सो जाओ बेटा !"

"नानी ?"

"बाबू !"

"हमको बाहर ले चलो ।···पेसाब करेंगे ।"

"चलो !"

···खट्! किवाड़ खोलती है मौसी । पिछवाड़े में भांग की झाड़ी हिलती है । हीरू बोतल में दारू ले आया है, जल्दी-जल्दी बोतल में मुंह लगाकर पीता है ।···हाँ, निकली तो है राच्छसनी ! ठीक दो पहर रात है । रमडंडी सिर पर आ गया है । सियार बोल रहे हैं । ठीक दो पहर रात है ।···कपड़ा क्यों सँभालती है ? नंगी हो रही है···?

—सटाक् !···!

"आ···ह···!···बेटा ग ने स !"

"ना···नी !"

—सटाक् ! सटाक् !···फट, सटाक् !

"गि गि गि गि···गि गि···"

"नानी !···कमली···दीदी !···नानी !"

सब शान्ति ! मगर जीवानन्द···हीरू का बेटा कहाँ है ? हीरू का नशा अचानक टूट गया । छर-छर बहती हुई खून की धारा को देखकर वह थर-थर काँपने लगता है । लाठी उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है । खून ?

पुलिस-दारोगा···जेहल···फाँसी-सुल्ली ! हीरू भागता है ।

सबसे पहले तहसीलदार साहब हल्ला करते हुए, बन्दूक का दो-तीन फैर करते हैं । ठायँ-ठायँ !

सारा गाँव जग गया है । कुत्तों के मारे कुछ सुना भी नहीं जाता है

कि हल्ला किधर हुआ, क्यों हुआ। क्या है ? क्या है ? सभी अपने आँगन से ही पूछते हैं। क्या है रामदेल ? अरे नागेसर, क्या है ?···पता नहीं ?

तहसीलदार साहब चिल्लाते हैं, "अरे कालीचरन ! आवाज पारवती की माँ जैसी लगी। तुम लोग घर से निकलते क्या नहीं ?···लगता है सारे गाँव के लोग मुर्दा हो गए हैं।"

पारवती की माँ !···अरे बाप ! खून से नहा गई है। साँस देखो। मरी है या···। हुक-हुक करती है ? तब अभी जान है। और···यह गनेस है-?···दाँती लगी हुई है। पानी लाओ !···किसका काम है यह ? हे भगवान् !···लाठी है ? तहसीलदार साहेब के जिम्मे लगा दो लाठी ! इसी से पता चल जायगा।

"अगमू !" तहसीलदार साहब कहते हैं, "तुम अभी दौड़ जाओ थाना। ···कल पूर्णिया अस्पताल यदि ठीक समय पर पहुँच जाय···"

"नानी···नानी ! मामा ! डाक्टर मामा !···दीदी, दीदी !" गनेश रोता जाता है। कमली आँखों को पोंछते हुए गणेश को अपने घर ले आती है। बुद्धि यदि कम होती गणेश को तो अच्छा था ! ·· कमली के साथ वह आता है।···बातें भी करता है। कमली कहती है, "भगवान् हम सबों के बाप हैं ··उन्होंने नानी को अपने पास बुला लिया।"

"हाँ···यें···" लम्बी हिचकी पर गणेश कब्जा नहीं पा सकता है, "नानी !···कमली दीदी ! नानी !"

···हाय रे अभागा ! तेरी कमली दीदी किसके पास रोने जाय ? "बाबू ! गनेश···तुम्हारे मामा आवेंगे ! रोओ मत !"

हीरू पकड़ा गया है।···पकड़ावेगा कैसे नहीं भाई ! गाँव में किसकी लाठी को कान नहीं पहचानता ! हीरू की ठुट्ठी लाठी तो मसहूर है—हर-हँसेरी में उसकी ठुट्ठी लाठी कमाल कर दिखाती थी न ! रात में ही लोगों ने पहचान लिया, मगर डर से नहीं बोला कोई !···इसके अलावे उसके दोनों पैर खून में लथपथ ! धोया भी नहीं था।···लगता है, मारने के बाद लहास को थोड़ी दूर घसीटने की कोसिस की थी हीरू ने !···सुबह

को तो एकदम बघौछ[1] लगे हुए पागलों की तरह ! उसे देखकर डर लगता था।···

उसकी आंखें बताती थीं, वह अभी और भी कई खून कर सकता है !··· मुंह से लार भी गिरता था ! दारोगा ने गिरिफ्फ कर लिया, मगर वैसा ही। दारोगा ने दो लात मारी, हवलदार ने दो-तीन हण्टर गर्म किये और सिपाही ने तीन-चार तमाचे जड़े, "साला ! बोलता काहे नाहीं···नाम गिनावऽऽ अपन बाप के जे साथ र ह ल न ! होने मु ह का देखऽताड़ऽऽ—चच्चा के तरफ देख के बोलऽ ! साला हतियारा कहीं का !·· नरक में भी जाग्हा ना मिली ससुरे !"

मगर वह बकता रहा—"हम अकेले मारा।"

"ससुरे ! ई नीलगाय जैसन औरत के तूं अकेले मारा ? बन्नूक उन्नुक····"

"ऐ ! सिपाहीजी ! छोड़ दीजिए !" छोटे दारोगा साहब बड़े भले आदमी हैं। कहते हैं, "साले ! यदि फांसी से बचने के लिए पागल हुए हो तो दो ही दिन की मार में मर जाओगे।"

लहास को एकदम ढँककर पालकी में ले जाने का बन्दोबस्त करते हैं दारोगा साहब। एक उँगली भी नहीं दिखाई पड़े।···अतर-गुलाब भी छलवा दिया।···अरे ! लहास के साथ गनेस भी जायगा ? साथ में प्यारू जा रहा है। पुरैनियाँ खजांची धरमसाला के पास ही गनेस की एक चाची रहती है।···वह जब नहीं रखेगी ता अनाथालय में···।

मौसा चली गई, हमेशा के लिए।··

कमली फूटकर रो पड़ती है।

जोतखीजी को लकवा मार गया—अरधांग ! मुँह टेढ़ा हो गया है। एक आंख एकदम पथरा गई है। पैखाना-पेशाव सब बिछावन पर ही होता है। रामनारायण उनके पास अकेले बैठने में डरता है। रामनारायण जानता है सारी बातें।···पारवती की माँ की हत्या की रात से ही उनकी हालत खराब हो गई थी। पेट खूब चला ! खून का पैखाना होने लगा—

१. मतिशून्य।

एकदम टटका खून। लाल लाल!···इसके बाद गांव से लाश जैसे ही निकली, लकवा मार गया। भगवान् के इस टटका इन्साफ को देखकर रामनारायण डर गया था। इतनी जल्दी पाप को फलते बहुत कम देखा है।···पैखाने में इतना दुर्गन्ध है कि चार बीघा आसपास के लोगों को कै हो जाय! नरक भोग और किसको कहते है!

···लेकिन, जोतखीजी ने कहा था ठीक।···सुनते हैं कि जिस दिन पारबती की मां के केस में दारोगा साहेब आये, उस दिन भी बोले हैं, "अभी क्या हुआ है···और भी बाकी है!"

भगवान् जाने और क्या-क्या होगा!

जै बाबा 'जिन-पीर', गांव की रच्छा करो महतमा!

नौ

कोठारिन लछमी दासिन बालदेवजी के साथ मठ से अलग हो गई।

कलम-बाग में बांस-फूस के तीन सुन्दर बंगले खड़े हो गए हैं। इस इलाके की यह भी एक बड़ी कारीगरी है —बांस-फूस का चौखड़ा। एक ही डर होता है—आग का! लेकिन होता है खूब! मेहराब और जाफरी गूंथकर लगा दिया है। फूल तो पहले से ही लगे हुए हैं! बाग की खपसूरती तो अठारह गुना बढ़ गई है। वाह रे कोठारिन! चार सौ रुपये में एक जोड़ा बाछा खरीदकर मंगवाई है—मोतीचूर हाट से। बड़ा तेज है। हल्की सी बाछा-गाड़ी बनवाई है। बांस के पोर-पोर को छील-कर उसमें तरह-तरह के रंग लगाये गए हैं। हर बन्धन को और खासकर बल्ला की डोरी को सतरंगे लड़ों में गूंथा है। छोटे-छोटे लटकन फुदने—लाल, हरे, पीले, नीले। बाछों के सर पर पीतल के पान हैं, गले में कौड़ी की लड़ियां और घंटी है। एक छोर मीढ़ी झुनकी भी है। झुन-झुन टुन-टुन, झुन-झुन टुन-टुन!···सुनो,···वही! बालदेवजी गोसाईं साहेब की बग्घी

सम्पनी निकली ! झुन-झुन टुन-टुन !

···बालदेवजी अब कितने साफ-सुथरे रहते हैं ! बगुला के पांखों की तरह खादी की लुंगा और मिर्जई दप-दप करती है। देह भी थोड़ा साफ हो गया है। लछमी अपने हाथों से सेवा करती है !···मठ पर तो अब कौआ-मैना के 'गू' के साथ आदमी के बच्चों के भी पैखाने भिनकते रहते हैं। रमपियरिया की माये दिन-भर पड़ी रहती है; साथ में छोटे-छोटे तीन-चार बच्चे रहते हैं। भंडारी उस दिन आकर कलप रहा था— "दासिन, परसाद चित्त से उतर गया है। रोज रात को सपना देखते है कि पीने के पानी में मछली छलमला रही है।···सतगुरु हो !"

एक महीने में 'डमपियाड़ी' ने माया के जाल में महंथ रामदास के अंग-अंग को फांस लिया है।

महंथ साहब इस जाल से निकल भागने के लिए छटपटा रहे हैं, मगर जाल की गिरहें और उलझती जा रही हैं। ···कल गाली-गलोज और मार-पीट भी हो गई। महंथ साहब ने रौतहट हटिया से सुबह को एक भरी गाँजा मंगवाया था; रात में सोने के समय डमपियाड़ी ने कहा— "महंथ साहेब गाँजा फुरा गया[1]।" ···सुनते ही महंथ साहब चिढ़ गए, "ऐं, सुबह को ही न एक-भर ला दिया है भंडारी ने !"

रमपियरिया महंथ साहब की मर्दानगी देख चुकी है ! वह चुप क्यों रहे ? दम लगाने के समय होस रहता है कि नहीं। "दिन-भर घोड़ा के दुम की तरह चिलिम मुँह में तो लगा ही रहता है···!"

"चुप चमारिन ! अखाड़ा को भरस्ट कर दिया। सतगुरु हो···लछमी ठीक कहती थी !"

इसके बाद रमपियरिया की माये और बच्चों ने मिलकर ऐसा हल्ला मचाया कि बात कुछ समझ में हा न आई !···महंथ रामदास चिल्ला रहे हैं, चिमटा खनखना रहे हैं, और रमपियरिया गा-गाकर सुर चढ़ा-कर रो रही है, "अरे ! तोऽऽरा हाथ में कोढ़ फूटे रे कोढ़िया ! अरे

लछमिनियाँ के खातिर…"

…सतगुरु हो ! सतगुरु हो ! बन्द करो ! बन्द करो !…

बालदेवजी को पारवती की माँ के खून के बाद से रात को बड़ा डर लगता है । रात भर…कलेजा धड़-धड़ करता रहता है । जरा भी कुछ आवाज हुई कि बिछावन पर तड़क उठते हैं । लछमी कहती है—निरमल चित्त पर खराब छाप पड़ने से ऐसा ही होता है !…बालदेवजी की आँखें ही बता रही हैं ।

डिम डिमिक डिमिक, रुन झुनुक झुनुक ! लछमी आज खुद खँजड़ी बजा रही है । बालदेवजी आसनी पर बैठे हुए हैं । खिड़की से कमरे में चाँदनी का एक टुकड़ा उतर पड़ा है । दीवारगीर की हल्की रोशनी में लछमी की आँखें स्पष्ट नहीं दिखाई पड़तो हैं ।…

ज्वाला विरह वियोग की, रही कलेजे छा-य
प्रेमी मन मानै नहीं, दरसन से अकुला-य !

बालदेवजी टकटकी लगाकर लछमी की ओर देख रहे हैं । खँजड़ी बजाकर गाने के समय लगता है कि लछमी की बोटी-बोटी नाच रही है । घुटने के बल बैठी है…! इन्दर-सभा नाटक में 'हूर परी, मसहूर परी, सबुज परी' झंझनी बजाकर जैसा गाती थी, उसी तरह । …रह-रहकर पारवती की माँ की खून से लथपथ लाश की याद आ जाती है, एक पलक के लिए ।…बालदेवजी आँख मूँद लेते हैं । …लछमी के देह से जो सुगन्धी निकलती है, वह आज और तेज हो गई है ।…लछमी की आवाज काँप रही है ।…रो रही है लछमी ? ऐं ? गाल पर लोर ढुलक रहे हैं ? …लछमी !

" लछमी ! लछमी ! रोओ मत लछमी !" बालदेवजी की बाँहों में भी इतना बल है ?…लछमी को बाँहों में कसे हुए हैं । लछमी गाती ही जाती है :

गृह आँगन बन गये पराये
कि आहो संतो हो !

तुम बिनु कन्त बहुत दुख पाये···!
डिमिक डिमिक डिमिक !
रुन झुनुक झुनुक !
एके गृह, एक संग में, हौं बिरहिण संग कंत
कब प्रीतम हँसि बोलिहैं जोह रही मैं पंथ !

ढन ढन रुनुक-झुनुक ! झन-न खँजड़ी हाथ से छूटकर गिर पड़ती है। बालदेवजी के ओठों पर आज पहली बार ऐसी मुस्कराहट देखती है लछमी। गेहुआँ मुख-मंडल, छोटी-छोटी दाढ़ी-मूँछ···

···बालदेवजी के पाँव के अंगूठों से आँखें छुलाते हुए लछमी नजर मिलाती है, "सा···हे···ब दं द गी !"

दस

कॉमरेड वासुदेव और सुन्दरलाल भी गिरिफ्फ।···कैसे नहीं गिरिफ्फ होगा भाई ! एक साल पहले तक किसी ने कभी गंजी भी पहनते नहीं देखा सुनरा को, सो इस गरमी के मौसिम में कोट, पैंट, गुलबन, मौजा, जूता और चस्मा लगाकर कटिहार जक्सन के मुसाफिरखाना में बैठने से, लोग सन्देह नहीं करेगा ? एक डिब्बा सिगरेट खरीदकर दसटकिया नोट तोड़ाते थे दोनों। सुनते हैं, आधा घण्टा में ही दोनों ने करीब-करीब सभी फेरी वालों को बुलाया और सौदा किया, "ए चाहवाला, सुनता है नहीं ! देहाती समझ लिया है क्या ?···चाह लाओ। बिस्कुट खाओगे जी सुन्नर ? अरे, थड़किलासी बिस्कुट क्या खाओगे जी !" कटिहार के फेरी-वाले कैसा चाँई[1] होते हैं सो सबों को मालूम है। उन लोगों ने बहुत बड़े-बड़े लोगों को देखा है, पर ऐसा नहीं। भिखमंगे को चौअन्नी दे दिया, "जाओ, नास्ता कर लो।"···लड़ाई के जमाना में अमरीकन साहेब लोग

१. चालाक।

इसी तरह सिगरेट और बिस्कुट लुटाते थे। बस, सीआईडी कहाँ नहीं है! तुरत दोनों को गिरिफ्फ कर लिया। भगवान् जाने अब और किसका किसका नाम गिनाता है!

जोतखीजी ठीक कहते थे—अभी क्या हुआ है, अभी और बाकी है!

"बासुदेव ने कालीचरन का भी नाम बताया है, सुनते हैं।"

"ऐ···! कालीचरन है कहाँ?"

"मंगलादेवी को कटिहार रखने गया है।"

मंगलादेवी कटिहार चली गई। गाँव का चर्खा सेण्टर टूट गया।···कटिहार में मँगला के दूर के रिश्ते के बहनोई रहते हैं। कालीचरन पहुँचाने गया है। पाटी आफिस में सुमरेनजी बोले, "सुनते हैं तुम पर भी वारन्ट है।"

"वारन्ट?"

"हाँ, बासुदेव और सुनरा ने तुम्हारा भी नाम बताया है···जरा होशियारी से घर लौटना।"

"बासुदेव! सुनरा! ···बेईमान, झूठा!"

कालीचरन अँधेरे में कोठी के बाग के पास छिपा हुआ है। जरा रात हो जाय तब घर जायगा। बासुदेव और सुनरा को सोमा ने इतना आगे बढ़ा दिया! उसको ताज्जुब होता है। डकैती के तीन दिन बाद ही कालीचरन को सब पता लग गया था। सिकरेटरी साहब को चुपचाप कहने के लिए पुरैनियाँ गया वह, लेकिन सिकरेटरी साहब पटना चले गए थे। सिकरेटरी साहेब से सारी बातें कहनी होंगी। चलित्तर कर्मकार से हेलमेल बढ़ाने का यही फल है। हम पर विसवास नहीं हुआ उनको तो···बासुदेव को चारिज दिये कि चलित्तर से मिलते रहो। ···बन्दूक पेस्तौल चलित्तर देता है। काली को जेहल का डर नहीं, पाटी की कितनी बड़ी बदनामी हुई!··· अरे बाप! पटना के बड़े लीडर लोग को कैसे मुह दिखलावेंगे? सब चौपट कर दिया। कोई आ रहा है सायद!

कोठी-बाग के पास ही अँधेरे में चेथरू से मुलाकात हुई। जड़ी उखाड़ने आया था। उसने बतलाया गाँव में पुलिस-दरोगा कम्फू लेकर आये हैं।

कालीचरन ने चेथरू को दो रुपया दिया, "माँ को दे देना ! ···और यह तुम लो एक रुपैया !"

जड़ी उखाड़ने के बदले चेथरू गाँव की ओर भागा । ···फिरारी किरान्ती को पकड़ा देने वालों को बहुत रुपैया इनाम मिलता है । तुरत ही उसने दारोगा साहब को चुपचाप खबर दी, "हम कालीचरन को कोठी के बगीचे में देखा है ।"···दारोगा साहब मलेटरी लेकर जब तक आवें, कालीचरन पवन[1] हो गया ।

चेथरू कहता है, "यहीं से पश्छिम की ओर हनहनाता हुआ चला गया, घोड़पाडा की तरह ।"

खेलावनसिंह यादव बेचारे को फिर एक चरन लग गया। इधर खेलावन जरा जादे हेलमेल रखता था कालीचरन से । दारोगा साहब ने कहा, "जरूर डकैती का माल आपके यहाँ रहता है । आपने उन लोगों को चौखड़ा घर बनवा दिया है । क्यों ?"

···लगता है, खेलावनसिंह यादव का दिन अब घटती पर है ।···जब चढ़न्ती पर रहता है किसी का दिन, तब वह माटी भी छू देगा तो सोना हो जायगा । दिन बिगड़ने पर चारों ओर से खराब खबरें ही आती हैं । ···तहसीलदार साहेब का डेढ़ हजार मुहजुबानी बाकी था । ···कमला किनारे की बन्दोबस्ती वाली जमीन में से दस बीघा सूद-रेहन रखकर और भी एक हजार रुपैया तहसीलदार से लिया है खेलावन ने । कल अररिया-बैरगाछी से खबर आई है, सकलदीप नानी का दस-भर सोना चुराकर न जाने कहाँ भाग गया है ।···सुनते हैं, मदनपुर मेला में एक ठेठर कंपनी आई थी कलकत्ता से । उसमें एक लैला थी । उसी ने सकलदीप को फँसा लिया है । जवान तड़-तड़ बहू घर में है । सकलदीप के ससुर आसिन बाबू तो बड़े आदमी हैं, खोज निकाल लेंगे !···खेलावन की स्त्री कहती है, "जिन पीर बाबा के दरधा पर घर नहीं है, वहाँ एक झोंपड़ी बनाने के लिए तीन साल से कह रही थी, आखिर नहीं बनाए । कालीचरन की

१. हवा ।

बात पर फूच्च हो गए, चौरहा घर बनवा दिया। ···दुहाई बाबा जित पीर! भूल-चूक माफ करो। मेरे बच्चा का मति फेर दो महतमा! सिरनी और बढ़ी चढ़ाऊंगी; एक-भर गांजा दूंगी।"

मेंहगूदास के यहां खलासीजी आये हैं!···फुलिया के सारे देह में घाव हो गया है। पैटमानजी के पास कई बार संवाद भेजा फुलिया ने। एतबारी बूढ़ा को उस दिन भेजा तो मालूम हुआ पैटमानजी की बदली हो गई बथनाहा, नेपाल सीमा के पास। चौकी खाट वगैरह सब बेच दिया है पैटमानजी ने। सरकारी नौकरी वाले की जब बदली होती है तो वह सभी चीजें बेच देता है। नई जगह में जाकर नई चीजें मिलती हैं। ···इसलिए क्या जनाना को भी छोड़ देगा कोई? खलासीजी ने सुना तो दौड़े आये हैं! ···कोई कुछ कहे, खलासी का कोई दोख नहीं। सारा दोख फुलिया का है!···जो बेचारा इतना खरच करके तुमसे घुमौना किया, वह तुमको अगोर कर बैठा रहेगा तो चूल्हा कैसे जलेगा? खलासी बेचारा दिन-भर रेलवी लैन पर काम करता था और इधर पैटमानजी लैन किलियर देकर, गाड़ी पास करने के बाद फुलिया के यहां आकर बैठे रहते थे। आखिर एक दिन लड़ाई झगड़ा, मारपीट करके फुलिया उनके यहां भाग गई। खलासीजी का इसमें क्या कसूर है? पाप भला छिपे? ···सारा देह गल गया है, मगर अभी भी होस नहीं हुआ है फुलिया को।···रमपियरिया उसके यहां रोज आती है और फुलिया फुसुर-फुसुर करके उसको सिखाती है—महंथ से कोई चीज मांगने का कौन समय है···कैसे क्या कहना चाहिए।

खलासीजी कहते हैं, "दुनियाँ भर के लोगों की गरमी की बेमारी आराम करें हम, और हमारी घरवाली इस रोग से भोगे?···तीन गोली में ही ठीक हो जायगी। एक बात है, गरमी निकलेगी तो एक अंग को लेकर—आँख, नाक, दाँत, अंगुली, इसमें कोई एक अंग झूठा हो जायगा?"

"गाँव के बारे में खलासीजी कहते हैं, "गाँव में बनरभुत्ता लगा है। बन्दर का भूत! गाँव के गाँव इसी तरह साफ हो जाते हैं। कोई बन्दर

मरा था इस गाँव में ?"

"ठीक बात ! एकदम ठीक ! डागडर बाबू तो तीन बन्दर पालते थे। न जाने कौन सूई दिहिन कि दोनों बेचारा कँकाते-कँकाते मर गया।··· रात-भर किकियाया था, याद नहीं ?"

"ठीक बात ! ठीक बात ! एह, यह डागडर ऐसा जुल्मी आदमी था ! सारे गाँव को चौपट कर दिया।

"कोई पर्वाह नहीं।" खलासी जी कहते हैं, "हम रात में चक्कर पूज कर, इस टोला का बाँध देंगे। कुछ नहीं होगा।"

रमजूदास के गुहाल में चक्कर पूजा है खलासी ने।···चावल, दूध और अड़हुल के फूल से चक्कर बनाया है। बीच में माटी का एक बड़ा-सा दीया है और उसमें एक बड़ी-सी बत्ती जल रही है। एक बोतल दारू पीकर खलासीजी बैठे हैं, रह-रहकर दीया की जलती बाती को मुह में ले लेते हैं।···अरे बाप ! अलबत्त ओझा है खलासीजी। अरे ! रे ! रे ! ···जीभ में सूई गड़ा लिये, इस पार से उस पार !

अरे आजु के रैनिगे मैया
बड़ा अन्हकाल लागे
दाहिने डाकिन, बामें पिचास बोले।

हुँ···हुँ···हुँ···हुँ···हूँ !

दोहाय गौरा पारबती इसर महादेव
नैना जोगिन, जो सत से बेसत जाय
···अंग अंग फूट बहराय !

—फूत्···फूत !

हिं-हिं-हिं-हिं···!

"अब गाइये आप लोग 'गोचर' !"

गाँव के 'भकतिया' लोग शुरू करते हैं—मृदंग पर देवी का गीत 'गोचर' !

धिधिनक् तिधिनक् !

कँहवाँ के जे आ गे मैया आ आ

खलासीजी दीया की बाती को नचा रहे हैं और मुँह में लेकर बत्ती बुझाते हैं, फूँक मारकर भक् से फिर दीया जलाते हैं···कबूतर को कच्चा हा चबाकर खा रहे हैं।···असल ओझा हैं खलासीजी !

ग्यारह

"कमली के बाबू ! कमली के बाबू !···"

नींद में तहसीलदार साहब की नाक बहुत बोलती है—खुर्र खुर्र कमला की माँ पलंग के पास खड़ी है। उसके चेहरे पर भय की काली रेखा छाई हुई है—"कमली के बाबू !"

"ऊँ यें !···क्या है ?"

माँ धीरे-से पलंग पर बैठ जाती है।···तहसीलदार साहब और भी अचकचा जाते हैं, "क्या है ?"

"कुछ नहीं," माँ फिसफिसाकर कहती है, "कमला ने···कमला ने तो आँचल में दाग लगा लिया···।"

"आँ यें ?···आँचल में ?" तहसीलदार साहब को लगा कि कमला के कपड़े में आग लग गई है। कमला जल रही है।

"हाँ, चार महीना···!"

तहसीलदार साहब और माँ दोनों एक ही साथ लम्बी साँस छोड़ते हैं।

"हे भगवान् !"

"अब क्या होगा ?"

"समझो !"

"कैसे पता चला ?"

"मुझे तो पिछले महीने में ही थोड़ा सन्देह हुआ था। आज पूछने लगी तो चुपचाप टुकुर-टुकुर मुँह देखने लगी।···डॉक्टर ने तो खूब इलाज

किया ! अब मुँह पर कालिख जो लगी है, उसको कौन छुड़ावेगा ?"

तहसीलदार साहब का मुँह सूख जाता है। आँखों के आगे भयावने दृश्य एक-एक कर आते-जाते हैं—उनके मुँह में कालिख पुती हुई है, और सभी लोग ताली बजाकर हँस रहे हैं, पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं।

"मैं पहले ही कहती थी, इतना हेलमेल अच्छा नहीं। आग और फूस एक साथ कब तक रहें ?···और तुम्हारी दुलारी पर तो मानो जादू कर दिया है डॉक्टर ने। अभी भी कह रही है, डॉक्टर ने कहा है···।"

"क्या कहा है डॉक्टर ने ?" तहसीलदार साहब तिनके का सहारा ढूँढ़ रहे हैं।

"साफ-साफ कहाँ कहती है कुछ ! कहती है कि डॉक्टर ने कहा है—जो होगा, मंगल होगा।"

"मंगल ! हुँह ! मंगल !···पाजी, सूअर, नमकहराम, कुत्ते का बच्चा, साला ! अब गले में रस्सी का फन्दा लगाकर मरो कमला की माँ !··· क्या करोगी ?"

"लेकिन मैं सपथ खाकर कह सकती हूँ, मेरी बेटी का इसमें कोई दोख नहीं···।" माँ रो पड़ती है, "कमली का कोई कसूर नहीं। डॉक्टर ने फुसलाकर उसका सत्यानास किया है।"

कमली भी अपने बिछावन पर जगी हुई है। आज उसे बार-बार डॉक्टर की याद आती है। डॉक्टर का हँसना, बोलना, रूठना-झगड़ना, मीठी-मीठी बातें करना और बाँहों में जकड़कर···। उसकी आँखें भर-भर आती हैं। लेकिन डॉक्टर ने कहा है, जो होगा, मंगलमय होगा !···यदि डॉक्टर को दामुल हौज हो जाय तब ?···माँ रोती क्यों थी ? महाभारत में कुन्ती, देवयानी, अहल्या, द्रौपदी, कौन ऐसी है जिसको···? डॉक्टर ने कहा है, हम दोनों को कोई अलग नहीं कर सकता।

"डॉक्टर ने क्या कहा है ?" तहसीलदार साहब, सुबह-सुबह चाय पीते समय पूछते हैं, "पूछो कमला से साफ-साफ डॉक्टर ने क्या कहा है ?"

"कहती है, डॉक्टर कहता था, हम लोगों को कोई अलग नहीं कर

काट रहे हैं।···नदी में मछली मार रहे हैं, भैंस चरा रहे हैं। बावन ने

सकता !" माँ धीरे-धीरे इधर-उधर देखकर कहती है।

"सो तो समझा !" तहसीलदार साहब का चेहरा फिर बुझ-सा जाता है, "लेकिन सवाल है कि वह तो जेल में है, अब क्या सजा होती है, सो कौन जाने ?···फिर, मरद की बात का क्या ठिकाना ?···कमला के पास उसकी कोई चिट्ठी पत्तरी है ?"

तहसीलदार साहब कानूनची आदमी हैं। कागज पर आप के हाथ का 'क' भी लिखा रहे तो उससे वह सारी दस्तावेज ऐसी बना दें कि पटना का इस्पाट[1] भी नहीं पहचान पाये कि असली है या जाली !

"चिट्ठी पत्तरी यदि होगी भी तो वह देगी नहीं। वह कह रही थी कि हमको गुदाम-घर में बन्द रखो। लोग तो जानते ही हैं कि कमला बीमार है। तब तक डॉक्टर आ जायगा। ···लड़की की बातें सुनकर कलेजा थिर नहीं रहता है। कहती थी, माँ, अपराध के लिए आखिर कोई सजा तो मिलनी ही चाहिए। हमको घर में ही जेहल दे दो !"

"इस्-स् !" तहसीलदार साहब का भी दिल कसक उठता है, "कमला की माँ ! मेरी बेटी अब मेरे सामने नहीं आवेगी ? क्यों ? एक बार उससे बात करना चाहता हूँ। तुम क्या कहती हो ?"

उफ् ! कमला के चेहरे पर दिनों-दिन तेज आता जा रहा है। मुख-मण्डल चमक रहा है, लेकिन आज उसकी निगाहें नीची हैं। चुपचाप आकर पर्दे की आड़ में खड़ी हो जाती है।

"दीदी !"

"·····"

"इधर आओ दीदी ! तुम्हारा कोई कुसूर नहीं बेटा !"

"बाबूजी, मेरी सूरत मत देखिए। ···मुझे गुदाम-घर में बन्द कर दीजिए।" कमली रो पड़ती है, फफक्-फफक् !

और कोई उपाय भी तो नहीं।

कमला कहती है—"लगता है कि यह डॉक्टर नहीं जिन है···एक बार

१. हैण्डराइटिंग एक्स्पर्ट।

गोरी मौसी ने जिन-पीर की कहानी सुनाई थी।"

"डर तो नहीं लगता ?"

"नहीं माँ ! डॉक्टर अब मेरे पास हमेशा रहता है। मुझे डर नहीं लगता है। इसीलिए मैं एकान्त में, अँधेरे में रहना चाहती हूँ। माँ, डॉक्टर का कोई कुसूर नहीं, वह सचमुच जिन है।"

सुनते हैं कि जिन जिस पर प्रसन्न हो उसको तुरत कुछ-से-कुछ बना देता है। रुपया-पैसा, जगह-जमीन, तुरत ढेर लगा देता है। और जिन जब लेने लगे तो धान के बखार-के-बखार में घूहे लग जायेंगे ···तम्बाकू पर पत्थल गिर पड़ेगा···किसी बड़े सेशन-केस में फँसना होगा।···तहसीलदार साहब हिसाब करके देखते हैं, डाक्टर जब से उसके परिवार में घुला-मिला है, रोज अलाये-बलाये की आमदनी होती ही रहती है। जिस बात से सारे गाँव का नुकसान हुआ, उसमें भी नफा ही रहा तहसीलदार को। मुकदमे में मुल्ले फँस गए और इतना बड़ा सेशन केस दूसरों के सिर पर ही लेप लिया। अपने घर से तो एक पैसा गया ही नहीं, ऊपर से पांच हजार के करीब फायदा ही हुआ। खेलावन, रामकिरपालसिंह वगैरह की जमीन मिली सो मुफ्त में ही। कमला ठीक कहती है—डाक्टर जिन है।

कमली ने एक सप्ताह बहुत मजे में काट दिया कुछ किताबें पढ़ने को माँगी हैं—"विषवृक्ष, इन्दिरा, राजसिंह, आनन्दमठ, देवदास, श्रीकान्त, रंगभूमि, गोदान और···हरिमोहन बाबू की कन्यादान। बस, अभी इतना ही ! डाक्टर साहब की अलमारी में हैं किताबें।···हाँ, हाँ, निकलवाइए। ···प्यारू से कहिएगा !"

गुदाम-घर की ऊपर वाली खिड़कियों से चाँद झाँकता है।···शरत् की चाँदनी ! चाँद बादलों में छिप जाता है।···माँ दुर्गा के आने की सूचना मिल गई है। इस बार देवी किस चीज पर चढ़कर आवेंगी बाबा से लिखकर पूछना होगा ! जरूर हाथी पर आई होंगी ! जिस बार हाथी पर आती हैं माँ···

चाँद रह ह।···नदी में मछली मार रहे हैं, भैंस चरा रहे हैं। बावन ने

बारह

जै ! दुर्गा माता की जै !

चम्पापुर के कुमार साहब ने इस बार फिर बड़े-बड़े पहलवानों को बुलाया है। कुश्ती, शिकार, संगीत और साहित्य, सबका एक सम्मिलित पीठ-स्थल रही है चम्पापुर की ड्योढ़ी।

बूढ़े राजा के समय की बात जाने दीजिए। अभी भी कुछ कम नहीं—विश्वकवि रवीन्द्र ने जिस ड्योढी की साहित्य-गोष्ठी में अपनी प्रसिद्ध रचना राजा-रानी की आवृत्ति की है, जहाँ की संगीत-मण्डली में पूरे एक सप्ताह तक फैयाज खाँ की अमर स्वर-लहरी लहरा चुकी है। बूढ़े राजा ने शिकार पर कई किताबें लिखी हैं…।

…पंजाबी पहलवान मुश्ताक का चेला 'चाँद' आया है इस बार। जमेगा ! …कालीचरन बनमंखी के पास एक गाँव में है। दूर के रिश्तेदार बहुत चालाक आदमी है। उसका नाम बदल दिया है—रुस्तम खाँ ! लोगों से कहता है, रुस्तम खाँ तम्बाकू का दल्लाल है, पूर्वा[1] है। कल चाँद अखाड़े में जाँघिया लगाकर उतरा, मगर सुनते हैं कि कोई जोड़ा ही नहीं मिला।…कालीचरन ऐंठ जाता है। वह जायगा, जरूर-जरूर !

…चम्पापुर मेले का दंगल है बाबू !…देखने वालों पर कभी-कभी ऐसा जोस सवार होता है कि आसपास के लोगों में धक्कममुक्की सुरू हो जाती है। सिपाहीजी लोग छड़ी नहीं चमकाते रहें तो हर साल एक-दो आदमी दबकर मर जायँ !

आज भी चाँद जाँघिया लगाकर घूम रहा है। कालीचरन भीड़ में से देखता है, "वाह ! बलिहारी दोस्त ! सरीर को खूब बनाया है ! बलिहारी है दोस्त !"

…एँ ! आज भी चाँद का जोड़ा नहीं मिला ?…जै-जै ! दुरगा माई की जै ! जोड़ा नहीं मिला ! जै !

१. पूरब का।

भेंपों भेंपों भें भें···! पों पों पों !

चटाक् चट धा ! चट धा गिड़ धा !

"अ···ज ज जा ! आ आली !" हाफ कमीज और पाजामा फाड़कर चित्थी-चित्थी करते हुए कालीचरन मैदान में उतर पड़ता है।

"ऐ ! ऐ ! पागल है, मारो, मारो !"

"नहीं जी !···जोधिया है अन्दर में !"

···अरे ! वाह ! यह तो असल जोड़ा है।···कौन है ? अखाड़े में उतरने का ढंग ही कुछ ऐसा है कि सबकी आंखें चमक उठती हैं।···सभी की निगाहें आपस में मिलती हैं—हां, यही है चांद की जोड़ी !

मण्डलजी नाम-गाम पूछकर जल्दी से कुस्ती सुरू करवाने का हुकुम दे रहे हैं सरकार !

सभी बाजे-गाजे अचानक थम गए हैं। ···क्या हुआ ? कुस्ती होगी या नहीं ? पहलवान मुस्ताक अली हाथ जोड़कर क्या कह रहा है बड़े कुमार साहेब से ? क्या नाम कहा ? ···रुस्तम अली ? जोगबनी का ? मोरंगिया है ? नहीं नहीं, देसिया ही है।···वाह, अलबत्त जोड़ा है !

चटाक् चटधा ! चटधा गिड़धा !

"अरे वाह रे उस्ताद ! ले-ले-ले···बच गया।···अरे, यह तो बिजली है—बिजली !" चांद नाच रहा है। यह पंजाबी पैंतरा है। रुस्तम चुपचाप मुस्करा रहा है···मँगला···उस्ताद ! आज की बाजी यदि हार गए तो समझेंगे कि मँगला को छूना पाप हुआ !···यदि जीत गए तो···यही परीच्छा है मेरी !···चांद को क्या ऐब लगा दिया है उसके गुरु ने ? इतना पागल होकर टूटता क्यों है ? काली ···रुस्तम मुस्कराकर एक छोटी दुलकी लेता है, चांद ने अचानक ही फिर हमला किया।

"अ-ज-जा !"··· भैया, यह रुस्तमखाँ भी तो कमाल है ! कोई जादू जानता है क्या ? हाँ, चांद को मालूम हो गया होगा।

"नहीं जी, कहाँ पंजाबी और कहाँ देसिया !"

···कहीं दारोगा साहेब तो देख नहीं रहे हैं ?···क्या ठिकाना ! खेल

दिखाने का समय नहीं। जल्दी फैसला हो जाना चाहिए'''।

"अरे, ला ला रा जा हा हा'''हा, हो हो, जै जै !"

पीछे वाले उचक-उचककर देखते हैं। पास के पेड़ की एक डाली टूट गई। क्या हुआ ? '''साफ ?'''कौन ? डेढ़ गज के एक छोटे से चक्कर में रुस्तम घूमा और चाँद को आसमान दिखा दिया।

"कहाँ गया ? रुस्तम कहाँ गया ?" बड़े कुमार साहब भाव-विह्वल होकर पुकार रहे हैं। शक्ति का पुजारी खोज रहा है—"रुस्तम !'''भीड़ को हटाइए। रुस्तम कहाँ गया ?"

'''लगता है, जौहरी को कीमती पत्थर हाथ लग गया है। नहीं, नहीं, हाथ में आते-आते खो गया। कहाँ गया ?'''

रुस्तम लापता हो गया !

बहुतों ने कहा—चलित्तर कर्मकार ही नाम बदलकर अखाड़े में उतरा था। चलित्तर को, सुनते हैं, लाल धूजा, हनुमानी झंडा का महातम मिला है—वह कहीं हार नहीं सकता है।

मेला में लाल फाहरम बाँट हुआ है। लिखा है—'कम्यूनिस्ट पार्टी के लाल झंडा को बुलन्दी से ढोने वाले चलित्तर कर्मकार के ऊपर से वारन्ट हटाओ।'

कालीचरन बनमंखी के रिश्तेदार के यहाँ से फारबिसगंज की ओर चला जाता है। सिकरेटरी साहब उससे नहीं मिलना चाहते हैं। लेकिन वह मिलेगा। सुनते हैं, सिकरेटरी साहब ने कहा है, कालीचरन वगैरह पार्टी के मेम्बर नहीं, किसान सभा के दुअन्निया मेम्बर हैं। मिलकर वह सारी बातें समझावेगा। उस रात वह पार्टी आफिस में था। धरमपुरीजी से भी भेंट नहीं हुई, बम्बे गये हैं। कालीचरन अपनी पूरी सफाई देकर ही हाजिर होगा।

"अरे ! तुम ! '''काली !" मंगला डरते-डरते सँभल गई, "क्या डफाली मियाँ की तरह सूरत बनाई है ! अन्दर आ जाओ। कोई डर नहीं। अकेली हूँ।"

कालीचरन मँगला से मिलने आया है—अचानक।

कालीचरन को एक पुराने रेलवे क्वार्टर के अन्दर वाले कमरे में बिठाकर मँगला लोटा-गिलास लेकर पानी के कल पर चली जाती है। कालीचरन देखता है—चर्खा है; धुनकी भी है, खाट पर कम्बल के ऊपर सफेद खादी की चादर है।···उसकी आँखों में खुमारी है। रात-भर बैलगाड़ी पर जगा हो रह गया है। रेल पर भी ऊपर वाली तख्ती पर लेटा आया है। ···लोटा-गिलास चकमक करता है। ठंडा पानी! नीबू का शरबत!

मँगला गिलास बढ़ाते हुए मुस्कराती है, "मैं तो डफाली मियाँ ही कहूँगी। रुस्तम अली तो जोगबनी मिल का बूढ़ा सरदार है।'

कालीचरन हाथ में गिलास लेकर मँगला की ओर टकटकी लगाकर देखता है। मँगला कितनी दुबली हो गई है! रंग भी जरा चरका हो गया है!

"खबरदार! हेण्डसप्!"

खट खट खट खट!

···दारोगा साहब पिस्तौल ताने खड़े हैं। आठ-दस सिपाही बन्दूक की नली को इस तरह ताने हुए हैं मानो फैर कर देंगे।

"दारोगा साहेब! पानी पी लेने दीजिए!" मँगला को थाना-पुलिस का क्या डर!

"आप···तुम···कौन हो इसकी? तुम क्या करती हो, तुमको भी गिरफ्तार किया जाता है।"

"दारोगा साहब, इनको पानी पी लेने दीजिए।"

मँगला अपना सर्टिफिकेट देखने के लिए देती है।

"ओ! आप चर्खा सेण्टर की महिला हैं···" दारोगा साहब मँगला के सर्टिफिकेट को देखकर वापिस देते हैं।

"हाँ, मेरीगंज में काम करती थी। जान-पहचान थी, एक साथ काम किया था। इसीलिए···!"

"नोच लो इस साले की दाढ़ी! तेरी माँ को···!"

[illegible] है। खेत में लोग धान काट रहे हैं।···नदी में मछली मार रहे हैं, भैंस चरा रहे हैं। बादल ने

"आह !" मंगला झट से दरवाजा बन्द कर लेती है।

ऊपर से बन्दूक के कुन्दे जड़ रहे हैं कानी के कन्धे पर ! यह शरबत का डकार लेता हुआ पुलिस-लौरी पर जा बैठता है। कार्तिक महीने के कागजी नीबू में कितना सुगन्ध होता है !···सर से झर-झर खून गिर रहा है। लेकिन, उसका सारा शरीर संतुष्ट है, शून्य है।

दारोगा साहब उसके मुँह में हण्टर डालते हुए कहते हैं—"साला ! मर जायगा, मगर नहीं कबूलेगा। सोमा साला भी ठीक ऐसा ही है। अरे !···चलित्तर कारमकार तेरी माँ का भतार है, है न ?"

कालीचरण के हाथों की हथकड़ी एक बार झनक उठी। यायन पुट्ठों में एक नया दर्द उभर आया, आँखों में खून उतर आया।···लेकिन नहीं। उसकी पाटी बदनाम हो रही है। वह सब कुछ सहेगा।

"भेज दो साले को !···वासुदेवा और सुतरा तो दो ही थप्पड़ में बक-बक उगलने लगा। उन दोनों को क्या है ? सरकारी गवाह हो गए हैं। रिहा हो जायेंगे दोनों।···मरेगा यही दोनों।···डकैती विद मर्डर !"

नीबू का शरबत !···डकार अभी भी आ रहा है कालीचरण को !

—मँगला, मुझे माफ करना !

तेरह

बालदेवजी रामकिसुन आसरम बहुत दिनों बाद आये हैं।···एकदम बदल गया है आसरम ! लोग भी बदल गए हैं। थोड़ा चालचलन भी बिगड़ गया है आसरम का। अब तो लोग मछली और अंडा भी चोका ही में बैठकर खाते हैं। अमीन बाबू सिकरेटरी हुए हैं। कहते हैं, "मछली मांस आश्रम में न तो बनाया-धोया जाता है और न चूल्हे पर पकता ही है। लोग शहर से पका-पकाया ले आते हैं, खाते हैं। इसमें हर्ज ही क्या है ?"

"हरज क्या है ?" बालदेवजी हक्का-बक्का होकर अमीन बाबू का मुँह देखते हैं, "लेकिन···पहले तो आसरम के हाता में भी नहीं आता था।"

"यह जो नया रसोई-घर बना है, वह आश्रम की जमीन में नहीं, कुबेर साह की जमीन में है। अब तो आप जगह-जमीन वाले आदमी हो गए, खाता-खतियान, नक्शा-परचा देखना तो जरूर सीखे होंगे।···जाइए, जाकर कचहरी में नकल-निकास करवाकर देख लीजिए। समझे ?" फारबिसगंज के नयनुरिया नेता छोटन बाबू कहते हैं।

बालदेवजी कटमटाकर उनकी ओर देखते हैं। छोटन, फारबिसगंज का यह लुच्चा लौंडा हर बात में फुच-फुच करता है। अमीन बाबू के साथ दिन-रात रहता है न, इसलिए मुँहजोर भी हो गया है।···झूठा तो नम्बर एक का ! फारबिसगंज का नाम फरेबगंज करेगा यह, इसमें कोई सन्देह नहीं।

"छोटन बाबू ! खाता-खतियान, नक्शा-परचा देखकर हम क्या करेंगे ? रामकिसून बाबू के जमाने में···।"

"रामकिसून बाबू का जमाना रामकिसून बाबू के साथ चला गया !" छोटन बाबू का टंडेल-भोलटियर[1] मटरा भी बोलता है, "यह कांग्रेस आफिस है, बाबाजी का मठ नहीं।"

बालदेवजी की अकिल गुम हो रही है।

खैनी से सड़े हुए दाँतों को निकालकर मटरा हंसता है। फिर मटकी मारकर कहता है, "कविराहा में तो 'सब धन साहेब का' ही होता है।··· खँजड़ी बजाना सीखे हैं या नहीं ?"

"हा हा हा हा !" सभी ठठाकर हँस पड़ते हैं।

चन्नपट्टी का गूदरू कहता है—"बालदेव ! अब अपने गाँव में आओगे तो लतियारी भोज से पकड़कर उठा दिये जाओगे।"

"बालदेव मेरीगंज का एकान्ती मजा छोड़कर गाँव क्यों जायगा ? ···अन्धों में काना बनकर मौज कर रहा है।"

१. किसी नेता का व्यक्तिगत नौकर।

"हा हा हा हा हा हा !"

बालदेवजी की आँखों में आँसू आ जाते हैं। यदि दोरिक सरमा नहीं आ जाते तो वह फूटकर रो पड़ता। सरमा ने आते ही कहा—"क्या है, क्या है ? बालदेवजी को तुम लोग क्यों चिढ़ाते हो ?"

"चिढ़ाते कहाँ हैं। हम लोग सतसंग करते हैं।" छोटन बाबू हँसकर बोले।

सरमा ने पास की खाली कुर्सी पर बालदेवजी को बैठाते हुए कहा—"बालदेवजी ! यहाँ बैठिए, हम जवाब देते हैं।···सतसंग की बात कहते हैं छोटनजी ! यह बालदेव, दोरिक शर्मा, नेबालाल, फगुआ, सहदेवा, बौनदास, उजाड़ू, चुन्नीदास, पिरथी, जगरनथिया, छेदी, गंगाराम वगैरह के सतसंग का ही फल है कि आपके जैसे लाल पैदा हुए हैं।···अभी चेभरलेट गाड़ी पर लीडरी सीख रहे हैं आप ! आप क्या जानिएगा कि सात-सात दिनों तक भूजा फाँककर, सौ-सौ माइल पैदल चलकर, गाँव-गाँव में काँग्रेस का झंडा किसने फहराया ? मोमेंट में आपने अपने स्कूल में, पंचम जारज का फोटो तोड़ दिया, हेडमास्टर को ऑफिस में ताला लगाकर कैद कर दिया, बस आज आप लीडर हो गए। यह भेद हम लोगों को मालूम रहता तो हम लोग भी खाली फोटो तोड़ते।···गाँव के जमींदार से लेकर थाना के चौकीदार-दफादार जिनके बैरी ! कहीं-कहीं गाँव वाले दल बाँधकर हमें हड़काते थे, जैसे मुड़कलिया[1] को लोग सूप और खपरी बजाकर हड़काते हैं।···आप नहीं जानिएगा छोटन बाबू ! आपका जन्म भी नहीं हुआ था। उस समय आपके बाबूजी दारू की दूकानों की ठेकेदारी करते थे।···हम लोग उनकी गाली सुन चुके हैं।···क्या बालदेव ! याद है ?···वही कटफर भट्ठी की बात ?"

घूँदर तुरन्त रंग बदलना जानता है···वह भी तो नीमक कानून के समय से ही झोला टाँग रहा है—"सरमाजी ! गिधवास होट पर····।"

"चुप चोट्टा कहीं का !" शर्माजी डाँटते हैं, "जिधर चाँद उधर

१. बिना सिर वाला प्रेत।

सलाम!'''बालदेवजी को सभी मिलकर चिढ़ाता था, क्यों रे!'''बालदेवजी जरा साफ कपड़ा पहनने लगे हैं; एरवदा चक्र खरीदे हैं, चेहरा-मोहरा पहले से जरा चिकना लगता है, पास में पैसा है, इसीलिए तुम लोगों का कलेजा जल रहा है।'''चलिए बालदेवजी, गाँगुलीजी के यहाँ हम भी बहुत दिनों से नहीं गये हैं।"

"अभी मिटिन जो है," बालदेवजी कहते हैं।

"अरे, आप भी तो बालदेवजी सब दिन एक ही समान रह गए!''' मिटिंग में रहकर क्या कीजिएगा! फारबिसगंज वालों का कजिया फैसल होने वाला है। खुशय बाबू एक घोड़ा-गाड़ी में भरकर कागज-पत्तर, फाइल-रजिस्टर, भौचर, डिबलूकट[1] और मुकदमों के कागज ले आये हैं। उधर फगुनीसिंघ भी एक सौ आदमी को भँजाकर ले आये हैं। आज रात-भर खूब धमाधम होगा। चलिए, क्या देखिएगा राँड़ो बेटखौकी का झगड़ा!"

बालदेवजी दोरिक शर्मा के साथ चले गए तो गूदर ने आँख टीपकर फिसफिसा के कहा, "अरे! गाँगुलीजी के यहाँ जाता है थोड़ो! जा रहा है तिरपित भंडार में. अभी बालदेवजी का चोट पर चढ़ाएगा। रसगुल्ला झाड़ेगा।"

छोटन बाबू कहते हैं, "अमीन बाबू से कहना होगा। मेरीगंज में अब बालदेव से काम नहीं चलेगा। चर्खा-सेण्टर को चौपट कर दिया। घर-घर में सोशलिस्ट घरघराने लगे। अभी तो सब डकैती केस में ऐरेस्ट हैं। उस गाँव का डॉक्टर कौमनिस्ट था, वह भी ऐरेस्ट है।'''उसको तो हम्हीं ने ऐरेस्ट कराया है। कटहा का नया दारोगा हमारा क्लास फ्रेण्ड है।"

"लीजिए! एक बरमगियानी गये तो दूसरे कठपिंगलजी आ रहे हैं। '''यह तो आजकल और भी काबिल हो गया है।"

बावनदासजी आ रहे हैं।'''आश्रम के बूढ़े कुत्ते विलेकपी (ब्लैक प्रिंस) ने बावनदास को दूर से ही पहचान लिया है। अशोक गाछ के नीचे वह

१. डूप्लिकेट।

इसी तरह लेटा रहता है और हर आने-जाने वाले को देखता है। बावनदास को देखके कान खड़ा कर गर्दन उठाकर देखता है। दुम भी हिला रहा है।···समांकजी ने इस कुत्ते का नाम रखा था—ब्लैक प्रिंस ! सोशलिस्ट पार्टी के चिनगारीजी ने लाल पताका में, जिला के एक मारवाड़ी को ब्लैक प्रिंस, लिखा था, अर्थात् जो ब्लैक करने में मशहूर हो। चूंकि मारवाड़ी एकदम नौजवान था इसलिए प्रिंस लिखा था। मारवाड़ी ने मुकदमा ठोंक दिया था कि लाल पताका के सम्पादक ने उसे कुत्ता कहा है।··· बिलेकपी ने ठीक पहचाना है।···बावनदासजी भी अशोक की छाया में बिलेकपी के पास आकर बैठ गए। 'अहा···हा !···प्यार का भूखा बिलेकपी ! खुशी से उछल-कूदकर, दौड़कर कभी बावनदासजी की झोली दांत से पकड़कर खींचता है, कभी लाठी लेकर भागता है ! अ-हा-हा !

"अ हा-हा ! बिलेकपी रे !···बाल झड़ रहे हैं। पहले तो रविवार को निरजला-अनसन करते थे। तुम दूध-हलुवा भी नहीं सूंघते थे। सुनते हैं, आजकल मुर्गी की हड्डी चबाते हो। तुम्हारा क्या कसूर भैया ! पाप भी हो गया है।···बदमासी मत करो। झोली में क्या है जो देंगे ! जाओ झोली में कुछ नहीं है !"

'काऊँ-काऊँ-क्यूं !' बिलेकपी धरती पर चित्त होकर लेटा हुआ काऊँ-माऊँ कर रहा है और बावनदास की झोली को दांत से खींचता है।

बावनदासजी धीरे से झोली से एक कागज की पुड़िया निकालते हैं। बिलेकपी और भी जोर-जोर से काऊँ-माऊँ करने लगता है। उसकी यही आदत है। बावनदास जब आता है, उसके लिए एक आने का मंडा खरीदता आता है। दस साल से मंडा खा रहा है बिलेकपी ! अब एकदम बूढ़ा हो गया। बावनदास एक टुकड़ा मंडा उसे देता है। बिलेकपी चट से खाकर मुंह देखता है बावनदास का।

"अब क्या लेगा, अण्डा ?"

चौदह

तहसीलदार साहब अपने नये दोमंजिले की छत पर बैठकर देखते हैं—धान के खेतों में अब धानी रंग उतर आया है। बालियाँ झुक गई हैं। पचीस दिन कातिक के बीत गए हैं। अगता धान की अब कटनी शुरू हो जायगी।···चारों ओर तहसीलदार साहब की जमीन! पूरब, वह जो नारियल का पेड़ दिखाई पड़ता है कमला के उस पार···वहाँ तक, और उत्तर, बूढ़े बरगद तक। दक्खिन में, सथालों की जमीन दखल करने के बाद, पिपरा गाँव तक तहसीलदार के पेट में चला आया है। घर के पच्छिम, ततमाटोला के पास पचास एकड़ जमीन की एक ही जमा है। खजाना लगता है सिर्फ दस रुपया। तहसीलदार साहब के बाप ने भी इस जमा को दखल करने की हरचन्द कोशिश की थी, मगर गोटी नहीं बैठी। तहसीलदार साहब ने भी अपनी तहसीलदारी के समय बहुत कलम चलाई, लेकिन तुम कैथ तो वह भूमिहार! वह जमीन धरमपुर के भैरो बाबू की है। तहसीलदार साहब की आँख की किरकिरी वह जमीन! इस दोमंजिले की छत पर बैठने से जमीन की भूख और तेज हो जाती है। शिक्षा-पट्टी, दलील दस्तावेज मरम्मत से लेकर, अकेले में बैठकर, तरह तरह के पैंतरे[1] भी यहीं सोचते हैं वह।···नीचे उतरते ही उनका चेहरा बदल जाता है। तब पोखर में स्नान करने से लेकर भोजन पर बैठने तक वह न जाने कौन शास्तर का मन्तर बुदबुदाते रहते हैं, ओं ग मिरिंग···शिवा···आ···य। ओं ग मिरिंग···!

रोज खाने के समय तहसीलदार साहब धीरे से पूछते हैं, "दीदी कैसी है?"

"आज बहुत खुश है तुम्हारी बेटी!"

"सच? कमला की माँ, रात तो मुझे नींद ही नहीं आई।" तहसीलदार साहब जिस दिन खाने के समय खुश हुए, उस दिन जो भी सामने

१. प्वायंट।

जला-पका, मीठा नमकीन रहा, सब खा जाते हैं।

"अभी कहती थी कि 'इन्दिरा' को उसका स्वामी मिल गया।···बहुत खुश है।"

"पगली !" तहसीलदार साहब हँसते है।

रात को अचानक कमला के कमरे से रोने की आवाज आई ! ···कमला हिचकियाँ लेकर रो रही थी। माँ को तो जड़ैया-बुखार की तरह कँपकँपी लग गई। तहसीलदार साहब की आँखों से आँसू की झड़ी लग गई। माँ ने अपने को बहुत सँभाल के पूछा, "क्या है बेटी, क्या हुआ ? बोल कमल ! कमली ! बेटी ! बोल बेटा !···मैना मोरी !"

"माँ ! मैं अपने लिए नहीं रोती हूँ। ···मह···देखो न ! इन्दिरा के लिए···।" कमला कहते-कहते फिर हिचकियाँ लेती है।

"कौन इन्दिरा ?···कौन है वह ?"

"कौन इन्दिरा ?···हाँ, तुम क्या जानो ! माँ, इस किताब की इन्दिरा के लिए रो रही हूँ। ···बेचारी पहले-पहल ससुराल जा रही थी, डोली पर चढ़के। मन में कितने मनसूबे बाँधकर दुलहिन इन्दिरा ससुराल जा रही थी। एक पुराने तालाब के किनारे डोली रुकी। वह पोखर झिजूवन-झिजूखंड जैसे एक जंगल के पास ही था। बहुत खुनियाँ जगह थी। इसी-लिए साथ में सिपाही लोग थे। लेकिन, इन्दिरा को डकैत लोग डोली सहित उठाकर ले गए। दिन-दहाड़े डकैती हो गई। लेकिन माँ, उसकी सबसे बड़ी चीज बच गई है, उसकी इज्जत ! अभी वह उसी झिजूवन-झिजूखंड जैसे घोर जंगल में है माँ ! बेचारी इन्दिरा !"

कमला बंकिम बाबू की पुस्तक 'इन्दिरा' पढ़कर रो रही थी।···आज वह खुश है। इन्दिरा को उसका स्वामी फिर मिल गया।

तहसीलदार साहब कहते हैं—"यह पागलपन नहीं कमला की माँ ! बेटी मेरी बड़ी समझदार है। मोम का कलेजा है ! बाबा विश्वनाथ ! मंगल करना !"

"कल डाक्टर से भेंट किये या नहीं ?" माँ पूछती है।

"हाँ, रात में तो सुना ही नहीं सका । बड़ा झंझट का काम है। दर्खास्त दिया तो पूछा कि डाक्टर आपके कौन हैं। मैं क्या जवाब दूँ ? कहा, कोई नहीं। बस, नामंजूर कर दिया दर्खास्त । किरानी बाबू बड़े भले आदमी थे। वे बोले कि डाक्टर साहब नजरबन्द हैं, इसलिए वे सिर्फ माँ, बाप, स्त्री और बहन से ही खत-किताबत कर सकते या मिल सकते हैं। क्या कानून है ! बहन को चिट्ठी दे सकते हैं, बहनोई को नहीं। स्त्री से भेंट कर सकते हैं, लेकिन साथ में ससुर रहे तो वह बेचारा अपने जमाई का मुँह भी नहीं देख सकता !" तहसीलदार साहब मुँह धोकर, बगल की कोठरी में जाते-जाते कहते हैं, "प्यारू वहीं पूर्णिया में ही रहता है। एक होटल में खाता-पीता है। जेल के अन्दर से ही डाक्टर ने गनेश का इन्तिजाम कर दिया है, बरमो-समाज मन्दिर में। हर महीने दस्तखत करके चिक भेज देता है डाक्टर। प्यारू और गनेश के नाम से अलग-अलग चिक देता है। जो भी कहो, आदमी बहुत अच्छा है यह डाक्टर ! प्यारू कहता था, एक दिन वह दूध के ठेकेदार के साथ अन्दर चला गया। अन्दर जाकर, फाटक के पास ही, डाक्टर साहब से भेंट हो गई। डाक्टर साहब जेल आफिस में आ रहे थे। प्यारू को देखकर अचकचा गए डाक्टर साहब। फिर कहा, क्यों आये ? प्यारू ने कुछ जवाब नहीं दिया तो पूछा, मेरीगंज से कब आये हो ?···कमला कैसी है ?"

"ऐं ? पूछा ? डाक्टर ने पूछा था ? प्यारू ने क्या जवाब दिया ?" कमला की माँ एक ही साँस में उतावली होकर पूछती है, "न जाने क्या बता दिया उसने ?"

"नहीं, प्यारू बेवकूफ नहीं है। जवाब दिया, अच्छी है। आपका फोटो ले गई है, रोज सुबह उठकर देखती है।"

"अच्छा ? कहा उसने ? कितना होशियार है प्यारू ! आ हा हा ! भगवान् भी कैसे हैं ? कोई नहीं है बेचारे को।···तब डाक्टर ने क्या कहा ?"

"कहता था, हँसते-हँसते चले गए।" तहसीलदार साहब ने मुँह में

पान डाल लिया।···अब बात पुरा गई !

मारे खुशी के कमला की माँ भरपेट खा भी नहीं सकती है। माँ-बेटी साथ ही खाती है रोज। आज कमला बार-बार टोकती है, "माँ, खाओ भी, पुरैनियाँ की कथा पीछे होगी।···बलैया मेरी किसी का फोटो देखेगी !"

आज से माँ बैठकर उपनियास सुनेगी। कमला फिर शुरू से इन्दिरा पढ़कर सुना रही है। कमला कहती है, "माँ, शकुन्तला, सावित्री आदि की कथा पढ़ने में मन लगता है, लेकिन उपन्यास पढ़ते समय ऐसा लगता है कि यह देवी-देवता, ऋषि-मुनि की कहानी नहीं, जैसे यह हम लोगों के गाँव-घर की बात हो।"

आज दो दिनों से खाने पीने के बाद कमला के गर्भ में पलता हुआ शिशु हाथ-पाँव फड़काता है। लाज से वह कुछ कहती नहीं है माँ को। लेकिन जब से उसे आने वाले की आहट मिली है, कमला का मन किसी दूर देश में खो-सा गया है। एक ही साथ बहुत से बच्चों के मुखड़े खिल-खिला उठते हैं उसकी आँखों के आगे ! बच्चे उसके साथ आँखमिचौनी खेल रहे हैं। कौन है वह ? सभी प्यारे ! ताजे कमल की तरह खिले हुए। वह किसका हाथ पकड़े ? वह एक चंचल बालक को उठाकर गोद में ले लेती है। कितने कोमल हैं उसके हाथ-पैर, कैसी मीठी मुस्कराहट ! कितना चंचल ! मेरा···चुलबुला राजा रे !···कमला की छाती से दूध झरने लगता है।

"कमला की माँ !" तहसीलदार साहब दोमंजिले की कोठरी से पुकारते हैं।

"जरा इधर तो आना कमला की माँ !"

दोमंजिले पर पैर रखते ही तहसीलदार साहब की बुद्धि, उनके विचार, उनकी बोली-बानी सब बदल जाती है। जबड़े की हड्डियाँ खुद-ब-खुद चलती रहती हैं, मानो कोई चीज चबा रहे हों।

"कमला का माँ ! मैं अब फाँसी लगाकर मर जाऊँगा। मुझे नींद

नहीं आती है। क्या होगा ? कुछ सोचती हो ?···कोई उपाय ? दुश्मन को भी ये दिन कभी देखने न पड़ें ! तुम तो अब दिन-रात बेटी के पास रहती हो, मेरा जी अकेले में घबराता है। तुम्हारी नागिन बेटी ने ऐसा डँसा है कि···" तहसीलदार साहब आवेश में आकर खड़े हो जाते हैं।

"छिः ! कमला के बाबू ! कैसी बातें करते हो ?"

"चुप रहो तुम ! तुम दोनों ने मुझे···। हट जाओ !"

"कमला के बाबू, बैठ जाओ ! चिल्लाओ मत, लड़की सुन लेगी।"

"सुन लेगी ! हुँ, बड़ी लाट साहब की बेटी आई है !"

"कमला के बाबू !"

"चोप !"

बूढ़ी नौकरानी आकर कहती है, "चाह पीये ले बजबै छपिन दाय ···नीचां !"

"चलो !"

कमला अब भी रोज दोनों वक्त अपने हाथों से चाय बनाकर भेजती है अपने बाप को। कमला कहती है, "बाबा एक सौ प्यालियों के बीच, सिर्फ रंग देखकर मेरी बनाई हुई चाय पहचान लेंगे।"

नीचे के कमरे में बैठकर, चाय की प्याली में चुस्की लेते ही तहसीलदार साहब की तनी हुई रगें ढीली पड़ जाती हैं, चेहरा स्वाभाविक हो जाता है।

"सेबिया को रजाई भरवा दो इस बार, नहीं तो बूढ़ी इस जाड़े में गठिया से नहीं उबर सकेगी।" तहसीलदार साहब कहते हैं।

"तुम्हारी बेटी तुम्हारे लिए ऊनी गंजी बिन रही है।···किताब खोलकर सामने रख लेती है, दोनों हाथ में सलाई लेकर किताब में देख-देखकर जब बिनने लगती है कमला, तो लगता है हाथ नहीं मिसीन है।"

"सच ? अहा ! बेचारी···! मेरे जैसे अभागे के घर में जन्म लेकर बचपन से दुख-ही-दुख भोगती आ रही है दीदी मेरी ! कमला की माँ, तुमको याद है, जब सिर्फ एक साल की थी कमला, उसी समय मैंने कहा

था कि मेरी बेटी सन्तोख की पुतली बनकर आई है।"

सेविया हँसती हुई अधूरा स्वेटर ले आती है।

"यही देखो!" माँ हाथ में लेकर दिखलाती है, "अपनी बेटी की कारीगरी देखो!"

तहसीलदार साहब मुस्कराते हुए देखते हैं, फिर सेविया को इशारा करते हुए कहते हैं, "यह तो बहुत बड़ा होगा मेरी देह में। मेरे लिए तो इतना छोटा (···एक बच्चे के बराबर)···चाहिए! इ त ना छोटा!"

"ऊँ!" सेविया गाल पर हाथ रखकर हँसते हुए कहती है, "बतहा!"[1]

माँ कहती है, "दे आओ! कहना, बहुत बढ़िया है।"

बहुत पुरानी नौकरानी है सेविया। कमला की माँ के बचपन की सहेली है वह! साथ-साथ खेली है। बचपन में ही बेवा हुई, चुमौना की बात सुनते ही हफ्तों रोती रहती और नदी में डूबने जाती। कमला की माँ के साथ यहाँ आई और अब तक है। गठिया के कारण शरीर बहुत कमजोर हो गया है और एक कान से कम सुनती है।

कमला कहती है—सेविया माई!

"ए! सेविया माई!"

बूढ़ी रोज चुराकर चूल्हे की लाल मिट्टी के टुकड़े दे आती है कमला को। कितनी सोंधी लगती है चूल्हे की मिट्टी!

"माँ, सेविया माई पूछती थी, जमाई कब आवेगा?"

तहसीलदार साहब दोमंजिले की छत पर खड़े होकर देख रहे हैं। पच्छिम की ओर डूबते हुए सूरज की लाल रोशनी 'धरमपुर-मिलिक के खेतों पर फैली हुई है। रंग धीरे-धीरे बदल रहा है। लाल, धुंधला लाल, मटमैला···! अब अँधियारी बढ़ी आ रही है।···तहसीलदार साहब की ड्योढ़ी, चहारदीवारी भी अब अँधेरे में डूब गई।

१. पागल।

पन्द्रह

बालदेवजी घोड़ागाड़ी वाले से कहते हैं—"देतो जी, आज यदि 'टैन' पकड़ा दो तो आठ आना बकसीस देंगे !"

"देखिए, अपने जानते कोरसिस तो हम खूब करेंगे !···चल बेटा ! कदम-कदम बढ़ा के !" घोड़े वाला छोकरा घोड़े को चाबुक लगाते हुए गाता है। "झगड़ा सुरू हुआ है सारे हिन्दुस्तान में, हिन्दू-मुसलमान में ना।"

बालदेवजी को आज मालूम हुआ कि महतमाजी दो महीने से लगातार पटना में थे। रोज प्रार्थना सभा में 'भासन' देते थे महतमाजी !··· आजकल 'डिल्ली' में हैं।

···ऐं ! कौन गाड़ी विगूल दिया जी ?

"अभी सिगल डौन भी नहीं हुआ है। देरी है।"

"देरी है ? वाह बहादुर !"

स्टेशन पर बालदेवजी ने भाड़ा के अलावा एक अठन्नी बकसीस में दिया तो घोड़ागाड़ी वाले छोकरे ने बड़े 'कैदा' से हाथ चमकाके सलाम किया, "सलाम हजौर !"

किसी जवान स्त्री को देखते ही बालदेवजी को झट से लछमी की याद आ जाती है। मन-ही-मन सोचते हैं, यदि थोड़ी देर गंगुलीजी के यहाँ और हो जाती तो आज सरमाजी आने नहीं देते। चलते-चलते सरमाजी ने आखिर दिल्लगी कर ही लिया, "अच्छा तो बालदेव, जाओ ! हम बेकूफ हैं जो तुमको रोकेंगे ? तुमको यहाँ रोक लें और उधर तुम्हारी कोठारिन किसी से 'सतसंग' करने लगे तो हुआ !···हा हा हा ! माफ करना, अच्छा तो जै हिन्द !"

"जै हिन्द बालदेवजी !"

"कौन ? खलासीजी ! कहिए क्या हाल है ?"

"हम तो अभी आ रहे हैं मेरीगंज से।···जाइए रौतहट टीसन में

आपकी बैलगाड़ी लगी हुई है। गये थे रोकसती[1] कराने के लिए। आज दस दिन के बाद लौटे हैं। हमारे जनाना को गरम हवा[2] लग गया था। झाड़-फूंककर साथ लेते आये हैं !···अ हा ! आज दस बजे हम आपके आसरम के तरफ गये थे, एक जड़ी खोजने के लिए। आसरम देखकर मन होता था कि यहाँ से कहीं नहीं जायें। आप तो थे नहीं, कोठारिनजी थीं। साहेब बनगी किया, सुपाड़ी कसैली खाया। एक नवतुरिया साधूजी इतना बढ़िया गा-गाकर बीजक पढ़ रहे थे कि जी होता था बैठे रहें।···अच्छा तो जै हिन्द !"

नवतुरिया साधू ?···काशीजी का बिदियारथीजी है। महंथ सेवादास के समय से ही मठ पर आता है, साल-दो साल के बाद। महंथ साहब जाने के समय धोती, चादर, किताब का दाम और राह खर्चा देते थे।···मोती के जैसा अक्षर लिखता है।···लछमी ने जो बीजक दिया था बालदेवजी को, इसी बिदियारथीजी का लिखा हुआ था। इस बार आये हैं तो कहते हैं कि मठ पर जी नहीं लगता है। लेकिन लछमी तो अब मठ की कोठारिन नहीं ! एक भले घर की 'इसतिरी' है।

···जब मैं घर में नहीं था तो वह क्यों गया ? आखिर लोग क्या सोचते होंगे ? नहीं, यह अच्छी बात नहीं। लछमी को समझा देना होगा।

बालदेवजी की मौसी रोज सुबह ही उनके आसरम के सामने आकर बैठ जाती है और गिन-गिनकर गालियाँ सुना जाती है, "अरे भकुआ रे ! ···एही दिन के लिए पाल-पोसके इतना बड़ा किया था रे !···मुड़िकटौना रे ! लछमिनियाँ ने तो तुमको मोखा की माटी[3] खिलाकर बस कर लिया है। भेटा बनाकर रख लिया है। रे बेलज्जा, मोटकी-घुमसी की सूरत पर कैसे भूल गया रे !" और, लछमी कभी सेर-भर चावल, पाव-भर दाल अथवा गेहूँ, आलू वगैरह देकर उसे विदा करती है।

१. रुखसत।

२. भूत-प्रेत की हवा।

३. बस में करने का एक टोना।

एक पहर रात हो गई है। सर्दी काफी पड़ने लगी है अब। बालदेवजी चादर से कान को ढँक लेते हैं। लेकिन, कान तो गर्म है। 'विदियारथी-जी···!

"अरे हाँ हाँ! ठहर! साला! आदमी देखकर भी भड़कता है?" गाड़ीवान ने बैलों को रोकते हुए पुकारा, "गोसाईंजी!···उठिए, आ गए घर।"

बालदेवजी जगे ही हुए हैं। उठते ही दूर पेड़ की छाया में किसी को जाते देखते हैं। ···ओ! विदियारथीजी अभी जा रहे हैं। इसीलिए बैल भड़के थे!

"साहेब बंदगी!" लछमी पैर छूकर साहेब बंदगी करती है।

बालदेवजी मिनमिनाकर कुछ कहते हैं और सीधे अपनी आसनी पर चले जाते हैं।

"मेरा कम्बल कौन ओढ़ा था?" बालदेवजी बिछावन पर पड़े हुए कम्बल को नाक सिकोड़कर देखते हुए पूछते हैं, "मेरा कम्बल क्यों ओढ़ा था वह?"

"कौन?"

"और कौन? मालूम होता है सपना देखती हो!" बालदेवजी का माथा गर्म है।

"रामफल!···तुम लोग खा लो! हमको भूख नहीं। हम नहीं खाएँगे।" बालदेवजी जोर-जोर से कम्बल झाड़ते हुए कहते हैं, "दुनियाँ भर का आदमी आकर आसन पर सोएगा!"

लछमी कई दिनों से देखती है, बालदेवजी बात-बात पर बिगड़ जाते हैं। वह आकर दरवाजे के पास खड़ी हो जाती है, "आसन झाड़ा हुआ है। ···विदियारथीजी तो ओसारे पर बैठे थे।"

"क्यों? ओसारे पर क्यों थे? घर में क्यों नहीं बैठते हैं विदिया-रथीजी? सूने घर में जैसा घर वैसा ओसारा।" बालदेवजी के ओंठ फड़क उठते हैं।

"विदियारथीजी आते हैं सतसंग करने के लिए···।"

"हाँ, हाँ ! खूब समझते हैं। सतसंग···। हुँ···सतसंग !" बालदेवजी घृणा से मुँह सिकोड़ लेते हैं।

न जाने क्यों, आज सतसंग सुनते ही उनके देह में झरझरी-सी लगती है। छोटन बाबू ने कहा था—'सतसंग कर रहे हैं।' ···दोरिक सरमा ने आखिर में कह दिया, 'कोठारिन किसी के साथ सतसंग···!'

"सतसंग ही करना है तो उनकी आसनी यहीं लगा दो। दिन-रात खूब सतसंग करती रहना।" बालदेवजी ओंठ को टेढ़ा करके एक अजीब मुद्रा बनाकर, हाथ चमकाकर कहते हैं, "सतसंग !"

"गुसाईं साहब !" लछमी के भी नथने फड़क उठते हैं, "ऐसा क्यों बकते हैं ?"

"तुम हम को टिरिकबाजी दिखाती हो ?···हम सब समझते हैं।"

"क्या समझते हैं ?"

वाँहें क्यों मरोड़ती है लछमी ?···मारपीट करेगी क्या ? गुस्सा से थरथर काँपती है, "बोलिए ! क्या समझते हैं ···रंडी समझ लिया है क्या ? ठीक ही कहा है, जानवर की मूँड़ी को पोसने से गले की फाँसी छुड़ाता है, मगर आदमी की मूँड़ी···।"

"हम तुम्हारे पालतू कुत्ता नहीं। हम अभी चम्पानगर चले जायेंगे, अभी !" बालदेवजी उठकर खड़े होते हैं।

"गोस्सा मत होइए गोसाईं साहेब ! करोध पाप को मूल ! जाते-जाते देह में अकलंग[1] लगाकर मत जाइए।"

बालदेवजी कुछ सोचकर बैठ जाते हैं।···लछमी की देह से गन्ध निकलती है। चुपचाप लछमी की ओर देखते हैं वह। लछमी चुपचाप किवाड़ के सहारे खड़ी आँसू पोंछते हुए सिसकती है, "मेरी तकदीर ही खराब है !"

लछमी रो रही है ?···बालदेवजी का गुस्सा धीरे-धीरे उतर जाता है।

१. कलंक।

वह उठते हैं, लक्ष्मी के सर पर हाथ फेरते हुए कहते हैं, "रोओ मत ! तुम पर भला सन्देह करेंगे ? रोओ मत ! लेकिन तुमको अब खुद समझना चाहिए कि तुम अब मठ की कोठारिन नहीं, मेरी इसवरी हो। लोग क्या कहेंगे···।"

लक्ष्मी बालदेवजी के पाँव पर गिर पड़ती है, "क्षमा प्रभू ! दासी का अपराध···।"

"छिः छिः ! लक्ष्मी ! उठो ! चलो भूख लगी है।"

सोलह

डॉक्टर नजरबन्द है।

जेल अस्पताल के एक सेल में उसे रखा गया है। हर सप्ताह कोई-न-कोई ऑफिसर आकर उसे घण्टों परेशान करता है, तरह-तरह के प्रश्न पूछता है। ···चलित्तर कर्मकार के दल से डॉक्टर का कोई सम्बन्ध प्रमाणित करने के लिए पुलिस जी-तोड़ परिश्रम कर रही है।

"आप जानते हैं चलित्तर कर्मकार किस पार्टी का मेम्बर है ?"

"जी नहीं। मैंने चलित्तर कर्मकार का नाम भी नहीं सुना।"

"नहीं सुना ? जिले-भर के बच्चे तक जानते हैं।"

चलित्तर को कौन नहीं जानता ! बिहार सरकार की ओर से पन्द्रह हजार इनाम का ऐलान किया गया है। हर स्टेशन के मुसाफिरखाने में उसकी बड़ी-सी तस्वीर लटका दी गई है। पुलिस, सी० आई० डी० और मिलिटरी का एक स्पेशल जत्था उसे गिरफ्तार करने के लिए साल-भर से जिले के कोने-कोने में घूम रहा है। नये एस० पी० साहब ने प्रतिज्ञा की है, या तो चलित्तर को गिरफ्तार करेंगे अथवा नौकरी छोड़ देंगे।···घर-घर में चलित्तर की कहानियाँ होती हैं। नेताजी के सिंगापुर में आने के समय गाँव-घर, घाट-बाट, नाच-तमाशा में लोग जैसी चर्चा करते थे, वैसी

बावनदास खिड़की से बाहर की ओर देखता है। खेतों में लोग धान काट रहे हैं।···नदी में मछली मार रहे हैं, भैंस चरा रहे हैं। बावन ने

ही चर्चा चलित्तर की भी होती है।···कटहा के बड़े दारोगा से थाने पर जाकर, भेंट करके, बातचीत करके, पान खाकर और नमस्ते करके जब उठा तो हँसकर कहा, हम ही चलित्तर कर्मकार हैं। दारोगा साहेब को दाँती लग गई।···कलट्टर साहेब दार्जिलिंग रोड से कहीं जा रहे थे, टेंगरा घाट की नाव बह गई थी। कलट्टर साहेब चीटे पा रहे थे कि एक आदमी ने आकर सलाम किया और कहा कि चलिए उस पार पहुँचा देते हैं। कलट्टर साहेब मोटर में बैठे ही रहे, उस आदमी ने मोटर सहित कलट्टर साहेब को नदी तैरकर पार कर दिया। सिरिफ मोटर का एक पहिया एक हाथ से पकड़े रहा। उस पार जाकर कलट्टर साहेब ने खुश होकर इनाम देने के लिए नाम-गाम पूछा तो बताया—चलित्तर कर्मकार। ···कलट्टर साहेब के हाथ से कलम छूटकर गिर गई।···रोते हुए बच्चों को रात में माँ डराती है—आ रे! चलित्तर, घोड़ा चढ़ी!

और डॉक्टर कहता है कि उसने चलित्तर का नाम भी नहीं सुना! कैसे विश्वास किया जाय?···विराटनगर के बड़े हाकिम ने लिखा है, डॉक्टर नेपाल की प्रजा नहीं।···बंगाल दालों का जवाब आया है, बंगाल से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। तो आखिर कहाँ का आदमी है? पुरानी फाइलों को उलटने से बातें और भी उलझ जाती हैं। अजब झंझट है! उधर विधान-सभा में सवाल पूछा गया है— डॉक्टर को क्यों नजरबन्द किया गया है? बड़ी मुश्किल है! एस० पी० साहब बहुत कड़े आदमी हैं। कटहा के छोटे दारोगा को गलियाकर ठीक कर दिया है।

जेल में दाखिल होने के बाद डॉक्टर को लगा, इसकी बहुत बड़ी आवश्यकता थी। जेल! अस्पताल का यह सेल! ऑफिसरों का आना-जाना और पूछताछ पन्द्रह-बीस दिनों के बाद ही बन्द हो गई।···गांधी-जी पटना की प्रार्थना-सभा में रोज प्रवचन देते हैं। दैनिक पत्रों के ये पृष्ठ कभी पुराने नहीं होंगे! इन प्रवचनों पर बहस नहीं की जा सकती है, किसी सेल में बैठकर इसका अध्ययन किया जा सकता है।···अभी कल कुछ सम्प्रदाय-वादियों के एक बड़े जलसे का उद्घाटन किया है प्रान्त के एक बड़े

जग-जाहिर नेता ने । ··मालूम होता है चालबाजी बहुत दूर तक चली गई है। महात्मा गांधीजी से भी काली-टोपी-स्वयंसेवक-दल के लिए प्रशंसा के शब्द वसूलना हँसी-खेल की बात नहीं ! मन में किसी ने कहा था, उन्हें धोखा दिया गया है । और तीसरे ही दिन बात स्पष्ट हो गई । गांधीजी ने बयान में कहा, इस संस्था के संचालकों ने मेरे पास अपनी संस्था का उद्देश्य छिपाया, इसका मतलब हुआ, उनकी आत्मा कहती है कि वे असत्य मार्ग पर हैं। फिर कोई सही दिमाग वाला आदमी उन्हें कैसे कहेगा कि वे सही रास्ते पर हैं !'···मेरीगंज की याद आती है !···कमला की बड़ी चिन्ता थी, मगर सुना है, वह ठीक है । कमला की याद आते ही जेल की सारी कुरूपताएँ सामने आकर खड़ी हो जाती हैं। कालीचरन, वासुदेव वगैरह डकैती-केस में फँसकर आये हैं। वासुदेव, सुन्दर और सोमा की बात नहीं जानता, लेकिन कालीचरन ? विश्वास नहीं होता । कुछ कहा भी नहीं जा सकता है !···तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद की अब पाँचों उँगलियाँ घी में होंगी । लेकिन यह अन्याय कितने दिनों तक चलेगा ?···तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद ने एक दिन हँसकर कहा था, 'जिस दिन धनी, जमींदार, सेठ और मिल वालों को लोग राह चलते कोढ़ी और पागल समझने लगेंगे उसी दिन, उसी दिन असल सुराज हो जायगा। आप कहते हैं कि ऐसा जमाना आवेगा। जब जमाना आवेगा तो हमारी सम्पत्ति छीनी जायगी ही । और, अभी सम्पत्ति बटोरने पर तो कोई प्रतिबन्ध नहीं । तो फिर बैठा क्यों रहूँ ?' तहसीलदार साहब भी अजीब आदमी है । लेकिन वह जेल से छूटकर मेरीगंज ही जायगा । और कहाँ जायगा वह ?···नेपाल ? नेपाल के लोगों ने 'नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेस' की स्थापना की है । नहीं, राजनीति में वह नहीं जायगा । वह राजनीति के काबिल नहीं । एक बार ममता ने बातें करते हुए राजनीति की तुलना डाइन से की थी ।···डाइन ! ···मौसी को लोगों ने मार ही डाला ! मौसी···गणेश··· ! कमला ! लाख चेष्टा करने पर भी उसकी सूरत आँखों के आगे आ ही जाती है !

"डॉक्टर साहब !" असिस्टेन्ट जेलर साहब आये हैं, "ब्राह्मसमाज

मंदिर के सेक्रेटरी आये हैं। आपका भांजा बीमार है। आपसे उसके इलाज के बारे में कुछ सलाह लेने आये हैं। जेलर साहब आपको बुला रहे हैं।"

"ओ ! चलिए !"

सत्रह

डेढ़ महीने से कालीचरन जेल में है। वासुदेव, सुन्दर, जगदेवा, सोमा और सोनमा, सब एक ही केस में नत्थी हैं। इस बीच एक तारीख को कचहरी के मजिस्टरी-इजलास में हाजिरी हुई है। एक गाड़ी मिलिटरी आगे और एक गाड़ी पीछे ! सभी को हथकड़ी और बेड़ी डालकर कचहरी लाया गया था। उस दिन कालीचरन की निगाह, पुलिस की लौरी से जितनी दूर जा सकती थी जेल की चारदीवारी पर थी।'''कचहरी की हाजत में पेशाब की गन्ध इतनी तेज क्यों होती है ? कालीचरन की निगाह सेक्रेटरी साहब पर पड़ी, उनसे आँखें भी मिलीं। कालीचरन का चेहरा खिल गया। तीन महीनों से जिनकी सूरत आँखों के आगे नाच रही थी। "सेकरेटरी साहेब !·· कृष्णकान्त मिश्रजी !" कालीचरन ने चिल्लाकर कहा, "जय हिन्द कौमरेड !" सेक्रेटरी साहब ने तुरन्त कनपट्टी इस तरह फेर ली मानो कान के पास मधुमक्खी ने अचानक काट लिया। फिर उसी तरह गर्दन टेढ़ी किये आगे बढ़ते गए। कालीचरन को सिपाही ने डाँट दिया, 'का हो ससुरे ! बिना हण्टर के बात ना मनबऽ !' उधर सेक्रेटरी साहब काँटे वाले तार के घेरे में फँसते-फँसते बचे। '''एकमूँहा होकर जो चलेगा वह काँटे में तो जरूर फँसेगा। तिस पर इधर सिपाहीजी ने कालीचरन को डाँटा'''सुनरा तो खिलखिलाकर हँस पड़ा। लेकिन इसमें सिकरेटरी साहेब का क्या कसूर ! चोर-डकैतों से सभी भले लोगों को दूर रहना चाहिए। वासुदेव, सुनरा, सोमा सनिचरा वगैरह आखिर डकैत ही तो हैं !'''और सिकरेटरी साहेब उसे भी डकैत

समझ रहे हैं। कोई उपाय नहीं

···कोई उपाय नहीं ? लेकिन आज मांस का दिन है। जाड़े के समय, सप्ताह में एक शाम, कैदियों को मांस मिलता है। शाम को वैस्नव और साकठ को खिलाते-खिलाते काफी अंधेरा हो जाता है। अस्पताल के पिछवाड़े के वार्डर साहेब मांस जोगाड़ करने के लिए चले जाते हैं। आज कोसिस करके देखना चाहिए !···

कालीचरन ने फैसला कर लिया है। यदि मौका मिला तो वह जरूर कोसिस करेगा। हाँ, वह भागेगा। और कोई उपाय नहीं। उसने सब पता लगा लिया है। जेल से भागने की सजा सिरिफ छः महीना है। डंडा-बेड़ी और लाल टोपी पहननी पड़ेगी।···लोग कहेंगे ललटोपिया, और क्या ? लाल रंग खराब तो नहीं।···सिकरेटरी साहेब और धरमपुरीजी से मिलकर वह बात करना चाहता है। उसके बाद उसे फाँसी-सूल्ली जो भी मिले वह खुसी-खुसी झेल लेगा। पाटी की इतनी बड़ी बदनामी कराके वह जी कर ही क्या करेगा !

···बासुदेव, सुनरा और सनिचरा तो चोर-डकैतों के साथ इस तरह हिलमिल गए हैं कि उन्हें देखकर लाज आती है कालीचरन को। बासुदेव ने डॉक्टर नटखटप्रसाद से दोस्ती कर ली है। डॉक्टर नटखट !···नामी सिकचिल्ली[1] आदमी है यह डॉक्टर। फारबिसगंज की तरफ का है। डकैती केस में आया है। अचरज की बात है ! उस डॉक्टर को देखकर किसी को विस्वास ही नहीं होगा कि उसने आदमी को मारने के सिवा कभी जिलाने का भी काम किया है। चेहरा ठीक कसाई की तरह है। बासुदेव का उसके साथ भी खूब हेलमेल देखते हैं। रात में जूआ भी खेलता है। बासुदेव कालीचरन से नहीं बोलता है। वह दूसरे खटाल में रहता है। उस दिन दाल-कमान में थोड़ी देर के लिए भेंट हुई। कालीचरन ने सिरिफ इतना ही पूछा, 'बासुदेव, तुमको यही करना था ?'···बासुदेव के साथ एक कलकतिया पाकिटमार था। दोनों एक साथ खिलखिलाकर

१. शेखचिल्ली।

हँस पड़े। जाते समय बासुदेव ने कहा, 'जिस समय सात सौ रुपैया का पुलिन्दा बाँधकर सिकरेटरी साहब को देने गये थे, उस दिन क्यों नहीं पूछा था कि चार दिन के भीतर कहाँ से इतना रुपैया वसूल हुआ ?'···उसी साम को पानी-टंकी के पास डॉक्टर नटखट ने उसको रोककर कहा था, "कालीचरन, कोई रास्ता नहीं। तुम यदि चाहो तो तुम्हारा जमानतदार भी होगा और मुकदमा में बेदाग छूट भी जाओगे। सोचना ! सोचकर देखना ! पाटी-वाटी कोई काम नहीं देगी।"

···थू ! थू ! जेल में आकर काली को खैनी की आदत लग गई है। डॉक्टर साहेब···अपने गाँव के डॉक्टर ने जमादार से उस दिन जेल-गेट पर हँसकर कहा था, "सिपाहीजी ! कालीचरन का जरा ख्याल रखिएगा।" ···देवता है डॉक्टर साहेब ! जरूर देवता है !···सिरिफ खैनी ही नहीं, कभी-कभी बीड़ी भी जमादार साहेब दे देते हैं।···थू ! थू ! थूक है ऐसे पैसे पर ! डॉक्टर नटखटप्रसाद की बात वह नहीं मानेगा। सोमा ने भी एक बार दबी जबान कहने की कोसिस की थी, 'उस्ताद···!' 'चुप उस्ताद का बच्चा!' कालीचरन ने डाँट बता दी थी।

उस्ताद! जेल से बाहर, फिरारी हालत में चलित्तर करमकार से उसकी भेंट हुई थी।···कौन कहता है कि वह बड़ा भारी कलेजा वाला आदमी है ! कुसियारगाँ टीसन के पास बड़का-घत्ता के बीच दोगछिया की छाया में भेंट हुई थी। कालीचरन को देखते ही वह अपने साथियों के साथ हाल-हथियार लेकर खड़ा हो गया था।···हेन्सप् ! दारोगा साहेब जिस तरह चिल्लाए थे, उसी तरह चिल्ला उठा था चलित्तर।···कालीचरन को हँसी आ गई थी। उसके मुँह से अनजाने ही निकल पड़ा था, 'अरे ! हम हैं उस्ताद ! खाली-हाथ पाटी वाला कालीचरन !' चलित्तर ने एक बार कहा था, 'इस खाली-हाथ वाली पाटी में रहकर सब दिन खाली हाथ ही रहोगे !' पीछे तो बहुत बहस किया। आखिर में चलित्तर ने कहा था, 'तुमने हमको उस्ताद कहा है। गाढ़े विपत में कभी जरूरत पड़ने पर याद करना।' कालीचरन ने हँसकर कहा था, 'उसकी जरूरत नहीं होगी···'

दुबारा उस्ताद कहते-कहते वह रुक गया था।···आज भी चलित्तर की वह बात कान में गूँज रही है, "देखना है तुम्हारी उस्तादी !"

···लेकिन, आज वासुदेव और सोमा की मदद लेनी ही होगी। एक बार मिल तो जाय, वह पटिया लेगा।

गोटी बैठ गई।···सोमा और वासुदेव को कालीचरन ने पटिया लिया है। अस्पताल के पिछवाड़े में···!

ठीक है, अस्पताल के पिछवाड़े में, दीवाल की छाया में वासुदेव और सोमा ही हैं। ठीक है ! दोनों ने कन्धे की ओर इशारा किया।

···सब ठीक ! हत्तेरे की ! कालीचरन गिर पड़ा। तब वासुदेव और सोमा कन्धा में कन्धा भिड़ाकर खड़े हुए।···ठीक है !···जरा सा, जरा सा और ! बस, चार अंगुल ! वासुदेव और सोमा के कन्धों पर कालीचरन जरा उचकता है। दोनों के कन्धों का भार जरा हल्का मालूम होता है। ऐ, ठीक है।···भागो !"

"भागा ! भागा !"

ठु ठ ऊ ऊ···ठु ठ ऊ ऊ ! जेल-अस्पताल के पिछवाड़े से सिपाही सीटी फूंकता है।

ठु ठ ठ ठ ! बहुत सी सीटियों की मिली हुई आवाज।

ढन ढन, ढनांग ढनांग···! जेल फाटक का बड़ा घण्टा घनघना उठा।

···कालीचरन पाँच मिनट तक जेल के बाहर, दीवार के पास जमीन पर बेसुध पड़ा रहा।···सीटी और घण्टे की आवाज ने उसे सजीव कर दिया।···नहीं, ज्यादा चोट नहीं आई है। सिरिफ कमर में मोच आ गई है। ···ढनांग ढनांग !···जेल का घण्टा घनघना रहा है।···वह भागता है।

फड़ र र र ! एक साथ कई बन्दूकें गरज उठीं।

···अँधेरे में कुछ सूझता भी तो नहीं।···एक घड़ी रात भी नहीं हुई है। ओस से धरती पच-पच करती है, पैर फिसल जाते हैं।···

भर्र भर्र र र र, सामने दार्जिलिंग रोड पर पाँच-सात मिलिटरी-लौरियाँ दौड़ रही हैं।

कालीचरन, पांचू बाबू वकील के घर के पिछवाड़े की एक झाड़ी में छिपकर हाँफता है। ···सड़क कैसे टपा जाय?··· किधर से जाना ठीक होगा? दाहिने ओर भी लोग हल्ला करने लगे हैं। पास की गली होकर घुड़सवार लोग जा रहे हैं।···

कालीचरन तय करता है, सामने बाँसवाड़ी पार करके मोदरली साहेब की पुरानी कोठी की बगल से जाना ही अच्छा होगा। अब देर नहीं करनी चाहिए।

···एं? मोदरली साहेब की कोठी के पास कालीचरन को ऐसा लगा कि पीछे से कोई टॉर्च मार रहा है···हाँ, यह तो टॉर्च की ही रोशनी है! ···वह जंगल में घुस जाता है। बस, थोड़ी देर यहाँ सुस्ताकर, टॉर्च वाले को देखकर, फिर एक दुलकी!···एक झूम[1] खैनी दिन में ही उसने चुनाकर, कपड़े के खूंट में बाँध ली थी। बहुत मौके पर अभी उस पर हाथ पड़ गया। खैनी खाकर वह झड़बेरी की झाड़ी से निकलकर साफ मैदान की ओर आता है!···कहाँ है टॉर्च की रोशनी? बाप! एकदम पास ही!··· कालीचरन भागता है। टॉर्च की तेज रोशनी उसका पीछा कर रही है और फर जंगल की निस्तब्धता को भंग करके राइफल की आवाज़ गूँज उठती है—फड़ र र र!

जंगल-झाड़, काँट-कुस और अड़ा-खाई को टापता हुआ कालीचरन भाग रहा है। जंगल की लत्ती पैर छान्द लेती है, मगर वह झाड़ देता है!···जाँघ में, लगता है, खोंच लग गई है।

···पार्टी ऑफिस के पिछवाड़े में जो घना जंगल है, वहाँ पहुँचकर उसे लगा, वह निरापद है।···अरे! यह तो खोंच नहीं! अरे बाप! इतना खून! आधा बित्ता माँस उधेड़ दिया है। खलरा लटक गया है। ओ! गोली लगी है सायद!·· खून बन्द नहीं हो रहा है।···

"को ओऽन?···काली च रन?" ऑफिस सेक्रेटरी राजबल्लीजी किवाड़ खोलकर सचमुच अवाक् हो गए। जीभ की नोक पर बोली

१. खुराक।

खड़ी ही नहीं।···

"ऐं ? कौन ? कालीचरन ?" सेक्रेटरी साहब भी फड़फड़ाकर कमरे से बाहर आते हैं—"ओ कालीचरन ! तुम हो ? ···इसीलिए शहर में इतना हल्ला हो रहा है ? जेल से भाग आये हो ?"

"जी ! लगता है, जाँघ में गोली लग गई है···।"

"तुम्हारे कलेजे पर गोली दागी जानी चाहिए। डकैत ! बदमाश !"

"सिकरेटरी साहेब ! इसीलिए तो···। इसीलिए तो···आपके···पास आये हैं। सुन लीजिए !···माँ कसम, गुरु कसम, देवता किरिया ! जिस रात···उस रात को हम···यहीं, जिला पाटी ऑफिस में थे।"

"राजबल्लीजी ! आपको धोखा लग गया है ? किवाड़ बन्द कीजिए, हटाइए इसे।···बाबू, मिहरबानी करो, चले जाओ। नहीं तो···।"

"आ आ आ प हल्ला काहे करते हैं। आ आ प अन्दर जाइए।" राजबल्लीजी मौन भंग करते हैं।

कालीचरन पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा है।

मोबरली साहेब की कोठी की ओर धड़ाधड़ फायर हो रहे हैं···फड़ रं रं !

"साथी राजबल्लीजी ! सिकरेटरी···साहेब···को समझा दीजिएगा। मेरा कोई···कसूर···नहीं।"

कालीचरन हिलता है। थोड़ी देर तक खड़े रहने के बाद, अब तो चला भी नहीं जा रहा है। वह दोनों पाँवों को बारी-बारी झाड़ता है। ···सामने कच्चू के पत्तों पर कुछ झरझराकर गिरा।···वह धीरे-धीरे फिर बगल के जंगल में चला जाता है।···अब ?···वह पुरानी धोती के एक खूँट को चीरकर घाव को बाँधते हुए सोचता है—अब ?

···चलित्तर कर्मकार ने कहा था—'गाढ़े विपद में खबर करना, याद करना !···'

चलित्तर कर्मकार !

अट्ठारह

"भाग! भाग! मलेटरी, मलेटरी···!"

अरे बाप! लाल पगड़ी वाला पुलिस नहीं है, एकदम···गोरखा मलेटरी! सुनते हैं, गोरा मलेटरी से भी ज्यादा चाँस वाला होता है गोरखा। मारने लगेगा तो मारते-मारते जान से ही मार देगा।···हसलगंज हाट पर कटिहार वाले बाबू साहेब की कचेहरी पर सुबह से ही आकर है—दो मोटरगाड़ी—ठसमठस! मोहर्रिलजी बोले कि गाँव में रौन[1] देने आया है।···रात में कौन देगा?···गोरखा मलेटरी?

"अरे, क्या बात है?···कौन भूठमूठ खबर लाया?"

"भूठ नहीं! ततमाटोली का बबुअन अभी दौड़ता-हाँफता आया है। उसको इमान-धरम और माथ का किरिया खिलाकर पूछिए तो!"

"ऐ!···सुनो! मोटरगाड़ी की आवाज हुई न?"

"हाँ!···पछियारीटोला के पास आ रही है मोटरगाड़ी।"

"···भागो! एकदम लाल अड़हुल रंग की मोटरगाड़ी आ रही है।"

···भागो किधर? मोटरगाड़ी तो आ गई!

भर्रर्रर्र कैंक् कैंक् भर्रर्र···! मिलिटरी लॉरी लीक छोड़कर बेलीक ही अड्डा-खाई, आल-मोड़ा टपते, तहसीलदार साहब के दरवाजे की ओर जाती है।

"कौन? सुमरितदास बेता···?"

"सिस्! चुप···!" सुमरितदास फिसफिसाकर कहता है, "कलिया जेहल से भाग गया है। इसीलिए मलेटरी आया है।···खबरदार! सुसलिट पाटी का नाम भी नहीं लेना। पूछे तो कहना, हम लोग काँगरेस में हैं। कालीचरन से कोई रिस्ता मत बताना।···समझे? लाल झण्डा जिसके घर से निकलेगा तुरत गिरिफ्फ हो जायगा।"

सुमरितदास बेतार की देह में इस 'बुढ़ारी' में भी कितना तेज है!

१. राउण्ड।

पुराना पानी पीया हुआ बुड्ढा है ।···कलिया तो अपने साथ अपने घर-गरामत, पर-परोसिया और गाँव-समाज सब को ले डूबना चाहता है ।···क्या है, लाल साल्हू ? खबरदार ! झण्डा और साल्हू में क्या फरक है ! फाहरम-परचा सब जलाओ !···सब फंसेगा !

"खबरदार ! कलिया 'घसकन्तोबाच:' हो गया है । सुसलिट पाटी और कालीचरन का नाम···हरगिस नहीं ।···लच्छन लगता है समूचे गाँव को 'कुरुक' करेगा ।"

"ऐं !···कौन ?" कालीचरन की अन्धी माँ हुक्का पीना बन्द कर पूछती है, "कौन भाग गया ?···सरसतिया, परमेसरी,···तरावत्ती···अरे, कौन भाग गया बेटी ?"

"और कौन ?···तुम्हारे कुलबोरन बेटा कालीचरन के चलते आज सारा गाँव बन्हा रहा है ।"

"भाग ! भाग !···मलेटरी !"

गुरखा सिपाहियों ने कालीचरन के घर को चारों ओर से घेर लिया है । एस० पी० साहब कालीचरन की बूढ़ी माँ से पूछते हैं, "हुँ···अन्धी है या ढंग करती है ? सुन बुड्ढी ! तेरा बेटा कलिया जेल से भाग आया है । अब रोना-गाना छोड़कर सीधे-सीधे बता कि वह यहाँ आया है या नहीं ?"

"मेरा बेटा !···वह डकैत नहीं दारोगा बाबू !···दुसमन लगा हुआ है उसके पीछे हजूर । जाने सूरुज भगवान् !"

"ठीक-ठीक बताओ ! उसके साथ और कौन-कौन···उसके साथी-संगी का नाम बताओ ।"

"हजूर !·· हमारा कुछ नै मालूम ।"

"अच्छा, सब मालूम हो जायगा ।···ले चलो बुढ़िया को !"

कालीचरन की माँ को जड़ैया बुखार आ गया ।···जैसे ही नेपाली सिपाही ने उसकी कलाई पकड़ी, वह जोर-जोर से डिकरने लगी—लोहे से दागने के समय बैल-गाय वगैरह जैसे डिकरते हैं, उसी तरह ।

"अ य वाँ वाँ वाँ माँ···!"

माघ की संध्या ठिठुरते हुए गाँव को धीरे-धीरे अपने आँचल में छिपा रही है। भयार्त पशु की आँखों की तरह किसी-किसी घर में ढिबरी भुक-भुका रही है।···घूर के पास आज कौन बैठेगा! सभी अपने-अपने घर के कोने में छुपे हुए हैं।···सन्नाटा! और इस सन्नाटे को चीरकर कालीचरन की माँ की यह दर्द-भरी पुकार गाँव के कोने-कोने में फैली!···

"एह! अरे बाप! मालूम होता है बुढ़िया को कीरिच से जबेह कर रहा है।···हे भगवान्!"

कालीचरन की माँ की ढिकराहट में कुछ ऐसी बात थी कि एस०-पी० साहब का दिल पसीज गया। उन्होंने कहा, "छोड़ दो!···छोड़ दो बुढ़िया को!"

बुढ़िया अचानक ही चुप हो गई।

गाँव-घर, बगीचा-बाड़ी और अगवारे-पिछवारे में दम साधकर छिपे लोगों ने समझा—बुढ़िया को सचमुच जबेह कर दिया।

"किसकी बोली है, पहले पहचान लो।···टट्टी में कान लगाकर सुनो।"

"अगमू चौकीदार है।···सुमरितदास भी है।"

"जै भगमान! जै भगमान!"

"ऐ भगमान भगत! भगमान भगत···दरवाजा खोलो जी!" सुमरित-दास खखारते हैं, "अह ख् ख्!···भगमान भगत! डरने की बात नहीं।···सिकरेट है सिकरेट? मलेटरी साहेब हैं···पैसा देते हैं।"

पछियारी घर में, सन्दूक के पीछे भगवान भगत दम साधकर घुसके हुए हैं। "आहि रे दादा रे दादा! ई त हमरे नाम लेके···।" भगताइन फिसफिसाकर कहती है, "अरे जा न!···कौनो बाघ थोड़ो बा!" भगत डाँटता है—"अरे, चुप!"

"अहेंख्!···के? दासजी!" भगताइन खखारकर अन्दर से पूछती है, "का लेब हो?"

"अरे खोलो भगताइन!···भगतजी कहाँ हैं?"

भगताइन टीन की टट्टी खोलते हुए देखती है, "बाप रे बाप!···

ई कौन देस के आदमी बा रे दैवा ! हुंड़ार जसन मुंह बा।···"

"दासजी ! अन्दरे आके जे लेब से ले जा।·· बुढ़वा के बुखार बा, हमरो सिर बथता···।"

सुमरितदास टीन की टट्टी को ठेलकर अन्दर जाता है, "इस···! तुम लोगों को लगता है कि कलेजा है ही नहीं। झूठ नहीं कहा है, बनियां का कलेजा धनियां ! 'इसपी' साहेब अभी तुरत सबों को बुला रहे हैं तहसीलदार साहेब के दरवाजे पर।···मिटिन है। इसमें जो नहीं जायगा अभी, उसको कालीचरन की पाटी का आदमी समझा जायगा।···लाओ पांच पाकिट असली कैंचीमार सिकरेट !···कलिया जेहल से भाग गया।"

"हँ हँ खु !·· के ? सुमरित भाई ?" भगमान भगत कांखते हुए आता है, "अरे ! ई बुखार त जान लेके छोड़ी ! का बात बा ?"

"बात का बा !" सुमरितदास हाथ चमका-चमकाकर कहते हैं, "··· चीनी पांच सेर, गरम मसाला आठ आने का, चार पाकिट सिकरेट लेकर अभी तुरत तहसीलदार साहेब बुलाये हैं।···इसपी साहेब मिटिन में बुला रहे हैं, सबों को।···हां, सिपाहीजी को पांच पाकिट दिया, उसका भी पैसा लोगे ?"

"अरे ! हम का हुकुम से बाहर बानी !···चलीं हम आब तानी।" भगत बात चबाते हुए, कान खुजलाता है।

'गोरखा मलेटरी' कहता है, "ऊंह ! नहीं !···हम मुफुत में नहीं लेगा। काहे लेगा ? हम पैसा तीरकर[1] चुरुट लेगा।···काहे लेगा ? हम बायेर का मलेटरी नहीं, हम इसी देस का है। मुफुत में काहे लेगा ?"

तहसीलदार साहब के दरवाजे पर लोग जमा हो रहे हैं। अगमू चौकीदार और अबदुल्ला बक्सी सबों को हांकते आ रहे हैं, "डेग बढ़ाओ ! ···धसर-फसर काहे करते हो !"···लगता है धान की दवनी करने के लिए बैलों को हांककर लाया जा रहा है।···बालदेवजी भी हैं, रामकिरपाल-

१. पैसा चुकाकर।

सिंह भी हैं। बहुत दिनों से रामकिरपालसिंह, पर-पंचायत या सभा-मिटिन में नहीं जाते हैं। एकदम गुमसुम रहते हैं।···पचास बीघा घनहर जमीन, एक लाटबन्दी[1], एक ही जमा, और खजाना सिर्फ पाँच रुपये! ऐसी जमीन जिसकी बिक जाय, या महाजन के यहाँ सूद-रेहन लग जाय तो दिल चकना-चूर होगा नहीं?···खेलावनसिंह यादव का कलेजा धकधक कर रहा है—जगह-जमीन, रुपैया-पैसा तो पहले ही मुकदमे में सोहा हो गया, अब एक कोरी भैंस है। तहसीलदार की नजर लगी हुई है।

एस० पी० साहब चाय पीकर खड़े हो जाते हैं। जै भगवानू! दुहाई काली माई!

"प्यारे भाइयो! मैंने आप लोगों को एक बहुत बड़े काम में मदद के लिए बुलाया है। आप लोग डरिये नहीं। मैं बदमाशों के लिए महा-बदमाश हूँ, और सीधे लोगों का सेवक!·· हाँ, हम तो आप लोगों के नौकर हैं।"

"जै हो! जै हो!···धन्न है, धन्न है!" लोगों के देह में अब थोड़ी गर्मी आती है।

एस० पी० साहेब कहते हैं, "अभी इस जिले में एक बड़ा भारी डकैत उत्पात मचा रहा है। उसका नाम आप लोगों ने जरूर सुना होगा·!"

"जी नहीं।···हम लोग तो कूपमण्डूक है।"

"देखिए! झूठ मत बोलिए! डगरिन से पेट छुपाते हैं?···चलित्तर कर्मकार इस गाँव में कभी नहीं आया है?"

"हाँ, हाँ, चलित्तर!"

"नहीं, नहीं···नहीं आया है।"

"···देखिए! जरा रोशनी और करीब लाइए।···देखिए यही है उसका फोटो।"

"हाँ, ठीक है। यही है। यही है।"

"तब देखिए। आप लोग झूठ काहे कहते थे! जानते हैं, डकैत से बढ़कर होता है डकैत का झपैत, आप लोगों ने झपैत का काम किया है।"

१: होल्डिंग।

"नहीं हुजूर, साँप-बाघ ! मालूम नहीं था।"

"···खैर ! सुन लीजिए। चलित्तर कर्मकार को न तो देश से मतलब है, न गाँव से और न समाज से। उसका पेशा है डकैती करना, लूटना। वह समाज का दुश्मन है, देश का दुश्मन है।···अभी देखिए, हाल ही में कम्यूनिस्ट पार्टी वालों ने एक पर्चा निकाला है। लिखा है, कॉमरेड चलित्तर पर से वारण्ट हटाओ ! चलित्तर कर्मकार किसानों और मजदूरों का प्यारा नेता है !···अब आप ही बताइए कि कोई हत्यारा और डकैत कैसे किसी का प्यारा नेता हो सकता है !···खैर, मेरा भी नाम बजरंगीसिंह है। मैंने ऐसे-ऐसे बहुत से हत्यारों को ठीक किया है, फाँसी पर लटकवाया है।···ऐसा आदमी किसी की भी हत्या कर सकता है···।"

"बाबा !···गाँधीजी मारे गए !" कमली अन्दर हवेली से ही पगला की तरह चिल्लाती है—"गाँधीजी···!"

"क्या हुआ ?"

"क्या हुआ ?"

तहसीलदार साहब अन्दर हवेली की ओर दौड़ते हैं।···सुमरितदास कहता है, "हुजूर, तहसीलदार साहेब की बेटी का मगज जरा खराब है।"

"अनर्थ हो गया हुजूर !" तहसीलदार साहब दौड़ते हुए आते हैं, "गाँधीजी मारे गए।"

"एँ ?···कहाँ ? कैसे ?"

"रेडियो में खबर आई है।"

"कहाँ है रेडियो ? अन्दर हवेली में ? मेहरबानी करके यहाँ आइए।" एस० पी० गिड़गिड़ाते है।

"अरे रे रे ! बालदेवजी को सँभालो !···बेहोश हो गए।"

तहसीलदार साहब 'पोर्टेबल रेडियो सेट' ले आते हैं, "हुजूर, इसके कल-काँटे का भेद हमको मालूम नहीं।···डाक्टर साहब का है।"

"इधर लाइए।" एस० पी० साहब जल्दी-जल्दी मीटर ठीक करते हैं।

"खड़ र ड़ ···हम सब के पिता, राष्ट्र के पिता की हत्या कर दी

गई।···चारों ओर एक···एक मनहूस अँधेरा छाया हुआ है।···हमारी आँखों के आगे अँधेरा है, दिल में अँधेरा है।···ऐसे मौके पर हम किन लफ्ज़ों में, कै···से, किन शब्दों में आप को ढाढस बँधाएँ! गम के बादल में सारा मुल्क गर्क है।···एक पागल ने बापू की हत्या कर डाली। जाहिर है, पागल के सिवा कोई ऐसा काम नहीं कर सकता। अब हमें अपने गम और गुस्से को दबाकर सोचना है··।"

"नेहरूजी बोल रहे थे सायद!"

नेहरूजी!···जमाहिरलाल बोल रहे थे! बीच में एक जगह गला एकदम भर गया था; लगा—रो रहे हैं।

"सुनिए! अब पटेल साहब, सरदार पटेल बोल रहे हैं।" एस० पी० साहब का चेहरा एकदम काला हो गया है।

तेतार के खबर में क्या बोला? गाँधीजी का हत्यारा पकड़ा जा चुका है?···अरे! कैसे नहीं पकड़ावेगा भाई! हाय रे पापी! साला··· जरूर जंगली देस का आदमी होगा। हत्यारा!···मराठा? यह कौन जात है भाई! मारा ढा!···अरे, बाभन कभी ऐसा काम नहीं कर सकता, जरूर वह साला चंडाल होगा।

एस० पी० साहब हाथ जोड़कर कहते हैं, "भाइयो!-कहा-सुना माफ करेंगे। आप लोग जैसा समझें करें···लेकिन, देखते हैं न! अरे जिसने एक गरीब बनिया को बाल-बच्चा सहित मार डाला···वही हत्यारा गाँधी, जवाहर, पटेल सब की हत्या कर सकता है।···हत्यारा!···हम अभी जाते हैं। आप लोग कल शाम को, नदी के किनारे जल-प्रवाह कीजिएगा।···और खबर सब तो रेडियो में आती ही रहेगी। तहसीलदार साहब हैं, सबों को सुना देंगे! अच्छा तो चलते हैं। जय हिन्द!"

भरे र र र र!

"रघुपति राघव राजाराम, पतीत पामन सीतारा···।" बालदेवजी आँखें मूँदकर गाना शुरू करते हैं।

आज आखर धरने वाला भी कोई नहीं—काली, वासुदेव, सुनरा

सनिचरा कोई नहीं।···जाड़े से दलक रहे हैं बालदेवजी।···जरा, यहाँ एक धूनी लगा दी जाती, तो अच्छा होता।

"अरे कोठारिन, लछमी दासिन !"

लछमी आई है। साथ में है रामफल पहलवान, लालटेन लेकर !··· बालदेवजी आँखें मूँदकर गा रहे हैं—"इसवर अल्ला तेरो नाम, सबको सम्पत दो भगमान्।"

"जै रघुनन्दन जै घनश्याम, जानकी वल्लभ सीताराम !" लछमी दासिन अगला आखर उठाती है।

इस बार भीड़ के आधे लोगों ने साथ दिया !···

"रघुपति राघव राजा राम···!"

बावन ठीक ही कहता था, भारथमाता और भी जार बेजार रो रही है !···बालदेवजी का सारा शरीर सुन्न हो गया है। रास्ते में नाचते-नाचते गिर पड़ते हैं।

"सीताराम···सीताराम···जै रघुनन्दन !"

···३१ जनवरी, ४८ की रात ! कमला सोचती है—सारा संसार अभी बस एक ही महा-मानव के लिए रो रहा है।···रेडियो पर गीता-पाठ हो रहा है। लगता है, गीता के एक-एक श्लोक की सीढ़ी महात्माजी को ऊपर उठाये लिये जा रही है—ऊपर—ऊपर—और ऊपर !

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ता शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत॥

अँधेरे में एक महाप्रकाश !···आँखें चौंधिया जाती हैं कमला की ! महात्माजी खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं—'रोती है क्यों माँ !···माँ ! रोती क्यों है ?'

"मत रोओ बेटी !" माँ समझाती है। "बेटी, रोओ मत !" अचानक डॉक्टर की याद आती है—डाक्टर !···डॉक्टर को कौन ढाढ़स बँधाता होगा ! मत रोओ डॉक्टर ! मत रोओ !

कमला रेडियो की आवाज को और तेज कर देती है :

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ।
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः !···

उन्नीस

जोतखी काका के दरवाजे पर भीड़ लग गई है ।

···ठीक कहते थे जोतखी काका । अभी क्या हुआ है, अभी और बाकी है ! अच्छर-अच्छर सब बात फल गई ।···ऐसे अगरजानी आदमी की बात काटने का नतीजा सारा गाँव भोग रहा है !

जंगली जड़ी-बूटी से ही जोतखी काका टनमना गए हैं । खुद उठ नहीं सकते, बोली साफ नहीं हुई है; घिघियाकर, मुँह टेढ़ा करके बोलते हैं, "छ्यअआंछ !···छ्यअआंछ !···आँ, आँ !"

अर्थात् सर्वनाश ! सर्वनाश ! हाँ, सर्वनाश होगा ।

"जोतखी काका, आज हुकुम हुआ कि सारा दिन बासी-मुँह रहकर साम को कमला के किनारे जलपरवाह करना होगा ।" खेलावन यादव अब जोतखीजी की बात कभी नहीं काट सकता ।···जोतखीजी ने कहा था, अट्ठारह साल की उमेर में सकलदीप को माता-पिता विओग लिखा हुआ है ।···एकदम फल गई बात । सकलदीप दो महीने तक बिलल्ला की तरह कलकत्ते में भटकता रहा ।···ससुर पकड़ लाया है । उसका भी पराच्छित करना होगा ।···होटल में बर्तन माँजता था ।

जोतखीजी इशारे से कहते हैं, 'नहीं, हरगिज नहीं ! ऐसा काम मत करो !'

जोतखी काका ने क्या कहा ?···गांधीजी काहे मारे गए !···क्या कहते थे, अच्छा हुआ ! धेत्त ! उनका मगज अब सही नहीं है ।

दूसरे पहर को जुलूस निकला । बाँस की एक रथी बनाकर सजाई

गई है—लाल, हरे, पीले कागजों से। एक ओर बालदेवजी ने कंधा दिया है. दूसरी ओर सुमरितदास, जिबेसर मोची और सकलदीप ने। ·· मेलावन यादव नहीं आया है। सकलदीप को बहुत समझाया, गाली दिया—मगर सकलदीप ने तो आकर रंथी में कंधा ही लगा दिया।

टन टनांग ! घड़ीघण्ट बजता है।

तिन्ना तिरकिट तिन्ना ! धिन्ना धा धा धिन्ना !

हाँ रे ! कां च हि बांस के खाट रे खटोलना···

गांव के भकतिया लोगों ने समदाउन शुरू किया। समदाउन की पहली कड़ी ने सबके रोयें को कलपा दिया, सबके दिल गम्हड़ उठे और आंखें छलछला आईं।

आंरे कांचहि बांस के खाट रे खटोलना

आखैर मूंज के र हे डोर !

हाँ रे मोरी रे ए ए ए हाँ आँ आँ आँ रामा रामा !

चार समाजी मिली डोलिया उठाओल

लई चलल जमूना के ओ र !

हाँ रे मोरी रे ए · !

अब कोई अपने को नहीं सँभाल सकता है। सब फफक-फफककर रो पड़ते हैं। जुलूस आगे बढ़ रहा है। धीरे-धीरे सभी जुलूस में आकर मिल जाते हैं, रोते हुए चलते हैं। बूढ़े रोते हैं, बच्चे रोते हैं; जवान रो रहे हैं, औरतें रो रही है।···सकलदीप की जवान बहू दहलीज से देखती है। उसके ओंठ काँप रहे हैं। रह-रहकर ओंठ थरथराते हैं और अन्त में वह अपने को सँभाल नहीं सकती है। वह दौड़ती है जुलूस के पीछे। सेलावनसिंह चिल्लाते है, "कनियाँ, कनियाँ !···ऐ कनियाँ !"

हाँ आँ रे गोड़ तोरा लागौं हम भैया रे कहरिया से

घड़ी भर डोली बिलमाव !

माई जे रोवय···

···माँ रो रही है। भारथमाता रो रही है।

रामदास हाथ में खंजड़ी लिये चुपचाप रो रहा है।···उसी के पाप से महान्माजी मारे गए हैं। उसने साधू के अखाड़े को भरस्ट किया है। ···परसों रमपियरिया की माये गाँव से मछली का सालन माँगकर लाई थी। रमपियरिया रात में उठकर चुराकर खा रही थी। महंथ रामदास ने रँगे हाथ पकड़ लिया था—बुआरी मछली की कुट्टा!

रमजूदास की स्त्री छाती पीट-पीटकर रो रही है।···ठिठरा चमार की बारह साल की बेटी रो रही है—बाबा हो!···बाबू हो!

बापू!

···कमला रेडियो अगोरकर बैठी हुई है। उसकी आँखों से आँसू टप-टप गिर रहे हैं। माँ आँचल से बेटी के आँसू पोंछती है और खुद रोती है, "वे तो नरूप धारन कर आये थे ··लीला दिखाकर चले गए।"

रेडियो से आँखों देखा हाल प्रसारित हो रहा है। "अब···अब चन्दन की चिता तैयार है। बस, अब कुछ ही क्षणों में···देखिए, पंडित नेहरू देवदास गांधीजी से···महात्माजी के सुपुत्र से कुछ कह रहे हैं।··· नरमुंड···नरमुंड · कहीं भी एक तिल रखने की जगह नहीं ··(कोलाहल की आवाज क्रमशः तेज हो रही है।···जय···जय!) अपार जन-समुद्र में मानो लहरें आ गई हैं; सभी एक बार, अन्तिम बार महामानव की पवित्र चिता को अन्तिम बार देखना चाहते हैं।···ऐम्बुलेंस गाड़ियाँ बेहोश लोगों को ढो रही हैं! और···और···आह! अब···पश्चिम आकाश में सूर्य अपनी लाली बिखेरकर अस्त हो रहा है और इधर··· महामानव की चिता में अग्निशिखा···धरती का सूरज अस्त हो रहा है। ···क्षिति-जल-पावक···पाँच तत्वों का पुतला···(गीता-वाणी सुनाई पड़ती है)—जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम्···)"

"माँ माँ!"

माँ, माँ···कमला स्पष्ट सुनती है, कोई पुकार रहा है। कौन पुकारता है उसे माँ!

"क्या हुआ बेटी?" माँ बाहर से दौड़ी आती है।

"मेरा बच्चा···मेरा मेरा बेटा···!"
ओं शांति ! शा ··ति ··!

बीस

"सेतारांम ! सेतारांम !"

"ओ बावनदासजी ! आइए !" लछमी मोढ़ा देती है।

"बालदेवजी कहाँ ?"

"आइए, साहेब बंदगी, जै हिन्द !" बालदेवजी आ गए।

"जै हिन्द !"

बावनदास को देखकर डर लगता है—एकदम सूखकर कांटा हो गए हैं। ···बाल इतना ज्यादा कैसे पक गया ?···ओ ! आज टोपी नहीं पहने हैं, इसीलिए। आवाज भी बदल गई है। बालदेवजी कहते हैं, "आप तो अब यहाँ रहते ही नहीं हैं।···उस दिन हम अकेले, जिस समय से रेडियो में सुने, उसी समय से लेकर दूसरे दिन जलपरवाह तक, सब कुछ किये। किसी तरह सँभाल लिया। सराध के दिन तहसीलदार साहेब भोज देने वाले हैं; बामन, रजपूत, यादव और हरिजन सभी एक पंगत में बैठकर खाएँगे। अच्छा हुआ, आप भी आ गए। अकेले हम···।"

"नहीं बालदेवजी, हम रहेंगे नहीं। हम जरूरी काम से जा रहे हैं। सोचा, एक बार आप लोगों से भेंट करते चलें। हम तुरत···अभी चले जायेंगे।"

"अच्छा, उधर का हाल-समाचार क्या है, सुनाइए !"

"हाल क्या सुनिएगा ! अब सुनना-सुनाना क्या है ! रामकिसुन आस-रम में भी हरिजन भोजन होगा।···बिलेकपी कल मर गया।···सिवनाथ बाबू आये हैं पटना से।···ससांकजी परान्ती[1] सभापति हो गए हैं, वह भी

१. प्रान्तीय।

पटना में ही रहेंगे। ···सब आदमी अब पटना में ही रहेंगे। मेले लोग तो हमेशा वहीं रहते हैं।···मुराज मिल गया, अब क्या है!···छोटन बाबू का राज है। एक कोरी बेमान, बिलैक मार्केटी के साथ कचहरी में घूमते रहते हैं। हाकिमों के यहाँ दाँत निपोरते फिरते हैं। सब चौपट हो गया।" बावनदास कहते-कहते रुक जाता है।

"छोटन बाबू की बात मत पूछिए।" अब तो घर-घराना सहित कांगरेसी हो गए हैं।"

"नहीं बालदेव, छोटन बाबू जैसे छोटे लोगों की बात जाने दो। यह बेमारी ऊपर से आई है। यह पटनिया रोग है। अब तो ओर धूम-धाम से फैलेगा।···भूमिहार, रजपूत, कैथ, जादव, हरिजन, सब लड़ रहे हैं।···अगले चुनाव में तिगुना मेले चुने जायेंगे। जिसका आदमी ज्यादे चुना जाय, उसी की लड़ाई है। यदि रजपूत पार्टी के लोग ज्यादा आये तो सबसे बड़ा मंतरी भी रजपूत होगा।" परसों बात हो रही थी आश्रम में। छोटन बाबू और अमीन बाबू बतिया रहे थे—गाँधीजी का भस्म लेकर ससांकजी आवेंगे। छोटन बाबू बोले, जिला का कोटा भसम जिला समा-पति को ही लाना चाहिए।···ससांकजी क्यों ला रहे हैं। इसमें बहुत बड़ा रहस[2] है।—हा हा हा हा!" बावनदास विचित्र हँसी हँसता है। ऐसी हँसी तो कभी नहीं देखी—बालदेवजी ने भी नहीं।

"काहे? हँसते काहे हैं दासजी?"

"हा हा ह ह!···अरे, वही अमीन बाबू तुरत उठकर बैठ गए; बोले, आप ठीक कहते हैं छोटन बाबू। गाड़ी तो चली गई। कटिहार जाने से गाड़ी मिल सकती है।···तुरत मोटर इस्टार्ट करके दोनों रमाना हो गए। सभापति-मंतरी···हो राम! राम मिलाये जोड़ी···। हा हा! चले दोनों ···हा हा! भसम लाने···हा हा! देस को भसम कर देंगे ये लोग! भसमासुर!"

१. एम० एल० ए०।
२. रहस्य।

"दासजी, मालूम होता है कोई सोसलिट ने आपको···"

"सोसलिस ? सोसलिस ? क्या कहेगा सोसलिस हमको ?···सब पाटी समान । उस पाटी में भी जितने बड़े लोग हैं, मन्तरी बनने के लिए मार कर रहे हैं । सब मेनें-मंतरी होना चाहते हैं बालदेव ! देस का काम, गरीबों का काम, चाहे मजूरों का काम, जो भी करते हैं, एक ही लोभ से । ···उस पाटी में बस एक जैपरगास बाबू हैं । हा हा हा !···उनको भी कोई गोली मार देगा । ··फिर भसम लेने के लिए सभापति-मन्तरी साथे साथ···!"

नया चूड़ा और नया गुड़ एक थरिया में ले आती है लछमी—"जरा बालभोग कर लीजिए ।···थोड़ा सा है । दूध-दही तो भोज के लिए जमाया जा रहा है ।"

बावनदास बगल का झोली का मुंह फैलाते हैं । लछमी कहती है, "यह क्या ?···जलपान कीजिए ! झोली में क्यों लेते हैं ?"

लछमी की आंखें न जाने क्यों सजल हो जाती हैं ।···इतने दिनों के बाद एक वैष्णव आया और बिना पत्तल जुठाए चला जायगा ? ···नहीं, वह ऐसा नहीं होने देगी ।

"नहीं । बालभोग तो आपको करना ही होगा," लछमी जिद् करती है, "दासजी, विनती करती हूँ···।"

बालदेवजी देखते हैं, बावनदास को कुछ हो गया है···बड़ा अटर-पटर बोलते हैं! चेहरा भी एक दम बदल गया है, आंखें लाल हैं, कपड़ा कितना मैला हो गया है !···डेढ़ बित्ता कपड़ा कमर में लपेटते हैं, सो भी तार-तार हो गया है ।···हँसते हैं कैसा ! वह सोलह-सत्रह साल से बावनदास के साथ है, कभी तो ऐसा हँसते नहीं देखा ।···अलमुनियाँ का लोटा और बाटी नहीं छोड़ते हैं कभी ।

जलपान करके हाथ धोते हुए बावनदासजी कहते हैं, "बालदेवजी, अब हम चलेंगे । पुवरिया-लैन की गाड़ी कोदलिया टीसन में जाकर पकड़ेंगे । ···आपसे एक काम है ।"

बावनदास झोली से लाल रंग का एक बस्ता निकालते हैं। बस्ता खोलकर कागज का छोटा सा पुलिन्दा निकालते हैं। "बालदेवजी !··· सब महतमाजी के सत है। गंगुलीजी ने एक बार कहा था—जरूरत पड़ने पर हमको दीजिएगा।···आने के समय याद ही नहीं रहा। आप पुरैनियाँ कब तक जाइएगा।···चार-पाँच दिन के बाद ? तब ठीक है, आप रख लीजिए। गंगुलीजी को दे दीजिएगा···जरूर !"

परम श्रद्धा-भक्ति से सहेजी हुई पवित्र चिट्ठियों को बावनदास एक टक देख रहा है।···फिर एक-एक कर अलग-अलग छाँटता है। हवा से एक चिट्ठी उड़कर बिछावन के नीचे चली गई, बावनदास ने चट से उठाकर सर से छुला लिया।···उसे एक अक्षर का भी बोध नहीं, लेकिन वह प्रत्येक चिट्ठी के एक-एक शब्द पर निगाह डालता है; लगता है, सचमुच पढ़ रहा हो।···आखिरी चिट्ठी खत्म कर वह एक लम्बी साँस लेता है।

बस्ता हाथ में लेकर बावनदास थोड़ी देर तक बेकार ही उसकी डोरी को उँगलियों में लपेटता और खोलता है। फिर एक लम्बी साँस लेकर अचानक ही खड़ा हो जाता है, "लीजिए···सेत्तारामे-सेत्तारामे !"

बालदेवजी बस्ता लेकर लछमी के हाथ में दे देते हैं, "पोंती-पिटारी में रख दीजिए !"

लछमी बस्ता लेकर सर से छुलाती है, फिर छाती से लगाती है। वह एक टक बावनदास को देख रही है।···इस चिरकुट खद्दड़ की दोलाई से जाड़ा कैसे काटते हैं बावनदासजी ?

"दासजी !···इस चादर से जाड़ा कैसे काटते हैं ?···ठहरिए, एक पुराना कम्बल है। ले लीजिए।" लछमी विनती के सुर में ही कहती है।

"नहीं माई !" बावनदास कंधे से झोली को लटकाते हुए कहता है, "नहीं माई, कम्बल की जरूरत नहीं।"

लछमी चुप हो जाती है।·· बावनदासजी को अब कम्बल की जरूरत नहीं। अब उन्हें किसी चीज का जरूरत नहीं।···लछमी मानो सब कुछ समझ जाती है।

धरती फाटे मेघ जल
कपड़ा फाटे डोर।
तन फाटे की औखदी
मन फाटे नही ठौर!

"अच्छा तो अब·· जै हिन्द!"

"जै हिन्द!"

बावनदास लुढ़कता हुआ जा रहा है।···सोवरन का कटहा कुत्ता खिट-खिटाकर भूंकते हुए उस पर टूटता है। लेकिन, बावनदास उधर देखता तक नही है।···कुत्ता भी आश्चर्य से चप हो जाता है। जरा-सा धेत्त-धेत्त भी नही किया?···कैसा आदमी है! कुत्ता बावनदास के पीछे-पीछे दुम हिलाते, मिट्टी सूंघते कुछ दूर तक जाता है।

"बावनदासजी का मन एकदम फट गया है," लछमी कहती है।

बालदेवजी कहते हैं, "अरे मन फटेगा क्या! थोड़ा ढंग भी करता है।···गंगुलीजी चिट्ठी लेकर क्या करेंगे?···दूसरे की चिट्ठी भले लोग नहीं पढ़ते हैं, दोख होता है।"

कोदलिया टीसन पर गाड़ी में बैठकर बावनदास को लगता है, वह कोई तीरथ करने जा रहा है। बहुत दिनों से उसके मन में लालसा है--एक बार जगरनाथजी जाने की!···केदारनाथ, बदरिकानाथ वह गया है। उसकी आंखों के आगे जगरनाथ का पट—छाता और छड़ी—लिये तीर्थ से लौटे हुए बावनदास की मूर्ति आ खड़ी होती है।

जगरनथिया रौ भाय,
बाबा रौ बिराजे उड़िया देस मे।

एक यात्री ने कहा, "अरे, माघ महीना मे कौन जगरनाथ से लौटा है भाई!"

दूसरे ने कहा, "जरा जोर से बावन गुसाईंजी!"

बावनदास खिड़की से बाहर की ओर देखता है। खेतों मे लोग धान काट रहे हैं।···नदी मे मछली मार रहे है, भैंस चरा रहे हैं। बावन ने

बहुत सफर किया है, लैन से—कलकत्ता कांगरेस, लखनो कांगरेस, बेजवाड़ा, साबरमती आसरम, महात्मा गांधीजी की जन्मभूमि काठियावाड़, फिर बम्बै। ···रेलवे लैन के किनारे काम करते हुए लोगों के मुखड़े विभिन्न प्रदेश के लोगों के मुखड़े, उसकी आँखों के आगे इकट्ठे हो जाते हैं।···खगड़ा टीसन पर उतरकर एक बार नाथबाबू के यहाँ जाने का विचार था, लेकिन नाथबाबू कलकत्ता गये हैं। खोखी दीदी और काकीजी भी गई हैं।···खोखी दीदी ने एक बार बावनदास की तस्वीर बनाई थी।···बोली, बस आप जैसे बैठे हैं, बैठे रहिए। एक कागज पर पेन्सिल से तस्वीर बनाने लगी। ···काकीजी ठीक मायेंजी की तरह बोलती हैं। नाथबाबू रहते तो बावन को आज बहुत भारी मदद मिलती! ···बहुत कड़े आदमी हैं। गोस्सा में जब होते हैं तो किसी को कुछ नहीं बूझते हैं। ···कम्फ जेहल के साहेब को जिनगी भर याद रहेगा। ···नाथबाबू का चेहरा लाल हो गया था उस दिन, एकदम लाल टेसू। ···पिछले साल नाथबाबू और चौधरीजी बम्बै जा रहे थे। बावन भी साथ में था। ···मोगलसराय टीसन पर गाड़ी में भीड़ देखकर होस गुम! इस छोर से उस छोर तक घूम आये, मगर कहीं घुसने ही नहीं दिया।·· चौधरीजी हँसते हुए बोले, एहो गाड़ी छूटतऽ लच्छन लगैछेहौं। नाथबाबू ने एक डिब्बा के हैण्डिल को जैसे ही पकड़ा कि अन्दर से एक आदमी ने गुस्सा होकर कहा, "देखता है नहीं, इस पर लिखा हुआ—बंगाल के मेम्बर के वास्ते रिजर्व है।"

नाथबाबू ने भी गुसाकर जवाब दिया था—"खूब देखता है।··· बंगाल में अब आप लोगों के जैसा आदमी फलने लगा है, यह भी देखता है। हाम भी ए० आई० सी० सी० का मेम्बर है, आप भी उसी का मेम्बर है, मगर आदमीयत···।"

भीतर से किसी ने रसिकता की थी, "आदमियत[1] तूले आर कोथा

१. कृपया आदमियत का प्रश्न मत उठाइए। बैठिए, हमें तो एक साथ ही त्रिमूर्ति के दर्शन का सौभाग्य मिल रहा है।

ोलबेन ना मोशाय।···आसून, आपनार तो देखची ऐकेबारे त्रिमूर्ति···"

बात भी कुछ ऐसी ही हो गई कि सभी हँस पड़े—चौधरीजी भी, नाथ-बाबू भी और डिब्बे के सभी मेम्बर। ···हँसने वाली बात नहीं है ? चौधरीजी एकदम लम्बा, माने चौधरीजी की लम्बाई की बात तो सभी जानते ही हैं। पूरा ऊँचे कद का आदमी भी उनके कंधे के बराबर होता है। और, इधर नाथबाबू ठेठ-नाटे कद के ! गोल चेहरा, चेहरे पर हरदम मुस्कराहट, वह भी छोटी-सी ! और तीसरा मूर्ति—सेवक बावनदास ! ···विचार कर देखिए—हँसने की बात है या नहीं ! · चौधरीजी ने ऊपर बेंच पर अपना बिस्तर लम्बा किया था, नाथबाबू और बावनदास नीचे।

"ऐं ? खगड़ा आ गया ? · सेत्तासम ! सेत्तासम !"

खगड़ा स्टेशन पर उतरकर, बावनदास एक बार ऊपर आसमान की ओर देखता है। वह शाम तक पहुँच जायगा।···नहीं, नाथबाबू से नहीं भेंट होगी तो अब किससे भेंट करने जाय वह।···

कलीमुद्दीपुर की ओर जा रहा है बावन !···कलीमुद्दीपुर पाकिस्तान में जाते-जाते बच गया है। एक बार हल्ला हुआ कि हिन्दुस्तान में रहेगा--दूसरी बार हल्ला हुआ कि पाकिस्तान में। ···सुनते हैं पाकिस्तान वाले कहते थे कि गाँव का नाम इस्लामी है, इसलिए इसको·· ! क्या बच्चों जैसी बुद्धि ! ··

···सेत्तासम ! सेत्तासम ! बावनदास जल्दी-जल्दी डेग बढ़ाता है, ···आज जैसे हो, शाम तक उसे पहुँचना ही है एक जगह···। उस जगह का नाम भी अभी वह अपने मन में नहीं लाएगा।

चलते-चलते वह कभी-कभी रुककर उसाँसें लेता है—बहुत देर तक रोने पर बच्चे जिस तरह उसाँसें लेते हैं, उसी तरह ! बावन की झोली में खँजड़ी है। खँजड़ी में लगी हुई झुनकी उसकी गति को एक लय में बाँध रही है—किन्न, किन्न, किन्न, किन्न ! खेतों की मेड़ों पर, मैदान में, सड़कों पर, ऊँची-नीची जमीन पर उसके चरण पड़ते हैं। मंजिल करीब है। अब किन्न, किन्न, किन्न, किन्न···! और थोड़ी दूर ·· और आधा

कोस ! किन्न, किन्न···!

···जै महतमाजी ! जै बापू ! ···माँ ! माँ ! ···धन्न हो प्रभू ! एक परीच्छा से तो पार करा दिया प्रभू ! बस यही ···इसी सांहुड़ के नीचे ! इसी कच्ची लीक के पास···डाल दो डेरा रे मन !

···नागर नदी के किनारे ! नागर को एक बहुत बड़ा गवाह बनाया है, दोनों देस वालों ने । नागर नदी ही सीमा-रेखा है । ···एक किनारा हिन्दुस्तान, दूसरा किनारा पाकिस्तान ! इस पार हिन्दुस्तान, दूसरी ओर पाकिस्तान । नागर बारहों मास बहती है, सूखती नहीं कभी । शायद, इसीलिए । ···रामडंडी मार्का पर आ गया ।

माघ की ठिठुराती हुई सर्दी !···पछिया हवा भी चलती है । लगता है, आज की रात बदरीनाथ की तरह यहाँ भी बरफ गिरेगी । रामडंडी सिर पर आ गया···! बावन निराश नहीं होता है । जब तक सूरज नहीं उगेगा, वह टलेगा नहीं ।···बात ही कुछ ऐसी है यदि इस रास्ते से नहीं आई गाड़ी, तो···! वह दूर, बहुत दूर किसी गाँव की रोशनी को देखता है । दोनों हाथों को मलकर गर्म हो लेता है । ···हाँ, गाड़ियाँ आवेंगी पचासों गाड़ियाँ ! ··कपड़े और चीनी और सीमेंट से लदी हुई गाड़ियाँ !··· जिसने खबर दी है उसे—उसका नाम वह जान जाने पर भी नहीं खोलेगा । बावन ने गाँधीजी की कसम खाई है । बेचारा गरीब·· उसकी नौकरी चली जावेगी ।···कटहा के दुलारचन्द कापरा, वही जूआ कंपनीवाला, जिसकी जूए की दुकान पर नेबीलाल, भोला बाबू और बावन ने फारबिसगंज मेला में पिकेटिन किया था । जूआ भी नहीं, एकदम पाकिटकाट खेला करता था और मोरंगिया लड़कियों, मोरंगिया दारू-गाँजा का कारबार करता था । ···आज कटहा थाना कांग्रेस का सिकरेटरी है !···उसी की गाड़ियाँ हैं । सपलाई निसपिट्टर और कटहा थाना के दारोगा और यहाँ कलीमुद्दीपुर के नाका वाले हवलदार मिलाकर रकम आठ आना और इधर दुलारचन्द कापरा रकम आठ आना !. गाड़ियाँ सदर-चालू सड़क से नहीं जायेंगी ।

ार पैड़ा होकर, चोरघाट होकर पार करेंगी। फिर उधर के व्यापारी को र पार पहुँचा देगा। उधर के हाकिम-हुक्कामों को भी इसी तरह हिस्सा ेगा। लाखों रुपया का कारबार है।···वे आ गईं! हाँ, गाड़ियाँ! कच्ची लीक में पहियों की आवाज़!···हाँ, गाड़ी ही है।

जै भगवान्! जै महतमाजी! सेत्तराम! सेत्तराम!···बल दो ! परीक्षा में पार करो गुरु! बापू! बापू!···माँ, माँ! झोली के अन्दर कुछ टटोलता है।

वह झोली को कन्धे से लटकाकर खड़ा हो जाता है।···नदी किनारे ि पखेरू बोला, टिटिक्।···किन्न! खँजड़ी की झुनकी जरा झनकी।

"भगवान्! महतमाजी!···बापू! माँ! मुझे बुला लो अपने पास! करूँगा इस दुनियाँ में रहकर!···धरम नहीं बचेगा।"

गाड़ियाँ आ गईं, एकदम करीब।

"अरे बा आ आ प रे—भू ऊ त!" अगला गाड़ीवान डरा और दबी वाज में अपने साथी से कहता है, "भूत!"

"छिउँ···" बैल भड़कते हैं। कचकचाकर गाड़ियाँ रुक जाती हैं।

"सेत्तराम! सेत्तराम!"

कलीमुद्दीपुर नाका के सिपाहीजी आगे बढ़ आते हैं; खखारकर ते हैं, "कौन है?"

बगल की झाड़ी से सामने आकर बावन ने कहा, "हम हैं। सेवक बनदास!"

"बा व न दास!" सिपाहीजी का मुँह खुला-का-खुला रह जाता है। इस ामी को वह सन् तीस से ही जानता है। चान टरे, सूरुज टरे···!

सिपाहीजी मुरेठा की पूछरी से मुँह छिपाते हैं। बावनदास हँसकर ता है, "मुँह क्यों छिपाते हैं रामबुझावनसिंघजी। आज खुलकर खेला ा चाहिए!···मुँह मत छिपाइए!"

"दासजी, हमारा क्या कसूर! आप तो जानते ही हैं···"

चोर रास्ता।

"सिंघजी, बातचीत कुछ नहीं। गाड़ियाँ जायेंगी खगड़ा! ... लौटाइए।"

"गाड़ी त ना लौटी।"

"लौटी ना त ठाढ़ रही!"

अढ़ाई हजार रुपये हिस्से में मिल चुके है रामबुझावनसिंघ को। क्या किया जाय?...

"दासजी, ठहरिए!...हम तुरत आते है।"

"अच्छी बात! ले आइए आज जो लोग पर्दे में हैं। जाइए!"

कलीमुद्दीपुर में एक होटिल बंगला[1] है।...हाकिम-हुक्काम लोग बराबर आते रहते हैं। बाँस-फूस का बड़ा-सा चौखड़ा है, गाँव के एकदम बाहर।

होटिल-बँगला मे सप्लाई इन्सपेक्टर, दुलारचन्द कापरा और कलीमुद्दीपुर के हवलदार साहब टेबल के चारों ओर बैठकर मोरंगिया माल पी रहे हैं। कलीमुद्दीपुर होटिल-बँगला के बेरसपतिया बावर्ची के हाथ का मुर्ग-मुसल्लम जिसने खाया, उसी ने जी खोलकर बक्सीस दिया।

सप्लाई इन्सपेक्टर साहब गिलास में चुस्की लगाते हुए मुस्कराते हैं, "अरे धत्त! इस मुर्ग-मुसल्लम से गर्मी थोड़ो आएगी! हवलदार साहब! अरे, कोई दो टाँगवाली मुर्गी...।"

"क्या पूछते हैं, आज...महतमाजी के सराध की वजह से सभी भोज खाने चली गई हैं।"

दुलारचन्द कापरा कहता है, "ऊँह! ऐसा जानता तो कटहा से ही दो रेपयूजिनी को उठा लाते।...सब मजा किरकिरा कर दिया।"

कड़कड़—कड़क्! सप्लाई इन्सपेक्टर चतुरानन्दसिंहजी मुर्गी की टाँग चबाते हैं।

कड़ कड़ कड़क्! बाहर साइकिल की आवाज होती है।

"कौन?"

"सलाम! हम रामबुझावनसिंघ।"

१. हाल्टिंग बँगला।

"क्या हाल है ?"

"सब चौपट ! बावनदास···"

"आँ यें ! बावनदास ? कहाँ ?"

···सभी गुम हो गए। बेरसपतिया बावर्ची इशारे से कहता है हवलदार साहब को, "मिल सकती है मुर्गी···, मगर···" रुककर दोनों हाथों की उँगलियाँ दिखलाता है।

हवलदार साहब कहते हैं, "अच्छा अभी ठहरो, तुम बाहर जाओ।"

"क्या हो अब ?" सभी एक साथ लम्बी साँस लेते हैं।

"अकेला है या···?"

"एकदम अकेला !"

"मगर इसका मतलब जानते हैं ?"

"दुलारचन्दजी !···कापराजी !"

सबकी निगाहें मिलती हैं आपस में। दुलारचन्द गिलास में बोतल से शराब ढालकर गटगटाकर पी जाता है। सभी उसकी ओर आशा-भरी दृष्टि से देखते हैं—"मैं पंजाबी हूँ जी !···मगर आगे आप लोग जानो। मैं अपना फरज अदा करने जाता हूँ।"

···सिटसिट कर पछिया हवा चल रही है। हवलदार साहब साइकिल का पैडिल चलाते हुए कहते हैं, "कापराजी, आस-पास के गाँव वालों का डर जरा भी मत-कीजिए।···ऐलान किया हुआ है कि सरहद के आस-पास रात-बेरात जो निकलेगा, उसे गोली लग जा सकती है।"

बावनदास ठीक पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा है—बीच लीक पर।

दुलारचन्द कापरा देखता है—हाँ बावन ही है।

"कौन ?···कापराजी ! गाड़ी के पीछे से क्या झाँकते हैं ? सामने आइए !" बावनदास हँसता है।

"बावन !···रास्ता छोड़ दो। गाड़ी पास होने दो।"

"आइए सामने। पास कराइए गाड़ी। आप भी कांगरेस के मेम्बर हैं और हम भी। खाता खुला हुआ है; अपना-अपना हिसाब-किताब लिखाइए।

···आज के इस पवित्तर दिन को हम कलंक नहीं लगने देंगे।"

कापरा जानता है, इससे माथा-पच्ची करना बेकार है। वह हवलदार के कान में कुछ कहता है। फिर पुकारता है, "इसपिरिंग खाँ! कहाँ···"

यह इसपिरिंग खाँ कापरा का अपना आदमी है। ···नाम फर्जी है। ···एक गाड़ी पर से उतरता है, फिर चुपचाप अगली गाड़ी पर जाकर बैठ जाता है।

"बावनदास · मान जाओ!"

"·····"

"हाँको जी गाड़ी इसपिरिंग खाँ!"

गाड़ी में जुते हुए दोनों जानवर अचरज से चौंक पड़ते हैं। भड़कते हैं। छिऊँ! छिऊँ! नाक से आवाज करके आगे बढ़ने से इन्कार करते हैं। कापरा एक बैल की पूंछ पकड़कर ऐंठता है। हड्डी पट् से बोली, मगर कैलों ने लीक छोड़ दिया और गाड़ी को बगल की ओर लेकर भागे।

दूसरी गाड़ी···! एक-एक बैल को हवलदार और दूसरे को कापरा, पूंछ मरोड़कर आगे बढ़ाते हैं। गाड़ीवान अवाक् होकर हाथ में रास थामे हुए हैं।···यह क्या हो रहा है?

बैलगाड़ी पास हो गई।···पास हो रही है। बावनदास बीच लीक पर खड़ा है और गाड़ियाँ ऊपर से आर-पार पास कर रही है। बैल भड़के जरूर, मगर···।

तीन-चार! चार गाड़ियाँ?

अब बावनदास ठीक बैल के सामने आकर खड़ा होता है। बैल उसे हुँत्था मारकर गिरा देता है। वह लीक पर लुढ़क जाता है।···ठीक पहियें के नीचे।

मड़-मड़-मड़!

···बापू! माँ···!

गाड़ी पास! कट-कर्रर-कट!

गाड़ियाँ पास हो रही हैं।···पचास गाड़ियाँ!

आखिरी गाड़ी जब गुजर गई तो हवलदार और रामबुझावनसिंह मिलकर, बावन की चित्ती-चित्ती लाश, लहू के कीचड़ में लथ-पथ लाश को उठाकर चलते हैं।···नागर नदी के उस पार, पाकिस्तान में फेंकना होगा। इधर नहीं···हरगिस नहीं!

दुलारचन्द कापरा बावन की झोली लेकर उनके पीछे-पीछे जाता है।

नागर पार करते समय बावन के गले की तुलसी-माला नागर की बहती हुई धारा में गिर पड़ती है—सेत्तासम!

चार बजे भोर को पाकिस्तानी पुलिस ने घाट-गश्त लगाने के समय देखा—लाश!

"अरे! यह तो उस पार के बौने की है। यहाँ कैसे आई? ओ, समझ गए।···उठाओ जी, हनीफ और जुम्मन, ले चलो उस पार!"

बावन की ठंडी लाश झोली-झण्डा के साथ फिर उठी।

बावन ने दो आजाद देशों की, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की, ईमानदारी को, इन्सानियत को, बस दो डेग में ही नाप लिया!

नागर नदी के बीच में पहुँचकर पाकिस्तान के पुलिस अफसर साहब ने कहा—"नदी में ही डाल दो। इसकी झोली को उस पार दरख्त से लटका दो। जल्दी!"

नागर की धारा हठात् कलकला उठी! सिपाही खँजड़ी को पानी में फेंकते हुए कहता है—"डमरू बजा के रघुपति राघव गाते रहो!"

झनक···!

इक्कीस

मेरीगंज गाँव के एकमात्र मालिक, एकछत्र जमींदार, तहसीलदार बाबू विश्वनाथ मल्लिक का खम्हार देख लो!···जिस बड़े चौताल पर एक पंक्ति में बैठकर, गांधीजी के सराध के दिन लोगों ने सरबघटन भोज खाया,

उसी को घेरकर खलिहान बनाया है तहसीलदार साहब ने। दस बीघे का घेराव है।

रामकिरपालसिंह अपनी बची-खुची जमीन, फसल सहित, तहसीलदार के यहाँ सूद-रेहन रखकर तीरथ करने जा रहे हैं—कासी, केदारजी, जहाँ तक जा सकें। तहसीलदार साहब ने कहा है, "बाकी रुपया जहाँ से लिखिएगा, मनीआर्डर से भेजते रहेंगे।"

बाकी खजाना, घर-खर्चा, जाड़े का कपड़ा, सकलदीप के प्राच्छित और सतनारायण-पूजा के लिए खेलावन दो सौ रुपया माँगने गया। तहसीलदार साहब ने साफ जवाब दे दिया—"हाथ में एक पैसा नहीं है" ...घर के पिछवाड़े की जमीन, जिसमें धान करीब-करीब तैयार हो गया था, लिख दी तो तीन सौ रुपये दिये।

सब मिलाकर पाँच हजार मन से क्या कम होगा धान इस बार!

तंत्रिमा-छत्रीटोली, कुर्म छत्रीटोली, कुसवाहा-छत्रीटोली, धनुकधारी-छत्रीटोली और गहलोत-छत्रीटोली के जन-मजदूरों की हाँड़ी माघ महीने में ही टँग गई है।...*खम्हार में जितना धान हिस्सा होगा, उससे चौगुना तो* कर्जा है। सब काट लिया जायगा। ...और इस बार तो लगता है गाँव में गुजर नहीं चलेगा। खेलावन यादव पाँच हल चलाते थे, इस साल एक ही हल चलावेंगे, एक हल अधहरी[1] पर चलेगा। रामकिरपालसिंह ने तो खेती-बारी उठा ही दी। बुढ़िया को लेकर तीरथ चले गए। शिवशङ्करसिंह दो हल चलावेंगे।...तहसीलदार साहब इस बार टकटर[2] खरीद रहे हैं। बेतार कहता था, "उसी में सब कुछ होगा—हल, चौंगी, बिधा, कोड़-कमान, कादो-गोरा और धनकटनी भी! आदमी की क्या जरूरत? पानी का पम्पू आवेगा! इन्दर भगवान् की खुसामद की जरूरत नहीं। कमला नदी में पम्पू लगा दिया, मिसिन इसटाट कर दिया और हथिया सूँड़[3] की

१. आधा हल।
२. ट्रैक्टर।
३. इन्द्रधनुष।

तरह सब पानी सोखकर खेत पटा देगा।"···जब इन्दर भगवान् को ही नून-तेल चटा रहे हैं तहसीलदार साहेब, तो आदमी उनके हुजूर में क्या है ? कटिहार में एक जूट मिल और खुला है। तीन जूट मिल ?···चलो, चलो ! दो रुपैया रोज मजदूरी मिलती है। गाँव में अब क्या रखा है !

एक महतमाजी का भरोसा था, उनको भी मार दिया।···बालदेव-जी से पूछो न, महतमाजी की जगह पर अब कौन आवेंगे। जमाहिरलाल? मगर महतमाजी तो एक ही कोपिन पहनते थे।···

विरंची कहता है, "जहाँ सभी जात भाई का, बारहो बरन का, ऊँच-नीच का पत्ता जूठा हुआ है, उस खम्हार में बरक्कत तो उधियाकर होगा। ···तहसीलदार साहेब आज कह रहे थे, इस बार सभी को अपने हिस्से में से औकाद मुताबिक धान देना होगा—एक कट्ठा, आध कट्ठा, एक सेर, आध सेर !···महतमाजी का चन्ना हो रहा है।"

"महतमाजी का चन्ना ! क्या होगा चन्ना ? सराध तो हो गया।"

"नहीं !···रहुआ के गुरुबंसी बाबू ने डिल्ली में जाकर एक करोड़ या···एक लाख···पता नहीं एक हजार···याद नहीं, मगर एक मोट रुपैया गुरुबंसी बाबू ने जमाहिरलाल को जाकर दिया है।···महतमाजी का चन्ना ! सुनते हैं, और भी देंगे।"

"ऐं ! कौन हल्ला करता है उधर ?"

'और कौन, रमपियरिया है।"

रमपियरिया और रमपियरिया की माँ के गले की आवाज सुनी जाती है।···मठ पर झगड़ा हो रहा है। आज लगता है, मारपीट ज्यादा हुई है।

"रामदास गुसाईं आजकल दिन-भर गाँजा पीता है। एक-न-एक दिन वह भी खून करेगा।"

"साला, इन्हीं लोगों के पाप से धरती दलमला रही है।···भरस्ट कर दिया। अब वह मठ है ? लालबाग मेला का मीनाबाजार हो गया है। दस-दस कोस का लुच्चा-लफंगा सब आकर जमा होता है।"

तहसीलदार साहब आजकल रात में ऊपर के कोठे पर सुमरितदास

के साथ कागज-पत्तर ठीक करते रहते हैं। किसी-किसी दिन सुमरितदास सीढ़ी पर लड़खड़ाकर गिर जाता है। ···संथालों के घर में चुलाया हुआ महुआ का दारू बड़ा तेज होता है। गंगाई माँझी रोज आधा कंटर दे जाता है। कभी-कभी तहसीलदार साहब भी नीचे उतरकर खूब हल्ला करते हैं; कमला की माँ को, कमला को, सेवरिया बूढ़ी, सब को गोली से उड़ा देने की धमकी देते हैं।

···एक रात को तो इतना मात गए तहसीलदार साहब कि कमला की माँ डर से छाती पीटने लगी थी।···ऐसी खराब-खराब गाली जो जिन्दगी में कभी एक बार भी उनके मुँह से नहीं सुनी गई, कमला की बन्द किवाड़ के सामने आकर जोर-जोर से बकने लगे। कमला दरवाजा खोलकर बाहर आई और बोली, "बाबा! मुझे जो सजा देनी हो दो। मगर माँ को गाली मत दो। उनका क्या कुसूर है?"

कमला को देखते ही तहसीलदार साहब का नशा उतर गया, वे ऊपर भागे।

उस दिन से माँ कमला को एक मिनट भी अकेली नहीं छोड़ती है। बिलार को देखकर बच्चे वाली बिल्ली की सतर्क आँखें कैसी तेज हो जाती हैं! कमला की माँ को डर है, तहसीलदार साहब किसी दिन कोई काण्ड करेंगे।·· एक सप्ताह पहले शराब में एक दवा मिलाकर दिया उन्होंने—"कमला को पिला दो। एकदम खलास हो जायगी।···बड़ी मुश्किल से जोगाड़ किया है।"

उन पर कैसे विश्वास किया जाय! न जाने कब क्या कर दें!

गाँव के घर-घर में 'हे भगवान्' की पुकार मची हुई है। सुबह से शाम तक रात-भर धान-दवनी कर जो मजदूरी मिलती है, खलिहान पर ही बाकी मोजर हो जाता है। नाई-धोबी और मोची का खन भी नहीं जुड़ेगा इस बार।···चलो कटिहार!·· मिल का भोंपा बजता है रोज, सुनते नहीं? बुला रहा है—'आओ ओ ओ हो हो हो हो!'

रात के सन्नाटे में जोतखी काका की खाँसी बड़ी डरावनी सुनाई

पड़ती है—खाँयें-खाँयें।···दिन में ठीक दोपहर को अमड़ा गाछ पर बैठकर कागा जिस तरह बोलता है, ठीक उसी तरह खाँयें-खाँयें !

···खाएगा ! सबको खा जायगा। पिंगलवर्णा देवी क्रमशः बढ़ी आ रही है। उसके हजारों गण दाँत निकाले हैं; जीभ लपलपा रही है।··· खाएगा···खाएगा !

भयार्त शिशु की तरह सारा गाँव कुहरे में दुबका हुआ थर-थर काँप रहा है !···

"खबरदार—हो य य य य—खबरदार !"

तहसीलदार साहब ने खलिहान जोगाने के लिए तीन संथालों को और ड्योढ़ी के पहरा के लिए पहड़िया सिपाहियों को बहाल किया है। एक नाल बन्दूक का लैसन फिर मिला है।···चलित्तर कर्मकार जब तक पकड़ाता नहीं है, पैसे वालों को रात में नींद नहीं आएगी।···पहरे वालों की बोली भी डरावनी मालूम होती है। आजकल कोठी के जंगल में शाम को ही एक रोशनी जलती है—बहुत तेज; फिर रात में और फिर भोर को।

बालदेवजी जगे हुए हैं। शाम को पुरैनियाँ से लौटे हैं।···उनको नींद नहीं आ रही है। पुरैनियाँ जाने के समय लछमी ने बावनदास का बस्ता, गाँधीजी की चिट्ठियों वाला बस्ता, देते हुए कहा था, लघुसंका करने के समय पॉकिट से निकालकर···। गांगुलीजी से वह भेंट करने गया था। गांगुलीजी ने पूछा था, "बावनदास ने कुछ दिया है आपको ?"

"जी, ऊँहूँ···नहीं !" बालदेवजी इस जाड़े के मौसम में भी पसीना-पसीना हो गए थे।

न जाने क्यों गांगुलीजी अचानक उदास हो गए।

···बालदेव अब जान रहते इन चिट्ठियों को नहीं दे सकता। इन चिट्ठियों को देखते ही जमाहिरलाल नेहरूजी बावनदास को मेनिस्टर बना देंगे, नहीं तो डिल्ली जरूर बुला लेंगे।···यों भी आज तक जितने लीडर आये, सबों ने बावनदास से ही हँसकर बातें कीं।

···उस बार मेनिस्टर साहेब आये। बड़े-बड़े लीडरों ने, मारवाड़ियों

ने, वकीलों, मुक्तियारा और जमींदारों ने दसखत करके दरखास दिया, "भगवती बाबू सरकारी वकील को कांग्रेस का मेम्बर बहाल कर लिया जाय।" मगर मेनिस्टर साहब ने बावनदास से पूछा, "क्या बावनदासजी?" भगवती बाबू बहाल नहीं हुए। आखिर बावन की ही बात रही।···भगवती बाबू ने बियालिस में सुराजिया को फाँसी पर झुलाने के लिए खूब बहम किया था।

और ये चिट्ठियाँ!···नहीं, वह हरगिस नहीं देगा।···लछमी को न जाने क्या हो गया है! जिस दिन से बस्ता मिला, दोनों बखत सतसंग के समय सिर छुलाकर सामने रखती थी। ···रोज चन्दन और फूल चढाती थी इस पर। कभी-कभी चिट्ठियों को खोलकर पढती और रोती। पुरैनियाँ से लौटने पर कुशल-मंगल पूछना तो दूर, पूछ बैठी, "गंगुलीजी का दे दिया न?'

"हाँ हाँ, दे दिया। इतना ना-परतीत था तो मेरे हाथ में दिया ही क्यों था?"

बालदेवजी को नींद नहीं आ रही है। बैलगाड़ी पर पुआल के नीचे बस्ता छिपाकर रख दिया है। धूनी तो धू-धू कर जल रही है।···

बालदेवजी उठकर बाहर जाते हैं।

"होये!···खबरदार!" पहरू चिल्लाता है।

बालदेवजी धूनी के पास बैठकर लकड़ियों को जरा इधर-उधर करते हैं, फिर कनखी से लछमी के बिछावन की ओर देखते हैं। धीरे से बस्ता निकालकर खोलते हैं। उनका सारा देह सिहर रहा है, जीभ सूखकर काठ हो गई है, मुँह में थूक नहीं है।···धूनी की आग लहलहा उठी है, लकड़ियाँ चिट्-चिट् बोलती हैं।···बालदेव ने एक चिट्ठी निकाली··।

"दुहाई गाँधी बाबा! बाबा रे··!" लछमी बिछावन पर से ही झपटती है—"गुसाईं साहेब! छिः छिः! यह क्या कर रहे हैं!···सतगुरु हो, छिमा करो! बालदेव!···पापी,···हत्यारा!"

धूनी की आग लछमी के कपड़े में लग जाती है। "···लगने दो आग!

मुट्ठी खोलिए ! वस्ता दीजिए बालदेवजी ! मैं जलकर मर जाऊँगी, मगर···।"

बालदेवजी की कसी हुई मुट्ठी खुल जाती है। लछमी वस्ते को कलेजे से चिपकाकर खड़ी होती है। कमर से लिपटा हुआ कपड़ा खुद-ब-खुद गिर पड़ता है। बालदेवजी कमंडल से पानी लेकर छींटते हैं।

"हे भगवान्! सतगुरु हो! जै गांधीजी!···बाबा···जै बावनदासजी! हः हः!" लछमी रो रही है।

वस्त्रहीन खड़ी लछमी रो रही है।

लछमी के हाथ-पाँव जल गए हैं, बड़े-बड़े फफोले निकल आये हैं।

बालदेवजी अपनी मसहरी में आकर छिप जाते हैं। लेटकर सोचते हैं—नहीं, अब यहाँ रहना अच्छा नहीं। वह किस मुँह से यहाँ रहेगा? ···लछमी की ओर अब वह निगाह उठाकर कभी देख नहीं सकेगा।··· वह पुरैनियाँ जायगा, वहीं से चम्पानपट्टी चला जायगा। वह अब अपने गाँव में रहेगा, अपने समाज में, अपनी जाति में रहेगा।···जाति बहुत बड़ी चीज है।···जाति की बात ऐसी है कि सभी बड़े-बड़े लीडर अपनी-अपनी जाति की पार्टी में हैं। यह तो राजनीति है! लछमी क्या समझेगी? ·· कासीजी का बरमचारी तो लगता है, अब यहीं खुट्टा गाड़ेगा···। ठीक है।···नहीं, वह लछमी पर जाते-जाते अकलंग लगाकर नहीं जायगा। वह···

"गुसाईं साहेब, उठिए! सतसंग का समय हो गया!" लछमी कराहते हुए उठती है। सारा देह जल गया है।

रोज की तरह लछमी उठती है, उठकर बालदेवजी के बिछावन के पास आती है। मसहरी हटाकर बालदेवजी के अँगूठों में आँखें लगाती है, "सा हे ब–बंदगी!"

बालदवजी रोते हैं—सिसकियाँ लेकर, "ल–छ–मी!"

"उठिए गुसाईं साहेब!"

बाईस

तीन महीने बाद !

१९४८ साल के अप्रैल की एक सुबह ।

इस इलाके में अस्वतिया पटुआ-भदै बोनेवाले किसानों को चाहिए कि सूरज उगने से पहले ही खेत को चार बास कर दें ! मुरकुआ तारा जगमग कर रहा है । कमला नदी के गर्भ में उसकी छाया झिलमिला रही है । लगता है, नीलकमल खिला है ।

कंधे पर हल लिये मरियल बैलों को हाँकता हुआ जा रहा है विरंची··· कोयरीटोला के सोवरन का तीन बीघा खेत मनकुत्ता पर जोतता है । मगर इस साल टोटा पड़ेगा । उसकी सूरत, दियासलाई की डिबिया में जैसे हल-वाहे की छापी रहती है—एकदम दुबला-पतला, काला-कलूटा, कमर में बिस्ती, वैसी ही है ।

खेलावन अब खुद भैंस चराता है । तीन बजे रात में भैंस जैसा चरती है वह दिन-भर में नहीं चरेगी । अब तो उसको अपना रमना[1] भी नहीं है, इसीलिए धत्ता की ओर ले जाता है । खेलावन यादव, यादवटोली का मड़र, भैंस चराकर लौट रहा है ।

आसमान साफ होता जा रहा है । सबके चेहरों पर सुबह का प्रकाश पड़ता है—झमाई हुई ईंट जैसे चेहरे !

तहसीलदार साहब का ट्रैक्टर लेकर डलेवर साहब निकले—भट भट भट भट भट !

तहसीलदार साहब दोमंजिले की छत पर खड़े, हाथों को पीछे की ओर बाँधे टहल रहे हैं । भट भट भट भट भट ! छत दलकती है । उसी के साथ पर उनका कलेजा धुकधुका रहा है ।···कौन आ रहा है ? कौन ? सेविया ? ···चुप !···धीरे से ! क्या ?

"क्या ?" तहसीलदार साहब पूछते हैं ।

१. चरागाह ।

"ऊँ ! बत्तहा ! नाती भैलहों !" सेविया हँसती है।

"चुप ! जिन्दा है या···।"

"ऊँह ! गुजुर गुजुर हेरैछे !"

···उफ़् ! भगवान् ! तहसीलदार साहब थर-थर काँप रहे हैं।

कमला नदी के उस पार, अघपके रब्बी की फ़सल के उस पार, सेमलवाड़ी के जंगल के उस पार आसमान लाल हो गया है ! दक्खिन···कोठी के बाग में गुलमुहर की लाल-लाल डालियाँ दमक उठती हैं।

ड्योढ़ी के उस पार बच्चे के रोने की आवाज़ नहीं जाने पावे ! इंतिजाम हो रहा है।···कोई इंतिजाम जरूर हो जायगा।·· यदि बच्चा जोर से रोये ! ऐं, गला टी···प दो। मार डालो !

दिल्ली में, राजघाट पर, बापू की समाधि पर रोज श्रद्धांजलियाँ अर्पित होती हैं। संसार के किसी भी कोने का, किसी भी देश का आदमी आता है, वहाँ पहुँचकर अपनी जिन्दगी को सार्थक समझता है।

कलीमुद्दीपुर में, नागर नदी के किनारे, चोरघट्टा के पास साँहुड़ के पेड़ की डाली से लटकती हुई खद्दर की झोली को किसी ने शायद टपा दिया है। ··कौन लेगा ? दुलारचन्द कापरा ने एक महीने के बाद जाकर देखा, झोली तो लटक रही है ···डाली से। जिला काँग्रेस का कोई भी चरकर देखते ही पहचान लेगा—बावनदास की झोली है। झोली कापरा ने टपा दी। मगर झोली का फीता अभी भी डाली में झूल रहा है।

किसी दुखिया ने इसे चेथरिया-पीर[1] समझकर मनौती की है, अपने आँचल का एक खूँट फाड़कर बाँध दिया है—"मनोकामना पूरी हो तो नया चेथरा चढ़ाऊँगी !" बहुत बड़ी आशा और विश्वास के साथ वह गिरह बाँध रही है। ···दो चीथड़े।

पूर्णिया जेल के सामने बड़ा पुराना वटवृक्ष है। उसके नीचे सूखी हुई पत्तियाँ हवा में इधर-उधर उड़ रही हैं। वट के बँधाए चबूतरे के पास एक युवती खड़ी है।···साथ में है प्यारू !

१. जिस पेड़ को पीर समझकर चीथड़ा चढ़ाते हैं।

खाली बेंच पर एक पुराना गमछा पसरे, सिर्फ जाँघिया पहने एक वार्डर साहब बार-बार बाहिर से निकलकर युवती को देखते हैं, गीत गाते हैं—'गोरी पतरी कमरिया !' और एक बार पूछ भी लेते हैं, "आर डॉक्टर साहेब की वाइफ है ?"

युवती ने गर्दन हिलाकर कहा—"नहीं !"

वार्डर साहब प्यारू की ओर देखते हैं। प्यारू इस वार्डर को जानता है—बड़ा बेवकूफ है। हमेशा खराब-खराब बात बोलता रहता है। वह मुँह फेर लेता है।

जेल का लोहे-कपाट झनझनाकर खुलता है। युवती के चेहरे पर से प्रतीक्षा की बेचैनी हट जाती है। उसके चेहरे पर हाल ही में जो छोटी-छोटी झुर्रियाँ पड़ गई थीं, धीरे-धीरे मिट पड़ती हैं।

डॉक्टर इस तरह मुस्कराता, डेग बढ़ाता, हाथ में छोटा बैग लिये आ रहा है, मानो लेबोरेटरी से छुट्टी पाकर लौटा है।

प्यारू का चेहरा देखने काबिल हो रहा है। वह अपने अन्दर में उठने वाले खुशी के आवेगों को दबाता है, किन्तु उसका मुँह अस्वाभाविक रूप से खुला हुआ है।

"तुम भी किसी जेल में थी क्या ?"

"नहीं बाबा ! ऐसी किस्मत लेके नहीं आई। ···झुको ! बाबा विश्वनाथ का प्रसाद है !" युवती रूमाल से सूखे बेलपत्तर और फूल निकालकर डॉक्टर प्रशान्त के सिर से छुलाती है।

"तब प्यारू···क्या हाल है ? ममता ! प्यारू से बातचीत हुई है या नहीं ?"

"सुबह से और कर क्या रही हूँ !" ममता हँसते हुए कहती है, "घोड़ागाड़ी बुलाइए प्यारिचांद सरकार !"

प्यारू हँसता-लँगड़ाता कचहरी की ओर जाता है।

"तीन बजे रात में पहुँची पूर्णिया स्टेशन।···ज्योति-दी तो आज-कल यहीं हैं न ! उनके डेरे पर गई, सुबह उठकर कलक्टर साहब के

बँगले पर गई। दस्ती आर्डर साथ में था तुम्हारी रिलीज़ का। ज्योति-दी ने कहा, यदि कलक्टर साहब टूर पर निकल गए तो फिर देर हो जा सकती है !···तो अभी कहाँ चलना है ?" ममता मुस्कराती है।

"तुम मेरीगंज नहीं चलोगी ?"

"क्यों नहीं ?···मैंने पन्द्रह दिन की छुट्टी ले ली है।"

एस० पी० साहब का चपरासी खत लेकर आया है। एस० पी० साहब ने डॉक्टर को अपने बँगले पर निमन्त्रित किया है।

तेईस

तहसीलदार साहब अब नीचे नहीं उतरते हैं। ऊपर ही रहते हैं। दिन-भर ताड़ी पीकर रहते हैं, रात में संथालटोली का महुआ का रस। कभी होश में नहीं रहते हैं। सुमरितदास बैतार से रोज पूछते हैं, "सोचा उपाय ?"

"मेरा तो मगज नहीं काम कर रहा है !"

"नहीं काम कर रहा है, तो लो एक गिलास। पिओ साले ! यदि कहीं बोले तो देख लो बन्दूक !"

कमला की माँ दरवाजा कभी नहीं खोलती। कुएँ की ओर खुलने वाला दरवाजा कभी-कभी खोलती है।···कमरे के अन्धकार में, एक कोने में, एक छोटा सा दीप जल रहा है। कमला की गोदी में उसका शिशु कपड़े में लिपटा सो रहा है।···कमला कजरौटी में काजल पार रही है।

भट भट भर्र र्र

एक स्टेशन वैगन पूर्णिया-मेरीगंज रोड पर भागी जा रही है।

चलते समय ममता की नजर बचाकर प्यारू ने डॉक्टर के हाथ में एक लिफाफा दिया है। आगे ड्राइवर की बगल में बैठा हुआ प्यारू कभी-

कभी गर्दन उलटकर पीछे की ओर देखता है। डॉक्टर साहब चिट्ठी पढ़ रहे हैं।

"प्राणनाथ !"

कमला की चिट्ठी है—एक सप्ताह पहले की चिट्ठी।

"प्राणनाथ,

पता नहीं, समय पर यह पत्र तुमको मिले या नहीं। देर या सवेर, कभी भी मेरी यह चिट्ठी तुम्हें मिल ही जायगी, मुझे पूरा विश्वास है। तुम मेरे पास दौड़े आओगे !···तुम जानते हो, अब मुझे डर लगने लगा है। तुम्हारा···तुम्हारा · कैसे लिखूं ?···माँ कहती है, यदि तुम किसी तरह बाबा को लिख दो या मालूम करा दो कि···मेरी होने वाली सन्तान के तुम पिता हो, तो मैं जी जाऊँ। विश्वास नहीं करती माँ ! बाबूजी अब एक-दम पागल हो गए हैं। न जाने कब क्या हो ! तुम्हारी किताबों ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है। मुझे कितना बड़ा सहारा मिला है तुम्हारी किताबों से ! लेकिन अब एक नई किताब चाहिए जिसके पृष्ठ-पृष्ठ में लिखा हुआ हो—कमला ! विश्वास करो ! डरो मत ! जो होगा, मङ्गलमय होगा···।"

डॉक्टर एक ही साँस में इतना पढ़ गया। इसके बाद उसने ममता की ओर निगाह डाली। रात-भर की जगी ममता गाड़ी के हिचकोलों पर मीठी झपकी ले रही है।···चोट लग जायगी !

"और कितनी दूर ?" ममता जागकर पूछती है।

"और एक घंटा," प्यारू कहता है।

डॉक्टर आगे पढ़ता है—"···बाबा तुम्हारे बच्चे को मार डालेंगे।"

"नहीं ! नहीं !"

"ऐं ?" ममता पूछती है, "क्या है ?"

डॉक्टर ममता के हाथ में पत्र देकर बाहर की ओर देखता है। प्यारू गर्दन उचट-उलटकर डॉक्टर साहब की ओर देखता है।

ममता आँखें मलते हुए पढ़ती है—"प्राणनाथ !···किसकी चिट्ठी

है ? कमला की ?"

ममता पढ़ रही है। डॉक्टर ने एक बार ममता की ओर देखा—ममता की नींद से माती आँखें एक बार चमकती हैं। पत्र शेष करके वह पूछती है, "और कितनी दूर ?"

"अब और एक घटा। कच्चा रास्ता है !"

"और वह गणेश कहाँ है ?"

"उसकी तो एक लम्बी कहानी है। ब्रह्मसमाज मन्दिर में उसे रखवा दिया था। न जाने कहाँ से उसके एक चाचा ऊपर हो गए। बहुत बखेड़ा हुआ, जाति-धर्म का बवण्डर उठाया। मैंने भी कह दिया, ले जाओ !"

"उससे भैंस चरवाता है," प्यारू कहता है। "उसके गाँव का आदमी बराबर कचहरी आता है न !"

"मैंने मेडिकल गज़ट में तुम्हारी रिपोर्ट दे दी है। एक संक्षिप्त रिपोर्ट है—जंगली जड़ी-बूटी और यहाँ के गाँवों में प्रचलित टोटकों के बारे में—तुम्हारी चिट्ठियों से सॉर्ट करके लिख दिया।"

"लेकिन, मैंने तो फैसला कर लिया है रिसर्च असफल होने की घोषणा कर दूँगा।"

"कोई रिसर्च कभी असफल नहीं होता है डॉक्टर ! तुमने कम-से-कम मिट्टी को तो पहचाना है।···मिट्टी और मनुष्य से मुहब्बत ! छोटी बात नहीं।"

डॉक्टर ममता की ओर देखता है—एकटक। ममता बाहर की ओर देख रही है—विशाल मैदान ! ···वंध्या धरती ! ···यही है वह मशहूर मैदान—नेपाल से शुरू होकर गंगा किनारे तक—वीरान, धूमिल अंचल। मैदान की सूखी हुई दूबों में चरवाहों ने आग लगा दी है—पंक्तिबद्ध दीपों जैसी लगती है दूर से।···तड़वन्ना के ताड़ों की फुनगी पर डूबते हुए सूरज की लाली क्रमशः मटमैली हो रही है।

भरं र र्रं···

"सुमरितदास ! अभी ट्रैक्टर क्यों चला रहा है ? कहाँ ले जा रहा है, ड्राइवर से पूछो तो।" तहसीलदार साहब दोमंजिले की छत पर से पुकारते हैं।

"ट्रैक्टर नहीं। मोटर है मोटर !"

"मोटर ?···कौन है ?"

"डागडर !"

"कौन डॉक्टर ?"

सुमरितदास दौड़कर छत पर जाता है, "अपने···डागडर बाबू। साथ में एक जलाना है।···प्यारू भी है।"

तहसीलदार साहब हाथ में बन्दूक लेते हैं। सुमरितदास थर-थर काँपते हुए कहता है—"दुहाई ! ऐसा काम मत कीजिए।"

"ऐसा काम नहीं करूँ ?···तब क्या करूँ ?"

प्यारू पुकारता है, "मौसी !···ओ मौसी !"

"कौन ? प्यारू ?" माँ दरवाजे की फाँक से कहती है, "क्या है ?"

"डॉगडर बाबू !"

"ऐंहें ऐंहें आँ आँ," सौर-गृह में कमला का नन्हा रोता है, "ऐं हें ऐं हाँ !"

ममता जल्दी से किवाड़ के पास जाकर कहती है, "किवाड़ खोलो मौसी !···मैं हूँ ममता। खोलो तो पहले !"

किवाड़ के पल्ले खुल जाते हैं। ममता सौर-गृह के अन्दर चली जाती है।···डॉक्टर अकेला, चुपचाप खड़ा है। सीढ़ी पर खड़ाऊँ की आवाज होती है—भारी भरकम आवाज़ ! कोई जोर-जोर से पैर पटककर चल रहा है।

"कौन है ? डाक्टर ?" तहसीलदार साहब चिल्लाते हैं।

"आइए ! बैठिए डागडर बाबू।" सुमरितदास मसूढ़े निकालकर हँसता है, "आइए !"

"नहीं ! ···सुमरितदास, इससे पूछो, कहाँ आया है ? किसके यहाँ आया है ? क्या करने आया है ? क्या लेने आया है ?···पूछो !"

सुमरितदास बेतार डॉक्टर के पास आकर कनखी और इशारों से समझाता है, "आजकल जरा ज्यादा ढलने लगी है न···इसीलिए !"

सौर-गृह के दरवाजे की फाँक से कमला की माँ कहती है, "कमली के बाबू ! कैसे हो तुम ? जमाई को···"

"जमाई को क्या ? अपने जमाई को क्यों नहीं कहती हो ? वह मेरा पैर छूकर प्रणाम कहाँ करता है ?"

डॉक्टर तहसीलदार की चरण-धूलि लेता है ।

तहसीलदार साहब अचानक फूटकर रो पड़ते हैं, डाक्टर साहब को बाँहों में जकड़कर रोते हैं, "मेरा बेटा ! बाबू !···मेरा बेटा !"

सुमरितदास बेतार ने रात में ही घर-घर खबर पहुँचा दी —"कमली की सादी तो पहले ही डागडर बाबू से हो गई थी ।···तुम लोग तो जानते हो ! पाँच पंच को जनाकर जब-जब सादी की बात पक्की हुई, एक-न-एक विघिन पड़ गया । इसीलिए कासी के पंडितों ने गंधरब-विबाह कराने को कहा । गंधरब विबाह की बात किसी को मालूम नहीं होने दी जाती है । यदि बच्चा हो तो सबसे पहले बाप उसको देखेगा, तब और लोग ।···डागडर बाबू आ गए हैं । अब कल छट्ठी के भोज का निमंत्रण देने आया हूँ तुम लोगों को । कल सुबह से ही आनन-बधावा मचेगा ।"

"इस्स ! यह तो खिस्सा-कहानी जैसा हो गया ! एकदम किसी को पता नहीं !"

ब्राह्मणटोली के पुरोहित देवानन झा ने लोगों से कहा, "अँगरेजी फैसन वालों का सात खून माफ है ।"

जोतखीजी के कानों में बात पड़ी; उन्होंने घृणा से मुँह सिकोड़ लिया ।

खेलावन यादव ने कहा, "पैसा वाला अधरम भी करेगा तो वह धरम ही होगा ।"

लेकिन निमंत्रण अस्वीकार करने का हिम्मत किसी में नहीं ।

सुबह को गांव के चमारों ने आकर नाच-नाचकर ढोल बजाना शुरू किया। औरतें झुंड बांध-बांधकर सोहर गाती हुई आने लगीं। लेकिन सब के चेहरे पर एक उदासी, एक मनहूस काली रेखा खिंची हुई है। ·· मन में रंग नहीं।

तहसीलदार साहब बहुत देर तक अपने कमरे में चुपचाप बैठकर कुछ सोचते हैं; फिर बाहर आकर कहते हैं, "सुमरितदास ! लोगों से कह दो ···हरेक परिवार को पांच बीघा के दर से मैं जमीन लौटा दूँगा। सांझ पड़ते-पड़ते मैं सब कागज-पत्तर ठीक कर लेता हूँ।···और संथाल-टोली में जाकर कहो···वे लोग भी आकर रसीद ले जायँ। एक पैसा सलामी या नजराना, कुछ भी नहीं !···अरे मैं क्यों दूँगा ? दे रहा है नया मालिक ! · मालिक साहब का हुकुम है, सुनते हो नहीं ! रो रहा है वह ? वह हुकुम दे रहा है। लौटा दो ! दे दो, सेलाबन को उसकी जमीन का सब धान दे दो।"

डॉक्टर प्रशान्त और ममता की आंखें चार होती हैं।

"मुँह क्या देखते हो ? मुझे पागल समझते हो ? ठीक है, पागल क्यों नहीं समझोगे ?···योगेश्वर कृष्ण ने अपनी सारी विद्याबुद्धि लगा-कर कोशिश की, मगर दुर्योधन ने साफ़ कह दिया— सूई की नोक पर जितनी मिट्टी चढ़ती है उतनी भी नहीं दूँगा।'·· जमीन !···धरती ! एक इंच जमीन के लिए हायकोठ तक मुकदमा लड़ते हैं लोग ! और मैं सात सौ बीघे जमीन दे रहा हूँ। पागल तो तुम लोग हो ! अरे, यह जमीन तो उन्हीं किसानों की है, नीलाम की हुई, जब्त की हुई; उन्हें वापस दे रहा हूँ। मैं कहता हूँ, ऐलान कर दो, मालिक का हुकुम है !"

जै ! जै !···जै हो !

बोलिए प्रेम से—महतमाजी की जै !

डिग डिग डिडिग।

रिंग रिंग ता धिन ता।

डा डिग्गा डा डिग्गा !

झुमुर झुमुर···हुर्रर हुर्रर्र हुर्रर्र !

हाँ···अब···अब ठीक है। अब देखो, सबके चेहरों पर, मुर्दा चमड़ों पर लाली लौट रही है। सैकड़ों जोड़ी आँखें खुशी से चमक उठती है, मानो दीप जले हों।

कुमार नीलोत्पल की आज वरही है।

हाँ, ममता ने कमला के पुत्र का नाम दिया है—कुमार नीलोत्पल। डॉक्टर ने आज पहली बार अपने पुत्र को गोद में लिया और देखा है। ···दुबला-पतला, पीले रंग का, रक्त-मांस का पिंड ! ममता कहती है, "पटना ले चलो। एक महीने में ही तुम्हारा बेटा लाल हो जायगा।" डॉक्टर ने सैकड़ों 'डिलिवरी' केस किये हैं। किन्तु कुमार नीलोत्पल ! कमला का पीला चेहरा लाज से लाल हो गया था। डॉक्टर की गोद में शिशु को देते वक्त उसकी बड़ी-बड़ी आँखों की पलकें झुकी हुई थीं। उसके ललाट पर सिंदूर का बड़ा सा टीप जगमगा रहा था।···अँधेरे में खड़ी 'सिल्हुटिड' तस्वीर-सी खड़ी माँ हाथ बढ़ाकर एक भयावनी छाया के हाथ में अपने शिशु को सौंप रही है।···अँधेरा···!भयावनी छाया !···नहीं, नहीं। डॉक्टर ने अपने बाँएँ हाथ की उँगलियों से नीलोत्पल के 'हार्ट' की धड़कन का अनुभव किया था, "अहा ! नन्हा सा दिल, धुक-धुक कर रहा है !"

सौर-गृह में, बारह दिन के शिशु की लम्बी उम्र, सुन्दर स्वास्थ्य, विद्या-बुद्धि और धन-सम्पत्ति के लिए मंगल गीत गाये जा रहे हैं। डॉक्टर जगा हुआ है।···उसका रिसर्च ? ममता कहती है, "असफल नहीं हुआ है। मिट्टी और मनुष्य से इतनी गहरी मुहब्बत किसी 'लेबोरेटरी' में नहीं बनती।"

लेबोरेटरी ! ···विशाल प्रयोगशाला। ऊँची चहारदीवारों में बन्द प्रयोगशाला।···साम्राज्य-लोभी शासकों की संगीनों के साये में वैज्ञानिकों के दल खोज कर रहे हैं, प्रयोग कर रहे हैं।···गंजी खोपड़ियों पर लाल-हरी रोशनी पड़ रही है।···मारात्मक, विध्वंसक और सर्वनाशा शक्तियों

के सम्मिश्रण से एक ऐसे बम की रचना हो रही है जो सारी पृथ्वी को हवा के रूप में परिणत कर देगा ···ऐटम ब्रेक कर रहा है···मकड़ी के जाल की तरह···। चारों ओर एक महा अन्धकार ! सब वाष्प ! प्रकृति-पुरुष ···अण्ड-पिंड ! मिट्टी और मनुष्य के शुभचिन्तकों की छोटी-सी टोली अँधेरे में टटोल रही है। अँधेरे में वे आपस में टकराते हैं।

···वेदान्त · भौतिकवाद···सापेक्षवाद·· मानवतावाद ! हिंसा से जर्जर प्रकृति रो रही है। व्याघ के तीर से जख्मी हिरण-शावक-सी मानवता को पनाह कहाँ मिले ? ·· हा हा हा ! अट्टहास ! व्याधों के अट्टहास से आकाश हिल रहा है। छोटा-सा, नन्हा-सा हिरण हांफ रहा है। छोटे फेफड़े की तेज धुकधुकी !···नीलोत्पल ! नहीं, नहीं ! यह अँधेरा नहीं रहेगा। मानवता के पुजारियों की सम्मिलित वाणी गूंजती है—पवित्र वाणी! उन्हें प्रकाश मिल गया है। तेजोमय ! क्षत-विक्षत पृथ्वी के घाव पर कोई शीतल चन्दन लेप रहा है। प्रेम और अहिंसा की साधना सफल हो चुकी है ! फिर कैसा भय ! विधाता की सृष्टि में मानव ही सबसे बढ़कर शक्तिशाली है। उसको पराजित करना असंभव है, प्रचण्ड शक्तिशाली बमों से भी नहीं।··· पागलों ! आदमी-आदमी है, गिनीपिग नहीं।···सवारि ऊपर मानुस सत्य ·

अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम्।
अनेक दिव्याभरण दिव्यानेकोद्यतायुधम्।
दिवि सूर्यसहस्र···।

···ममता गा रही है ! सुबह हो रही है। बगल के कमरे में तहसीलदार साहब खर्राटे ले रहे हैं। डॉक्टर उठकर खिड़कियाँ खोल देता है। मटमैली अँधियारी में कोठी का बाग ठिठका हुआ किसी की प्रतीक्षा कर रहा है। गुलमुहर, अमलतास और योजनगन्धा की नई कलियाँ मुस्कराने को तैयार है।···नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादि···।

"प्रशान्त !" ममता मुस्कराती हुई कमरे में प्रवेश करती है—सुबह को हौले-हौले बहने वाली हवा जैसी। सद्यःस्नाता ममता के भीगे-बिखरे केश-गुच्छ को डॉक्टर छू लेता है।

"अरे खेत ! औरतों का भीगा केश नहीं छूना चाहिए। दोष होता पूछती हूँ, चाय पिओगे ? कुमार साहब का दूध गर्म हो रहा है। लगता रात-भर जगे रहे हों। कुल्ली कर लो। मैं चाय ले आती हूँ।" ममता कराती हुई चली जाती है।

बेचारी ममता की जिन्दगी का एकमात्र विलास—चाय ! शीला कहती एक बार, "ममता-दी चाय पीने का बहाना ढूंढती रहती है। दिन-में दस-पन्द्रह प्याली···।"

चाय की प्याली प्रशान्त के हाथ में देते हुए ममता पूछती है, "पढ़ गए महात्माजी की आखिरी लालसा ? मैं तो कहती हूँ, यह वह महा-श है, जिसकी रोशनी में दुनिया निर्भय हजारों बरस का सफर तय सकती है।"

"ममता ! मैं फिर काम शुरू करूँगा—यहीं, इसी गाँव में। मैं प्यार खेती करना चाहता हूँ। आँसू से भीगी हुई धरती पर प्यार के लहलहाएंगे। मैं साधना करूँगा, ग्रामवासिनी भारतमाता के मैले न तले ! कम-से-कम एक ही गाँव के कुछ प्राणियों के मुरझाए ओठों कराहट लौटा सकूँ, उनके हृदय में आशा और विश्वास को प्रति-कर सकूँ···"

ममता हँसती है—"मन करता है, किसी को आँचल पसारकर आशी-दूँ—तुम सफल होओ ! मन करता है, किसी कर्मयोगी के बढ़े हुए णों की धूलि लेकर कहूँ···" कहकर ममता प्रशान्त के पैरों की ओर बढाती है।

"ममता !"

"ममता-दी !···लो इसे। दूध फेंकता है।" कमला अपने शिशु को ोदी में लेकर हँसती हुई आती है।

"दो ! कैसे फेंकता है ? कैसे पिलाती हो ? बोतल दो।" ममता ालथी-पालथी मारकर बैठ जाती है और बच्चे को गोद में ले लेती है। तुमने टेब्लेट खा लिया कमला ? खा लो !"

प्रशान्त चुपचाप ममता को देख रहा है। शरत बाबू के द
यह नारी अपने विश्वास पर अडिग होकर आज भी आगे
रूप बदल दो, नाम बदल दो, समय बदल दो, जगह बदल
कभी बदल नहीं सकती।

कमला पूछती है, "प्यारू भी पटना चलेगा ?"

"हाँ," ममता संक्षिप्त उत्तर देती है।

"आंयें ऐं···ऐं···" नालू रोता है।

"ना ना···। पी लो बाबू! राजा! सोना···मानिक!···नी
मत! अब रोने की क्या बात है प्यारे ?" ममता हँसती है।

कलीमुद्दीपुर घाट पर चेथरिया-पीर में किसी ने मानत क
चौथड़ा और लटका दिया।